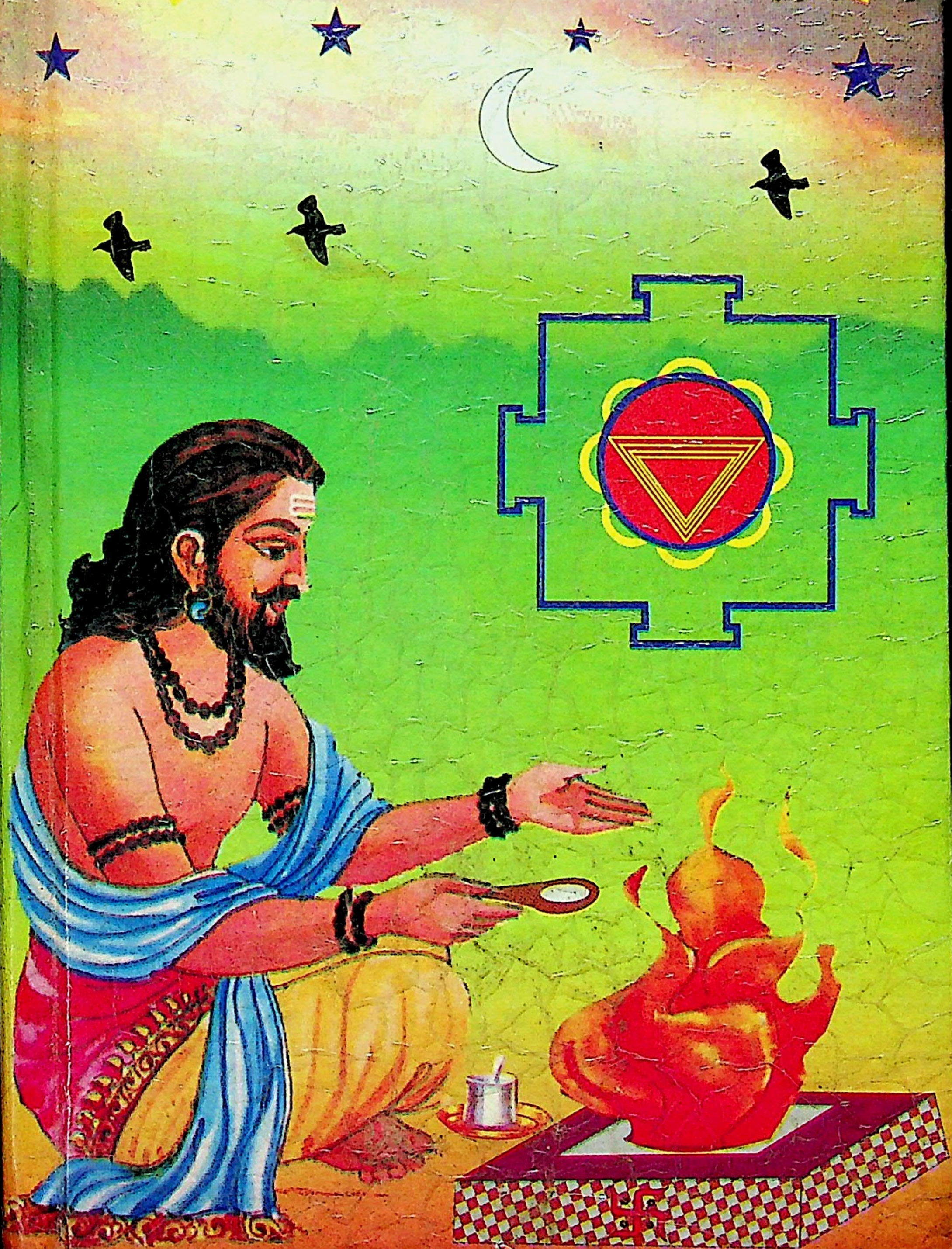
यज्ञ मन्त्र-संग्रहः



यज्ञमन्त्र-संग्रहः

लेखक
याज्ञिकसम्राट् पण्डित वेणीरामशर्मा गौड वेदाचार्य
अवकाश प्राप्त-वेदविभागाध्यक्ष--
गोयनका संस्कृत कालेज, वाराणसी

प्रकाशक
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी

संस्करण- २००४

मूल्य २००) रुपया

प्रकाशक
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी

सन् २००४

मुद्रक
भारत प्रेस
कचौड़ीगली, वाराणसी

दो शब्द

हिन्दू-जातिका प्राचीन धर्मग्रन्थ वेद है। वेदोंमें कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड—इन तीन विषयोंका मुख्यतः वर्णन मिलता है, किन्तु इन तीनोंमें प्रधान स्थान 'कर्मकाण्ड' को ही प्राप्त है। इसीलिये वेदोंमें यज्ञ-यागादि विविध क्रिया-कलापका विशेषरूपमें वर्णन मिलता है। अतः यज्ञ ही वेदोंका मुख्य विषय है। वेदोंका मुख्य विषय यज्ञ होनेके कारण ही यज्ञोंमें वेद-मन्त्रोंका प्रयोग (उच्चारण) किया जाता है। वेदमन्त्रोंके बिना यज्ञ नहीं हो सकते और यज्ञोंके बिना वेदमन्त्रोंका ठीक-ठीक सदुपयोग नहीं हो सकता। अतः स्पष्ट है कि वेद हैं तो यज्ञ हैं और यज्ञ हैं तो वेद हैं।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण (२।१०४) के **'वेदास्तु यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः'** इस बचनसे तथा भगवान् मनुके **'दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थम्** (१।२३) इस वाक्य से स्पष्ट सिद्ध है कि वेदोंका प्रादुर्भाव यज्ञोंके लिये ही हुआ है[1]।

जिस प्रकार वेद अत्यन्त दुरूह हैं, उसी प्रकार वेदाङ्गभूत यज्ञ भी अत्यन्त दुरूह हैं। जिस प्रकार वेदमें उपास्य देवता हैं, उसी प्रकार यज्ञमें भी उपास्य देवता हैं। जिस प्रकार वेद अपौरुषेय, नित्य और अनादि हैं, उसी प्रकार यज्ञ भी अपौरुषेय, नित्य और अनादि हैं। ऋग्वेदके प्रथम मन्त्र **'अग्निमीडे पुरोहितम्'** में 'यज्ञ' पद आया है, अतः सिद्ध होता है कि वेदसे भी प्राचीन 'यज्ञ' है।

---

१. 'ऋचो यजूंषि सामानि निर्ममे यज्ञसिद्धये' (ब्रह्मपुराण १।४२) अर्थात् यज्ञसिद्धिके लिये ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदका निर्माण हुआ है।

यज्ञ वैदिक-संस्कृतिका प्रधान अङ्ग है। यज्ञके द्वारा ही समस्त संसारका कल्याण होता है। यज्ञमें लोक-कल्याण-भावना विशेषरूपमें निहित रहती है।

ऐतरेय ब्राह्मण (१।२।३) में लिखा है—

'यज्ञोऽपि तस्यै जनतायै कल्पते ।'

'यज्ञ जनताके कल्याणके लिये किया जाता है।'

यज्ञमें लोक-कल्याणकी भावना मुख्य है, अतः लोक-कल्याणकी दृष्टिसे सभी युगोंमें यज्ञकी नितान्त आवश्यकता है।

हमारे धर्माचार्योंने मनुष्यके लिये जितने भी धर्म कहे हैं, वे सभी यज्ञ-लक्षणसे संयुक्त (यज्ञमय) हैं। प्राचीन ऋषि-महर्षियोंने शास्त्रोंके अनुसार ही अपना जीवन यज्ञमय बनाया था। वे यज्ञद्वारा अपना और जगत्‌का कल्याण किया करते थे। वस्तुतः यज्ञमें अपूर्व शक्ति है। यज्ञसे जो जिस वस्तुकी प्राप्तिके लिये इच्छा करता है, वह उसको वही वस्तु देता है— **'यो यदिच्छति तस्य तत् ।'** (कठोपनिषद् १।२।१६)।

अतः स्पष्ट है कि संसारमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो यज्ञके द्वारा प्राप्त न हो सके। यज्ञसे केवल ऐहलौकिक धन-धान्य, सन्तति आदि वस्तुओंकी ही नहीं, किन्तु पारलौकिक 'मोक्ष' आदि पदार्थोंकी भी प्राप्ति होती है।

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' (शतपथब्राह्मण १।७।१।५) के अनुसार यज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ कर्म है। इस श्रेष्ठ कर्म (यज्ञ) के विधिविधान भी अत्यन्त कठिन हैं। अतः यज्ञ करानेवाले आचार्यको और यज्ञमें सम्मिलित होनेवाले प्रत्येक विद्वान्‌को सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेद संहिताका सस्वर कण्ठस्थ होना अत्यावश्यक है।

समयके दुष्प्रभावसे वर्त्तमान समयमें ब्राह्मण-समाजमें वेदोंके नअध्ययाध्यापनकी न्यूनताके कारण वेदज्ञ ब्राह्मणोंकी कमी होती जा

रही है। अतः यज्ञमें सम्मिलित होनेवाले अधिकांश ब्राह्मण वेदज्ञ नहीं होते। जो ब्राह्मण वेदाध्ययन किये बिना यज्ञमें सम्मिलित होते हैं, वे यज्ञावसरपर यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाले वेदमन्त्रोंको उच्चारण न करनेके कारण स्वयं सङ्कोचका अनुभव करते हैं और यज्ञके यजमान आदि भी वेदोच्चारण न करनेवाले ब्राह्मणोंसे असन्तुष्ट रहते हैं। अतः मेरी चिरकालसे विशेष इच्छा थी कि सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेद न पढ़नेवाले ब्राह्मणोंके लिये यज्ञ-विषयकी एक स्वतन्त्र पुस्तक छप जाय, जिसमें यज्ञमें प्रयुक्त होनेबाले समस्त मन्त्रोंका सङ्कलन हो और उन मन्त्रोंको कण्ठस्थ कर यज्ञमें सम्मिलित होनेवाले सभी ब्राह्मण यज्ञके मन्त्रोंका ठीक-ठीक उच्चारण कर स्वयं सन्तुष्ट हों और यज्ञके यजमानको भी सन्तुष्ट कर सकें।

यज्ञ भगवान्‌की कृपासे 'यज्ञमन्त्रसंग्रहः' नामकी पुस्तक मैंने तैयार कर दी। इसमें यथासम्भव यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाले सभी मन्त्रों का सङ्कलन कि‥ा गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यज्ञमन्त्रसंग्रहमें दिये गये सभी मन्त्रोंको कण्ठस्थ कर लेनेसे प्रत्येक ब्राह्मण यज्ञावसरपर यज्ञके मन्त्रोंका उच्चारण कर सकता है।

यज्ञमन्त्रसंग्रह उन ब्राह्मणोंके लिये विशेष उपयोगी है, जिन्होंने सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेदका अध्ययन नहीं किया है। अतः यज्ञीय वेदमन्त्रोंको कण्ठस्थ करनेके लिये 'यज्ञमन्त्रसंग्रह' का अध्ययन आवश्यक है।

यज्ञमन्त्रसंग्रहमें तीन भाग हैं। इसके प्रथम भाग में यज्ञारम्भसे लेकर यज्ञसमाप्तितक आनेवाले सभी मन्त्रोंका संग्रह किया गया है। यज्ञमन्त्रसंग्रहके द्वितीय भागमें रुद्रयज्ञ, विष्णुयज्ञ आदि विविध यज्ञोंके स्वाहाकारके मन्त्र और विष्णुसहस्रनामावली आदि आठ सहस्रनामावलियोंकी स्वाहाकारकी विधि दी गयी है। यज्ञमन्त्रसंग्रहके तृतीये भागमें महारुद्र आदि अनेक यज्ञोंके न्यास, विनियोग और अनेक देवी-देवताओंकी गायत्री भी दी हैं।

यज्ञमन्त्रसंग्रहमें 'परिशिष्ट-भाग' भी दिया गया है, जिसमें जलयात्राविधिः, वर्द्धिनीकलशस्थापनविधिः, यज्ञमण्डपे वर्द्धिनीसंज्ञकनवकलाशानां स्थापनविधिः, वारुणमण्डलोद्धारविधिः, अवभृथस्नानविधिः, सूर्यार्घ्यविधिः और विष्णुयज्ञस्य बृहत् सङ्कल्पः दिया गया है।

वर्द्धिनीकलशस्थापनका विशेष प्रचार गुजराती विद्वानोंमें ही है, अतः वे यज्ञमण्डपमें वर्द्धिनीकलशका स्थापन करते हैं।

सूर्यार्घ्यविधिका भी प्रचार गुजराती विद्वानोंमें ही है। अतः वे प्रतिदिन यज्ञमण्डपमें प्रवेशके पूर्व यज्ञमण्डपके बाहर यज्ञके यजमानद्वारा 'सूर्यार्घ्यविधि' विधिवत् पूर्ण करानेके बाद ही यज्ञमण्डपमें प्रवेश करते हैं।

यज्ञमें जलयात्राका उपयोग यज्ञारम्भमें और अवभृथस्नानका उपयोग यज्ञान्तमें होता है।

आशा है, यह 'यज्ञमन्त्रसंग्रह' याज्ञिकों और कर्मकाण्डियोंके लिये विशेष उपयुक्त और लाभप्रद होगा।

अन्तमें मैं स्वर्गीय श्रीयुत ठाकुरप्रसादजी गुप्तके सुपुत्र श्रीयुत द्वारिका प्रसादजी गुप्त महोदय (अध्यक्ष-ठाकुरप्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी) को विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण 'यज्ञमन्त्रसंग्रह' को प्रकाशित कर याज्ञिकों और कर्मकाण्डियोंका महान् कल्याण किया है।

काशी
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा
संवत् २०३९

वेणीराम गौड वेदाचार्य
अवकाशप्राप्त-वेदविभागाध्यक्ष-
गोयनका संस्कृत कालेज, वाराणसी

विषय-सूची

(द्वितीयो भागः)

(तृतीयो भागः)

(परिशिष्ट-भागः)



❀ श्रीहरिः ❀

यज्ञ-मन्त्रसंग्रहः

(प्रथमो भागः)

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

पवित्रधारणमन्त्रः—ॐ पवित्रे॑स्थो वैष्ण॒व्यौ॑ सवि॒तुर्व॑: प्रस॒व ऽउत्पु॑ना॒म्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॑: ॥ तस्य॑ ते पवित्रपते प॒वित्र॑पूतस्य॒ यत्का॑मः पु॒ने तच्छ॑केयम् ॥

स्वस्तिवाचनमन्त्राः—ॐ आ नो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यन्तु वि॒श्वतोऽद॑ब्धासो॒ ऽअप॑रीतास ऽउ॒द्भिद॑: ॥ दे॒वा नो॒ यथा॒ सद॒मिद्वृ॒धे ऽअस॒न्नप्रा॑युवो रक्षि॒तारो॑ दि॒वेदि॑वे ॥ १ ॥ दे॒वानां॑ भ॒द्रा सु॑म॒तिॠ॑जूय॒तां दे॒वाना॑ᳯं रा॒तिर॒भि नो॒ निव॑र्त्तताम् ॥ दे॒वाना॑ᳯं स॒ख्यमुप॑सेदिमा व॒यं दे॒वा न॒ ऽआयु॒: प्रति॑रन्तु जी॒वसे॑ ॥ २ ॥ तान् पूर्व॑या नि॒विदा॑ हूमहे व॒यं भगं॑ मि॒त्रमदि॑तिं॒ दक्षं॑म॒स्रिध॑म् ॥ अ॒र्य॒मणं॒ वरु॑णᳯ॒ सोम॑म॒श्विना॒ सर॑स्वती नः सु॒भगा॒ मय॑स्करत्

॥ ३ ॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ॥ अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा ऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥८॥ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ॥ पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्च जना ऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ

शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥

गणपतिपूजनमन्त्राः—ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों ३॥ प्रतिष्ठ ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युरा चके ॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

ॐ पयः॑ पृथि॒व्यां पय॒ऽओष॑धीषु पयो॑ दि॒व्यन्तरि॑क्षे॒ पयो॒ धाः ॥ पय॑स्वतीः प्र॒दिशः॑ सन्तु॒ मह्य॑म् ॥

ॐ द॒धि॒क्राव्णो॑ऽअकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य वा॒जिनः॑ ॥ सु॒र॒भि नो॒ मुखा॑ कर॒त्प्रण॒ऽआयू॑ᳬषि तारिषत् ॥

ॐ घृ॒तं घृ॑तपावानः पिबत॒ वसां॑ वसापावानः पि॒बता॒न्तरि॑क्षस्य ह॒विर॑सि॒ स्वाहा॑ ॥ दिशः॑ प्र॒दिश॑ऽआ॒दिशो॑ वि॒दिश॑ऽउ॒द्दिशो॑ दि॒ग्भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥

ॐ मधु॒ वाता॑ऽऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः । माध्वी॑र्नः स॒न्त्वोष॑धीः ॥ मधु॒ नक्त॑मु॒तोषसो॒ मधु॑म॒त्पार्थि॑व॒ᳬ रजः॑ ॥ मधु॒ द्यौर॑स्तु नः पि॒ता ॥ मधु॑मान्नो॒ वन॒स्पति॒र्मधु॑माँ२ऽअस्तु॒ सूर्यः॑ ॥ माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥

ॐ अ॒पाᳬ रस॒मुद्व॑यस॒ᳬ सूर्ये॑ स॒न्तᳬ स॒माहि॑तम् ॥ अ॒पाᳬ रस॑स्य॒ यो रस॒स्तं वो॑ गृह्णाम्युत्त॒मम॑उपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्येष॒ते योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम् ॥

ॐ शु॒द्धवा॑लः स॒र्वशु॑द्धवालो म॒णिवा॑ल॒स्त

ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कृण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥

ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः ॥ स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ॥ वासो ऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत ॥ अस्तोषत स्वभानवो विप्प्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः

प्रसूवरीः ॥ अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परिपातु विश्वतः ॥

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्व्वामः ॥ देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ॥ अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः

समवर्त्तत ॥ पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन् ॥

ओ३म् अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥

ओ३म् याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ओ३म् ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

ओ३म् इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥ अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥

ओ३म् आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ॥ दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो-बाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

कलशस्थापनमन्त्राः—ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥

ओ३म् धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा ॥ दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

ओ३म् ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ॥

ओ३म् आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः ॥ पुनरूर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥

ओ३म् वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋत-सदनमासीद ॥

ओ३म् त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्माद-मुच्यत ॥

ओ३म् या ऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ॥ मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ॥ गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ॥ वासो अग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो ॥

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो ॥

ओ३म् याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा नऽ आयुः प्रमोषीः ॥

ओ३म् मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३म्॥ प्रतिष्ठ ॥

पुण्याहवाचनमन्त्राः—ओ३म् त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाभ्यः ॥ अतो धर्माणि धारयन् ॥

ओ३म् द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ १ ॥ सविता त्वा सवानाꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ २ ॥ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ३ ॥

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे ॥
उग्रꣳ शर्म महि श्रवः ॥ ४ ॥ उपास्मै गायता
नरः पवमानायेन्दवे ॥ अभि देवाँ२॥ ऽइयक्षते ॥ ५ ॥

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः
कल्पताम् ॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि
जनेभ्यः ॥ ब्रह्म राजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्याय च
स्वाय चारणाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै
दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो
नमतु ॥

ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्मज्ज्योतिरमृता
ऽअभूम ॥ दिवं पृथिव्या ऽअध्यारुहामाविदाम
देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः
पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ श्रीश्च॑ ते लक्ष्मीश्च पत्न्या॑वहोरात्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म् ॥ इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒मुं म॑ऽइषाण सर्व॑लो॒कं म॑ऽइषाण ॥

ॐ श॒तमिन्नु श॒रदो॒ऽअन्ति॑ देवा॒ यत्रा॑ नश्च॒क्रा ज॒रसं॑ त॒नूना॑म् ॥ पु॒त्रासो॒ यत्र॑ पि॒तरो॒ भव॑न्ति॒ मा नो॑ म॒द्ध्या री॑रिषता॒युर्गन्तोः॑ ॥

ॐ मन॑सः॒ काम॒माकू॑तिं॒ वा॒चः स॒त्यम॑शीय ॥ प॒शू॒नाꣳ रू॒पमन्न॑स्य॒ रसो॒ यशः॒ श्रीः श्र॑यतां॒ मयि॒ स्वाहा॑ ॥

ॐ प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो विश्वा॑ रू॒पाणि॒ परि॒ ता ब॑भूव ॥ यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ऽअस्तु व॒यꣳ स्या॑म॒ पत॑यो र॒यी॒णाम् ॥

ॐ प्रति॒ पन्था॑मपद्महि स्व॒स्ति॒ गाम॑ने॒हस॑म् ॥ येन॒ विश्वाः॒ परि॒ द्विषो॑ वृ॒णक्ति॑ वि॒न्दते॒ वसु॑ ॥

अभिषेकमन्त्राः—ॐ पयः॑ पृथि॒व्यां पय॒ऽओष॑धीषु॒ पयो॑ दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒ पयो॑ धाः ॥ पय॑स्वतीः प्र॒दिशः॑ सन्तु॒ मह्य॑म् ॥ १ ॥

ॐ पञ्च॑ न॒द्यः॑ सर॑स्वती॒मपि॑ यन्ति॒ सस्रो॑तसः ॥ सर॑स्वती॒ तु प॑ञ्च॒धा सो दे॒शे भ॑वत्स॒रित् ॥ २ ॥

ॐ वरु॑णस्योत्तम्भ॑नमसि वरु॑णस्य-स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीस्थो वरु॑णस्य ऽऋत॒सद॑न्न्यसि वरु॑-णस्य ऽऋत॒सद॑नमसि वरु॑णस्य ऽऋत॒सद॑नमा-सीद ॥ ३ ॥

ॐ पुनन्तु॑ मा देवज॒नाः पुनन्तु मन॑सा धियः॑ ॥ पुनन्तु विश्वा॑ भू॒तानि जात॑वेदः पुनी॒हि मा॑ ॥ ४ ॥

ॐ दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ॥ सर॑स्वत्यै वा॒चो य॒न्तुर्य॑न्त्रियें दधामि बृहस्पते॑ष्ट्वा साम्म्राज्येना॒भिषि॑ञ्चा-म्यसौ ॥ ५ ॥

ॐ दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ॥ सर॑स्वत्यै वा॒चो य॒न्तुर्य॒न्त्रेणा॒ग्नेः साम्म्राज्येना॒भिषि॑ञ्चामि ॥ ६ ॥

ॐ दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ॥ अ॒श्विनो॒र्भैष॑ज्येन॒ तेज॑से ब्रह्मवर्च्च॒साया॒भि षि॑ञ्चामि॒ सर॑स्वत्यै॒ भैष॑ज्येन वी॒र्या॒या॒न्नाद्याया॒भि षि॑ञ्चामीन्द्र॑स्येन्द्रियेण॒ बला॑य श्रि॒यै यश॑से॒ऽभि षि॑ञ्चामि ॥ ७ ॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्न ऽआ सुव ॥ ८ ॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ॥ सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ ९ ॥

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः ॥ रक्षा तोकमुत त्मना ॥ १० ॥

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्र दातारं तारिष ऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ ११ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १२ ॥

ॐ यतो-यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १३ ॥

षोडशमातृकापूजनमन्त्राः—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ १ ॥

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्यश्च ॥ आरोहतं वरुण मित्र

गर्त्तं ततंश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि ॥ २ ॥

ओ३म् गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ॥ आहमंजानि गर्भधमा त्वमंजासि गर्भधम् ॥ ३ ॥

ओ३म् निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभिं चष्टे शचीभिः ॥ देव इव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ॥ ४ ॥

ओ३म् मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ५ ॥

ओ३म् सविता त्वा सवानाꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳ सोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥ ६ ॥

ओ३म् विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत ॥ अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ ७ ॥

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य ॥ इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ ८ ॥

ॐ इन्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ९ ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः शुन्धध्वम् ॥ १० ॥

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा ॥ दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ आपो ऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वᳬहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत ऽएमि ॥ दीक्षातपसो-स्तनूरसि तां त्वा शिवाᳬशग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥ १२ ॥

ओ३म् र॒यिश्च॑ मे॒ राय॑श्च मे पु॒ष्टं च॑ मे॒ पुष्टि॑श्च मे वि॒भु च॑ मे प्र॒भु च॑ मे पू॒र्णं च॑ मे पू॒र्णत॑रं च मे॒ कुय॑वं च॒ मेऽक्षि॑तं च॒ मेऽन्नं॑ च॒ मेऽक्षु॑च्च मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ १३ ॥

ओ३म् यत्प्र॒ज्ञान॑मु॒त चेतो॒ धृति॑श्च॒ यज्ज्योति॑र॒न्तर॒मृतं॑ प्र॒जासु॑ ॥ यस्मा॒न्न ऋ॒ते किञ्च॒न कर्म॑ क्रि॒यते॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वस॑ङ्कल्पमस्तु ॥ १४ ॥

ओ३म् त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं॑ पुष्टि॒वर्द्ध॑नम् ॥ उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒ माऽमृता॑त् ॥ १५ ॥

ओ३म् अ॒ङ्गान्य॒ात्मन्भि॒षजा॒ तद॒श्विनात्मान॒मङ्गैः॒ सम॑धा॒त्सर॑स्वती ॥ इन्द्र॑स्य रू॒पꣳ श॒तमा॑न॒मायु॑श्च॒न्द्रेण॒ ज्योति॑र॒मृतं॒ दधा॑नाः ॥ १६ ॥

ओ३म् प्रा॒णाय॒ स्वाहा॑ऽपा॒नाय॒ स्वाहा॑ व्या॒नाय॒ स्वाहा॒ चक्षु॑षे॒ स्वाहा॒ श्रोत्रा॑य॒ स्वाहा॑ वा॒चे स्वाहा॒ मन॑से॒ स्वाहा॑ ॥ १७ ॥

ओ३म् मनो॑ जू॒तिर्जु॑षता॒माज्य॑स्य॒ बृह॒स्पति॑र्य॒ज्ञमि॒मं तनो॒त्वरि॑ष्टं य॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धातु ॥ विश्वे॑ दे॒वास॑ इ॒ह मा॑दयन्ता॒मो३॒म् ॥ प्रति॑ष्ठ ॥

ओ३म् सम॑ख्ये दे॒व्या धि॒या सं दक्षि॑णयो॒रुच॑क्षसा ॥

मा म ऽआयुः प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव व्वीरं व्विदेय
तव देवि सन्दृशि ॥

सप्तघृतमातृकापूजनमन्त्राः—ॐ व्वसोः पवित्रमसि
शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा
सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा
कामधुक्षः ॥

ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय ॥
पशूनाᳪं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि
स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म
ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ २ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪं सस्तनू-
भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ३ ॥

ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः
प्प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता
ददातु मे स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय

स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा त्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ ५ ॥

ओ३म् आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ६ ॥

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ७ ॥

ओ३म् मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु ॥ विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामो३म्॥ प्रतिष्ठ॥

ओ३म् अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

आयुष्यमन्त्रजपः—ओ३म् आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इदꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ॥ १ ॥

ओ३म् न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुꣳ स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥

नान्दीश्राद्धमन्त्राः—ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ॥ अभि देवाँ२॥ ऽइयक्षते ॥ १ ॥

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳ सनिङ्गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध ॥ स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २ ॥

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः ॥ अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ॥ आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्त्वेन गम्यात् ॥

आचार्यवरणमन्त्रः—ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

ब्रह्मवरणमन्त्रः—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ सबुध्न्या

ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

सदस्यवरणमन्त्रः—ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥

उपद्रष्टृवरणमन्त्रः—ॐ ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्र्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या ऽअश्वसादꣳ स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥

गाणपत्यमन्त्रः—ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

होतृमन्त्रः—ॐ होता यक्षत्समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या ऽअधि ॥ दिवो वर्ष्मन्त्समिध्यत ऽओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः—ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजमानतिलककरणमन्त्रः—ओ३म् स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यज्ञमण्डपप्रदक्षिणामन्त्राः—ओ३म् भद्रं कर्णेभिः० । शतमिन्नुशरदः० । अदितिर्द्यौः० । द्यौः शान्तिः० । यतो-यतः० । ओ३म् ऋचं वाचम्० । यन्मे छिद्रम्० । भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० । कया नः० । कस्त्वा० । अभीषु णः० । कया त्वम्० । इन्द्रो विश्वस्य० । शन्नो मित्रः शं वरुणः० । शन्नो वातः० । अहानि शम्० । शन्नो देवीः० । स्योना पृथिवि० । आपो हि ष्ठा० । यो वः शिवतमः० । तस्मा ऽअरं गमामः० । द्यौः शान्तिः० । दृते दृᳫंह मा मित्रस्य मा० दृते दृᳫंह मा ज्योक्ते० । नमस्ते हरसे शोचिषे० । नमस्ते ऽअस्तु विद्युते० । यतो-यतः० । सुमित्रिया न ऽआपः० । तच्चक्षुर्देवहितम्० ।

मण्डपप्रवेशे मण्डपद्वारभूमिपूजनमन्त्राः—ओ३म् भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृᳫंह पृथिवीं मा हिᳫंसीः ॥१॥ ओ३म् मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥२॥ ओ३म् स्योना

पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥३॥ ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ ४ ॥

दिग्रक्षणमन्त्राः—ओ३म् रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥ १ ॥ रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना ऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्य्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ ॥ २ ॥ रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳ रक्ष ऽइदमहꣳ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोऽवबाध ऽइदमहꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि ॥ घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऽऊर्ध्वनभसं मारुतङ्गच्छतम् ॥ ३ ॥ रक्षोहा विश्वचर्षणीरभियोनि मयो हते ॥ द्रोणे

सधस्थमासदत् ॥ ४ ॥

पञ्चगव्यनिर्माणमन्त्राः—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ २ ॥ ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूंषि तारिषत् ॥ ३ ॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामाऽसि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ ४ ॥

मण्डपप्रोक्षणमन्त्राः—ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ १ ॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥२॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः ॥ उशतीरिव मातरः ॥ ३ ॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथा च नः ॥ ४ ।

वास्तुपूजनमन्त्राः—ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० ॥ १ ॥

ओ३म् शञ्च मे मयश्च मे प्रियञ्च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणञ्च मे भद्रञ्च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ओ३म् यशोवत्यै नमः यशोवतीमा० । २ ।

ओ३म् अम्बेऽअम्बिके० ॥ ओ३म् कान्तायै नमः कान्तामा० ॥३॥ ओ३म् आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरं छन्दो निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः संस्तुप्छन्दोऽनुष्टुप् छन्द ऽएवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दोऽअङ्काङ्कं छन्दः ॥ ओ३म् सुप्रियायै नमः सुप्रियामा० ॥ ४ ॥

ओ३म् अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती ॥ व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ ओ३म् विमलायै० विमलामा० ॥५॥

ओ३म् मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ॥ पशूनाꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ ओ३म् श्रियै० श्रियमा० ॥६॥ ओ३म् वित्तञ्च मे वेद्यञ्च मे भूतञ्च मे भविष्यच्च मे सुगञ्च मे सुपथ्यञ्च म ऽऋद्धञ्च म ऽऋद्धिश्च मे कॢप्तं च मे कॢप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ओ३म् सुभगायै० सुभगामा० ॥७॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ सुमत्यै० सुमतिमा० ॥ ८ ॥ ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिङ्गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध ॥ स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे ॥ ॐ इडायै० इडामा० ॥ ९ ॥

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा ॥ दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥ ॐ धान्यायै० धान्यामा० ॥ १ ॥ ॐ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च म ऽआधीतञ्च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ प्राणायै० प्राणामा० ॥ २ ॥ ॐ श्रीश्च ते० ॥ ॐ विशालायै० विशालामा० ॥ ३ ॥ ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ॥ अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ॐ स्थिरायै नमः स्थिरामावा० ॥४॥ ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽअपरीतास ऽउद्भिदः ॥ देवा नो यथा सदमिद्वृधे

ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ ॐ भद्रायै नमः भद्रामा० ॥५॥ ॐ व्वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्क्रतवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा-ऽहर्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय व्वैनꣳ शिनाय स्वाहा व्विनꣳ शिनं ऽआन्त्यायनाय स्वाहा-ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा-ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्ते राण्मित्राय यन्तासि यमन ऽऊर्ज्जे त्वा व्वृष्ट्यै त्वा प्रजानान्त्वाधि-पत्याय ॥ ॐ जयायै० जयामा० ॥६॥ ॐ इन्द्रस्य व्वृष्णो व्वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुताꣳ शर्द्ध ऽउग्रम् ॥ महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ॐ निशायै० निशामा० ॥७॥ ॐ अग्निर्ज्योतिः० ॥ ॐ विरजायै० विरजामा० ॥८॥ ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा । मा म ऽआयुः प्रमोषीर्म्मो ऽअहन्तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ ॐ विभवायै० विभवामा० ॥९॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवत-राय च ॥ ॐ भू० शिखिने नमः शिखिनमा० ॥१॥ ॐ शन्नो व्वातः पवताꣳ शं नस्तपतु सूर्य्यः ॥

शं न॑ः कनि॑क्रदद्दे॒वः प॒र्जन्यो॑ऽअ॒भिव॑र्षतु ॥ ओँ भू० पर्जन्याय० पर्जन्यमा० ॥ २ ॥ ओँ मर्मा॑णि ते॒ वर्म॑णा च्छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॒ऽमृते॒नानु॑वस्ताम् ॥ उ॒रोर्वरी॑यो॒ वरु॑णस्ते कृणोतु॒ जय॑न्तं॒ त्वानु॑ दे॒वा म॑दन्तु ॥ ओँ भू० जयन्ताय० जयन्तमा० ॥ ३ ॥ ओँ स॒जोषा॑ऽइन्द्र॒ सग॑णो म॒रुद्भि॑ः सोमं॑ पिब वृत्र॒हा शू॑र वि॒द्वान् ॥ ज॒हि शत्रूँ॒२॥ रप॒ मृधो॑ नुद॒स्वाथाभ॑यं कृणुहि वि॒श्वतो॑ नः ॥ ओँ भू० कुलिशायुधाय० कुलिशायुधमा० ॥ ४ ॥ ओँ आ कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवे॒शय॑न्न॒मृतं॒ मर्त्यं॑ च ॥ हि॒र॒ण्यये॑न सवि॒ता रथे॒ना दे॒वो या॑ति॒ भुव॑नानि॒ पश्य॑न् ॥ ओँ भू० सूर्याय० सूर्यमा० ॥ ५ ॥ ओँ व्र॒तेन॑ दी॒क्षामा॑प्नोति दी॒क्षया॑प्नोति॒ द॒क्षिणा॑म् ॥ द॒क्षिणा॑ श्र॒द्धामा॑प्नोति श्र॒द्धया॑ स॒त्यमा॑प्यते ॥ ओँ भू० सत्याय० सत्यमा० ॥ ६ ॥ ओँ आ त्वा॑हार्षम॒न्तर॑भूर्ध्रु॒वस्ति॒ष्ठाऽवि॑चाचलिः ॥ विश॑स्त्वा॒ सर्वा॑ वाञ्छन्तु॒ मा त्वद्रा॒ष्ट्रमधि॑भ्रशत् ॥ ओँ भू० भृशाय० भृशमा० ॥ ७ ॥ ओँ या वां॒ कशा॒ मधु॑मत्य॒श्विना॑ सू॒नृता॑वती ॥ तया॑ य॒ज्ञं मि॑मिक्षतम् ॥ ओँ भू० आकाशाय० आकाशमा० ॥ ८ ॥

ओ३म् ऽआयो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये । ओ३म् भू० वायवे० वायुमा० ।।९।।
ओ३म् पूषन् तव ऽव्रते वयं न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्त ऽइह स्मसि ॥ ओ३म् भू० पूष्णे० पूषाणमा० ॥१०॥ ओ३म् तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्विततं सञ्जभार ॥ यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री ऽवासस्तनुते सिमस्मै ॥ ओ३म् भू० वितथाय० वितथमा० ॥११॥ ओ३म् अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत ॥ अस्तोषत स्वभानवो ऽविप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥ ओ३म् भू० गृहक्षताय० गृहक्षतमा० ॥१२॥ ओ३म् यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ओ३म् भू० यमाय० यममा० ॥१३॥ ओ३म् गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः ॥ इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः ॥ मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः ॥ ओ३म् भू० गन्धर्वाय० गन्धर्वमा० ॥१४॥ ओ३म् सौरी बलाका शार्गः सृजयः

शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् श्वावि-
द्भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते
शुकः पुरुषवाक् ॥ ॐ भू० भृङ्गराजाय० भृङ्ग-
राजमा० ॥१५॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः
परावत ऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकꣳ सꣳशाय पवि-
मिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥
ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥१६॥ ॐ उशन्तस्त्वा
निधीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशत ऽआवह
पितृन्हविषे ऽअत्तवे ॥ ॐ भू० पितृभ्यो० पितृना०
॥१७॥ ॐ द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे ऽअन्यान्या
वत्समुप धापयेते ॥ हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो
ऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥ ॐ भू० दौवारिकाय०
दौवारिकमा० ॥१८॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा
दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव
धन्वानि तन्मसि ॥ ॐ भू० सुग्रीवाय० सुग्रीवमा०
॥१९॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो
विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ ॐ भू० पुष्पदन्ताय०
पुष्पदन्तमा० ॥२०॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी

इवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ २१ ॥ ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ॥ इमं तꣳ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्ष-यामि ॥ ॐ भू० असुराय० असुरमा० ॥२२॥ ॐ या ऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीꣳ॥ रनु ॥ ये वाऽवटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० शेषाय० शेषमा० ॥२३॥ ॐ एतत्ते रुद्राऽ-वसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वा पिना-कावसः कृत्तिवासा ऽअहिꣳसन्नः शिवोऽतीहि ॥ ॐ भू० पापाय० पापमा० ॥ २४ ॥ ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ॥ आसां प्रजाना-मेषां पशूनां माभेर्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ॐ भू० रोगाय० रोगमा० ॥ २५ ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः ॥ ॐ भू० अहिर्बुध्न्याय० अहि-र्बुध्न्यमा० ॥ २६ ॥ ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ॥ निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ ॐ भू० मुख्याय० मुख्यमा० ॥२७॥

ओ३म् इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ॥ यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ओ३म् भू० भल्लाटाय० भल्लाटमा० ॥२८॥ ओ३म् वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ओ३म् भू० सोमाय० सोममा० ॥ २९ ॥ ओ३म् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ओ३म् भू० सर्पाय० सर्पमा० ॥ ३० ॥ ओ३म् अदितिर्द्यौः० ॥ ओ३म् भू० अदितये० अदितिमा० ॥ ३१ ॥ ओ३म् इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत ॥ मयि वः कामधरणं भूयात् ॥ ओ३म् भू० दितये दितिमा० ॥ ३२ ॥ ओ३म् आपो हि ष्ठा० ॥ ओ३म् भू० अद्भ्यो० अपः आवा० ॥३३॥ ओ३म् आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् ॥ अग्ने त्वां कामया गिरा ॥ ओ३म् भू० आपवत्साय० आपवत्समा० ॥ ३४ ॥ ओ३म् यदद्य सूर ऽउदितेऽनागा मित्रो ऽअर्य्यमा ॥ सुवाति सविता भगः ॥ ओ३म् भू० अर्य्यम्णे० अर्य्यमाणमा० ॥ ३५ ॥ ओ३म् हस्त ऽआधाय सविता बिभ्रदभ्रिꣳ हिरण्ययीम् ॥ अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य

पृथिव्या ऽअदृब्धाभ्भंरदानुष्टुभेन् च्छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥
ॐ भू० सावित्राय० सावित्रमा० ॥ ३६ ॥ ॐ
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं
तन्न ऽआसुव ॥ भू० सवित्रे० सवितारमा० ॥ ३७ ॥
ॐ विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व ॥
श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती
व्वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा
व्विश्वाहारप ऽएधते गृहे ॥ ॐ भू० विवस्वते० विव-
स्वन्तमा० ॥ ३८ ॥ ॐ स बोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपते
व्वसुदावन् ॥ युयोध्यस्मद्द्वेषाᳬसि व्विश्वकर्म्मणे
स्वाहा ॥ ॐ भू० विबुधाधिपाय० विबुधाधिपमा०
॥ ३९ ॥ ॐ अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिᳬ स्वर्षामप्सां
व्वृजनस्य गोपाम् ॥ भरेषुजाᳬ सुक्षितिᳬ सुश्रवसं
जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥ ४० ॥ ॐ मित्रो
न ऽएहि सुमित्रध ऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नु-
शन्तᳬ स्योनः स्योनम् ॥ स्वान भ्राजाङ्घारे बम्भारे
हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वं
मा वो दभन् ॥ ॐ भू० मित्राय० मित्रमा० ॥ ४१ ॥
ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शस ऽउपचितामसि ॥
अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी ॥ ॐ

भू० राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्माणमा० ॥ ४२ ॥ ॐ अवं रुद्रमदीमह्यवं देवं त्र्यम्बकम् ॥ यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥ ॐ भू० रुद्राय० रुद्रमा० ॥४३॥ ॐ स्योना पृथिवि० ॥ ॐ भू० पृथ्वीधराय० पृथ्वीधरमा० ॥४४॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० ॥ ४५ ॥ ॐ यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम् ॥ तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्धि प्रसूतः ॥ नमो भूत्यै येदं चकार ॥ ॐ भू० चरक्यै० चरकीमा० ॥१॥ ॐ अक्षराजाय कितवं कृताय दिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण ऽउप तिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥ ॐ भू० विदार्य० विदारीमा० ॥२॥ ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशि-

भिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मा-
न्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याᳪ समुद्रमुदरेण
वैश्वानरं भस्मना ॥ ॐ भू० पूतनायै० पूतनामा०
॥ ३ ॥ ॐ यस्यास्ते घोर ऽआसन् जुहोम्येषां
बन्धानामवसर्जनाय ॥ यां त्वा जनो भूमिरिति
प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः । ॐ
पापराक्षस्यै० पापराक्षसीमा० ॥४॥ ॐ यदक्रन्दः
प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात् ॥
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं
ते ऽअर्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा०
॥१॥ ॐ यदुद्य सूर ऽउदितेऽनागा मित्रो ऽअर्य्यमा ॥
सुवाति सविता भगः ॥ ॐ भू० अर्यम्णे० अर्य-
माणमा० ॥ २ ॥ ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय
स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते
स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय
स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय
स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय
स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते
स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा
विचृत्ताय स्वाहा सᳪहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा-

ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ॐ भू० जृम्भकाय० जृम्भकमा० ॥ ३ ॥ ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः किᳬ स्विदासीद् बृहद्वयः ॥ का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥ ॐ भू० पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छमा० ॥ ४ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬ हवेहवे सुहवᳬ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥ १ ॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥ २ ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यममा० ॥ ३ ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥ ४ ॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशᳬस मा न ऽआयुः प्र मोषीः ॥ ॐ भू० वरुणाय०

वरुणमा०॥५॥ ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥६॥ ॐ व्रयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥७। ॐ तमीशानम० ॥ ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥८॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥ यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ२॥ ऽअवन्तु देवाः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥९॥ ॐ स्योना पृथिवि० ॥ ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा० ॥ १० ॥

अग्न्युत्तारणमन्त्राः--ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि ॥ पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ ॥ १ ॥ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि ॥ पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥२॥ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳ शिवं कृधि ॥ ३ ॥ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ

शिवो भव ॥४॥ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव
जिह्वया ॥ आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥ स नः
पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ ॥ऽइहावह ॥ उप यज्ञꣳ
हविश्च नः ॥ ६ ॥ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा
क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना ॥ तूर्वन्न यामन्ने-
तशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः
॥७॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे ॥
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ
शिवो भव ॥ ८ ॥ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे
वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥ ९ ॥ ये देवा
देवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳ संवत्सरीणमुप
भागमासते ॥ अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मि-
न्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥ ये देवा देवेष्वधि
देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य ॥ येभ्यो
न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या
ऽअधि स्नुषु ॥११॥ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा
वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु
हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ १२ ॥

प्राणप्रतिष्ठामन्त्राः---ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ
शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः प्राणा

इह प्राणाः ॥

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ चँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितः ॥

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ चँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद्-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपाᳬशुरुपाᳬशोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ॥ राजा मे प्राणो अमृतᳬ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥

ॐ पुनर्मनः पुनरायुर्म्म आगन्पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म्म आगन् । वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्न्नः पातु दुरितादवद्यात् ॥

ॐ अपां पेरुरस्याणो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः ॥ सं ते प्राणो वातेन गच्छताᳬंᳬ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬं समिमं दधातु ॥ विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामोँ३॥ प्रतिष्ठ ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः ॥ यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

रक्षोघ्नसूक्तम्—ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२॥ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिं दूद्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूᳬंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥२॥ प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः । यो नो दूरे ऽअघशᳬंसो यो ऽअन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥

उद॑ग्ने तिष्ठ प्रत्यात॑नुष्व न्यमित्राँ२॥ ऽओष-तात्तिग्महेते॥ यो नो ऽअरा॑तिᳬ समिधान चक्के नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्क॑म् ॥ ४ ॥ ऊर्द्ध्वो भ॑व प्रति-विध्याध्यस्मदाविष्क॑णुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अव॑ स्थिरा त॑नुहि यातुजूनां जामिमजा॑मिं प्रमृ॑णीहि शत्रून् ॥ अग्नेष्ट्वा तेज॑सा सादयामि ॥ ५ ॥

पवमानसूक्तम्——ओ३म् पुन॑न्तु मा पितर॑ᳬ सोम्यास॑ᳬ पुन॑न्तु मा पितामहाः पुन॑न्तु प्रपि॑तामहाः पवित्त्रे॑ण शतायु॑षा॥ पुन॑न्तु मा पितामहाः पुन॑न्तु प्रपितामहाः पवित्त्रे॑ण शतायु॑षा विश्व॒मायु॒र्व्य॑श्नवै ॥ १ ॥ अग्न ऽआयूᳬषि पवस ऽआसुवोर्ज्ज॒मिषं॑ च नः ॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥२॥ पुन॑न्तु मा देवज॒नाः पुन॑न्तु मन॑सा धियः ॥ पुन॑न्तु विश्वा भूतानि जात॑वेदः पुनीहि मा ॥३॥ पवित्त्रे॑ण पुनीहि मा शुक्रेण॑ देव दीद्य॑त् ॥ अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२॥ ऽरनु॥ ४॥ यत्ते॑ पवित्त्र॑म-र्चिष्यग्ने वित॑तमन्तरा ॥ ब्रह्म तेन॑ पुनातु मा ॥५॥ पव॑मानः सो ऽअद्य न॑ᳬ पवित्त्रे॑ण विच॑र्षणिः ॥ यः पोता स पु॑नातु मा ॥६॥ उभाभ्यां॑ देव सवितः पवित्त्रे॑ण सवेन॑ च ॥ मां पु॑नीहि विश्वतः ॥ ७ ॥

विश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः ॥ तया मदन्तः सधमादेषु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ८ ॥

मण्डपपूजनमन्त्राः—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥१॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णं ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ॥ ऊर्द्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे । ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-ऽभयं नः पशुभ्यः ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥२॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ ३ ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णः ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ

शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥४॥ ॐ ऊर्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ५ ॥ ॐ ऊर्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ६ ॥ ऊर्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥७॥ ॐ ऊर्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥८॥ ॐ ऊर्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्सं-
मुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू
ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्वन् ॥९॥ ॐ ऊर्द्ध्वं
ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा-
गहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥१०॥ ॐ ऊर्द्ध्वं ऽऊ
षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम
वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥११॥ ॐ ऊर्द्ध्वं
ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥
त्वामवस्युराचके ॥ १२ ॥ ॐ ऊर्द्ध्वं ऽऊ षु णः०
ॐ आयङ्गौ० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा
सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्याव-
ताम् ॥ व्यन्तु वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ
वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ॥
चक्षुष्पा ऽअग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥१३॥ ॐ ऊर्द्ध्वं
ऽऊ षु णः० ॥ ॐ आयङ्गौः० ॥ ॐ यतोयतः० ॥

ओ३म् सोमो धेनुꣳ सोमो ऽअर्वन्तमाशुꣳ सोमो व्वीरं कर्म्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं व्विदथ्यꣳ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ १४ ॥ ओ३म् ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ओ३म् आयङ्गौः० ॥ ओ३म् यतोयतः० ॥

ओ३म् बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥१५। ओ३म् ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ओ३म् आयङ्गौः० ॥ ओ३म् यतोयतः० ॥

ओ३म् व्विश्वकर्म्मन् हविषा व्वर्द्धनेन त्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ॥ तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत् ॥१६॥ ओ३म् ऊर्द्ध्व ऽऊ षु णः० ॥ ओ३म् आयङ्गौः० ॥ ओ३म् यतोयतः० ॥

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥ ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा व्वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माघशꣳसो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ २ ॥ ओ३म् अग्न आयाहि वीतये गृणानो

हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि बर्हिषि ॥३॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः ॥ ४ ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬ हवेहवे सुहवᳬ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳩ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥१॥ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिष ऽएकवीरः शतᳬ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥२॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च व्वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषᳬ रक्षमाणस्तव व्व्रते ॥३॥ ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ ऽआसादयादिह ॥४॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ५ ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ६ ॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशᳬ स मा न ऽआयुः प्प्रमोषीः ॥७॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमᳩ श्रथ-

याय॥ अथा व॒यमा॑दित्य व्र॒ते तवाना॑गसो॒ऽअदि॑तये स्याम ॥८॥ ओ३म् आ नो॑ नि॒युद्भिः॑ श॒तिनी॑भिरध्व॒रꣳ स॑ह॒स्रिणी॑भि॒रुप॑याहि य॒ज्ञम् । वायो॑ऽअ॒स्मिन्त्सव॑ने मादयस्व यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ९ ॥ ओ३म् वायो॒ ये ते॑ सह॒स्रिणो॒ रथा॑स॒स्तेभि॒राग॑हि ॥ नि॒युत्वा॒न्त्सोम॑पीतये ॥ १० ॥ ओ३म् शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ । शं योर॒भिस्र॑वन्तु नः ॥ ओ३म् व॒यꣳ सो॑म व्र॒ते तव॒ मन॑स्त॒नूषु॒ बिभ्र॑तः । प्र॒जाव॑न्तः सचेमहि ॥ ओ३म् आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्ण्य॑म् ॥ भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे ॥ ओ३म् तमीशा॑नं॒ जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑ धियञ्जि॒न्वमव॑से हूमहे व॒यम् ॥ पू॒षा॒ नो॒ यथा॒ वेद॑सा॒मस॑द्वृ॒धे र॑क्षि॒ता पा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॑ ॥ ओ३म् अ॒स्मे रु॒द्रा मे॒हना॒ पर्व॑तासो वृत्र॒हत्ये॒ भर॑हूतौ स॒जोषाः॑ ॥ यः शꣳस॑ते स्तु॒वते॒ धायि॑ प॒ज्रऽइन्द्र॑ज्येष्ठा॒ऽअ॒स्माँ२ऽअ॑वन्तु दे॒वाः ॥ ओ३म् ब्रह्म॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि सी॑म॒तः सु॒रुचो॑ वे॒न ऽआ॑वः ॥ स बु॒ध्न्या॒ऽउप॒मा ऽअ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ विवः॑ ॥ ओ३म् स्यो॒ना पृ॑थिवि नो भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नि ॥ यच्छा॑नः॒ शर्म॑ स॒प्रथाः॑ ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः० ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥

सर्वतोभद्रपूजनमन्त्राः---ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० ॥१॥ ॐ आप्यो-

यस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥२॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥ ४ ॥ ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥५॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यममा० ॥६॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सा तं ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥ ७ ॥ ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशंस मा न ऽआयुः

ऽप्रमोषीः ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ ८ ॥
ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणी-
भिरुपयाहि यज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भू० वायवे०
वायुमा० ॥९॥ ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदि-
त्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा
वृष्ट्यावताम् ॥ व्यन्तु वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां
पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवङ्गच्छ ततो नो
वृष्टिमावह ॥ चक्षुष्पा ऽअग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥
ॐ भू० अष्टवसुभ्यो० अष्टवसूना० ॥ १० ॥ ॐ
नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहु-
भ्यामुत ते नमः ॥ एकादशरुद्रेभ्यो० एकादश-
रुद्राना० ॥११॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमा-
दित्यासो भवता मृडयन्तः । आ वोऽर्वाची सुमति-
र्ववृत्याद्ꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥ ॐ भू०
द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्याना० ॥ १२ ॥ ॐ
यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं
मिमिक्षतम् ॥ ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥१३॥
ॐ विश्वे देवास ऽआगत शृणुता म ऽइमꣳ हवम् ॥
एदं बर्हिर्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्य

स्त्वा देवेभ्यं एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥ ॐ भू० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान् देवाना० ॥ १४ ॥ ॐ अभि त्यं देवꣳ सवितार-मोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम् ॥ ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा ऽअदि-द्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्व-मनुप्राणिहि ॥ ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षा-ना० ॥ १५ ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पे-भ्यो नमः ॥ ॐ भू० अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुल-नागाना० ॥ १६ ॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्ग-न्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ॥ स न ऽइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥ ॐ भू० गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आवा० ॥१७॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्स-मुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥१८॥ ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥

सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भू० वृषभाय० वृषभमा० ॥१९॥ ॐ काषिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० शूलाय० शूलमा० ॥२०॥ ॐ काषिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० महाकालाय० महाकालमा० ॥२१॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥ ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणाना० ॥ २२ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥ २३ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥ २४ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥

ॐ भू० स्वधायै० स्वधामा० ॥२५॥ ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि पन्थां यस्ते ऽअन्य ऽइतरो देवयानात् ॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाᳬं रीरिषो मोत वीरान् ॥ ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना० ॥२६॥ ॐ गणानां त्वा० ॥ ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा० ॥२७॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्जे दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥ ॐ भू० अद्भ्यो० अपः आ० ॥ २८ ॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः ॥ स सुगोपातमो जनः ॥ ॐ भू० मरुद्भ्यो० मरुतः आ०॥२९॥ ॐ स्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमा० ॥ ३० ॥ ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युरा चके ॥ ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो० गङ्गादिनदीः आ० ॥ ३१ ॥ ॐ ॐसमुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागराना० ॥ ३२ ॥

ॐ प्र पर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच
ऽइयानाः॥ ता ऽआववृत्रन्नधरागुदक्ता ऽअहिम्बुध्न्य-
मनु रीयमाणाः॥ विष्णोर्विक्क्रमणमसि विष्णोर्व्वि-
क्क्रान्तमसि विष्णोः क्क्रान्तमसि॥ ॐ भू० मेरवे०
मेरुमा० ॥ ३३ ॥ ॐ गणानां त्वा० ॥ ॐ भू०
गदायै० गदामा० ॥ ३४ ॥ ॐ त्रिंशद्धाम
व्विराजति व्वाक् पतङ्गाय धीयते॥ प्रति वस्तोरह
द्युभिः॥ ॐ भू० त्रिशूलाय० त्रिशूलमा० ॥३५॥
ॐ महाँ२॥ ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म
यच्छतु॥ हन्तु पाप्मानं य्योऽस्मान् द्वेष्टि। उप-
यामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्म्महेन्द्राय
त्वा॥ ॐ भू० वज्राय० वज्रमा० ॥३६॥ ॐ व्वसु
च मे व्वसतिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च
म ऽएमश्च म ऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन
कल्पन्ताम्॥ ॐ भू० शक्त्यै० शक्तिमा० ॥ ३७॥
ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत॥ मयि वः
कामधरणं भूयात्। ॐ भू दण्डाय० दण्डमा०
॥३८॥ ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो
गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिंहो
मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै

विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ ॐ भू० खड्गाय० खड्गमा० ॥३९॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥ ॐ भू० पाशाय० पाशमा० ॥ ४० । ॐ अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म ऽउपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म ऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ भू० अङ्कुशाय० अङ्कुशमा० ॥ ४१ । ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ भू० गौतमाय० गौतममा० ॥४२॥ ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्म्मा तस्य मनो वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारादन्तर्यामोऽन्तर्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद्भरद्वाज ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ भू० भरद्वाजाय० भरद्वाजमा० ॥४३॥ ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳ सौवꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद् वैराजं विश्वामित्र ऽऋषिः प्रजा-

पतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥
ॐ भू० विश्वामित्राय० विश्वामित्रमा० ॥ ४४ ॥
ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ ॐ भू०
कश्यपाय० कश्यपमा० ॥ ४५ ॥ ॐ अयं पश्चा-
द्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चा-
क्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऽऋक्सममृक् समा-
च्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्नि-
ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि
प्रजाभ्यः ॥ ॐ भू० जमदग्नये० जमदग्निमा०
॥ ४६ ॥ ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो
वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै
गायत्रं गायत्रादुपांशुरुपांशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो
रथन्तरं वसिष्ठ ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया
प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ॐ भू० वसिष्ठाय०
वसिष्ठमा० ॥ ४७ ॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं
यथाभागमावृषायध्वम् ॥ अमीमदन्त पितरो यथा
भागमावृषायिषत ॥ ॐ भू० अत्रये० अत्रिमा०
॥४८॥ ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृ-
भिरुत वा हिरण्ययैः ॥ नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य

लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः ॥ ॐ भू० अरुन्धत्यै० अरुन्धतीमा० ॥ ४९ ॥ ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः ॥ पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥ ॐ भू० ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीमा० ॥५०। ॐ अम्बे ऽअम्बिके० ॥ ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥ ५१ ॥ ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः ॥ उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ ॐ भू० ब्राह्म्यै० ब्रह्मीमा० ।५२॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निर-क्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ५३ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० ॥ ॐ भू० चामुण्डायै० चामुण्डामा० ॥ ५४ ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भू० वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥५५॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ॐ भू० माहेश्वर्यै० माहेश्वरीमा० ॥ ५६ ॥ ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मा म ऽआयुः प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ ॐ भू० वैनायक्यै० वैनायकीमा० ॥ ५७ ॥

लिङ्गतोभद्रपूजनमन्त्राः—ॐ नमः कृत्स्नायतया
धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्या-
धिने ऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे
ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरा-
यारण्यानां पतये नमः ॥ ॐ भू० असिताङ्गभैरवाय०
असिताङ्गभैरवमा० ॥१॥ ॐ श्वित्र ऽआदित्यानामुष्ट्रो
घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽअरण्याय सृमरो
रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय
पिकः ॥ ॐ भू० रुरुभैरवाय० रुरुभैरवमा० ॥२॥
ॐ उग्रँ लोहितेन मित्रँ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्र-
त्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा ॥
भवस्य कण्ठ्यँ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य
यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भू०
चण्डभैरवाय० चण्डभैरवमा० ॥ ३ ॥ ॐ इन्द्रस्य
क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूता-
हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽउदर्येण चक्र-
वाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरु-
पलान्प्लीह्ना वल्मीकान् क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्
हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याँ समुद्रमुदरेण
वैश्वानरं भस्मना ॥ ॐ भू० क्रोधभैरवाय०

क्रोधभैरवमा० ॥४॥ ॐ उन्नत ऽऋषभो वामनस्त ऽऐन्द्रावैष्णवा ऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठास्त ऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषा ऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ ॐ भू० उन्मत्तभैरवाय० उन्मत्तभैरवमा० ॥ ५ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि ॥ समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० कपालभैरवाय० कपालभैरवमा० ॥ ६ ॥ ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥ ॐ भू० भीषणभैरवाय० भीषण-भैरवमा० ॥ ७ ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ॐ भू० संहार-भैरवाय० संहारभैरवमा० ॥८॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च । ॐ भू० भवाय० भवमा० ।९॥ ॐ अग्निं हृदयेनाशनिं हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना ॥ शर्वं मतस्नाभ्या-मीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं

व्वनिष्ठुना व्वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याब्भ्याम् ॥
ॐ भू० सर्वाय० सर्वमा० ॥ १० ॥ ॐ उग्रं
ल्लोहितेन मित्त्रꣳ सौव्वर्त्येन रुद्द्रं दौर्व्वर्त्येनेन्द्द्रं
प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्रमुदा ॥ भवस्य
कण्ठ्यꣳ रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य
व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भू० पशुपतये०
पशुपतिमा० ॥ ११ ॥ ॐ तमीशानम्० ॥ ॐ भू०
ईशानाय० ईशानमा० ॥ १२ ॥ ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यव
ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥
ॐ भू० रुद्राय० रुद्रमा० ॥ १३ ॥ ॐ उग्रश्च
भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वा च
व्विक्षिपः स्वाहा ॥ ॐ भू० उग्राय० उग्रमा०
॥ १४ ॥ ॐ व्वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण्णं
तमसः परस्तात् ॥ तमेव व्विदित्वाऽति मृत्युमेति
नान्न्यः पन्था व्विद्यतेऽयनाय ॥ ॐ भू० भीमाय०
भीममा० ॥ १५ ॥ ॐ मा नो महान्तमुत मा नो
ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् ॥
मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्प्रिया-
स्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः । ॐ भू० महते० महान्तमा०
॥ १६ ॥ ॐ स्योना पृथिवी० ॥ ॐ भू० अनन्ताय०

अनन्तमा० ॥ १७ ॥ ओ३म् दुहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ॥ निहारञ्च हरासि मे निहारं निर्हराणि ते स्वाहा ॥ ओ३म् भू० वासुकये० वासुकिमा० ॥ १८ ॥ ओ३म् नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ ओ३म् भू० तक्षकाय० तक्षकमा० ॥१९॥ ओ३म् पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्यकः ॥ ओ३म् भू० कुलिशाय० कुलिशमा० ॥ २० ॥ ओ३म् सोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥ ओ३म् भू० कर्कोटकाय० कर्कोटकमा० ॥ २१ ॥ ओ३म् अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ॥ तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चस ऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे । ओ३म् शङ्खपालाय० शङ्खपालमा० ॥ २२ ॥ ओ३म् सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽऊर्णासूत्रेण कवयो

ऽवयन्ति । अश्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य
रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥ ॐ भू० कम्बलाय०
कम्बलमा० ॥ २३ ॥ ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते
प्राजापत्याः कृष्णग्रीव ऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सा-
रस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः
सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याꣳ सौर्ययामौ श्वेत-
तश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ
सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ ऽइन्द्राय स्वपस्याय
वेहद्वैष्णवो वामनः ॥ ॐ भू० अश्वतराय० अश्व-
तरमा० ॥ २४ ॥ ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो
नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च
पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥
ॐ भू० शूलाय० शूलमा० ॥ २५ ॥ ॐ
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत ॥
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॐ
भू० चन्द्रमौलिने० चन्द्रमौलिनमा० ॥ २६ ॥ ॐ
चन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ॥ रयिं
पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ॥
ॐ भू० चन्द्रमसे० चन्द्रमसमा० ॥ २७ ॥ ॐ
आशुः शिशानः० ॥ ॐ भू० वृषभध्वजाय० वृषभ-

ध्वजमा० ॥२८॥ ॐ सुगा वो देवाः सदना ऽअकर्म्म य ऽआजग्मेदꣳ सवनं जुषाणाः ॥ भरमाणा व्वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त व्वसवो व्वसूनि स्वाहा ॥ ॐ भू० त्रिलोचनाय० त्रिलोचनमा० ॥ २९ ॥ ॐ रुद्द्राः सꣳसृज्ज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे॥ तेषां भानुरजस्त्र ऽइच्छुक्को देवेषु रोचते ॥ ॐ भू० शक्तिधराय० शक्तिधरमा० ॥ ३० ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॐ भू० महेश्वराय० महेश्वरमा० ॥३१॥ ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम् । ॐ भू० शूलपाणये० शूलपाणिमा० । ३२ ॥

कुण्डमेखलापूजनमन्त्राः—ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमा० ॥१॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः ॥ स बुध्न्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० ॥ २ ॥ ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ भू० रुद्राय नमः ० रुद्रमा० । ३ ॥

कुण्डयोनिपूजनमन्त्रः—ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ॐ भू० गौर्य्यै० गौरीमा० ॥

कुण्डकण्ठपूजनमन्त्रः—ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ॐ भू० कण्ठाय नमः कण्ठमा० ॥

कुण्डनाभिपूजनमन्त्रः—ॐ नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्म्मेऽपचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः ॥ जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥ ॐ भू० नाभ्यै नमः नाभिमा० ॥

विश्वकर्मापूजनमन्त्रः—ॐ विश्वकर्म्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ॥ तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ ॐ भू० विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्म्माणमा० ॥

अग्निस्थापनमन्त्रः—ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ॥ देवाँ२॥ ऽआ सादयादिह ॥ १ ॥
ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त

हस्तासो ऽअस्य ॥ त्रिधा बुद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२॥ ऽआविवेश ॥ २ ॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु ॥ विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों३॥ प्रतिष्ठ ॥ ३ ॥

नवग्रहपूजनमन्त्राः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भू० सूर्याय नमः सूर्यमा० ॥ १॥ ॐ इमन्देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्त्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इममुमुष्य पुत्त्रममुष्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥ २ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ॥ अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥ ॐ भू० भौमाय० भौममा० ॥ ३ ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳ सृजेथामयं च ॥ अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ ॐ भू० बुधाय० बुधमा० ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवस

ऽऋतप्रजात तदुस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ भू० बृहस्पतये० बृहस्पतिमा० ॥ ५ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥ ॐ भू० शुक्राय० शुक्रमा० ॥ ६ ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ ॐ भू० शनैश्चराय० शनैश्चरमा० ॥ ७ ॥ ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठया वृता ॥ ॐ भू० राहवे० राहुमा० ॥ ८ ॥ ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ ॐ भू० केतवे० केतुमा० ॥ ९ ॥

ग्रहाधिदेवतानां पूजनमन्त्राः—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ ॐ भू० ईश्वराय नमः ईश्वरमा० ॥ १ ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ ॐ भू० उमायै० उमामा० ॥ २ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ॥ श्येनस्य

पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्वन् ॥
ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥ ३ ॥ ॐ विष्णो
रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥
ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥४॥ ॐ आ ब्रह्मन्
ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः
शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू
रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां
निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न
ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ
भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥५॥ ॐ सजोषा ऽइन्द्र
सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ॥
जहि शत्रूँ२॥ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो
नः ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥६॥ ॐ यमाय
त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा
घर्म्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यममा० ॥ ७ ॥
ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि ॥
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू०
कालाय० कालमा० ॥ ८ ॥ ॐ चित्रावसो स्वस्ति

तें पारमंशीय ॥ ॐ भू० चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तमा० ॥ ९ ॥

ग्रहप्रत्यधिदेवतानां पूजनमन्त्राः—ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२॥ऽआसादयादिह ॥ ॐ भू० अग्नये० नमः अग्निमा० ॥१॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नं ऽऊर्जे दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥ ॐ भू० अद्भ्यो० अपः आ० ॥ २ ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमा० ॥३॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पांसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥४॥ ॐ इन्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥ ५ ॥ ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः ॥ पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥ ॐ भू० इन्द्राण्यै० इन्द्राणीमा० ॥६॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ॐ भू० प्रजापतये० प्रजापतिमा० ॥७॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० सर्पेभ्यो० सर्पाना० ॥ ८ ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥ ९ ॥

विनायकादिपञ्चलोकपालानां पूजनमन्त्राः—ॐ गणानां त्वा० ॥ ॐ भू० गणपतये० नमः गणपतिमा० ॥ १ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० ॥ ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥ २ ॥ ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥ ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥ ३ ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ भू० आकाशाय० आकाशमा० ॥४॥ ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥ ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ आ० ॥ ५ ॥

वास्तोष्पतिपूजनमन्त्रः—ॐ वास्तोष्पते प्रति

जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽअनमी वो भवानः ॥ यत्त्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ॐ भू० वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमा० ॥

क्षेत्रपालपूजनमन्त्रः— ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥ ॐ भू० क्षेत्राधिपतये० नमः क्षेत्राधिपतिमा० ॥

दशदिक्पालपूजनमन्त्राः—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमा० ॥१॥ ॐ त्वं नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥ ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥२॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यममा० ॥३॥ ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥४॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥५॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥६॥ ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥ ७ ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥ ८ ॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥ यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ२ ॥ ऽअवन्तु देवाः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥९॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा० ॥ १० ॥

योगिनीपूजनमन्त्राः—ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः

सुमंदिद्रकां काम्पीलवासिनीम् ॥ १ ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ २ ॥ ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ३ ॥

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनं शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० दिव्य-

योगिन्यै० नमः दिव्ययोगिनीमा० ॥ १ ॥ ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनीमा० ॥२॥ ॐ महाँ२ । ऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु ॥ हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा ॥ ॐ भू० सिद्धियोगिन्यै० सिद्धियोगिनीमा० ॥ ३ ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ माहेश्वर्य्यै० माहेश्वरीमा० ॥ ४ ॥ ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् ॥ परिवृङ्धि हरसा माभि मंꣳस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः ॥ ॐ भू० प्रेताक्ष्यै० प्रेताक्षीमा० ॥५॥ ॐ स्वर्णघर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्क्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्ज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्य्यः स्वाहा ॥ ॐ भू० डाकिन्यै० डाकिनीमा०

॥६॥ ॐ सत्यञ्चं मे श्रद्धा चं मे जगंच्च मे धनंञ्च मे विश्वञ्चं मे महंश्च मे क्रीडा चं मे मोदंश्च मे जातञ्चं मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्चं मे सुकृतञ्चं मे यज्ञेनं कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० काल्यै० कालीमा० ॥ ७ ॥ ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभाया ऽअग्न्येधं ब्रध्नस्यं विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकायं पेशितारं मनुष्यलोकायं प्रकरितारꣳ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यं ऽउपसेक्तारमवं ऽऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामायं रजयित्रीम् ॥ ॐ भू० कालरात्र्यै० कालरात्रीमा० ॥८॥ [इति प्रथमाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः ॥ मोदाः प्रमोदा ऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ ॐ भू० निशाकर्यै० निशाकरीमा० ॥१॥ ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा

विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ॐ भू० हुङ्कार्य्यै० हुङ्कारीमा० ॥ २ ॥ ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० सिद्धिवैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकामा० ॥३॥ ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्त ऽइह स्मसि ॥ ॐ भू० ह्रींकार्य्यै० ह्रींकारीमा० ॥ ४ ॥ ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम् ॥ यूपेन यूप ऽआप्यते प्रणीतो ऽअग्निरग्निना ॥ ॐ भू० भूतडामरायै० भूतडामरामा० ॥५॥ ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः ॥ मूर्द्धा कवी रयीणाम् ॥ ॐ भू० ऊर्ध्वकेश्यै० ऊर्ध्वकेशीमा० ॥६॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० विरूपाक्ष्यै० विरूपाक्षीमा० ॥७॥ ॐ यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाꣳ संवत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय

ऽविजर्ज्जराय संम्वत्सराय पलिक्नीमुभ्यो ऽजिन-
सन्धः सादुद्ध्येभ्यश्चर्म्मन्नम् ॥ ॐ भू०
शुष्काङ्ग्यै० शुष्काङ्गीमा० ॥ ८ ॥ [इति
द्वितीयाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ असि यमो ऽअस्यादित्यो ऽअर्व्वन्नसि त्रितो
गुह्येन व्रतेन ॥ असि सोमेन समया विपृक्त
ऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥ ॐ भू० नर-
भोजन्यै० नरभोजनीमा० ॥ १ ॥ ॐ मित्रस्य
चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि ॥ द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥ ॐ भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीमा० ॥ २ ॥
ॐ अग्ने बृहन्नुषसामूर्द्ध्वो ऽअस्थान्निर्जगन्वान् तमसो
ज्ज्योतिषागात् ॥ अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग
ऽआजातो विश्वा सद्मान्यप्राः ॥ ॐ भू०
वीरभद्रायै० वीरभद्रामा० ॥३॥ ॐ भग प्रणेतर्भग
सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः ॥ भग प्र नो
जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्न्नृवन्तः स्याम ॥
ॐ भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षीमा० ॥४॥ ॐ सुपर्णोऽसि
गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥
स्तोम ऽआत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम ॥
साम ते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः

शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥ ॐ भू० कलहप्रियायै० कलहप्रियामा० ॥ ५ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ भू० राक्षस्यै० राक्षसीमा० ॥ ६ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ ॐ भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्ताक्षीमा० ॥ ७ ॥ ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥ करतान्नः सुराधसः ॥ ॐ भू० विशालाक्ष्यै० विशालाक्षीमा० ॥ ८ ॥ [इति तृतीयाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥ १ ॥ ॐ सुसन्दृशन्त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ॥ प्र नूनं पूर्णबन्धुरस्तुतो

यासि वशाँ२॥ ऽअनु योजान्विन्द्र ते हरी ॥ ॐ भू०
चण्ड्यै० चण्डीमा० ॥ २ ॥ ॐ प्रतिपदसि प्रति-
पदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा
तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥ ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीमा०
॥३॥ ॐ देवीरापो ऽअपान्नपाद्यो वं ऽऊर्म्मिर्हविष्य
ऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः ॥ तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त
शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा ॥ ॐ भू० मुण्ड-
धारिण्यै० मुण्डधारिणीमा०॥ ॐ देवीर्द्वारो ऽअश्विना
भिषजेन्द्रे सरस्वती ॥ प्राणं न वीर्यं नसि द्वारो
दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥ ॐ
भू० भैरव्यै० भैरवीमा० ॥५॥ ॐ देवी जोष्ट्री सरस्व-
त्यश्विनेन्द्रमवर्द्धयन् ॥ श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो
जोष्ट्रीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु
यज ॥ ॐ भू० वीरायै० वीरामा० ॥६॥ ॐ देवस्य
त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ता-
भ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसाया-
ऽभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्याया-
भिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषि-
ञ्चामि ॥ ॐ भू० भयङ्कर्यै० भयङ्करीमा० ॥ ७ ॥

ॐ कुदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे॥ उपोपेन्नु मघवन्भूय ऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते॥ ॐ भू० वज्रधारिण्यै० वज्रधारिणीमा० ॥८॥ [इति चतुर्थाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ भू० क्रोधायै० क्रोधामा० ॥ १ ॥ ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ऽईशत माघशꣳसो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ ॐ भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखीमा० ॥ २ ॥ ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः॥ मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ ॐ भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीमा० ॥३॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव॥ यद्भद्रं तन्न ऽआसुव॥ ॐ भू० कर्कायै० कर्कामा० ॥ ४ ॥ ॐ असुन्नन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य॥

अन्यमस्मदिच्छ सा तं ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ भू० दीर्घलम्बोष्ठ्यै० दीर्घलम्बो-ष्ठीमा०॥५। ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० मालिन्यै० मालिनीमा० ॥६॥ ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य ॥ इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ ॐ भू० मन्त्रयोगिन्यै० मन्त्रयोगिनीमा० ॥ ७ ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ भू० कालाग्निमोहिन्यै० कालाग्निमोहिनीमा० ॥ ८ ॥ [इति पञ्चमाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ ऋतञ्च मेऽमृतञ्च मेऽयक्ष्मञ्च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रञ्च मेऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० मोहिन्यै० मोहिनीमा० ॥ ९ ॥ ॐ ते ऽआचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे ॥ अप शत्रून् विध्यताᳬ संविदाने ऽआर्त्नी ऽइमे विष्फुरन्ती ऽअमित्रान् ॥

ओं भू० चक्रायै० चक्रामा० ॥२॥ ओं वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम् ॥ यूपेन यूप ऽआप्यते प्रणीतो ऽअग्निरग्निना ॥ ओं भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलिनीमा० ॥ ३ ॥ ओं पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ओं भू० बालुकायै० बालुकामा० ॥४॥ ओं अस्कन्नमद्य देवेभ्य ऽआज्यꣳ संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत ऽइन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वो ऽध्वर ऽआस्थात् ॥ ओं भू० कौबेर्यै० कौबेरीमा० ॥ ५ ॥ ओं ते ऽआचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे ॥ अप शत्रून् विध्यताꣳ संविदाने ऽआर्त्नी ऽइमे विष्फुरन्ती ऽअमित्रान् ॥ ओं भू० यमदूत्यै० यमदूतीमा० ॥ ६ ॥ ओं मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ ओं भू० करालिन्यै० करालिनीमा० ॥ ७ ॥ ओं उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा ऽअसि चनो मयि धेहि ॥ जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे । ओं भू०

कौशिक्यै० कौशिकीमा० ॥ ८ ॥ [इति षष्ठाष्टक-पङ्क्तिः ॥]

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भू० यक्षिण्यै० यक्षिणीमा० ॥ १ ॥ ॐ काषिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि ॥ समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० भक्षिण्यै० भक्षिणीमा० ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥ ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥ ३ ॥ ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ ॐ भू० मन्त्रवाहिन्यै० मन्त्रवाहिनीमा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णोर् राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ॐ भू० विशालायै० विशालामा० ॥ ५ ॥ ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणम् ॥ अस्मद्राता देवत्रा गच्छत

प्रदुातारमाविंशत ॥ ॐ भू० कार्मुक्यै० कार्मुकीमा० ॥६॥ ॐ षा व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति ॥ श्येनं पंतत्रिणं सिंहं हं सेमं पात्वंहसः ॥ ॐ भू० व्याघ्र्यै० व्याघ्रीमा० ॥ ७ ॥ ॐ एका च मे तिस्रश्चं मे तिस्रश्चं मे पञ्चं च मे पञ्चं च मे सप्त चं मे सप्त चं मे नवं च मे नवं च म एकादश च मः एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चंदश च मे पञ्चंदश च मे सप्तदंश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च मे नवंदश च म एकंविंशतिश्च म एकंविंशतिश्च मे त्रयोंविंशतिश्च मे त्रयोंविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चंविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवंविंशतिश्च मे नवंविंशतिश्च म एकंत्रिंशच्च म एकंत्रिंशच्च मे त्रयंस्त्रिंशच्च मे यज्ञेनं कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीमा० ॥ ८ ॥ [इति सप्तमाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ॐ प्रेता जयंता नर इन्द्रों वः शर्म्मं यच्छतु ॥ उग्रा वंः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासंथ ॥ ॐ भू० प्रेतभक्षिण्यै० प्रेतभक्षिणीमा० ॥ १ ॥ ॐ असंङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्रा अधि भूम्याम् ॥ तेषांᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ॐ भू०

धूर्जट्यै० धूर्जटीमा० ॥२॥ ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँ-
स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ॥
स्तोमं ऽआत्मा छन्दाᳬंस्यङ्गानि यजूᳬंषि नाम ॥
साम ते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं
धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ
स्वः पत ॥ ॐ भू० विकटायै० विकटामा० ॥३॥
ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपामा० ॥ ४ ॥ ॐ देवी
द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राद्ध्यासं देवयजने
पृथिव्याः ॥ मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥
ॐ भू० कपालिकायै० कपालिकामा० ॥५॥ ॐ इदं
विष्णुः० ॥ ॐ भू० निष्कलायै० निष्कलामा० ॥६॥ ॐ
वृष्णं ऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णं
ऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि
राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा
राष्ट्रममुष्मै देहि ॥ ॐ भू० अमलायै० अमलामा०
॥७॥ ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभाया ऽअग्न्येधं ब्रध्नस्य
विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं

देवलोकायं पेशितारं मनुष्यलोकायं प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्यं उपसेक्तारमवं ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामायं रजयित्रीम् ॥ ॐ भू० सिद्धिप्रदायै० सिद्धिप्रदामा० ॥ ८ ॥ [इति अष्टमाष्टकपङ्क्तिः ॥]

ईशाने–जयायै नमः जयामा०॥ पूर्वे–विजयायै० विजयामा० ॥ आग्नेये–अजितायै० अजितामा० ॥ दक्षिणे–अपराजितायै० अपराजितामा० ॥ नैर्ऋत्ये–क्षेमकर्यै० क्षेमकरीमा० ॥ पश्चिमे–लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा० ॥ वायव्ये–वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ उत्तरे–पार्वत्यै० पार्वतीमा० ॥

क्षेत्रपालपूजनमन्त्राः—ॐ द्रुमौ ते पृक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्याꣳ रक्षाꣳस्यपहꣳस्यग्ने ॥ ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥ ॐ भू० अजराय नमः अजरामा० ॥१॥ ॐ प्रथमा वाꣳ सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ॥ अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥ ॐ भू० व्यापकाख्याय० व्यापकाख्यमा० ।.२॥ ॐ इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा

युनज्मि ॥ अध्वंयर्थायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो ऽअर्ज्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण ॥ ॐ भू० इन्द्रचौराय० इन्द्रचौरमा० ॥ ३ ॥ ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो ऽअभ्यर्चन्त्यर्कैः ॥ स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भू० इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्तिमा० ॥ ४ ॥ ॐ उक्षा समुद्रो ऽअरुणः सुपर्ण्णः पूर्व्वस्य योनिं पितुराविवेश ॥ मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥ ॐ भू० उक्षाभिधाय० उक्षाभिधमा० ॥ ५ ॥ ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ॥ अग्निर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥ ॐ भू० कूष्माण्डाय० कूष्माण्डमा० ॥६॥ ॐ स न ऽइन्द्राय यज्ज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ॥ वरिवोवित्परि स्रव ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥ ७ ॥ ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम् ॥ आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥ ॐ भू० बाहुकाख्याय० बाहुकाख्यमा० ॥ ८ ॥ ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमस्य पड्वीशात्सर्व्वस्माद्देव-

किस्त्विषात् ॥ ॐ भू० विमुक्ताय० विमुक्तमा० ॥९॥
ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः ॥ एवं
त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ ॐ
भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥ ॐ सन्नः सिन्धु-
रवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः
प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजांसि वीर्येभिर्वीर-
तमा शविष्ठा ॥ या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू
अगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥ ॐ भू० लीलालोकाय०
लीलालोकमा० ॥ ११ ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गण-
पतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च
वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ ॐ भू०
एकदंष्ट्राय० एकदंष्ट्रमा० ॥१२॥ ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं
जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसे-
ऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय
गृहपꣳ श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥
ॐ भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यमा० ॥ १३ ॥
ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ॥
मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥ ॐ भू०

ओषधीशाय० ओषधीशनमा० ॥१४॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्० ॥ ॐ भू० बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यमा० ॥१५॥ ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ॥ दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥ ॐ भू० दिव्यकायाय० दिव्यकायमा० ॥१६॥ ॐ सोसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ॥ अश्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥ ॐ भू० कम्बलाख्याय० कम्बलाख्यमा० ॥१७॥ ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भू० क्षोभणाख्याय० क्षोभणाख्यमा० ॥१८॥ ॐ इमꣳ साहस्रꣳ शतधारमुत्सं व्यच्यमानꣳ सरिरस्य मध्ये ॥ घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन् ॥ गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद ॥ गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥ ॐ भू० गवे० गवामा० ॥१९॥ ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः ॥ प्लाशिर्व्यक्तः

शतधार ऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः ॥
ॐ भू० घण्टाभिधाय० घण्टाभिधमा० ॥ २० ॥
ॐ आ क्रन्दय बलमोजो न ऽआधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः ॥ अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना ऽइत ऽइन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥ ॐ भू० व्यालाय० व्यालमा० ॥२१॥ ॐ इन्द्रायाहि तूतुजान ऽउप ब्रह्माणि हरिवः ॥ सुते दधिष्व नश्चनः ॥
ॐ भू० अणुस्वरूपाय० अणुस्वरूपमा० ॥ २२ ॥
ॐ चन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ॥ रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कनिक्रदत् ॥
ॐ भू० चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवारुणमा० ॥ २३ ॥
ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽअर्त्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकः शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम् ॥ ॐ भू० फटाटोपाय० फटाटोपमा० ॥ २४ ॥ ॐ उग्रं लोहितेन मित्रः सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यः रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भू० जटालाय०

जटालमा० ॥२५॥ ॐ पवित्त्रेण पुनीहि मा शुक्क्रेण देव दीद्यत् ॥ अग्ने क्रत्वा क्क्रतूँ २॥ रनु ॥ ॐ भू० क्रतवे० क्रतुमा० ॥२६॥ ॐ आजिघ्र कलशम्० ॥ ॐ भू० घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरमा० ॥२७॥ ॐ व्वायो शुक्क्रो ऽअयामि ते मद्ध्वो ऽअग्ग्रं दिविष्टिषु ॥ आयाहि सोमपीतये स्प्पार्हो देव नियुत्वता ॥ ॐभू० विटङ्काय० विटङ्कमा० ॥२८॥ ॐ दैव्व्या होतारा ऽऊर्द्ध्वमद्ध्वरं नोऽग्नेर्ज्जिह्वामभि गृणीतम् ॥ कृणुतं नः स्विष्टिम् ॥ ॐ भू० मणिमतये० मणिमतिमा० ॥ २९ ॥ ॐ त्रीणि त ऽआहुर्द्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्प्सु त्रीण्यन्तः समुद्द्रे ॥ उतेव मे व्वरुण श्छन्त्स्यर्व्वन्न्यत्रा त ऽआहुः परमं जनित्रम् । ॐ भू० गणबन्धाय० गणबन्धमा० ॥ ३० ॥ ॐ प्रतिश्श्रुत्काया ऽअर्त्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय तूणवद्ध्ममवरस्पराय शङ्खद्ध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोऽरण्याय दावपम् ॥ ॐभू० डामराय० डामरमा० ॥ ३१ ॥ ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्श्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्त

रुद्द्राय॑ पशुपत॑ये कुर्णा यामा ऽअ॑वलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥ ॐ भू० दुण्ढिकर्णाय० दुण्ढिकर्णमा० ॥ ३२ ॥ ॐ व्वनं॑स्पते वीड्वङ्गो हि भूया ऽअस्म्मत्स॑खा प्प्रतर॑णः सुवीरं॑ः ॥ गोभिः सन्न॑द्धो ऽअसि व्वीडय॑स्स्वास्थाता ते॑ जयतु जेत्त्वा॑नि ॥ ॐ भू० स्थविराय० स्थविरमा० ॥३३॥ ॐ सुपर्णं व्व॑स्ते मृगो ऽअ॑स्या दन्तो गोभिः सन्न॑द्धा पतति प्प्रसू॑ता ॥ यत्त्रा नरः सं च वि च द्द्रव॑न्ति तत्त्रास्म्म-भ्यमिष॑वः शर्म्मं यःसन् ॥ ॐ भू० दन्तुराय० दन्तु-रमा० ॥३४॥ ॐ अग्ग्ने ऽअच्छा व्वदेह नः प्प्रति नः सुमना भव ॥ प्प्र नो यच्छ सहस्रजित् त्वः हि धनदा ऽअसि स्वाहा ॥ ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥३५॥ ॐ भद्द्रं कर्णेभिः शृणुयाम० ॥ ॐ भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥ ३६ ॥ ॐ बाहू मे बल॑मिन्द्रियः हस्तौ मे कर्म्मं व्वीर्य॑म् ॥ आत्मा क्षत्त्रमुरो मम॑ ॥ ॐ भू० मारीगणाय० मारीगणमा० ॥ ३७ ॥ ॐ अपां फेने॑न नमु॑चेः शिरं ऽइन्द्द्रोद॑-वर्त्तयः ॥ विश्वा यदज॑यः स्पृधः॑ । ॐ भू० फेत्का-राय० फेत्कारमा० ॥३८॥ ॐ इदः हविः प्प्रजन॑नं

मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि ॥ अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥ ॐ भू० चीकराय० चीकरमा० ॥ ३९ ॥ ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति ॥ श्येनं पतत्रिणꣳ सिꣳहꣳ सेमं पात्वꣳहसः ॥ ॐ भू० सिंहाकृतये० सिंहाकृतिमा० ॥ ४० ॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकꣳ सꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥ ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥४१॥ ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऽऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः ॥ महान्त्सधस्थे ध्रुव ऽआ निषत्तो नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥ ॐ भू० यक्ष्मप्रियाय० यक्ष्मप्रियमा० ॥ ४२ ॥ ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्म्मी याति समदामुपस्थे ॥ अनाविद्धया तन्न्वा जय त्वꣳ स त्वा वर्म्मणो महिमा पिपर्त्तु ॥ ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥ ४३ ॥ ॐ तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः

सह वाजयन्नः ॥ अत्रत्कामन्तः प्रपदैरमित्रान्हिर-ण्यन्ति शत्रूँ१ऽ रनपव्ययन्तः ॥ ओं भू० तीक्ष्णो-ष्ट्राय० तीक्ष्णोष्ट्रमा० ॥ ४४ ॥ ओं वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्म-लिर्वृद्ध्या ॥ एष स्य राथ्यो वृषा पड्भिश्चतुर्भिरे-दगन्ब्रह्माऽकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये ॥ ओं भू० अनलाय० अनलमा० ॥४५। ओं अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टम्भनीं दिशामधि-पत्नीं भुवनानाम् ॥ ऊर्मिर्द्रप्सो ऽअपामसि विश्वक-र्म्मा त ऽऋषिरश्विनाद्ध्वर्य्यू सादयतामिह त्वा ॥ ओं भू० शुक्रतुण्डाय० शुक्रतुण्डमा० ॥ ४६ ॥ ओं द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ॥ सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥ ओं भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षमा० ॥ ४७ ॥ ओं सं बर्हिरङ्क्ताᳬ हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः । समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा ॥ ओं भू० बर्बरकाय० बर्बरकमा० ॥ ४८ ॥ ओं पवमानः सो ऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ॥ यः पोता स पुनातु मा ॥ ओं भू० पावनाय० पावनमा० ॥ ४९ ॥

नाममन्त्रेण वास्तुपूजनमन्त्राः ।

१–ॐ तमीशानम्	शिखिने नमः
२–शन्नो व्वातः	पर्जन्याय
३–मर्म्माणि ते	जयन्ताय
४–सजोषा ऽइन्द्रः	कुलिशायुधाय
५–वण्महाँ२॥ असि	सूर्याय
६–व्रतेन दीक्षाम्	सत्याय
७–आ त्वा हार्षम्	भृशाय
८–यावाङ्कशा	आकाशाय
९–व्वायो ये ते	वायवे
१०–पूषन्तव व्व्रते	पूष्णे
११–तत्सूर्य्यस्य देवत्त्वम्	वितथाय
१२–अक्षन्नमीमदन्त	गृहक्षताय
१३–यमाय त्वाङ्गिरस्वते	यमाय
१४–गन्धर्व्वस्त्वा	गन्धर्वाय
१५–सौरी बलाका शार्ग्गः	भृङ्गराजाय
१६–मृगो न भीमः	मृगाय
१७–उशन्तस्त्वा	पितृभ्यो
१८–द्वे व्विरूपे	दौवारिकाय
१९–नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः	सुग्रीवाय
२०–नमो गणेभ्यः	पुष्पदन्ताय
२१–इमं मे व्वरुण	वरुणाय
२२–यमश्विना नमुचेरासुरादधि	असुराय
२३–शन्नो देवीः	शेषाय

२४–एतत्ते	पापाय
२५–द्रापे ऽअन्धसस्पते	रोगाय
२६–अहिरिव भोगैः	अहये
२७–अवतत्य धनुष्ट्वम्	मुख्याय
२८–इमा रुद्राय	भल्लाटाय
२९–सोमो धेनुम्	सोमाय
३०–नमोऽस्तु सर्पेभ्यः	सर्पेभ्यो
३१–अदितिर्द्यौः	अदित्यै
३२–इड ऽएह्यदित ऽएहि	दित्यै
३३–आपो हि ष्ठा	अद्भ्यो
३४–हस्त ऽआधाय सविता	सावित्राय
३५–अषाढं युत्सु	जयाय
३६–नमस्ते रुद्र	रुद्राय
३७–यदद्य सूर ऽउदिते	अर्यम्णे
३८–विश्वानि देव सवितः	सवित्रे
३९–विवस्वन्नादित्यैष ते	विवस्वते
४०–सबोधि सूनुः	विबुधाधिपाय
४१—मित्रस्य चर्षणीधृतः	मित्राय
४२—नाशयित्री बलाशस्या	राजयक्ष्मणे
४३—स्योना पृथिवि	पृथ्वीधराय
४४—आ ते वत्सो मनः	आपवत्साय
४५—ब्रह्म जज्ञानम्	ब्रह्मणे
४६—यन्ते देवीः	चरक्यै
४७—अक्षराजाय	विदार्यै
४८ – इन्द्रस्य क्रोडः	पूतनायै

४९—यस्यास्ते घोरः	पापराक्षस्यै
५०—यदक्रन्दः प्रथमम्	स्कन्दाय
५१—यदद्य सूर ऽउदिते	अर्यम्णे
५२—हिङ्काराय स्वाहा	जृम्भकाय
५३—कास्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः	पिलिपिच्छाय
५४—त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय
५५—त्वन्नो ऽअग्ने तवदेव	अग्नये
५६—यमाय त्वाङ्गिरस्वते	यमाय
५७—असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते	निर्ऋतये
५८—तत्त्वा यामि	वरुणाय
५९—आनो नियुद्भिः	वायवे
६०—व्वयठं॰ सोम व्व्रते	सोमाय
६१—तमीशानम्	ईशानाय
६२—अस्मे रुद्रा मेहना	ब्रह्मणे
६३—स्योना पृथिवि	अनन्ताय

नाममन्त्रेण सर्वतोभद्रपजनमन्त्राः ।

१—ॐ ब्रह्म जज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः
२—व्वयठं॰ सोम	सोमाय
३—तमीशानम्	ईशानाय
४—त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय
५—त्वन्नो ऽअग्ने तवदेव	अग्नये
६—यमाय त्वाङ्गिरस्वते	यमाय
७—असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते	निर्ऋतये

८—तत्त्वा यामि	वरुणाय
९—आनो नियुद्भिः	वायवे
१०—व्वसुभ्यस्त्वा	अष्टवसुभ्यो
११—नमस्ते रुद्र	एकादश रुद्रेभ्यो
१२—यज्ञो देवानाम्	द्वादशादित्येभ्यो
१३—यावांकशा मधु	अश्विभ्यां
१४—ओमासश्चर्षणीधृतः	सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो
१५—अभित्यन्देवꣳ सवितार	सप्तयक्षेभ्यो
१६—नमोऽस्तु रुद्रेभ्यः	भूतनागेभ्यो
१७—ऋताषाडृतधामाग्निः	गन्धर्वाप्सरोभ्यो
१८—यदक्रन्दः प्रथमम्	स्कन्दाय
१९—आशुः शिशानः	वृषभाय
२०—कार्षिरसि	शूलाय
२१—अवरुद्र मदी	महाकालाय
२२—अदितिर्द्यौः	दक्षादिसप्तगणेभ्यं
२३—अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके	दुर्गायै
२४—इदं विष्णुः	विष्णवे
२५—पितृभ्यः स्वधायिभ्यः	स्वधायै
२६—परं मृत्यो ऽअनु	मृत्युरोगेभ्यो
२७—गणानान्त्वा	गणपतये
२८—आपो हि ष्ठा	अद्भ्यो
२९—मरुतो यस्य	मरुद्भ्यो
३०—स्योना पृथिवि	पृथिव्यै
३१—इमं मे	गङ्गादिनदीभ्यो

३२—समुद्रोऽसि नभस्वान्	सप्तसागरेभ्यो
३३—प्रपर्व्वतस्य	मेरवे
३४—गणानान्त्वा	गदायै
३५—त्रिॅं० शद्धाम	त्रिशूलाय
३६—महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः	वज्राय
३७—वसु च मे	शक्तये
३८—इह ऽएह्यदित ऽएहि	दण्डाय
३९—खड्गो वैश्वदेवः	खड्गाय
४०—उदुत्तमं वरुणः	पाशाय
४१—अॅं० शुश्च	अङ्कुशाय
४२—आयं गौः	गौतमाय
४३—अयं दक्षिणा	भरद्वाजाय
४४—इदमुत्तरात्स्वस्तस्य	विश्वामित्राय
४५—त्र्यायुषं जमदग्नेः	कश्यपाय
४६—अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य	जमदग्नये
४७—अयं पुरो भुवस्तस्य	वसिष्ठाय
४८—अत्र पितरः	अत्रये
४९—तं पत्नीभिरनुगच्छेम	अरुन्धत्यै
५०—अदित्यै रास्नासि	ऐन्द्र्यै
५१—अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके	कौमार्यै
५२—इन्द्रायाहि धिये	ब्राह्म्यै
५३—आयङ्गौः	वाराह्यै
५४—अम्बेऽ ऽअम्बिकेऽम्बालिके	चामुण्डायै
५५—आप्यायस्व समेतु	वैष्णव्यै

५६—या ते रुद्र शिवा	माहेश्वर्यै
५७—समख्ये देव्या	वैनायक्यै

*लिङ्गतोभद्रपूजनमन्त्राः ।

१—नमः कृत्स्नायतया	असिताङ्गभैरवाय नमः
२—श्वित्र ऽआदित्यानाम्	रुरुभैरवाय नमः
३—उग्रं लोहितेन	चण्डभैरवाय
४—इन्द्रस्य क्रकोडः	क्रोधभैरवाय
५—उन्नत ऽऋषभः	उन्मत्तभैरवाय
६—कार्षिरसि	कपालभैरवाय
७—उग्रश्च भीमश्च	भीषणभैरवाय
८—नमः शम्भवाय च	संहारभैरवाय

नाममन्त्रेण नवग्रहाणां पूजनमन्त्राः ।

१—ॐ आकृष्णेन	सूर्याय नमः
२—इमन्देवाः	चन्द्रमसे
३—अग्निर्म्मूर्द्धा	भौमाय
४—उद्बुध्यस्वाग्ने	बुधाय
५—बृहस्पते ऽअति	बृहस्पतये
६—अन्नात्परिस्रुतः	शुक्राय
७—शन्नो देवीः	शनिश्चराय
८—कया नश्चित्रः	राहवे
९—केतुं कृण्वन्	केतवे

---

*लिङ्गतोभद्रपूजने केवलमष्टभैरवानामेव स्थापनमुक्तं रुद्रकल्पद्रुमे । अतोऽत्र अष्टभैरवानां नामोल्लेखनं कृतम् ।

नाममन्त्रेण ग्रहाधिदेवानां पूजनमन्त्राः ।

१—त्र्यम्बकं यजामहे	ईश्वराय नमः
२—श्रीश्च ते	उमायै
३—यदक्रन्दः	स्कन्दाय
४—विष्णोरराटम्	विष्णवे
५—आ ब्रह्मन्	ब्रह्मणे
६—स षोषा ऽइन्द्रः	इन्द्राय
७—यमाय त्वाङ्गिरस्वते	यमाय
८—कार्षिरसि	कालाय
९—चित्रावसो स्वस्ति ते	चित्रगुप्ताय

नाममन्त्रेण प्रत्यधिदेवानां पूजनमन्त्राः ।

१—अग्निन्दूतम्	अग्नये नमः
२—आपो हि ष्ठा	अद्भ्यो
३—स्योना पृथिवि	पृथिव्यै
४—इदं विष्णुः	विष्णवे
५—इन्द्र ऽआसाम्	इन्द्राय
६—अदित्यै रास्नासि	इन्द्राण्यै
७—प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः	प्रजापतये
८—नमोऽस्तु सर्पेभ्यः	सर्पेभ्यो
९—ब्रह्म जज्ञानम्	ब्रह्मणे

नाममन्त्रेण पञ्चलोकपालानां पूजनमन्त्राः ।

१—गणानान्त्वा	गणपतये नमः
२—अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके	अम्बिकायै

३--त्वायो ये ते वायवे
४--घृतं घृतपावानः आकाशाय
५--यावाङ्कशा मधु अश्विभ्यां

नाममन्त्रेण वास्तुपूजनमन्त्रः ।

१--वास्तोष्पते वास्तोष्पतये नमः

नाममन्त्रेण क्षेत्रपालपूजनमन्त्रः ।

१--न हिस्पशमविदन्नन्य क्षेत्राधिपतये नमः

नाममन्त्रेण दशदिक्पालानां पूजनमन्त्राः ।

१—त्रातारमिन्द्रम् इन्द्राय नमः
२--त्वन्नो ऽअग्ने तवदेव अग्नये
३--यमाय त्वा ङ्गिरस्वते यमाय
४--असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते निर्ऋतये
५--तत्त्वायामि वरुणाय
६—आनो नियुद्भिः वायवे
७—त्वयर्ठ० सोम सोमाय
८—तमीशानम् ईशानाय
९—अस्मे रुद्रा मेहना ब्रह्मणे
१०—स्योना पृथिवि अनन्ताय

नाममन्त्रेण योगिनीपूजनमन्त्राः ।

१—ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके महाकाल्यै नमः
२—ॐ श्रीश्च ते महालक्ष्म्यै नमः
३—ॐ पावका नः महासरस्वत्यै नमः

१—ॐ तमीशानम्	गजाननायै नमः
२—आ ब्रह्मन्	सिंहमुख्यै
३—महाँ२।। इन्द्रः	गृध्रास्यायै
४—सद्यो जातो व्यमिमीत	काकतुण्डिकायै
५—आदित्यं गर्भम्	उष्ट्रग्रीवायै
६—स्वर्ण घर्म्मः	हयग्रीवायै
७—सत्यश्च	वाराह्यै
८—भायै दार्व्वाहारम्	शरभाननायै
९—जिह्वा मे भद्रम्	उलूकिकायै
१०—हिङ्काराय स्वाहा	शिवारावायै
११—अग्निश्च मे घर्म्मश्च	मयूरायै
१२—पूषन्तव व्रते	विकटाननायै
१३—वेद्या वेदिः समाप्यते	अष्टवक्त्रायै
१४—अयमग्निः सहस्रिणः	कोटराक्ष्यै
१५—इमं मे वरुण श्रुधी	कुब्जायै
१६—यमाय त्वा मखाय त्वा	विकटलोचनायै
१७—यमेन दत्तम्	शुष्कोदर्यै
१८—मित्रस्य चर्षणीधृतः	ललजिह्वायै
१९—अग्ने ब्रह्म	श्वदंष्ट्रायै
२०—भग प्रणेतः	वानराननायै
२१—सुपर्णोऽसि गरुत्मान्	ऋक्षाक्ष्यै
२२—पितृभ्यः स्वधायिभ्यः	केकराक्ष्यै
२३—या ते रुद्र शिवा तनूः	बृहत्तुण्डायै
२४—वरुणः प्राविता	सुराप्रियायै

२५—हꣳ० सः शुचिषत्	कपालहस्तायै
२६—सुसन्दृशन्त्वा	रक्ताक्ष्यै
२७—प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वा	शुष्कयै
२८—देवीरापो ऽअपान्नपाद्यः	श्येन्यै
२९—हविष्मतीरिमा ऽआपः	कपोतिकायै
३०—श्रीश्च ते	पाशहस्तायै
३१—ध्रुवो यज्ञस्य	दण्डहस्तायै
३२—कदा चन स्तरीरसि	प्रचण्डायै
३३—भद्रं कर्णेभिः	चण्डविक्रमायै
३४—इषे त्वोर्ज्जे त्वा	शिशुघ्न्यै
३५—देवी द्यावापृथिवी मखस्य वा	पापहन्त्र्यै
३६—विश्वानि देव सवितः	काल्यै
३७—अनुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते	रुधिरपायिन्यै
३८—अग्निश्च म ऽआपश्च मे	वसाधयायै
३९—बह्वीनां पिता	गर्भभक्षायै
४०—नमस्ते रुद्र	शवहस्तायै
४१—ऋतञ्च मेऽमृतञ्च मे	आन्त्रमालिन्यै
४२—ते ऽआचरन्ती समनेव	स्थूलकेश्यै
४३—वेद्या वेदिः समाप्यते	बृहत्कुक्ष्यै
४४—पावका नः सरस्वती	सर्पास्यायै
४५—अस्कन्नमद्य देवेभ्यः	प्रेतवाहिन्यै
४६—तीव्रान् घोषान्	दन्तशूकरायै
४७—महीद्यौः पृथिवी	क्रौञ्च्यै
४८ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि	मृगशीर्षायै

४९—आप्यायस्व समेतु ते	वृषाननायै
५०—कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा	व्यात्तास्यायै
५१—त्र्यम्बकं यजामहे	धूमनिःश्वासायै
५२—अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके	व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे
५३—विष्णोरराटम्	तापिन्यै
५४—ब्राह्मणमद्य विदेयम्	शोषणीदृष्ट्यै
५५—आ नो भद्राः	कोटर्यै
५६—एका च मे	स्थूलनासिकायै
५७—ब्रह्माणि मे	विद्युत्प्रभायै
५८—असंख्याता सहस्राणि	बलाकास्यायै
५९—अहिरिव भोगैः	मार्जार्यै
६०—तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना	कटपूतनायै
६१—सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्याम्	अट्टाट्टहासायै
६२—इदं विष्णुः	कामाक्ष्यै
६३—वृष्ण ऽऊर्म्मिरसि	मृगाक्ष्यै
६४—मृगो न भीमः कुचरः	मृगलोचनायै

नाममन्त्रेण क्षेत्रपालपूजनमन्त्राः ।

१—ॐ इमौ ते पक्षावजरौ	अजराय नमः
२—प्रथमावाथं सरथिना	व्यापकाय
३—इद्रस्य वज्रोऽसि	इन्द्रचौराय
४—एवेदिन्द्रं वृषणम्	इन्द्रमूर्तये
५—उक्षा समुद्रः	उक्ष्णे
६—यद्देवा देव हेडनम्	कूष्माण्डाय
७—स न ऽइन्द्राय यज्यवे	वरुणाय

८—बाहू मे बलमिन्द्रियम्	वटुकाय
९—मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथः	विमुक्ताय
१०—कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि	लिप्तकाय
११ - सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः	लीलालोकाय
१२—नमो गणेभ्यः	एकदंष्ट्राय
१३—अर्म्मेभ्यो हस्तिपम्	ऐरावताख्याय
१४—ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वम्	ओषधीघ्नाय
१५—त्र्यम्बकं यजामहे	बन्धनाय
१६—देवसवितः प्रसुव यज्ञम्	दिव्यकरणाय
१७—सीसेन तन्त्रम्	कम्बलाय
१८—आशुः शिशानः	भीषणाय
१९—इमꣳ साहस्रम्	गवयाय
२०—कुम्भो वनिष्ठुः	घण्टाय
२१—आक्रन्दय बलमोजः	व्यालाय
२२—इन्द्रायाहि धिये	अंशवे
२३—चन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा	चन्द्रवारुणाय
२४—गणानान्त्वा	घटाटोपाय
२५—उग्रं लोहितेन	जटिलाय
२६—पवित्रेण पुनीहि मा	क्रतवे
२७—आजिघ्र कलशम्	घण्टेश्वराय
२८—व्वायो शुक्रः	विटङ्काय
२९—दैव्या होतारा	मणिमानाय
३०—त्रीणि त ऽआहुः	गणबन्धाय
३१—प्रतिश्रुत्काया ऽअर्त्तनम्	मुण्डाय

३२--शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालः	बर्बूकराय
३३--व्वनस्पते व्वीड्वम्	सुधापाय
३४--सुपर्णं व्वस्ते	वैनाय
३५--अग्ने ऽअच्छा व्वदेहनः	पवनाय
३६--भद्रं कर्णेभिः	दुण्ढिकरणाय
३७--अपां फेनेन	स्थविराय
३८--व्वातं प्राणेन	दन्तुराय
३९--इदठं० हविः	धनदाय
४०--खड्गो व्वैश्वदेवः	नागकर्णाय
४१--मृगो न भीमः	महाबलाय
४२--इन्दुर्दक्षः	फेत्काराय
४३--तीव्रान् घोषान्	सिंहाय
४४--अग्निन्दूतम्	मृगाय
४५--अदित्यास्त्वा	यक्षाय
४६--द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षम्	मेघवाहनाय
४७--सं बर्हिरङ्क्ताम्	तीक्ष्णाय
४८--पवमानः सो ऽअद्य नः	अनलाय
४९--अभ्यर्षत सुष्टुतिम	शुक्राय

अग्निपूजनमन्त्रः—ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्तिं विधेम ॥

स्विष्टकृद्धोममन्त्रः—ओ३म् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

भूरादिनवाहुतिमन्त्राः—ओ३म् भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ ओ३म् भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ॥ २ ॥ ओ३म् स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥

ओ३म् त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअव यासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ४ ॥

ओ३म् स त्वन्नोऽ अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ ॥ अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि स्वाहा ॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व-

मया ऽअसि ॥ अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजछं स्वाहा ॥

इदमग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः ॥ तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥

ओं उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमछं श्रथाय ॥ अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा ॥

इदं वरुणायादित्यादितये न न मम ॥ ८ ॥

ओं प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥

दशदिक्पालबलिदानमन्त्राः—ओं त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रछं हवेहवे सुहवछं शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रछं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ १ ॥

ओं त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च व्वन्द्य ॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्य-

निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥ २ ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ३ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ४ ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः ॥ ५ ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ॥ वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ७ ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ८ ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥ यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र

ऽइन्द्रं ज्येष्ठा ऽअस्माँ२॥ अवन्तु देवाः ॥ ९ ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी ॥
यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ १० ॥

एकतन्त्रेण दशदिक्पालबलिदानमन्त्रः—ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽवाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥

एकतन्त्रेण नवग्रहबलिदानमन्त्रः---ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

वास्तुबलिदानमन्त्रः----ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवा नः॥ यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥

योगिनीबलिदानमन्त्रः----ॐ योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ॥ सखाय ऽइन्द्रमूतये ॥

प्रधानदेवताबलिदानमन्त्रः—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे० अथवा ॐ नमस्ते रुद्र० ॥

क्षेत्रपालबलिदानमन्त्रः---ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

जलप्रक्षेपमन्त्रः- --ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥

पूर्णाहुतिमन्त्राः—ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ ॥ उदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट् ॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥ १ ॥

वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारया-

मा नमोभिः ॥ उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद् गौर ऽएतत् ॥ २ ॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य ॥ त्रिधा बद्धो व्वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२॥ ऽआविवेश ॥ ३ ॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ॥ इन्द्र ऽएकः सूर्य्य ऽएकञ्जजान व्वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः ॥ ४ ॥

एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे ॥ घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम् ॥ ५ ॥

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ॥ एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥ ६ ॥

सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्युः स्मय-

मानासो ऽअग्निम् ॥ घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥

कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ॥ यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते ॥ ९ ॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ॥ इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्त-मश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम् ॥ ११ ॥

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुन-र्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १२ ॥

सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥ १३ ॥

मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत

ऽआ जातमग्निम् ॥ कविꣳ सम्म्राजमतिथिं जना-
नामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १४ ॥

पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥
वस्नेव विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्क्रतो
स्वाहा ॥ १५ ॥

वसोर्द्धारामन्त्राः—ओं सप्त ते ऽअग्ने समिधः
सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृण-
स्वा घृतेन स्वाहा ॥ १ ॥

शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च
ज्ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥२॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च ॥
मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥ ३ ॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च ॥ धर्त्ता च
विधर्त्ता च विधारयः ॥ ४ ॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च ॥
अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥ ५ ॥

ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः

प्रतिसद्दक्षास्तु ऽएतन ॥ मित्रासंश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥ ६ ॥

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ॥ क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ ७ ॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् ॥ एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ ८ ॥

इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये ॥ उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व ॥ ९ ॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ १० ॥

ॐ समास्त्वाग्न ऽऋतवो वर्द्धयन्तु संवत्सरा ऽऋषयो यानि सत्या ॥ सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा ऽआ भाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ १ ॥

सञ्चेद्ध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ

महुते सौभगाय ॥ मा च रिषदुपसत्ता ते ऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ॥ २ ॥

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा ऽइमे शिवो ऽअग्ने संवरणे भवा नः ॥ सपत्नहा नो ऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥ ३ ॥

इहैवाग्ने ऽअधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन् पूर्वचितो निकारिणः ॥ क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्द्धतां ते ऽअनिष्टृतः ॥ ४ ॥

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सꣳ रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ॥ सजातानां मध्यमस्था ऽएधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥ ५ ॥

अति निहो ऽअति स्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने ॥ विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्यꣳ सहवीराꣳरयिन्दाः ॥ ६ ॥

अनाधृष्यो जातवेदा ऽअनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ॥ विश्वा ऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे ॥७॥

बृहस्पते सवितर्बोधयैनꣳ सꣳ शितं चित्सन्तराꣳ

स॑ꣳ शि॑शाधि ॥ व्वर्द्धय॑ैनं मह॒ते सौभ॑गाय॒ विश्व॑ ऽएनमनु॑ मदन्तु दे॒वाः ॥ ८ ॥

अमु॒त्रभूया॒दध॒ यद्यमस्य॒ बृह॑स्पते ऽअ॒भिश॑स्ते॒रमु॑ञ्चः ॥ प्रत्यौ॑हतामु॒श्विना॑ मृत्युम॑स्माद् दे॒वाना॑मग्ने भि॒षजा॒ शची॑भिः ॥ ९ ॥

ओ३म् इ॒दं विष्णु॒र्विच॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दम् ॥ समू॑ढमस्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॑ ॥ १ ॥

इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॒ मन॑वे दश॒स्या ॥ व्य॑स्कभ्ना॒ रोद॑सी विष्ण॒वे॒ते दा॒धर्थ॑ पृथि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखैः॒ स्वाहा॑ ॥ २ ॥

ओ३म् विष्णो॒र्नु कं॑ वी॒र्या॑णि॒ प्र वो॑चं॒ यः पार्थि॑वानि विम॒मे रजा॑ꣳसि ॥ यो ऽअस्क॑भाय॒दुत्त॑रꣳ स॒धस्थं॑ विचक्रमा॒णस्त्रे॒धोरु॑गा॒यो विष्ण॑वे त्वा ॥ ३ ॥

दि॒वो वा॑ विष्ण ऽउ॒त वा॑ पृथि॒व्या म॒हो वा॑ विष्ण ऽउ॒रोर॒न्तरि॑क्षात् ॥ उ॒भा हि हस्ता॒ वसु॑ना पृ॒णस्वा प्र य॑च्छ॒ दक्षि॑णा॒दोत स॒व्याद्विष्ण॑वे त्वा ॥ ४ ॥

प्र तद्विष्णु॑स्तवते वी॒र्ये॑ण मृ॒गो न भी॒मः

कुचरो गिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि-
क्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ ५ ॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो
विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि
विष्णवे त्वा ॥ ६ ॥

ओ३म् उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ॥
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥७॥

ओ३म् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि
पस्पशे ॥ इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ ८ ॥

तद्विष्णोः परमं पदꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः ॥
दिवीव चक्षुराततम् ॥ ९ ॥

ओ३म् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समि-
न्धते ॥ विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ १० ॥

ओ३म् सहस्रशीर्षा० ॥ १ ॥ पुरुष एव० ॥२॥
एतावानस्य० ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वः० ॥ ४ ॥ ततो
विराट्० ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्०
॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः० ॥ ७ ॥ तस्मा-
दश्वाः० ॥ ८ ॥ तं यज्ञम्० ॥ ९ ॥ यत्पुरुषम्०

॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्य० ॥ ११ ॥ चन्द्रमा मनसः० ॥ १२ ॥ नाभ्या ऽआसीत्० ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण० ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्० ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञम्० ॥ १६ ॥

ॐ हिरण्यवर्णाम्० ॥१॥ तां म ऽआ वह० ॥२॥ अश्वपूर्वाम्० ॥ ३ ॥ कां सोस्मिताम्० ॥४॥ चन्द्रां प्रभासाम्० ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णे० ॥ ६ ॥ उपैतु माम्० ॥७॥ क्षुत्पिपासामलाम्० ॥८॥ गन्धद्वाराम्० ॥ ९ ॥ मनसः कामम्० ॥ १० ॥ कर्दमेन प्रजा भूता० ॥ ११ ॥ आपः सृजन्तु० ॥ १२ ॥ आर्द्रां पुष्करिणीम्० ॥ १३ ॥ आर्द्रां यः करिणीम्० ॥ १४ ॥ तां म ऽआ वह० ॥ १५ । यः शुचिः प्रयतः० ॥ १६ ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवं ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते । या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥ यामिषुम् । यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन वचसा । शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा

व्वदामसि ॥ यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना
ऽअसत् ॥४॥ अध्यवोचत् । अध्यवोचदधिवक्ता
प्रथमो दैव्यो भिषक् ॥ अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भ-
यन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव ॥५॥
असौ यः । असौ यस्ताम्म्रोऽअरुणऽउत बब्भ्रुः सुम-
ङ्गलः ॥ ये चैनꣳ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ऽईमहे ॥६॥ असौ यः । असौ
योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपा
ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः
॥७॥ नमोऽस्तु । नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय
मीढुषे ॥ अथो येऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं
न्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च । प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरा-
र्त्न्योर्ज्ज्याम् ॥ याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो
व्वप ॥९॥ व्विज्ज्यन्धनुः । व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो
व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ ॥ ऽउत । अनेशन्नस्य याऽइषव
ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥ याते । याते हेतिर्म्मीढुष्टम
हस्ते बभूव ते धनुः ॥ तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वम-
यक्ष्मया परि भुज ॥११॥ परि ते । परि ते धन्न्वनो
हेतिरस्म्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः ॥ अथो यऽइषुधिस्तवारे

ऽअस्म॑न्नि॒धे॑हि॒ तम् ॥ १२ ॥ अव॒तत्य॒ धनु॒ष्ट्वम् ।
अव॒तत्य॒ धनु॒ष्ट्व॒ꣳ सह॑स्राक्ष॒ शते॑षुधे । नि॒शीर्य॑
श॒ल्यानां॒ मुखा॑ शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव । १३ । नम॑स्ते ।
नम॑स्त॒ ऽआयु॑धा॒याना॑तताय धृ॒ष्णवे॑ ॥ उ॒भाभ्या॑मु॒त
ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्या॒न्तव॒ धन्व॑ने । १४ । मा नः॑ ।
मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ ऽअर्भ॒कं मा न॒ ऽउक्ष॑न्त-
मु॒त मा न॑ ऽउक्षि॒तम् ॥ मा नो॑ वधीः पि॒तरं॒ मोत
मा॒तरं॒ मा नः॑ प्रि॒यास्त॒न्वो॑ रुद्र रीरिषः ॥१५॥
मा न॑स्तो॒के । मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ ऽआयु॑षि॒ मा
नो॒ गोषु॒ मा नो॒ ऽअश्वे॑षु रीरिषः ॥ मा नो॑ वी॒रा-
न्रु॑द्र भा॒मिनो॑ वधीर्ह॒विष्म॑न्तः॒ सद॒मित्त्वा॑ हवा-
महे ॥ १६ । नमो॒ हिर॑ण्यबाहवे । सेना॒न्ये॒
दि॒शां च॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यः
पशू॒नां पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ श॒ष्पिञ्ज॑राय॒ त्विषी॑मते
प॒थीनां पत॑ये॒ नमो॒ नमो॒ हरि॑केशायोपवी॒तिने॑ पु॒ष्टा-
नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ बभ्लु॒शाय॑ ॥ १७ ॥ नमो॑
बभ्लु॒शाय॑ व्या॒धिनेऽन्ना॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वस्य॑
हे॒त्यै जग॑तां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ रु॒द्राया॑तता॒यिने॒
क्षेत्त्रा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ सू॒तायाह॑न्त्यै॒ वना-

नाम्पतये नमो नमो रोहिताय ॥ १८ ॥ नमो
रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो
भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो
मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम
उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नमः
कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥ नमः कृत्स्नायतया धावते
सत्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन
आव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय
स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्या-
नाम्पतये नमो नमो वञ्चते ॥२०॥ नमो वञ्चते
परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण इषु-
धिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो
जिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽ-
सिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये
नमो नम उष्णीषिणे ॥ २१ ॥ नम उष्णीषिणे
गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नम इषुमद्भ्यो
धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः
प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो-
ऽस्यद्भ्यश्च वो नमो नमो विसृजद्भ्यः ॥२२॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः
स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्यऽ
आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च
वो नमो नमः सभाभ्यः ॥ २३ ॥ नमः
सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वे-
भ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमऽआव्याधिनीभ्यो
विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमऽउगणाभ्यस्तृꣳ-
हतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः ॥ २४ ॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो
विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो
ऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रही-
तृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो ऽअर्भकेभ्यश्च
वो नमो नमस्तक्षभ्यः ॥ २६ ॥ नमस्तक्षभ्यो
रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मा-
रेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च
वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमः
श्वभ्यः ॥ २७ ॥ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च

भ्यो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने ॥ २८ ॥ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय ॥ २९ ॥ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च नमऽआशवे ॥ ३० ॥ नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ ३१ ॥ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च खल्याय च नमो वन्याय

॥ ३३ ॥ नमो वन्न्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ॥ ३४ ॥ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे ॥३५॥ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुन्वने च नमः स्रुत्याय ॥ ३६॥ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च नमः कूप्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च नमो वात्याय ॥ ३८ ॥ नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गवे ॥३९॥ नमः

शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽउग्राय च भीमाय च
नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे
च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय
॥४०॥ नमः शम्भवाय । च मयोभवाय च नमः
शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव-
तराय च ॥ ४१ ॥ नमः पार्याय । चावार्याय च
नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च
कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥४२॥
नमः सिकत्याय । च प्रवाह्याय च नमः किंशि-
लाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये
च नम ऽइरिण्याय प्रपथ्याय च ॥ ४३ ॥ नमो
व्रज्याय । च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च
गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः
काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥४४॥ नमः शुष्क्याय ।
च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय
च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऽऊर्व्याय च
सूर्म्याय च ॥ ४५ ॥ नमः पर्णाय । च पर्ण-
शदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमः

ऽआखिदुते चां प्रखिदुते च नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित । आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ॥ यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ॥ शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥ ४९ ॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ॥ अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ५० ॥ मीढुष्टम शिवतम । शिवो नः सुमना भव ॥ परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसान ऽआ चर पिनाकम्बिभ्रदा गहि ॥ ५१ ॥ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः । यास्ते सहस्रᳬं हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणि सहस्रशः । सहस्राणि सहस्रशो

बा॒ह्वोस्तव॒ं हे॒तय॑ः ॥ तासा॒मीशा॑नो भगवः परा॒चीना॒ मुखा॑ कृधि ॥ ५३ ॥ असंङ्ख्याता स॒हस्रा॑णि । ये रु॒द्रा ऽअधि॒ भूम्या॑म् ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि । ५४॥ अ॒स्मिन् म॑हति । अ॒स्मि-न्म॑ह॒त्यर्ण॒वे ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा ऽअधि॑ ॥ तेषा॑ᳬ सहस्र-योज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥ ५५ ॥ नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॑ः । नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॒ दिव॑ᳬ रु॒द्रा ऽउप॑श्रिता॒ः ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥५६॥ नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॑ः । श॒र्वा ऽअ॒धः क्ष॑माच॒राः ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥ ५७ ॥ ये वृ॒क्षेषु॑ । श॒ष्पिञ्ज॑रा॒ नील॑-ग्रीवा॒ विलो॑हिताः । तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥ ५८ ॥ ये भू॒ताना॑म् । ये भू॒ताना॒मधि॑-पतयो विशि॒खास॑ः कप॒र्दिन॑ः ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयो-ज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥ ५९ ॥ ये प॒थाम् । ये प॒थाम्प॑थि॒रक्ष॑य ऽऐलबृ॒दा ऽआयु॒र्युध॑ः ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥ ६० ॥ ये ती॒र्थानि॑ । प्र॒चर॑न्ति सृ॒काह॑स्ता निष॒ङ्गिण॑ः ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्म॑सि ॥६१॥

येऽन्नेषु । विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥ तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६२॥ य ऽएतावन्तः । य ऽएतावन्तश्च भूयाᳬंसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ॥ तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६३॥ नमोऽस्तु । रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६४ ॥ नमोऽस्तु । रुद्रेभ्यो ये ऽन्तरिक्षे येषां वात ऽइषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६५॥ नमोऽस्तु । रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥

ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रय-

तिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च
मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च
मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्
॥ १ ॥ प्राणश्च । मेऽपानश्च मे व्यानश्च
मेऽसुश्च मे चित्तञ्च म ऽआधीतञ्च मे वाक्च मे
मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे
बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च ।
मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म
च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे
परूꣳषि च मे शरीराणि च म ऽआयुश्च मे
जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यञ्च ।
म ऽआधिपत्यञ्च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽ-
मश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे
वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे
द्राघिमा च मे वृद्धञ्च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्प-
न्ताम् ॥ ४ ॥ (न०) सत्यञ्च । मे श्रद्धा च मे
जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे
क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च
मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥५॥

ऋतञ्चं । मेऽमृतञ्च मे यक्ष्मञ्च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्त्वञ्च मेऽनमित्रञ्च मेऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्चं मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥६॥ यन्ता चं । मे धर्त्ता चं मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे संविच्चं मे ज्ञात्रञ्च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरञ्च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शञ्चं । मे मयश्च मे प्रियञ्चं मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणञ्च मे भद्रञ्चं मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥८॥ (न०) ऊर्क्चं । मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतञ्चं मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रञ्च म ऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥९॥ रयिश्चं । मे रायश्च मे पुष्टञ्चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे पूर्णञ्चं मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तञ्चं । मे वेद्यञ्च मे भूतञ्चं मे भविष्यच्चं मे सुगञ्च मे सुपथ्यञ्च म ऽऋद्धञ्चं म ऽऋद्धिश्च मे क्लृप्तञ्च मे

क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्प-न्ताम् ॥ ११॥ व्रीहयश्च । मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १२॥ (न०) अश्मा च । मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मेऽयश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्प-न्ताम् ॥ १३ ॥ अग्निश्च । मे ऽआपश्च मे वीरुधश्च म ऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव ऽआरण्याश्च मे वित्तञ्च मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १४ ॥ वसु च । मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म ऽएमश्च च ऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) अग्निश्च । म ऽइन्द्रश्च मे सोमश्च म ऽइन्द्रश्च मे सविता च म ऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च म ऽइन्द्रश्च मे पूषा च म ऽइन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १६॥ मित्रश्च । म ऽइन्द्रश्च

मे वरुणश्च म ऽइन्द्रश्च मे धाता च म ऽइन्द्रश्च मे त्वष्टा च म ऽइन्द्रश्च मे मरुतश्च म ऽइन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १७ ॥ पृथिवी च । म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म ऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च म ऽइन्द्रश्च मे समाश्च म ऽइन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म ऽइन्द्रश्च मे दिशश्च म ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १८ ॥

(न०) अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म ऽउपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म ऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्रयणश्च । मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऽऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २० ॥ स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म ऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च

मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२१॥ (न०) अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्रतञ्च मऽऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रे ऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २३ ॥ (न०) एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएकादश मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽएकविꣳशतिश्च मऽएकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मऽएकत्रिꣳशच्च मऽएकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ (न०) चतस्रश्च । मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे

द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०) त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२६॥ पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२७॥ (न०) वाजाय स्वाहा । प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय स्वाहा विनꣳशिन आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्ते राण्मित्राय यन्तासि यमन ऊर्ज्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानान्त्वाधिपत्याय

॥२८॥ आयुर्यज्ञेन॑ । कल्पतां प्राणो यज्ञेन॑ कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन॑ कल्पताᳪं श्रोत्रं॑ यज्ञेन॑ कल्पतां वाग्यज्ञेन॑ कल्पतां मनो॑ यज्ञेन॑ कल्पतामात्मा यज्ञेन॑ कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन॑ कल्पतां ज्योति॑र्यज्ञेन॑ कल्पताᳪं स्वर्यज्ञेन॑ कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन॑ कल्पतां यज्ञो यज्ञेन॑ कल्पताम् ॥ स्तोम॑श्च यजु॑श्च ऽऋक्च साम॑ च बृहच्च॑ रथन्तरञ्च॑ । स्व॑र्देवा ऽअगन्मामृता॑ ऽअभूम प्रजाप॑तेः प्रजा ऽअ॑भूम वेट् स्वाहा॑ ॥२९॥

ॐ वसोः॑ पवित्र॑मसि शतधा॑रं वसोः॑ पवित्र॑मसि सहस्र॑धारम् । देवस्त्वा॑ सविता पु॑नातु वसोः॑ पवित्रे॑ण शतधा॑रेण सुप्वा कामधुक्षः॑ स्वाहा ॥

कुण्डाग्नेः प्रदक्षिणामन्त्रः—ॐ अग्ने नय॑ सुपथा॑ राये ऽअस्मान्विश्वा॑नि देव वयुना॑नि विद्वान् ॥ युयोध्य॑स्मज्जु॑हुराणमेनो भूयि॑ष्ठान्ते नम॑ ऽउक्तिं विधेम ॥

अग्नेः स्तुतिश्लोकाः —

जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥ १ ॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम् ।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ॥ २ ॥

एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा ।
अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमायासमावृतः ॥ ३ ॥

संसारसागरं घोरमत्यन्तक्लेशभाजनम् ।
त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥ ४ ॥

न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम् ।
तथापि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ ५ ॥

नैव किञ्चित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽपि न कस्यचित् ।
नैव किञ्चिदसाध्यं ते न च साध्योऽसि कस्यचित् ॥ ६ ॥

कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां वाक्यमुत्तमम् ।
योगिनां परमा सिद्धिः परमं ते परं विदुः ॥ ७ ॥

अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन् महाभये ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम् ॥ ८ ॥

कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ।
शरीरे च गतप्राये वर्धते मे महद्भयम् ॥ ९ ॥

त्वत्पादकमलान्नान्यत् मम जन्मान्तरेष्वपि ।
निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छामि सद्गतिम् ॥ १० ॥

विज्ञानं यदिदं प्राप्य यदिदं ज्ञानमर्जितम् ।
जन्मान्तरेऽपि मे देव मा भूदस्य परिक्षयः ॥ ११ ॥

दुर्गतावपि जातस्य त्वद्गतो मे मनोरथः ।
यदि नाशं न विन्देय तावदस्मि कृती सदा ॥ १२ ॥

अकामकलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् ।
कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥ १३ ॥

चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै होमात्मने नमः ॥ १४ ॥

भस्मधारणमन्त्रः—ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे। तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

देवानामुत्तरपूजने सूक्तनिर्णयः—विष्णुयागे पुरुषसूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन षोडशोपचारैः देवानां पूजनं कर्तव्यम्।

आरार्तिक्यमन्त्राः—ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ॥ अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥ अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ॥ दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या

देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पति-र्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् । सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-सहितं नमामि ॥

पुष्पाञ्जलिमन्त्राः—ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा-स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त-पर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः

सभासद् इति ॥

ओ३म् विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

अभिषेकमन्त्राः—ओ३म् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥

देवस्य त्वा० । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥

देवस्य त्वा० । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

ओ३म् शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ॥ राजा मे प्राणो अमृतꣳ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥ ४ ॥

जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः

स्वराड् भामं॰ ॥ मोदाः॰ प्रमोदा ऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहं॰ ॥ ५ ॥

बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम् ॥ आत्मा क्षत्त्रमुरो ममं ॥ ६ ॥

पृष्ठीर्म्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी ॥ ऊरू ऽअंरत्नी जानुंनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतं॰ ७॥

नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्म्मेऽपंचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पर्सं॰ ॥ जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिंष्ठितः ॥ ८ ॥

प्रतिं क्षत्त्रे प्रतिं तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतिं तिष्ठामि गोषुं ॥ प्रत्यङ्गेषु प्रतिं तिष्ठाम्यात्मन् प्रतिं प्राणेषु प्रतिं तिष्ठामि पुष्टे प्रतिं द्यावापृथिव्योः प्रतिं तिष्ठामि यज्ञे ॥ ९ ॥

त्रया देवा ऽएकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधंसः ॥ बृहस्पतिंपुरोहिता देवस्यं सवितुः सवे ॥ देवा देवैरंवन्तु मा ॥ १० ॥

प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येनं सत्यं यज्ञेनं यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामंभिः सामान्यृग्भिर्ऋचंः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वंषट्कारा ऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समंर्द्धयन्तु भूः स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ पयंः पृथिव्यां पय ऽओषंधीषु पयो दिव्युन्तरिंक्षे पयो धाः ॥ पयंस्वतीः प्रदिशंः सन्तु मह्यंम् ॥ १२ ॥

ॐ पञ्च नद्यः सरंस्वतीमपिंयन्ति सस्रोतसः ॥ सरंस्वती तु पंञ्चधा सो देशेऽभंवत्सरित् ॥ १३ ॥

ॐ वरुंणस्योत्तम्भंनमसि वरुंणस्य स्कम्भसर्ज्जंनी स्थो वरुंणस्य ऽऋतसदंन्यसि वरुंणस्य ऽऋतसदंनमसि वरुंणस्य ऽऋतसदंनमासींद ॥ १४ ॥

ॐ पुनन्तुं मा पितरंः सोम्यासंः पुनन्तुं मा पितामहाः पुनन्तु प्रपिंतामहाः ॥ पवित्रेण शतायुंषा ॥ पुनन्तुं मा पितामहाः पुनन्तु प्रपिंतामहाः ॥ पवित्रेण शतायुंषा विश्वमायुर्व्यंश्नवै ॥ १५ ॥

अग्न ऽआयूꣳषि पवस ऽआ सुवोर्ज्जमिषं च

नः ॥ आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १६ ॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ १७ ॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् ॥
अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२॥ रनु ॥ १८ ॥

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ॥ ब्रह्म
तेन पुनातु मा ॥ १९ ॥

पवमानः सो ऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ॥
यः पोता स पुनातु मा ॥ २० ॥

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ॥
मां पुनीहि विश्वतः ॥ २१ ॥

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्य-
स्तन्वो वीतपृष्ठाः ॥ तया मदन्तः सधमादेषु
वयᳬ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ २२ ॥

ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ॥
इन्द्राय पातवे सुतः ॥ २३ ॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥
यद्भद्रं तन्न ऽआ सुव ॥ २४ ॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः॥
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥२५॥

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः॥
रक्षा तोकमुत त्मना ॥ २६ ॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे
दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥ २७ ॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ॥
उशतीरिव मातरः ॥ २८ ॥

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥
आपो जनयथा च नः ॥ २९ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ३० ॥

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु ॥
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ ३१ ॥

पुराणोक्तश्लोकाः—

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजाः ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देव—दानव—गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥

आज्यावलोकन (छायापात्रदर्शन) मन्त्रः—

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ॥ ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥

क्षमा–प्रार्थना–श्लोकाः

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो हरिः ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥

यत्पूजनं कृतं देव भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् ।
तत्सर्वं परिगृह्णन्तु विष्णवाद्याः सर्वदेवताः ॥ ३ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ४ ॥
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ५ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ६ ॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ ७ ॥
यश्चापराधं कृतवान् अज्ञानात् पुरुषोत्तम ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ८ ॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ९ ॥
द्रव्यहीनं तु यत्किञ्चित् विधिहीनं तु यत्कृतम् ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु सर्वेऽभीष्टा भवन्तु मे ॥ १० ॥
कर्मणा मनसा वाचा स्वल्पबुद्ध्या च यत्कृतम् ।
तत्सर्वं सफलं भूयात् त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥ ११ ॥

देवविसर्जन-मन्त्रा :—ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उप प्प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्प्राशुर्भवा सचा ॥ १ ॥

ॐ यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा ॥ एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥ १॥

देवविसर्जन-श्लोकाः—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ १ ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ २ ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ ३ ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ४ ॥
ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

यजमानरक्षाबन्धन (कङ्कणबन्धन) मन्त्रः—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धन (कङ्कणबन्धन) मन्त्रः—

ओ३म् तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ॥ नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः ॥

यजमानायाशीर्वादमन्त्राः—ओ३म् पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १ ॥

ओ३म् दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥ अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा वि रोहतात् ॥ २ ॥

ओ३म् विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व ॥ श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः ॥ पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप ऽएधते गृहे ॥ ३ ॥

ओ३म् स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ४ ॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं

महीयते ॥ धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ५ ॥

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा ।
ऋद्धिरस्तु बुद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

यजमानपत्न्या आशीर्वादमन्त्राः—ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्य ऽआयुर्म्मे दाः पुत्रवती दक्षिणत ऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजाम्मे दाः सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मे दा ऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः ॥ विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्य ऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥१॥

ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे । तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् ॥ २ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ ३ ॥

यज्ञमन्त्रसंग्रहस्य प्रथमो भागः समाप्तः ।

यज्ञ-मन्त्रसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

अथ [1]रुद्रयागमन्त्राः

(एकषष्ट्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य रुद्रस्वाहाकारविधिः)

—:०:—

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा। इति हुत्वा,

ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ विब्भ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा॥ १॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ २॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते ब्बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंसीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा॥ ३॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् स्वाहा॥ ४॥

---

१. समस्त यज्ञ-हवन–मन्त्रोंके ऋषि, छन्द, देवता, विनियोग आदिका उल्लेख हवन-मन्त्रोंके बाद किया गया है।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्व्यो भिषक् । अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽअरुणऽ उत बब्भ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनꣳ रुद्द्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाꣳ हेडऽ ईमहे स्वाहा ६

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो विलोहितः । उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो येऽ अस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्र मुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्यींज्ज्याम् । याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत । अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः । अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे । उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ।। १६ ।।

ॐ नमो हिरण्ण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ।।१७।।
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ।।१८।।
ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।१९।।
ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२०।।
ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२१।।
ॐ नमो भवस्स्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ।।२२।।
ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्त्राणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२३।।
ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२४।।
ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२५।।
ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२६।।
ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२७।।
ॐ नमऽ उच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२८।।
ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२९।।
ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ।। ३० ।।

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३१।।
ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३२।।
ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३३।।
ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ।।३४।।
ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघाᳬसद्ब्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ।। ३५ ।।

ॐनमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३६ ॥

ॐनमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा३७

ॐनमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥३८॥

ॐनमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा३९

ॐनमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४०॥

ॐनमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्चच वो नमः स्वाहा॥४१॥

ॐनमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४२॥

ॐनमः शयानेभ्यऽ आसीनेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४३॥

ॐनमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४४॥

ॐनमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४५॥

ॐनमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४६॥

ॐनमऽ आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४७॥

ॐनमऽ उगणाभ्यस्तृ हतीभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४८॥

ॐनमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥४९॥

ॐनमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५०॥

ॐनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५२॥

ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५३॥

ॐनमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५४॥

ॐनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५५॥

ॐनमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५६॥

ॐनमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चच वो नमः स्वाहा ॥५७॥

ॐनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥
ॐनमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५९॥
ॐनमः श्श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥६०॥
ॐनमः श्श्वभ्यः श्श्वपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥६१॥
ॐनमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥६२॥
ॐनमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥६३॥
ॐनमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥६४॥
ॐनमः कपर्द्दिने च व्व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥६५॥
ॐनमः सहस्राक्क्षाय च शतधन्न्वने च स्वाहा ॥६६॥
ॐनमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥६७॥
ॐनमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥
ॐनमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥६९॥
ॐनमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥७०॥
ॐनमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥७१॥
ॐनमोऽग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥७२॥
ॐनमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥७३॥
ॐनमः शीग्घ्याय च शीभ्याय च स्वाहा ॥७४॥
ॐनमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥७५॥
ॐनमो नादेयाय च द्द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥७६॥
ॐनमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥७७॥
ॐनमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥७८॥
ॐनमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥७९॥
ॐनमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥८०॥
ॐनमः सोभ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥८१॥

ॐनमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥८२॥
ॐनमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा ॥८३॥
ॐनमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥८४॥
ॐनमो व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥८५॥
ॐनमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥८६॥
ॐनमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥८७॥
ॐनमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥८८॥
ॐनमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥८९॥
ॐनमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥९०॥
ॐनमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥९१॥
ॐनमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा ॥९२॥
ॐनमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा ॥९३॥
ॐनमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥९४॥
ॐनमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥९५॥
ॐनमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा ॥९६॥
ॐनमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥९७॥
ॐनमः काट्ट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा ॥९८॥
ॐनमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥९९॥
ॐनमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥१००॥
ॐनमः कूप्प्याय चावट्ट्याय च स्वाहा ॥१०१॥
ॐनमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा ॥१०२॥
ॐनमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा ॥१०३॥
ॐनमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥१०४॥
ॐनमो व्वात्त्याय च रेष्म्म्याय च स्वाहा ॥१०५॥

ॐनमो व्वास्तव्व्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥१०६॥
ॐनमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥१०७॥
ॐनमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा ॥१०८॥
ॐनमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥१०९॥
ॐनमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥११०॥
ॐनमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥१११॥
ॐनमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥११२॥
ॐनमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा ॥११३॥
ॐनमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥
ॐनमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा । ११५॥
ॐनमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥११६॥
ॐनमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥
ॐनमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥११८॥
ॐनमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥११९॥
ॐनमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥१२०॥
ॐनमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥१२१॥
ॐनमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा ॥१२२॥
ॐनमः किᳬशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥१२३॥
ॐनमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥१२४॥
ॐनमऽ इरिण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥१२५॥
ॐनमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ट्ठ्याय च स्वाहा ॥१२६॥
ॐनमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥१२७॥
ॐनमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥१२८॥
ॐनमः काट्ट्याय च गह्वरेष्ट्ठाय च स्वाहा ॥१२९॥

ॐनमः शुष्क्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ॥१३०॥
ॐनमः पाᳫंसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥
ॐनमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥१३२॥
ॐनमऽ ऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥
ॐनमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥
ॐनमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥१३५॥
ॐनमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥
ॐनमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥१३७॥
ॐनमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳫं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३८॥
ॐनमो व्विचिन्न्वत्केभ्यो देवानाᳫं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३९॥
ॐनमो व्विक्षिणत्केभ्यो देवानाᳫं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४०॥
ॐनमऽ आनिर्हतेभ्यो देवानाᳫं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४१॥

ॐद्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषा-
म्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥१४२॥

ॐइमा रुद्द्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्द्वीराय प्प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे व्विश्श्वम्पुष्ट्टङ्ग्रामेऽ अस्मिन्न-
नातुरम् स्वाहा ॥१४३॥

ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥

ॐपरि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्क्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।
अव स्त्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय
मृड स्वाहा ॥१४५॥

ॐमीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्षऽ आयुधन्नि-
धाय कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा ॥१४६॥

ॐ व्विकिरिद्रद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र हेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥१४७॥
ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥१४८॥
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽ अधि भूम्म्याम् ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१४९॥
ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५०॥
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिव रुद्द्राऽ उपश्श्रिताः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५१॥
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजऽनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५२॥
ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५३॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५४॥
ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५५॥
ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाकस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५६॥
ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५७॥
ॐ यऽ एतावन्तश्च्च भूयाᳬसश्च्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्त्थिरे ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५८॥

ॐनमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥ १५९ ॥

ॐनमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातऽ इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥ १६० ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१६१॥

ॐभूः, ॐभुवः, ॐस्वः। ॐवयꣳ सोम० (८ मन्त्राः) [पाठमात्रम्]।

ॐउग्रश्च० (७ मन्त्राः) [पाठमात्रम्]।

ॐवाजश्च० ॥ १ ॥ प्राणश्च० ॥ २ ॥
ओजश्च० ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यं च ॥ ४ ॥ स्वाहा।

(२) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐसत्यञ्च० ॥१॥ ऋतञ्च० ॥२॥ यन्ता च० ॥३॥
शञ्च० ॥४॥ स्वाहा।

(३) ॐनमस्ते० (१६१) आहुतयः)।

ॐऊर्क् च० ।१॥ रयिश्च० ॥२॥ वित्तञ्च० ॥३॥
व्रीहयश्च० ॥४। स्वाहा।

(४) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअश्मा च० ॥१॥ अग्निश्च० ॥२॥ व्वसु च० ॥३॥ स्वाहा ।

(५) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअग्निश्च मऽ इन्द्रश्च० ॥१ । मित्त्रश्च० ॥२॥ पृथिवी च० ॥३॥ स्वाहा ।

(६) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअꣳशुश्च० ॥१॥ आग्रयणश्च० ॥१॥ स्रुचश्च० ॥३॥ स्वाहा ।

(७) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअग्निश्च० ॥१॥ व्रतञ्च० ॥२॥ स्वाहा ।

(८) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐएका च० ॥१॥ स्वाहा ।

(९) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐचतस्रश्च० ॥१॥ स्वाहा ।

(१०) ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐत्र्यविश्च० ॥१॥ पष्ठवाट् च० ॥२॥ स्वाहा ।

पुनः—ॐयज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐसहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐअद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐआशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐविभ्राड् बृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

(११) ओ३म्नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ओ३म्वाजाय स्वाहा० ॥१॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्० ॥२॥ स्वाहा ।

ओ३म्ऋचं वाचम्० स्वाहा ।
ओ३म्यन्मे छिद्रम्० स्वाहा ।
ओ३म्भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा ।
ओ३म्कया नश्चित्रः० स्वाहा ।
ओ३म्कस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा ।
ओ३म्अभी षु णः० स्वाहा ।
ओ३म्कया त्वन्न ऽऊत्याभि० स्वाहा ।
ओ३म्इन्द्रो व्विश्वस्य० स्वाहा ।
ओ३म्शं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा ।
ओ३म्शन्नो व्वातः पवता७ँ शन्नः० स्वाहा ।
ओ३म्अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा ।
ओ३म्शन्नो देवीः० स्वाहा ।
ओ३म्स्योना पृथिवि० स्वाहा ।
ओ३म्आपो हि ष्ठा० स्वाहा ।
ओ३म्यो वः शिवतमो रसः० स्वाहा ।
ओ३म्तस्मा ऽअरं गमाम वः० स्वाहा ।
ओ३म्द्यौः शान्तिः० स्वाहा ।
ओ३म्दृते दृ७ंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा ।
ओ३म्दृते दृ७ंह मा ज्योक्ते० स्वाहा ।
ओ३म्नमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा ।
ओ३म्नमस्ते ऽअस्तु व्विद्युते० स्वाहा ।

ॐयतो-यतः समीहसे० स्वाहा ।
ॐसुमित्रिया न ऽआपः० स्वाहा ।
ॐतच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा ।
ॐसद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।
ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति ।



अथ विष्णुयागस्वाहाकारमन्त्राः ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्व्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुष ऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥ ४ ॥
ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः ।
सजातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः ॥ ८ ॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये ॥ ९ ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳪ शूद्रो ऽअजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षᳪ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥
(शुक्ल यजुर्वेद ३१।१-१६)

अथ लक्ष्मीयागस्वाहाकारमन्त्राः ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् १५
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
(ऋग्वेद, परिशिष्टभाग)

—:०:—

अथ सूर्ययागस्वाहाकारमन्त्राः ।

ॐ व्विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यं मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ॥ व्वातजूतो यो ऽअभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥ १ ॥

उदु त्त्यं जातवेदसं देवं व्वहन्ति केतवः ॥ दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥ २ ॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२॥ अनु ॥ त्वं व्वरुण पश्यसि ॥ ३ ॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू ऽआगतठं० रथेन सूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वा यज्ञठं० समञ्जाथे ॥ तं प्रत्नथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ४ ॥

तं प्रत्नथा पूर्व्वथा विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिं बर्हिषदठं० स्वर्विदम् ॥ प्रतीचीनं व्वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे ॥ ५ ॥

अयं व्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने ॥ इममपा॒ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्न व्विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥ ६ ॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवी ऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्य ऽआत्मा जगतस्त-स्थुषश्च ॥ ७ ॥

आ न ऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देव ऽएतु ॥ अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वं जगद-भिपित्वे मनीषा ॥ ८ ॥

यदद्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगा ऽअभि सूर्य्य ॥
सर्व्वं तदिन्द्र ते व्वशे ॥ ९ ॥

तरणिर्व्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य ॥
व्विश्वमा भासि रोचनम् ॥ १० ॥

तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार । यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्म्मै ॥ ११ ॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुप-स्थे ॥ अनन्तमन्न्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥

बण्महाँ२ ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ ऽअसि ॥ महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२ ऽअसि ॥ १३ ॥

बट् सूर्य्य श्रवसा महाँ२ ऽअसि सत्रा देव महाँ२ ऽअसि ॥ मह्ना देवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिर-दाभ्यम् ॥ १४ ॥

आयन्त ऽइव सूर्य्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥ वसूनि जाते जनमान ऽओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ १५ ॥

अद्या देवा ऽउदिता सूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृता निरवद्यात् ॥ तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी ऽउत द्यौः ॥ १६ ॥

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १७ ॥

(शु० यजुर्वेद ३३।३०-३३), (शु० य० ७।१२,७।१६, १३।४६), शु० य० ३३।३४-४३)



अथ गणेशयागस्वाहाकारमन्त्राः ।

ॐ आ तू न ऽइन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥ १ ॥

त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिष्वभि विश्वा ऽअसि स्पृधः । अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ २ ॥

अनु ते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्न मातरा । विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ ३ ॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः । आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥ ४ ॥

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वᳬं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशᳬंस ऽईशत ॥ ५ ॥

प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्म्मधुमन्तः सुतासः। वह व्वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥ ६ ॥

गाव ऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्ण्णा हिरण्यया ॥ ७ ॥

काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे। रिशादसा सधस्स्थ ऽआ ॥ ८ ॥

(शुक्लयजुर्वेद ३३।६५-७२)

—:०:—

अथ प्रजापतियागस्वाहाकारमन्त्राः।

ॐ ब्राह्मणमद्य व्विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयᳬं सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॥ १ ॥

(शु० य० ७।४६)

मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निᳬ स्वे योनावभारुषा। तां व्विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्व्विश्वकर्मा व्वि मुञ्चतु ॥ २ ॥

(शु० य० १२।६१)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ३ ॥

(शु० य० १३ । १)

ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज ऽइन्द्रियꣳ सुरया सोमः सुत ऽआसुतो मदाय। शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि ॥ ४ ॥ (शु० य० १९।५)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ५ ॥ (शु० य० २२।२२)

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳ सरः। इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥ ६ ॥ (शु० य० २३।४८)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ॥ ७ ॥ (शु० य० २३।६५)

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी ऽअनेहसा। पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो ऽअघशꣳस ऽईशत ॥ ८ ॥ (शु० य० २९।४७)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयाया ऽअयोगूं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम् ॥ ९ ॥ (शु० य० ३०।५)

ब्रह्माणि मे मतयः शꣳ सुतासः शुष्म ऽइयर्ति प्रभृतो मे ऽअद्रिः। आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो ऽअच्छ ॥ १० ॥ (शु० य० ३३।७८)

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व। विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः। य ऽइमा विश्वा विश्वकर्मा यो नः पितान्नपते-ऽन्नस्य नो देहि ॥ ११ ॥ (शु० य० ३४।५८)



अथ नवग्रहयागस्वाहाकारमन्त्राः।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१॥

ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥ २ ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्।
अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥ ३ ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥५॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥६॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ ७ ॥

ॐ कया नश्चित्र ऽआ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे । समुषद्भिर-जायथाः ॥ ९ ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप-मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण ॥ २ ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्वन् ३

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ४ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ५ ॥

ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँ१ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ ६ ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ७ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ८ ॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥ ९ ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ऽआसादयादिह१

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे२

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ ३ ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳪ सुरे स्वाहा ॥ ४ ॥

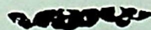
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳪ हवे हवे सुहवᳪ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳪ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।५।

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः । पूषासि घर्माय दीष्व ६

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वयᳪ स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ८ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥



अथ विश्वशान्तियज्ञस्वाहाकारमन्त्राः ।

ओ३म् ऋचं व्वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये । व्वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ १ ॥

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वातितृण्णं बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु । शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥

कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ ४ ॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढा चिदारुजे व्वसु ॥ ५ ॥

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥

कया त्वं न ऽऊत्याभि प्र मन्दसे व्वृषन् । कया स्तोतृभ्य ऽआ भर ॥ ७ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो ऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ८ ॥

शं नो मित्रः शं व्वरुणः शं नो भवत्वर्यमा । शं न ऽइन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥

शं नो व्वातः पवताꣳ शं नस्तपतु सूर्यः । शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो ऽअभि वर्षतु ॥ १० ॥

अहानि शं भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रति धीयताम् । शं न ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न ऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शं न ऽइन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ॥ ११ ॥

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥ १२ ॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ १३ ॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ १५ ॥

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ १६ ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥

दृते दृꣳह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यठं० शिवो भव ॥ २० ॥

नमस्ते ऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥

यतो-यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥

सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥ २३ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतठं० श्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ २४ ॥ (शुक्लयजुर्वेद ३६-१-२४)

—:०:—

(१) अथ †पर्जन्यसूक्तानि।

अच्छा वदेति दशर्चस्य सूक्तस्य भौमोऽत्रिर्ऋषिः पर्जन्यो देवता द्वितीयाद्यास्तिस्रो जगत्यः नवम्यनुष्टुप् शिष्टाः षट् त्रिष्टुभः, बळित्थेति तृचस्य भौमोऽत्रिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, पृथिवी देवता, तिस्रो वाव इति षडर्चस्य सूक्तस्याग्नेयः कुमारो मैत्रावरुणिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः पर्जन्यो देवता, पर्जन्यायेति तृचस्य सूक्तस्य आग्नेयः कुमारो मैत्रावरुणिर्ऋषिः गायत्री छन्दः पर्जन्यो देवता, संवत्सरमिति दशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ ऋषिः आद्यानुष्टुप् शिष्टास्त्रिष्टुभः मण्डूका देवताः, प्र देवत्रेति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य ऐलूषः

---

† वृष्टि करानेकी और अतिवृष्टि रोकनेकी विधिको जाननेके लिये हमारी बृहत् 'यज्ञ-मीमांसा' देखनी चाहिये।

कवषऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः आपो देवता, बृहस्पते प्रति म इति द्वादशर्चस्य सूक्तस्य आर्ष्टिषेणो देवापिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिमित्रादयो देवताः सुवृष्टचर्थं जपे होमे च विनियोगः ।

ॐ अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् ॥१॥

वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः ॥२॥

रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान् कृणुते वर्ष्याँ३ अह ।
दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं१ नभः ॥ ३ ॥

प्र वाता यान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ॥ ४ ॥

यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति ।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ॥५॥

दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः ॥६॥

अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन ।
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः ॥७॥

महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात् ।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः ॥८॥

यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किञ्च पृथिव्यामधि ॥९॥

अव्रषीर्वर्षमुदु षू गृभायाऽकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम् ॥१०॥
(ऋग्वेद ५।८३।१–१०)

ॐ बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि ।
प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि ॥ १ ॥
स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति ष्टोभन्त्यक्तुभिः ।
प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥ २ ॥
दृळ्हा चिद् या वनस्पतीन् क्ष्मया दर्धर्ष्योजसा ।
यत् ते अभ्रस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ॥ ३ ॥
(ऋग्वेद ५।८४।१–३)

ॐ तिस्रो वाचः प्र वद ज्योतिरग्रा या एतद् दुह्रे मधुदोघमूधः ।
स वत्सं कृण्वन् गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥

यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।
स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत् त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्ट्यस्मे ॥ २ ॥

स्तरीरु त्वद् भवति सूत उ त्वद् यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ॥ ३ ॥

यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः ।

त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्यभितो
विरप्शम् ॥ ४ ॥

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।
मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः ॥५॥

स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः ॥ ६ ॥

(ऋग्वेद ७।१०१।१-६)

ॐ पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे ।
स नो यवसमिच्छतु ॥ १ ॥

यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम् ।
पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥ २ ॥

तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् ।
इळां नः संयतं करत् ॥ ३ ॥

(ऋग्वेद ७ १०२।१-३)

ॐ संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥१॥

दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ॥२॥

यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत् तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।
अक्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ॥३॥

अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम् ॥४॥

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः ।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ॥५॥
गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ॥६॥
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ॥७॥
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ॥८॥
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ॥९॥
गोमायुरदादजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥१०॥
(ऋग्वेद ७।१०३।१-१०)

ॐ प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरेत्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।
महीं मित्रस्य वरुणस्य धासिं पृथुज्रयसे रीरधा सुवृक्तिम् ॥१॥
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूताऽच्छाप इतोशतीरुशन्तः ।
अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः ॥२॥
अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् ।
स वो ददूर्मिमद्या सुपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत ॥३॥
यो अनिध्मो दीदयदप्स्वन्तर्यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।
अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावृधे वीर्याय ॥४॥
याभिः सोमो मोदते हर्षते च कल्याणीभिर्युवतिभिर्न मर्यः ।
ता अध्वर्यो अपो अच्छा परेहि यदासिञ्चा ओषधीभिः पुनीतात् ॥५॥

एवेयूने युवतयो नमन्त यदीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ ।
सं जानते मनसा सं चिकित्रे ऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः ॥६॥

यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकं यो वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत् ।
तस्मा इन्द्राय मधुमन्तमूर्मिं देवमादनं प्र हिणोतनापः ॥७॥

प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मिं गर्भो यो वः सिन्धवो मध्व उत्सः ।
घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेष्वाऽऽपो रेवतीः शृणुता हवं मे ॥८॥

तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानमूर्मिं प्र हेत य उभे इयर्ति ।
मदच्युतमौशानं नभोजां परि त्रितन्तुं विचरन्तमुत्सम् ॥९॥

आवर्वृततीरध नु द्विधारा गोषुयुधो न नियवं चरन्तीः ।
ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नीरपो वन्दस्व सवृधः सयोनी ॥१०॥

हिनोता नो अध्वरं देवयज्या हिनोत ब्रह्म सनये धनानाम् ।
ऋतस्य योगे वि ष्यध्वमूधः श्रुष्टीवरीर्भूतनास्मभ्यमापः ॥११॥

आपो रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च ।
रायश्च स्थ स्वपत्यस्य पत्नीः सरस्वती तद्गृणते वयो धात् ॥१२॥

प्रति यदापो अदृश्रमायतीर्घृतं पयांसि बिभ्रतीर्मधूनि ।
अध्वर्युभिर्मनसा संविदाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ॥१३॥

एमा अग्मन् रेवतीर्जीवधन्या अध्वर्यवः सादयता सखायः ।
नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नप्त्रा संविदानास एनाः ॥१४॥

आग्मन्नाप उशतीर्बर्हिरेदं न्यध्वरे असदन् देवयन्तीः ।
अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोममभूदु वः सुशका देवयज्या ॥१५॥

(ऋग्वेद १०।३०।१-१५)

ओ३म्बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान् त्स पर्जन्यं शंतनवे वृषाय ॥१॥

आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापे अभि मामगच्छत् ।
प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् ॥२॥

अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।
यया वृष्टिं शंतनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ॥३॥

आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्र देह्यधिरथं सहस्रम् ।
नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान् देवापे हविषा सपर्य ॥४॥

आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।
स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ॥५॥

अस्मिन् त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।
ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ॥६॥

यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत् ।
देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ॥७॥

यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।
विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ॥८॥

त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।
सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ॥९॥

एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।
तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि ॥१०॥

एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।
विद्वान् पथ ऋतुशो देवयानानप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ॥११॥

अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहाऽपामीवामप रक्षांसि सेध ।
अस्मात् समुद्राद् बृहतो दिवो नोऽपां भूमानमुप नः सृजेह ॥१२॥

(ऋग्वेद १०।९८।२-१२)

(२) अथ पर्जन्यमन्त्रन्यासः ।

ध्रुवा सुत्वेति महामन्त्रस्य मैत्रावरुणपुत्रो वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः पाशविमोचको वरुणो देवता वं बीजं कं शक्तिः णं कीलकं अनावृष्टिनिवृत्तिद्वारा सद्यः सुवृष्टयर्थं जपे होमे च विनियोगः ।

करन्यासः—

ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
क्षियन्तो व्य१स्मत्	तर्जनीभ्यां नमः ।
पाशं वरुणो मुमोचत्	मध्यमाभ्यां नमः ।
अवो वन्वानाः	अनामिकाभ्यां नमः ।
अदिते रुपस्थ द्	कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः—

ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु	हृदयाय नमः ।
क्षियन्तो व्य१स्मत्	शिरसे स्वाहा ।
पाशं वरुणो मुमोचत्	शिखायै वषट् ।
अवो वन्वानाः	कवचाय हुम् ।
अदितेरुपस्थाद्	नेत्राभ्यां वौषट् ।
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—

चन्द्रप्रभं पङ्कजसन्निविष्टं
पाशाङ्कुशाभीतिवरं दधानम् ।
मुक्ताकलापाङ्कितसर्वगात्रं
ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं सुवृष्ट्यै ॥ १ ॥

त्वं वै जलपतिर्भूत्वा सर्वसस्याभिवृद्धये ।
निमन्त्रितो महेशेन पूर्वं त्रैलोक्यरक्षणे ॥ २ ॥
अस्माभिः प्रार्थितो नूनमनावृष्टिप्रपीडितैः ।
अद्य त्रैलोक्यरक्षार्थमपः क्षिप्रं प्रवर्षति ॥ ३ ॥
पाशवज्रधरं देवं वरदाभयपाणिनम् ।
अभ्रारूढं तु पर्जन्यं वृष्ट्यर्थं प्रणमाम्यहम् । ४ ।
यस्य केशेषु जीमूता नद्यः सर्वाङ्गसन्धिषु ।
कुक्षौ समुद्राश्चत्वारस्तस्मै तोयात्मने नमः । ५ ।
पुष्करावर्त्तकैर्मेघैः प्लावयन्तं वसुन्धराम् ।
विद्युद्गर्जितसंवादं तोयात्मानं नमाम्यहम् । ६ ॥
आयातु वरुणः शीघ्रं प्राणिनां प्राणरक्षकः ।
अतुल्यबलवानत्र सर्वसस्याभिवृद्धये ॥ ७ ॥

पर्जन्य-मन्त्रः—

ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यस्मत् पाशं वरुणो मुमोचत् ।
अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

(ऋग्वेद ७ । ८८ । ७)

इति पर्जन्यमन्त्रन्यासः ।

—:०:—

(३) अथ वृष्टिकरणविधिः ।

पुष्करावर्त्तकैर्मेघैः प्लावयन्तं वसुन्धराम् ।
विद्युद्गर्जितसन्नद्धतोयात्मानं नमाम्यहम् ॥ १ ॥

यस्य केशेषु जीमूता नद्यः सर्वाङ्गसन्धिषु ।
कुक्षौ समुद्राश्चत्वारस्तस्मै तोयात्मने नमः ॥२॥

इति ध्यात्वा, आवाह्य वरुणं षोडशोपचारैः पूजयित्वा "वं वरुणाय नमः" इति मूलमन्त्रं जपेत् ।

उदुत्तमं वरुणेति मन्त्रस्य आजीगर्तिः शुनःशेप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, वरुणो देवता, एतद्देशमभिव्याप्य सुवृष्ट्यर्थं जपे विनियोगः ।

मन्त्रस्य स्वरूपमित्थम्—

ॐ 'वं' उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥

नाभिमात्रजले स्थित्वा जपेन्मन्त्रं प्रसन्नधीः ।
एकलक्षं जपेन्मन्त्रं त्रिदिनं व्याप्य यत्नतः ॥

अथवा—

'षट्सहस्रं जपेन्मन्त्रं तदा वृष्टिर्भवेद् ध्रुवम् ।'

इति वृष्टिकरणविधिः

—:०:—

अथ सन्तानयागमन्त्राः ।

(प्रधानदेवताज्यहोमः)

प्रधानदेवताज्यहोममन्त्राणां याज्ञवल्क्यबृहदारण्यकावृषी अनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता पुत्रकामनासिद्धये प्रधानदेवताज्यहोमे विनियोगः ।

ॐ यावन्तो देवास्त्वयि जातवेदस्तिर्यञ्चो घ्नन्ति पुरुषस्य कामान् ।
तेभ्योऽहं भागधेयं जुहोमि ते मा तृप्ताः सर्वकामैस्तर्पयन्तु स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ १ ॥

ॐ या तिरश्चीनिपद्यतेऽहं विधरणी इति ।
तां त्वा घृतस्य धारया यजे सम्राधनीमहं स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ २ ॥

ॐ ज्येष्ठाय	स्वाहा ।	इदं ज्येष्ठाय	न	मम	॥ ३
ॐ श्रेष्ठाय	स्वाहा ।	इदं श्रेष्ठाय	न	मम	॥ ४ ॥
ॐ प्राणाय	स्वाहा ।	इदं प्राणाय	न	मम	॥ ५ ॥
ॐ अवशिष्टाय	स्वाहा ।	इदमवशिष्टाय	न	मम	॥ ६ ॥
ॐ चक्षुषे	स्वाहा ।	इदं चक्षुषे	न	मम	॥ ७ ॥
ॐ सम्पदे	स्वाहा ।	इदं सम्पदे	न	मम	॥ ८ ॥
ॐ श्रोत्राय	स्वाहा ।	इदं श्रोत्राय	न	मम	॥ ९ ॥
ॐ यतनाय	स्वाहा ।	इदं यतनाय	न	मम	॥१०॥
ॐ मनसे	स्वाहा ।	इदं मनसे	न	मम	॥११॥
ॐ प्रजायै	स्वाहा ।	इदं प्रजायै	न	मम	॥१२॥
ॐ रेतसे	स्वाहा ।	इदं रेतसे	न	मम	॥१३॥
ॐ अग्नये	स्वाहा ।	इदमग्नये	न	मम	॥१४॥
ॐ वायवे	स्वाहा ।	इदं वायवे	न	मम	॥१५॥
ॐ सूर्याय	स्वाहा ।	इदं सूर्याय	न	मम	॥१६॥
ॐ सोमाय	स्वाहा ।	इदं सोमाय	न	मम	॥ १७ ॥
ॐ देवाय	स्वाहा ।	इदं देवाय	न	मम	॥१८ ॥
ॐ क्षत्राय	स्वाहा ।	इदं क्षत्राय	न	मम	॥१९॥
ॐ ब्रह्मणे	स्वाहा ।	इदं ब्रह्मणे	न	मम	॥२०॥
ॐ भूताय	स्वाहा ।	इदं भूताय	न	मम	॥२१॥
ॐ भविष्यते	स्वाहा ।	इदं भविष्यते	न	मम	॥२२॥
ॐ विश्वाय	स्वाहा ।	इदं विश्वाय	न	मम	॥२३॥

ॐ सर्वाय स्वाहा । इदं सर्वाय न मम ।.२४।।
ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।.२५।।

—:०:—

अथ स्थालीपाकाहुतयः ।

ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम ।। १ ।।
ॐ अनुमतये स्वाहा । इदमनुमतये न मम ।। २ ।।
ॐ देवाय स्वाहा । इदं देवाय न मम ।। ३ ।।
ॐ सवित्रे स्वाहा । इदं सवित्रे न मम ।। ४ ।।
ॐ सत्यप्रसवाय स्वाहा । इदं सत्यप्रसवाय न मम ।। ५ ।

अग्नीषोमाविति सूक्तस्य राहूगणो गौतमऋषिः अग्नीषोमौ देवते अनुष्टुप्-त्रिष्टुब्जगतीछन्दांसि पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् ।
प्रति सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः स्वाहा ।।
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ।। १ ।।

अग्नीषोमा यो अद्य वामिदं वचः सपर्यति ।
तस्मै धत्तं सुवीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यम् ।
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ।। २ ।

अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृतिम् ।
स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ।। ३ ।।

अग्नीषोमा चेति तद् वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिं गाः ।
अवातिरतं बृसयस्य शेषो ऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः ।।
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ।। ४ ।।

युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।
युवं सिन्धूँरभिशस्तेरवद्यादग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान् ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ५ ॥

आन्यं दिवो मातरिश्वा जभारामथ्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधानोरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ६ ॥

अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतमथा धत्तं यजमानाय शं योः ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ७ ॥

यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ८ ॥

अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः ।
सं देवत्रा बभूवथुः ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ९ ॥

अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति ।
तस्मै दीदयतं बृहत् ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ १० ॥

अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् ।
आ यातमुप नः सचा ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ ११ ॥

अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्रिया हव्यसूदः ।

अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम् ॥
इदमग्नीषोमाभ्यां न मम ॥ १२ ॥

(ऋग्वेद १ । ९३ । १-१२

आ ते गर्भ इति पञ्चर्चस्य सूक्तस्य हिरण्यगर्भऋषिः अग्निर्देवता: अनुष्टुप् छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ आ ते गर्भो योनिमैतु पुमान् बाण इवेषुधिम् ।
आ वीरो जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ १ ॥

करोमि ते प्राजापत्यमा गर्भो योनिमैतु ते ।
अनूनः पूर्णो जायतामश्लोणोऽपिशाचधीतः स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ २ ॥

पुमाँस्ते पुत्रो नारि तं पुमाननु जायताम् ।
तानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति नौ स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥

यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति नः
तैस्त्वं पुत्रान् विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ ४ ॥

कामः समृद्ध्यतां मह्यमपराजितमेव मे ।
यं कामं कामये देव तं मे वायो समर्द्धय स्वाहा ॥
इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥

(ऋग्वेद, परिशिष्ट ९ । १-५

अग्निरिति पञ्चर्चस्य सूक्तस्य हिरण्यगर्भऋषिः वरुणो देवता जगती छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवतानां सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्

त्वद्यं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा ॥

इदं वरुणाय न मम ॥ १ ॥

इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः ।
अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि प्रबुद्ध्यतामियम् स्वाहा ॥

इदं वरुणाय न मम ॥ २ ॥

मा ते गृहे निशि घोष उत्थादन्यत्र त्वद्रुदत्यः सं विशन्तु ।
मा त्वं विकेश्युर आवधिष्ठा जीवपत्नी पतिलोके विराज पश्यन्ती प्रजां सुमनस्यमाना स्वाहा ॥

इदं वरुणाय न मम ॥ ३ ॥

अप्रजस्तां पौत्रमृत्युं पाप्मानमुत वाघम् ।
शीर्ष्णः स्रजमिवोन्मुच्य द्विषद्भ्यः प्रतिमुञ्चामि पाशम् स्वाहा ॥

इदं वरुणाय न मम ॥ ४ ॥

देवकृतं ब्राह्मणं कल्पमानं तेन हन्मि योनिषदः पिशाचान् ।
क्रव्यादो मृत्यूनधरान् पातयामि दीर्घमायुस्तव जीवन्तु पुत्राः स्वाहा ॥

इदं वरुणाय न मम ॥ ५ ॥

(ऋग्वेद, परिशिष्ट १०।१–५)

नेजमेषेति तिसृणां विष्णुस्त्वष्टा गर्भकर्तर्षिः विष्णुपृथिवी विष्णवो यथासख्यं देवता अनुष्टुप् छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ नेजमेष परा पत सुपुत्रः पुनरा पत ।
अस्यै मे पुत्रकामायै गर्भमा धेहि यः पुमान् स्वाहा ॥

इदं विष्णवे न मम ॥ १ ॥

यथेयं पृथिवी मह्युत्ताना गर्भमादधे ।
एवं तं गर्भमा धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ।
इदं विष्णवे न मम ॥ २ ॥
विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणाऽस्यां नार्यां गवीन्याम् ।
पुमांसं पुत्राना धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥
इदं विष्णवे न मम ॥ ३ ॥

(ऋग्वेद, परिशिष्ट ३४ । १-३)

सोमो धेनुमिति राहूगणो गौतमऋषिः सोमो देवता त्रिष्टुप् छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे . .नियोगः ।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा ॥
इदं सोमाय न मम ।

(ऋग्वेद १ । ९१ । २०)

इहैव स्तं मेति सूर्यासावित्रीऋषिका आत्मा देवता अनुष्टुप् छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे स्वाहा ॥
इदं सूर्यासावित्र्यै न मम ।

(ऋग्वेद १० । ८५ । ४२)

इमां त्वमित्यस्य सूर्यासावित्रीऋषिका अनुष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि स्वाहा ॥
इदं सूर्यासावित्र्यै न मम ।

(ऋग्वेद १० । ८५ । ४५)

तां पूषन्निति सूर्यासावित्रीऋषिका सूर्या देवता त्रिष्टुप् छन्दः पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति
या न ऊरू उशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं स्वाहा ।
इदं सूर्यासावित्र्यै न मम ।

(ऋग्वेद १० । ८५ । ३

आ ते योनिमिति पञ्चर्चस्य ब्रह्माऋषिः चन्द्रमा योनिद्यावापृथिवी देवता आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः अन्त्ये द्वे बृहत्यौ छन्दसी पुत्रकामनासिद्ध्ये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ आ ते योनिं गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम् ।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः स्वाहा ॥
इदं द्यावापृथिवीभ्यां न मम । १ ॥

पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम् ।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् स्वाहा ॥
इदं द्यावापृथिवीभ्यां न मम ॥ २ ॥

यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च ।
तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव स्वाहा ॥
इदं द्यावापृथिवीभ्यां न मम ॥ ३ ॥

कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भ एतु ते ।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव स्वाहा ।
इदं द्यावापृथिवीभ्यां न मम ॥ ४ ॥

यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोपधयः स्वाहा ॥
इदं द्यावापृथिवीभ्यां न मम । ५ ॥

(अथर्ववेद ३।२३।२-५

पर्वत द् दिव इति त्रयोदशर्चस्य सूक्तस्य ब्रह्माऋषिः, पृथिव्यादयः देवताः, अनुष्टुप् छन्दः, अन्त्यायाः विराट्-पुरस्ताद्-बृहती छन्दः, पुत्रकामनासिद्धये पायसद्रव्यहोमे विनियोगः ।

ॐ पर्वताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम् ।
शेपो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पर्णमिवा दधत् स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ १ ॥

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे ।
एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ २ ॥

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ३ ॥

गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः ।
गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ४ ॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ५ ॥

यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती ।
यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद् गर्भकरणं पिब स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ६ ॥

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् ।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ७ ॥

अधि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम् ।
वृषासि वृष्ण्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ८ ॥

वि जिहीष्व बार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम् ।
अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ९ ॥
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ १० ॥
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ ११ ॥
सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ १२ ॥
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः ।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥
इदं पृथिव्यै न मम ॥ १३ ॥

(अथर्ववेद ५ । २५ । १–१३)

यदस्येति हिरण्यगर्भ ऋषिः अग्निः स्विष्टकृद्देवता अतिधृतिश्छन्दः स्विष्टकृद्धोमे विनियोगः ।

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद् विद्वान् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान् त्समर्द्धय स्वाहा ॥
इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।

(आश्वलायनगृह्यसूत्र १ । १० । २५)

इति स्विष्टकृद्धोमं विधाय, आचार्यः अवशिष्टहविष्यांशं गृहीत्वा, अपश्यन्त्वेति द्वयोः प्रजावान् प्राजापत्यऋषिः प्रजापतिर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः हुतशेषपायसचरुप्राशने विनियोगः।

ॐ अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम्।
इह प्रजामिह रयिं रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम॥

(ऋग्वेद १०।१८३।१)

इति मन्त्रं पठित्वा यजमानं भोजयेत्। पश्चाद् हविष्यांशस्यार्धभागं गृहीत्वा—

अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम्।
उप मामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकामे॥

(ऋग्वेद १०।१८३।२)

इति मन्त्रमुच्चार्य यजमानपत्नीं भोजयेत्। ततो यजमानदम्पती हस्तप्रक्षालनं कृत्वा अचामेत्।

पिशङ्गभृष्टिमित्यस्य दैवोदासिः परुच्छेपऋषिः इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः नाभ्यालम्भने विनियोगः।

ॐ पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण।
सर्वं रक्षो नि बर्हय॥

(ऋग्वेद १।१३३।५)

इति मन्त्रेण पति-पत्नी स्व-स्व-नाभ्यालम्भनं कुर्याताम्।

अथ राक्षोघ्नमन्त्रजपः।

ॐ ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये॥ १॥
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्॥२॥

यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥३॥
यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये ।
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि ॥४॥
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ।५॥
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥६॥

—०— (ऋग्वेद १०।१६२।१-६)

अथ आशीर्वादमन्त्राः ।

ॐ अंहोमुचे प्र भरेमा मनीषामोषिष्ठदाव्ने सुमतिं गृणानाः ।
इदमिन्द्र प्रति हव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥
(तैत्तिरीयसंहिता १।६।१२)

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्भकं मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् । मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ (शु० य० १६।१५)

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
(शु० य० २२।२२)

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ (शु० य० १२।४४)

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽ आयुर्म्मे दाः पुत्रवती दक्षिणतऽ इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः। सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मे दाऽ आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः। विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्य ऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥

(शु० य० ३७।१२)

अथ गोयज्ञमन्त्राः।

आ गावो अग्मन्निति अष्टर्चस्य सूक्तस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः गौर्देवता (इन्द्रो वा) गोप्रीत्यर्थे हवने विनियोगः।

ॐ आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन् त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ १ ॥
इन्द्रो यज्वने पृणते शिक्षत्युपेद् ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥२॥
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित् ताभिः सचते गोपतिः सह ३
न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ४
गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ५
यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद् वो वय उच्यते सभासु ॥६॥
प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ॥७॥
उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम्।
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ॥ ८ ॥

(ऋग्वेद ६।२८।१-८)

अथ विष्णुसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः ।

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णः परमात्मा देवता, अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्, देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः, त्रिसामा-सामगः सामेति हृदयम् शङ्खभृन्नन्दको चक्रीति कीलकम्. शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्. रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्. उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः, श्रीविष्णुप्रीत्यर्थे जपे होमे (सहस्रतुलसी-दलसमर्पणे) च विनियोगः ।

१ ॐ विश्वस्मै स्वाहा
२ ॐ विष्णवे स्वाहा
३ ॐ वषट्काराय स्वाहा
४ ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे स्वाहा
५ ॐ भूतकृते स्वाहा
६ ॐ भूतभृते स्वाहा
७ ॐ भावाय स्वाहा
८ ॐ भूतात्मने स्वाहा
९ ॐ भूतभावनाय स्वाहा
१० ॐ पूतात्मने स्वाहा
११ ॐ परमात्मने स्वाहा
१२ ॐ मुक्तानां परमागतये स्वाहा
१३ ॐ अव्ययाय स्वाहा
१४ ॐ पुरुषाय स्वाहा
१५ ॐ साक्षिणे स्वाहा
१६ ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा
१७ ॐ अक्षराय स्वाहा
१८ ॐ योगाय स्वाहा
१९ ॐ योगविदां नेत्रे स्वाहा
२० ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय स्वाहा
२१ ॐ नारसिंहवपुषे स्वाहा
२२ ॐ श्रीमते स्वाहा
२३ ॐ केशवाय स्वाहा
२४ ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा
२५ ॐ सर्वस्मै स्वाहा
२६ ॐ शर्वाय स्वाहा
२७ ॐ शिवाय स्वाहा
२८ ॐ स्थाणवे स्वाहा
२९ ॐ भूतादये स्वाहा
३० ॐ अव्ययनिधये स्वाहा
३१ ॐ सम्भवाय स्वाहा
३२ ॐ भावनाय स्वाहा
३३ ॐ भर्त्रे स्वाहा

३४ ॐ प्रभवाय स्वाहा
३५ ॐ प्रभवे स्वाहा
३६ ॐ ईश्वराय स्वाहा
३७ ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा
३८ ॐ शम्भवे स्वाहा
३९ ॐ आदित्याय स्वाहा
४० ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा
४१ ॐ महास्वनाय स्वाहा
४२ ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा
४३ ॐ धात्रे स्वाहा
४४ ॐ विधात्रे स्वाहा
४५ ॐ धातुरुत्तमाय स्वाहा
४६ ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
४७ ॐ हृषीकेशाय स्वाहा
४८ ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
४९ ॐ अमरप्रभवे स्वाहा
५० ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा
५१ ॐ मनवे स्वाहा
५२ ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
५३ ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा
५४ ॐ स्थविरोध्रुवाय स्वाहा
५५ ॐ अग्राह्याय स्वाहा
५६ ॐ शाश्वताय स्वाहा
५७ ॐ कृष्णाय स्वाहा
५८ ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा
५९ ॐ प्रतर्दनाय स्वाहा
६० ॐ प्रभूताय स्वाहा
६१ ॐ त्रिककुब्धाम्ने स्वाहा
६२ ॐ पवित्राय स्वाहा
६३ ॐ मङ्गलपराय स्वाहा
६४ ॐ ईशानाय स्वाहा
६५ ॐ प्राणदाय स्वाहा
६६ ॐ प्राणाय स्वाहा
६७ ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा
६८ ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा
६९ ॐ प्रजापतये स्वाहा
७० ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा
७१ ॐ भूगर्भाय स्वाहा
७२ ॐ माधवाय स्वाहा
७३ ॐ मधुसूदनाय स्वाहा
७४ ॐ ईश्वराय स्वाहा
७५ ॐ विक्रमिणे स्वाहा
७६ ॐ धन्विने स्वाहा
७७ ॐ मेधाविने स्वाहा
७८ ॐ विक्रमाय स्वाहा
७९ ॐ क्रमाय स्वाहा
८० ॐ अनुत्तमाय स्वाहा
८१ ॐ दुराधर्षाय स्वाहा
८२ ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
८३ ॐ कृतये स्वाहा

८४ ॐ आत्मवते स्वाहा
८५ ॐ सुरेशाय स्वाहा
८६ ॐ शरणाय स्वाहा
८७ ॐ शर्मणे स्वाहा
८८ ॐ विश्वरेतसे स्वाहा
८९ ॐ प्रजाभवाय स्वाहा
९० ॐ अह्नये स्वाहा
९१ ॐ संवत्सराय स्वाहा
९२ ॐ व्यालाय स्वाहा
९३ ॐ प्रत्ययाय स्वाहा
९४ ॐ सर्वदर्शनाय स्वाहा
९५ ॐ अजाय स्वाहा
९६ ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा
९७ ॐ सिद्धाय स्वाहा
९८ ॐ सिद्धये स्वाहा
९९ ॐ सर्वादये स्वाहा
१०० ॐ अच्युताय स्वाहा
१०१ ॐ वृषाकपये स्वाहा
१०२ ॐ अमेयात्मने स्वाहा
१०३ ॐ सर्वयोगविनिःसृताय स्वाहा
१०४ ॐ वसवे स्वाहा
१०५ ॐ वसुमनसे स्वाहा
१०६ ॐ सत्याय स्वाहा
१०७ ॐ समात्मने स्वाहा
१०८ ॐ सम्मिताय स्वाहा
१०९ ॐ समाय स्वाहा
११० ॐ अमोघाय स्वाहा
१११ ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा
११२ ॐ वृषकर्मणे स्वाहा
११३ ॐ वृषाकृतये स्वाहा
११४ ॐ रुद्राय स्वाहा
११५ ॐ बहुशिरसे स्वाहा
११६ ॐ बभ्रवे स्वाहा
११७ ॐ विश्वयोनये स्वाहा
११८ ॐ शुचिश्रवसे स्वाहा
११९ ॐ अमृताय स्वाहा
१२० ॐ शाश्वतस्थाणवे स्वाहा
१२१ ॐ वरारोहाय स्वाहा
१२२ ॐ महातपसे स्वाहा
१२३ ॐ सर्वगाय स्वाहा
१२४ ॐ सर्वविद्भानवे स्वाहा
१२५ ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा
१२६ ॐ जनार्दनाय स्वाहा
१२७ ॐ वेदाय स्वाहा
१२८ ॐ वेदविदे स्वाहा
१२९ ॐ अव्यङ्गाय स्वाहा
१३० ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा
१३१ ॐ वेदविदे स्वाहा
१३२ ॐ कवये स्वाहा

१३३ लोकाध्यक्षाय स्वाहा
१३४ ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा
१३५ ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा
१३६ ॐ कृताकृताय स्वाहा
१३७ ॐ चतुरात्मने स्वाहा
१३८ ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा
१३९ ॐ चतुर्दंष्ट्राय स्वाहा
१४० ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा
१४१ ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा
१४२ ॐ भोजनाय स्वाहा
१४३ ॐ भोक्त्रे स्वाहा
१४४ ॐ सहिष्णवे स्वाहा
१४५ ॐ जगदादिजाय स्वाहा
१४६ ॐ अनघाय स्वाहा
१४७ ॐ विजयाय स्वाहा
१४८ ॐ जेत्रे स्वाहा
१४९ ॐ विश्वयोनये स्वाहा
१५० ॐ पुनर्वसवे स्वाहा
१५१ ॐ उपेन्द्राय स्वाहा
१५२ ॐ वामनाय स्वाहा
१५३ ॐ प्रांशवे स्वाहा
१५४ ॐ अमोघाय स्वाहा
१५५ ॐ शुचये स्वाहा
१५६ ॐ ऊर्जिताय स्वाहा
१५७ ॐ अतीन्द्राय स्वाहा
१५८ ॐ सङ्ग्रहाय स्वाहा
१५९ ॐ सर्गाय स्वाहा
१६० ॐ धृतात्मने स्वाहा
१६१ ॐ नियमाय स्वाहा
१६२ ॐ यमाय स्वाहा
१६३ ॐ वेद्याय स्वाहा
१६४ ॐ वैद्याय स्वाहा
१६५ ॐ सदायोगिने स्वाहा
१६६ ॐ वीरघ्ने स्वाहा
१६७ ॐ माधवाय स्वाहा
१६८ ॐ मधवे स्वाहा
१६९ ॐ अतीन्द्रियाय स्वाहा
१७० ॐ महामायाय स्वाहा
१७१ ॐ महोत्साहाय स्वाहा
१७२ ॐ महाबलाय स्वाहा
१७३ ॐ महाबुद्धये स्वाहा
१७४ ॐ महावीर्याय स्वाहा
१७५ ॐ महाशक्तये स्वाहा
१७६ ॐ महाद्युतये स्वाहा
१७७ ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा
१७८ ॐ श्रीमते स्वाहा
१७९ ॐ अमेयात्मने स्वाहा
१८० ॐ महाद्रिधृषे स्वाहा
१८१ ॐ महेष्वासाय स्वाहा
१८२ ॐ महीभर्त्रे स्वाहा

१८३ ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा
१८४ ॐ सताङ्गतये स्वाहा
१८५ ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा
१८६ ॐ सुरानन्दाय स्वाहा
१८७ ॐ गोविन्दाय स्वाहा
१८८ ॐ गोविदाम्पतये स्वाहा
१८९ ॐ मरीचये स्वाहा
१९० ॐ दमनाय स्वाहा
१९१ ॐ हंसाय स्वाहा
१९२ ॐ सुपर्णाय स्वाहा
१९३ ॐ भुजगोत्तमाय स्वाहा
१९४ ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा
१९५ ॐ सुतपसे स्वाहा
१९६ ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
१९७ ॐ प्रजापतये स्वाहा
१९८ ॐ अमृत्यवे स्वाहा
१९९ ॐ सर्वदृशे स्वाहा
२०० ॐ सिंहाय स्वाहा
२०१ ॐ सन्धात्रे स्वाहा
२०२ ॐ सन्धिमते स्वाहा
२०३ ॐ स्थिराय स्वाहा
२०४ ॐ अजाय स्वाहा
२०५ ॐ दुर्मर्षणाय स्वाहा
२०६ ॐ शास्त्रे स्वाहा
२०७ ॐ विश्रुतात्मने स्वाहा
२०८ ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा
२०९ ॐ गुरवे स्वाहा
२१० ॐ गुरुतमाय स्वाहा
२११ ॐ धाम्ने स्वाहा
२१२ ॐ सत्याय स्वाहा
२१३ ॐ सत्यपराक्रमाय स्वाहा
२१४ ॐ निमिषाय स्वाहा
२१५ ॐ अनिमिषाय स्वाहा
२१६ ॐ स्रग्विणे स्वाहा
२१७ ॐ वाचस्पतिरुदारधिये स्वाहा
२१८ ॐ अग्रण्ये स्वाहा
२१९ ॐ ग्रामण्ये स्वाहा
२२० ॐ श्रीमते स्वाहा
२२१ ॐ न्यायाय स्वाहा
२२२ ॐ नेत्रे स्वाहा
२२३ ॐ समीरणाय स्वाहा
२२४ ॐ सहस्रमूर्ध्ने स्वाहा
२२५ ॐ विश्वात्मने स्वाहा
२२६ ॐ सहस्राक्षाय स्वाहा
२२७ ॐ सहस्रपदे स्वाहा
२२८ ॐ आवर्त्तनाय स्वाहा
२२९ ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा
२३० ॐ संवृताय स्वाहा
२३१ ॐ सम्प्रमर्दनाय स्वाहा

२३२ ॐ अहः संवर्तकायस्वाहा
२३३ ॐ वह्ने स्वाहा
२३४ ॐ अनिलाय स्वाहा
२३५ ॐ धरणीधराय स्वाहा
२३६ ॐ सुप्रसादाय स्वाहा
२३७ ॐ प्रसन्नात्मने स्वाहा
२३८ ॐ विश्वभृषे स्वाहा
२३९ ॐ विश्वभुजे स्वाहा
२४० ॐ विभवे स्वाहा
२४१ ॐ सत्कर्त्रे स्वाहा
२४२ ॐ सत्कृताय स्वाहा
२४३ ॐ साधवे स्वाहा
१४४ ॐ जह्नवे स्वाहा
२४५ ॐ नारायणाय स्वाहा
२४६ ॐ नराय स्वाहा
२४७ ॐ असंख्येयाय स्वाहा
२४८ ॐ अप्रमेयात्मने स्वाहा
२४९ ॐ विशिष्टाय स्वाहा
२५० ॐ शिष्टकृते स्वाहा
२५१ ॐ शुचये स्वाहा
२५२ ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
२५३ ॐ सिद्धसङ्कल्पाय स्वाहा
२५४ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा
२५५ ॐ सिद्धिसाधनाय स्वाहा
२५६ ॐ वृषाहिने स्वाहा
२५७ ॐ वृषभाय स्वाहा
२५८ ॐ विष्णवे स्वाहा
२५९ ॐ वृषपर्वणे स्वाहा
२६० ॐ वृषोदराय स्वाहा
२६१ ॐ वर्द्धनाय स्वाहा
२६२ ॐ वर्द्धमानाय स्वाहा
२६३ ॐ विविक्ताय स्वाहा
२६४ ॐ स्तुतिसागराय स्वाहा
२६५ ॐ सुभुजाय स्वाहा
२६६ ॐ दुर्धराय स्वाहा
२६७ ॐ वाग्मिने स्वाहा
२६८ ॐ महेन्द्राय स्वाहा
२६९ ॐ वसुदाय स्वाहा
२७० ॐ वसवे स्वाहा
२७१ ॐ नैकरूपाय स्वाहा
२७२ ॐ बृहद्रूपाय स्वाहा
२७३ ॐ शिपिविष्टाय स्वाहा
२७४ ॐ प्रकाशनाय स्वाहा
२७५ ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय स्वाहा
२७६ ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा
२७७ ॐ प्रतापनाय स्वाहा
२७८ ॐ ऋद्धाय स्वाहा
२७९ ॐ स्पष्टाक्षराय स्वाहा
२८० ॐ मन्त्राय स्वाहा

२८१ ॐ चन्द्रांशवे स्वाहा
२८२ ॐ भास्करद्युतये स्वाहा
२८३ ॐ अमृतांशूद्भवाय स्वाहा
२८४ ॐ भानवे स्वाहा
२८५ ॐ शशिबिन्दवे स्वाहा
२८६ ॐ सुरेश्वराय स्वाहा
२८७ ॐ औषधाय स्वाहा
२८८ ॐ जगतःसेतवे स्वाहा
२८९ ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय स्वाहा
२९० ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय स्वाहा
२९१ ॐ पवनाय स्वाहा
२९२ ॐ पावनाय स्वाहा
२९३ ॐ अनलाय स्वाहा
२९४ ॐ कामघ्ने स्वाहा
२९५ ॐ कामकृते स्वाहा
२९६ ॐ कान्ताय स्वाहा
२९७ ॐ कामाय स्वाहा
२९८ ॐ कामप्रदाय स्वाहा
२९९ ॐ प्रभवे स्वाहा
३०० ॐ युगादिकृते स्वाहा
३०१ ॐ युगावर्त्ताय स्वाहा
३०२ ॐ नैकमायाय स्वाहा
३०३ ॐ महाशनाय स्वाहा
३०४ ॐ अदृश्याय स्वाहा
३०५ ॐ अव्यक्तरूपाय स्वाहा
३०६ ॐ सहस्रजिते स्वाहा
३०७ ॐ अनन्तजिते स्वाहा
३०८ ॐ इष्टाय स्वाहा
३०९ ॐ विशिष्टाय स्वाहा
३१० ॐ शिष्टेष्टाय स्वाहा
३११ ॐ शिखण्डिने स्वाहा
३१२ ॐ नहुषाय स्वाहा
३१३ ॐ वृषाय स्वाहा
३१४ ॐ क्रोधघ्ने स्वाहा
३१५ ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे स्वाहा
३१६ ॐ विश्वबाहवे स्वाहा
३१७ ॐ महीधराय स्वाहा
३१८ ॐ अच्युताय स्वाहा
३१९ ॐ प्रथिताय स्वाहा
३२० ॐ प्राणाय स्वाहा
३२१ ॐ प्राणदाय स्वाहा
३२२ ॐ वासवानुजाय स्वाहा
३२३ ॐ अपांनिधये स्वाहा
३२४ ॐ अधिष्ठानाय स्वाहा
३२५ ॐ अप्रमत्ताय स्वाहा
३२६ ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा
३२७ ॐ स्कन्दाय स्वाहा

३२८ ॐ स्कन्दधराय स्वाहा
३२९ ॐ धुर्याय स्वाहा
३३० ॐ वरदाय स्वाहा
३३१ ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
३३२ ॐ वासुदेवाय स्वाहा
३३३ ॐ बृहद्भानवे स्वाहा
३३४ ॐ आदिदेवाय स्वाहा
३३५ ॐ पुरन्दराय स्वाहा
३३६ ॐ अशोकाय स्वाहा
३३७ ॐ तारणाय स्वाहा
३३८ ॐ ताराय स्वाहा
३३९ ॐ शूराय स्वाहा
३४० ॐ शौरये स्वाहा
३४१ ॐ जनेश्वराय स्वाहा
३४२ ॐ अनुकूलाय स्वाहा
३४३ ॐ शतावर्त्ताय स्वाहा
३४४ ॐ पद्मिने स्वाहा
३४५ ॐ पद्मनिभेक्षणाय स्वाहा
३४६ ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
३४७ ॐ अरविन्दाक्षाय स्वाहा
३४८ ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा
३४९ ॐ शरीरभृते स्वाहा
३५० ॐ महर्द्धये स्वाहा
३५१ ॐ ऋद्धाय स्वाहा
३५२ ॐ वृद्धात्मने स्वाहा
३५३ ॐ महाक्षाय स्वाहा
३५४ ॐ गरुडध्वजाय स्वाहा
३५५ ॐ अतुलाय स्वाहा
३५६ ॐ शरभाय स्वाहा
३५७ ॐ भीमाय स्वाहा
३५८ ॐ समयज्ञाय स्वाहा
३५९ ॐ हविर्हरये स्वाहा
३६० ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय स्वाहा
३६१ ॐ लक्ष्मीवते स्वाहा
३६२ ॐ समितिञ्जयाय स्वाहा
३६३ ॐ विक्षराय स्वाहा
३६४ ॐ रोहिताय स्वाहा
३६५ ॐ मार्गाय स्वाहा
३६६ ॐ हेतवे स्वाहा
३६७ ॐ दामोदराय स्वाहा
३६८ ॐ सहाय स्वाहा
३६९ ॐ महीधराय स्वाहा
३७० ॐ महाभागाय स्वाहा
३७१ ॐ वेगवते स्वाहा
३७२ ॐ अमिताशनाय स्वाहा
३७३ ॐ उद्भवाय स्वाहा
३७४ ॐ क्षोभणाय स्वाहा
३७५ ॐ देवाय स्वाहा
३७६ ॐ श्रीगर्भाय स्वाहा

३७७ ॐ परमेश्वराय स्वाहा
३७८ ॐ करणाय स्वाहा
३७९ ॐ कारणाय स्वाहा
३८० ॐ कर्त्रे स्वाहा
३८१ ॐ विकर्त्रे स्वाहा
३८२ ॐ गहनाय स्वाहा
३८३ ॐ गुहाय स्वाहा
३८४ ॐ व्यवसाय स्वाहा
३८५ ॐ व्यवस्थानाय स्वाहा
३८६ ॐ संस्थानाय स्वाहा
३८७ ॐ स्थानदाय स्वाहा
३८८ ॐ ध्रुवाय स्वाहा
३८९ ॐ परर्द्धये स्वाहा
३९० ॐ परमस्पष्टाय स्वाहा
३९१ ॐ तुष्टाय स्वाहा
३९२ ॐ पुष्टाय स्वाहा
३९३ ॐ शुभेक्षणाय स्वाहा
३९४ ॐ रामाय स्वाहा
३९५ ॐ विरामाय स्वाहा
३९६ ॐ विरजसे स्वाहा
३९७ ॐ मार्गाय स्वाहा
३९८ ॐ नेयाय स्वाहा
३९९ ॐ नयाय स्वाहा
४०० ॐ अनयाय स्वाहा
४०१ ॐ वीराय स्वाहा
४०२ ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय स्वाहा
४०३ ॐ धर्माय स्वाहा
४०४ ॐ धर्मविदुत्तमाय स्वाहा
४०५ ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा
४०६ ॐ पुरुषाय स्वाहा
४०७ ॐ प्राणाय स्वाहा
४०८ ॐ प्राणदाय स्वाहा
४०९ ॐ प्रणवाय स्वाहा
४१० ॐ पृथवे स्वाहा
४११ ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा
४१२ ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा
४१३ ॐ व्याप्ताय स्वाहा
४१४ ॐ वायवे स्वाहा
४१५ ॐ अधोक्षजाय स्वाहा
४१६ ॐ ऋतवे स्वाहा
४१७ ॐ सुदर्शनाय स्वाहा
४१८ ॐ कालाय स्वाहा
४१९ ॐ परमेष्ठिने स्वाहा
४२० ॐ परिग्रहाय स्वाहा
४२१ ॐ उग्राय स्वाहा
४२२ ॐ संवत्सराय स्वाहा
४२३ ॐ दक्षाय स्वाहा
४२४ ॐ विश्रामाय स्वाहा
४२५ ॐ विश्वदक्षिणाय स्वाहा
४२६ ॐ विस्ताराय स्वाहा

४२७ ॐ स्थावरस्थाणवे स्वाहा
४२८ ॐ प्रमाणाय स्वाहा
४२९ ॐ बीजमव्ययाय स्वाहा
४३० ॐ अर्थाय स्वाहा
४३१ ॐ अनर्थाय स्वाहा
४३२ ॐ महाकोशाय स्वाहा
४३३ ॐ महाभोगाय स्वाहा
४३४ ॐ महाधनाय स्वाहा
४३५ ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा
४३६ ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा
४३७ ॐ अभुवे स्वाहा
४३८ ॐ धर्मयूपाय स्वाहा
४३९ ॐ महामखाय स्वाहा
४४० ॐ नक्षत्रनेमिने स्वाहा
४४१ ॐ नक्षत्रिणे स्वाहा
४४२ ॐ क्षमाय स्वाहा
४४३ ॐ क्षामाय स्वाहा
४४४ ॐ समीहनाय स्वाहा
४४५ ॐ यज्ञाय स्वाहा
४४६ ॐ ईज्याय स्वाहा
४४७ ॐ महेज्याय स्वाहा
४४८ ॐ क्रतवे स्वाहा
४४, ॐ सत्राय स्वाहा
४५० ॐ सतांगतये स्वाहा
४५१ ॐ सर्वदर्शिने स्वाहा
४५२ ॐ विमुक्तात्मने स्वाहा
४५३ ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
४५४ ॐ ज्ञानमुत्तमाय स्वाहा
४५५ ॐ सुव्रताय स्वाहा
४५६ ॐ सुमुखाय स्वाहा
४५७ ॐ सूक्ष्माय स्वाहा
४५८ ॐ सुघोषाय स्वाहा
४५९ ॐ सुखदाय स्वाहा
४६० ॐ सुहृदे स्वाहा
४६१ ॐ मनोहराय स्वाहा
४६२ ॐ जितक्रोधाय स्वाहा
४६३ ॐ वीरबाहवे स्वाहा
४६४ ॐ विदारणाय स्वाहा
४६५ ॐ स्वापनाय स्वाहा
४६६ ॐ स्ववशाय स्वाहा
४६७ ॐ व्यापिने स्वाहा
४६८ ॐ नैकात्मने स्वाहा
४६९ ॐ नैककर्मकृते स्वाहा
४७० ॐ वत्सराय स्वाहा
४७१ ॐ वत्सलाय स्वाहा
४७२ ॐ वत्सिने स्वाहा
४७३ ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा
४७४ ॐ धनेश्वराय स्वाहा
४७५ ॐ धर्मगुप्तये स्वाहा
४७६ ॐ धर्मकृते स्वाहा

४७७ ॐ धर्मिणे स्वाहा
४७८ ॐ सते स्वाहा
४७९ ॐ असते स्वाहा
४८० ॐ क्षराय स्वाहा
४८१ ॐ अक्षराय स्वाहा
४८२ ॐ अविज्ञात्रे स्वाहा
४८३ ॐ सहस्रांशवे स्वाहा
४८४ ॐ विधात्रे स्वाहा
४८५ ॐ कृतलक्षणाय स्वाहा
४८६ ॐ गभस्तिनेमये स्वाहा
४८७ ॐ सत्त्वस्थाय स्वाहा
४८८ ॐ सिंहाय स्वाहा
४८९ ॐ भूतमहेश्वराय स्वाहा
४९० ॐ आदिदेवाय स्वाहा
४९१ ॐ महादेवाय स्वाहा
४९२ ॐ देवेशाय स्वाहा
४९३ ॐ देवभृद्गुरवे स्वाहा
४९४ ॐ उत्तराय स्वाहा
४९५ ॐ गोपतये स्वाहा
४९६ ॐ गोप्त्रे स्वाहा
४९७ ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा
४९८ ॐ पुरातनाय स्वाहा
४९९ ॐ शरीरभूतभृते स्वाहा
५०० ॐ भोक्त्रे स्वाहा
५०१ ॐ कपीन्द्राय स्वाहा
५०२ ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा
५०३ ॐ सोमपाय स्वाहा
५०४ ॐ अमृतपाय स्वाहा
५०५ ॐ सोमाय स्वाहा
५०६ ॐ पुरुजिते स्वाहा
५०७ ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा
५०८ ॐ विनयाय स्वाहा
५०९ ॐ जयाय स्वाहा
५१० ॐ सत्यसन्धाय स्वाहा
५११ ॐ दाशार्हाय स्वाहा
५१२ ॐ सात्वताम्पतये स्वाहा
५१३ ॐ जीवाय स्वाहा
५१४ ॐ विनयितासाक्षिणे स्वाहा
५१५ ॐ मुकुन्दाय स्वाहा
५१६ ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा
५१७ ॐ अम्भोनिधये स्वाहा
५१८ ॐ अनन्तात्मने स्वाहा
५१९ ॐ महोदधिशयाय स्वाहा
५२० ॐ अन्तकाय स्वाहा
५२१ ॐ अजाय स्वाहा
५२२ ॐ महार्हाय स्वाहा
५२३ ॐ स्वाभाव्याय स्वाहा
५२४ ॐ जितामित्राय स्वाहा
५२५ ॐ प्रमोदनाय स्वाहा
५२६ ॐ आनन्दाय स्वाहा

५२७ ॐ नन्दनाय स्वाहा
५२८ ॐ नन्दाय स्वाहा
५२९ ॐ सत्यधर्मिणे स्वाहा
५३० ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा
५३१ ॐ महर्षिकपिलाचार्याय स्वाहा
५३२ ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
५३३ ॐ मेदिनीपतये स्वाहा
५३४ ॐ त्रिपदाय स्वाहा
५३५ ॐ त्रिदशाध्यक्षाय स्वाहा
५३६ ॐ महाशृङ्गाय स्वाहा
५३७ ॐ कृतान्तकृते स्वाहा
५३८ ॐ महावराहाय स्वाहा
५३९ ॐ गोविन्दाय स्वाहा
५४० ॐ सुषेणाय स्वाहा
५४१ ॐ कनकाङ्गदिने स्वाहा
५४२ ॐ गुह्याय स्वाहा
५४३ ॐ गम्भीराय स्वाहा
५४४ ॐ गहनाय स्वाहा
५४५ ॐ गुप्ताय स्वाहा
५४६ ॐ चक्रगदाधराय स्वाहा
५४७ ॐ वेधसे स्वाहा
५४८ ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा
५४९ ॐ अजिताय स्वाहा
५५० ॐ कृष्णाय स्वाहा
५५१ ॐ दृढाय स्वाहा
५५२ ॐ सङ्कर्षणाय स्वाहा
५५३ ॐ वरुणाय स्वाहा
५५४ ॐ वारुणाय स्वाहा
५५५ ॐ वृक्षाय स्वाहा
५५६ ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा
५५७ ॐ महामनसे स्वाहा
५५८ ॐ भगवते स्वाहा
५५९ ॐ भगघ्ने स्वाहा
५६० ॐ आनन्दिने स्वाहा
५६१ ॐ वनमालिने स्वाहा
५६२ ॐ हलायुधाय स्वाहा
५६३ ॐ आदित्याय स्वाहा
५६४ ॐ ज्योतिरादित्याय स्वाहा
५६५ ॐ सहिष्णवे स्वाहा
५६६ ॐ गतिसत्तमाय स्वाहा
५६७ ॐ सुधन्वने स्वाहा
५६८ ॐ खण्डपरशवे स्वाहा
५६९ ॐ दारुणाय स्वाहा
५७० ॐ द्रविणप्रदाय स्वाहा
५७१ ॐ दिवस्पृशे स्वाहा
५७२ ॐ सर्वदृग्व्यासाय स्वाहा
५७३ ॐ वाचस्पतये स्वाहा
५७४ ॐ त्रिसाम्ने स्वाहा
५७५ ॐ सामगाय स्वाहा
५७६ ॐ साम्ने स्वाहा

५७७ ॐ निर्वाणाय स्वाहा
५७८ ॐ भेषजाय स्वाहा
५७९ ॐ भिषजे स्वाहा
५८० ॐ सन्यासकृते स्वाहा
५८१ ॐ शमाय स्वाहा
५८२ ॐ शान्ताय स्वाहा
५८३ ॐ निष्ठायै स्वाहा
५८४ ॐ शान्त्यै स्वाहा
५८५ ॐ परायणाय स्वाहा
५८६ ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
५८७ ॐ शान्तिदाय स्वाहा
५८८ ॐ स्रष्टे स्वाहा
५८९ ॐ कुमुदाय स्वाहा
५९० ॐ कुवलेशयाय स्वाहा
५९१ ॐ गोहिताय स्वाहा
५९२ ॐ गोपतये स्वाहा
५९३ ॐ गोप्त्रे स्वाहा
५९४ ॐ वृषभाक्षाय स्वाहा
५९५ ॐ वृषप्रियाय स्वाहा
५९६ ॐ अनिवर्तिने स्वाहा
५९७ ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा
५९८ ॐ संक्षेप्त्रे स्वाहा
५९९ ॐ क्षेमकृते स्वाहा
६०० ॐ शिवाय स्वाहा
६०१ ॐ श्रीवत्सवक्षसे स्वाहा
६०२ ॐ श्रीवासाय स्वाहा
६०३ ॐ श्रीपतये स्वाहा
६०४ ॐ श्रीमतां वराय स्वाहा
६०५ ॐ श्रीदाय स्वाहा
६०६ ॐ श्रीशाय स्वाहा
६०७ ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा
६०८ ॐ श्रीनिधये स्वाहा
६०९ ॐ श्रीविभावनाय स्वाहा
६१० ॐ श्रीधराय स्वाहा
६११ ॐ श्रीकराय स्वाहा
६१२ ॐ श्रेयसे स्वाहा
६१३ ॐ श्रीमते स्वाहा
६१४ ॐ लोकत्रयाश्रयाय स्वाहा
६१५ ॐ स्वाक्षाय स्वाहा
६१६ ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा
६१७ ॐ शतानन्दाय स्वाहा
६१८ ॐ नन्दिने स्वाहा
६१९ ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय स्वाहा
६२० ॐ विजितात्मने स्वाहा
६२१ ॐ विधेयात्मने स्वाहा
६२२ ॐ सत्कीर्तये स्वाहा
६२३ ॐ छिन्नसंशयाय स्वाहा
६२४ ॐ उदीर्णाय स्वाहा
६२५ ॐ सर्वतश्चक्षुषे स्वाहा
६२६ ॐ अनीशाय स्वाहा

६२७ ॐ शाश्वतस्थिराय स्वाहा
६२८ ॐ भूशयाय स्वाहा
६२९ ॐ भूषणाय स्वाहा
६३० ॐ भूतये स्वाहा
६३१ ॐ विशोकाय स्वाहा
६३२ ॐ शोकनाशनाय स्वाहा
६३३ ॐ अर्चिष्मते स्वाहा
६३४ ॐ अर्चिताय स्वाहा
६३५ ॐ कुम्भाय स्वाहा
६३६ ॐ विशुद्धात्मने स्वाहा
६३७ ॐ विशोधनाय स्वाहा
६३८ ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा
६३९ ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा
६४० ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा
६४१ ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा
६४२ ॐ कालनेमिनिघ्ने स्वाहा
६४३ ॐ वीराय स्वाहा
६४४ ॐ शौरये स्वाहा
६४५ ॐ शूरजनेश्वराय स्वाहा
६४६ ॐ त्रिलोकात्मने स्वाहा
६४७ ॐ त्रिलोकेशाय स्वाहा
६४८ ॐ केशवाय स्वाहा
६४९ ॐ केशिघ्ने स्वाहा
६५० ॐ हरये स्वाहा
६५१ ॐ कामदेवाय स्वाहा
६५२ ॐ कामपालाय स्वाहा
६५३ ॐ कामिने स्वाहा
६५४ ॐ कान्ताय स्वाहा
६५५ ॐ कृतागमाय स्वाहा
६५६ ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा
६५७ ॐ विष्णवे स्वाहा
६५८ ॐ वीराय स्वाहा
६५९ ॐ अनन्ताय स्वाहा
६६० ॐ धनञ्जयाय स्वाहा
६६१ ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा
६६२ ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा
६६३ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
६६४ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
६६५ ॐ ब्रह्मविवर्द्धनाय स्वाहा
६६६ ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा
६६७ ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा
६६८ ॐ ब्रह्मिणे स्वाहा
४६९ ॐ ब्रह्मज्ञाय स्वाहा
६७० ॐ ब्राह्मणप्रियाय स्वाहा
६७१ ॐ महाक्रमाय स्वाहा
६७२ ॐ महाकर्मणे स्वाहा
६७३ ॐ महातेजसे स्वाहा
६७४ ॐ महोरगाय स्वाहा
६७५ ॐ महाक्रतवे स्वाहा

६७६ ॐ महायज्वने स्वाहा
६७७ ॐ महायज्ञाय स्वाहा
६७८ ॐ महाहविषे स्वाहा
६७९ ॐ स्तव्याय स्वाहा
६८० ॐ स्तवप्रियाय स्वाहा
६८१ ॐ स्तोत्राय स्वाहा
६८२ ॐ स्तुतये स्वाहा
६८३ ॐ स्तोत्रे स्वाहा
६८४ ॐ रणप्रियाय स्वाहा
६८५ ॐ पूर्णाय स्वाहा
६८६ ॐ पूरयित्रे स्वाहा
६८७ ॐ पुण्याय स्वाहा
६८८ ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा
६८९ ॐ अनामयाय स्वाहा
६९० ॐ मनोजवाय स्वाहा
६९१ ॐ तीर्थकराय स्वाहा
६९२ ॐ वसुरेतसे स्वाहा
६९३ ॐ वसुप्रदाय स्वाहा
६९४ ॐ वसुप्रदाय स्वाहा
६९५ ॐ वासुदेवाय स्वाहा
६९६ ॐ वसवे स्वाहा
६९७ ॐ वसुमनसे स्वाहा
६९८ ॐ हविषे स्वाहा
६९९ ॐ सद्गतये स्वाहा
७०० ॐ सत्कृतये स्वाहा
७०१ ॐ सत्तायै स्वाहा
७०२ ॐ सद्भूतये स्वाहा
७०३ ॐ सत्परायणाय स्वाहा
७०४ ॐ शूरसेनाय स्वाहा
७०५ ॐ यदुश्रेष्ठाय स्वाहा
७०६ ॐ सन्निवासाय स्वाहा
७०७ ॐ सुयामुनाय स्वाहा
७०८ ॐ भूतावासाय स्वाहा
७०९ ॐ वासुदेवाय स्वाहा
७१० ॐ सर्वासुनिलयाय स्वाहा
७११ ॐ अनलाय स्वाहा
७१२ ॐ दर्पघ्ने स्वाहा
७१३ ॐ दर्पदाय स्वाहा
७१४ ॐ दृप्ताय स्वाहा
७१५ ॐ दुर्धराय स्वाहा
७१६ ॐ अपराजिताय स्वाहा
७१७ ॐ विश्वमूर्तये स्वाहा
७१८ ॐ महामूर्तये स्वाहा
७१९ ॐ दीप्तमूर्तये स्वाहा
७२० ॐ अमूर्तिमते स्वाहा
७२१ ॐ अनेकमूर्तये स्वाहा
७२२ ॐ अव्यक्ताय स्वाहा
७२३ ॐ शतमूर्तये स्वाहा
७२४ ॐ शताननाय स्वाहा
७२५ ॐ एकाय स्वाहा

७२६ ॐ नैकाय स्वाहा
७२७ ॐ सवाय स्वाहा
७२८ ॐ काय स्वाहा
७२९ ॐ कस्मै स्वाहा
७३० ॐ यस्मै स्वाहा
७३१ ॐ तस्मै स्वाहा
७३२ ॐ पदमनुत्तमाय स्वाहा
७३३ ॐ लोकबन्धवे स्वाहा
७३४ ॐ लोकनाथाय स्वाहा
७३५ ॐ माधवाय स्वाहा
७३६ ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा
७३७ ॐ सुवर्णवर्णाय स्वाहा
७३८ ॐ हेमाङ्गाय स्वाहा
७३९ ॐ वराङ्गाय स्वाहा
७४० ॐ चन्दनाङ्गदिने स्वाहा
७४१ ॐ वीरघ्ने स्वाहा
७४२ ॐ विषमाय स्वाहा
७४३ ॐ शून्याय स्वाहा
७४४ ॐ घृताशिषे स्वाहा
७४५ ॐ अचलाय स्वाहा
७४६ ॐ चलाय स्वाहा
७४७ ॐ अमानिने स्वाहा
७४८ ॐ मानदाय स्वाहा
७४९ ॐ मान्याय स्वाहा
७५० ॐ लोकस्वामिने स्वाहा
७५१ ॐ त्रिलोकधृषे स्वाहा
७५२ ॐ सुमेधसे स्वाहा
७५३ ॐ मेधजाय स्वाहा
७५४ ॐ धन्याय स्वाहा
७५५ ॐ सत्यमेधसे स्वाहा
७५६ ॐ धराधराय स्वाहा
७५७ ॐ तेजोवृषाय स्वाहा
७५८ ॐ द्युतिधराय स्वाहा
७५९ ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय स्वाहा
७६० ॐ प्रग्रहाय स्वाहा
७६१ ॐ निग्रहाय स्वाहा
७६२ ॐ व्यग्रहाय स्वाहा
७६३ ॐ नैकशृङ्गाय स्वाहा
७६४ ॐ गदाग्रजाय स्वाहा
७६५ ॐ चतुर्मूर्त्तये स्वाहा
७६६ ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
७६७ ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा
७६८ ॐ चतुर्गतये स्वाहा
७६९ ॐ चतुरात्मने स्वाहा
७७० ॐ चतुर्भावाय स्वाहा
७७१ ॐ चतुर्वेदविदे स्वाहा
७७२ ॐ एकपदे स्वाहा
७७३ ॐ समावर्ताय स्वाहा
७७४ ॐ अनिवृत्तात्मने स्वाहा
७७५ ॐ दुर्जयाय स्वाहा

७७६ ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा
७७७ ॐ दुर्लभाय स्वाहा
७७८ ॐ दुर्गमाय स्वाहा
७७९ ॐ दुर्गाय स्वाहा
७८० ॐ दुरावासाय स्वाहा
७८१ ॐ दुरारिघ्ने स्वाहा
७८२ ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
७८३ ॐ लोकसारङ्गाय स्वाहा
७८४ ॐ सुतन्तवे स्वाहा
७८५ ॐ तन्तुवर्धनाय स्वाहा
७८६ ॐ इन्द्रकर्मणे स्वाहा
७८७ ॐ महाकर्मणे स्वाहा
७८८ ॐ कृतकर्मणे स्वाहा
७८९ ॐ कृतागमाय स्वाहा
७९० ॐ उद्भवाय स्वाहा
७९१ ॐ सुन्दराय स्वाहा
७९२ ॐ सुन्दाय स्वाहा
७९३ ॐ रत्ननाभाय स्वाहा
७९४ ॐ सुलोचनाय स्वाहा
७९५ ॐ अर्काय स्वाहा
७९६ ॐ वाजसनाय स्वाहा
७९७ ॐ शृङ्गिणे स्वाहा
७९८ ॐ जयन्ताय स्वाहा
७९९ ॐ सर्वविज्जयिने स्वाहा
८०० ॐ सुवर्णबिन्दवे स्वाहा
८०१ ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा
८०२ ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय स्वाहा
८०३ ॐ महाह्रदाय स्वाहा
८०४ ॐ महागर्त्ताय स्वाहा
८०५ ॐ महाभूताय स्वाहा
८०६ ॐ महानिधये स्वाहा
८०७ ॐ कुमुदाय स्वाहा
८०८ ॐ कुन्दराय स्वाहा
८०९ ॐ कुन्दाय स्वाहा
८१० ॐ पर्जन्याय स्वाहा
८११ ॐ पावनाय स्वाहा
८१२ ॐ अनिलाय स्वाहा
८१३ ॐ अमृतांशाय स्वाहा
८१४ ॐ अमृतवपुषे स्वाहा
८१५ ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
८१६ ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
८१७ ॐ सुलभाय स्वाहा
८१८ ॐ सुव्रताय स्वाहा
८१९ ॐ सिद्धाय स्वाहा
८२० ॐ शत्रुजिते स्वाहा
८२१ ॐ शत्रुतापनाय स्वाहा
८२२ ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा
८२३ ॐ उदुम्बराय स्वाहा
८२४ ॐ अश्वत्थाय स्वाहा

८२५ ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय स्वाहा
८२६ ॐ सहस्रार्चिषे स्वाहा
८२७ ॐ सप्तजिह्वाय स्वाहा
८२८ ॐ सप्तैधसे स्वाहा
८२९ ॐ सप्तवाहनाय स्वाहा
८३० ॐ अमूर्तये स्वाहा
८३१ ॐ अनघाय स्वाहा
८३२ ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
८३३ ॐ भयकृते स्वाहा
८३४ ॐ भयनाशनाय स्वाहा
८३५ ॐ अणवे स्वाहा
८३६ ॐ बृहते स्वाहा
८३७ ॐ कृशाय स्वाहा
८३८ ॐ स्थूलाय स्वाहा
८३९ ॐ गुणभृते स्वाहा
८४० ॐ निर्गुणाय स्वाहा
८४१ ॐ महते स्वाहा
८४२ ॐ अधृताय स्वाहा
८४३ ॐ स्वधृताय स्वाहा
८४४ ॐ स्वास्याय स्वाहा
८४५ ॐ प्राग्वंशाय स्वाहा
८४६ ॐ वंशवर्द्धनाय स्वाहा
८४७ ॐ भारभृते स्वाहा
८४८ ॐ कथिताय स्वाहा
८४९ ॐ योगिने स्वाहा
८५० ॐ योगीशाय स्वाहा
८५१ ॐ सर्वकामदाय स्वाहा
८५२ ॐ आश्रमाय स्वाहा
८५३ ॐ श्रमणाय स्वाहा
८५४ ॐ क्षामाय स्वाहा
८५५ ॐ सुपर्णाय स्वाहा
८५६ ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
८५७ ॐ धनुर्धराय स्वाहा
८५८ ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा
८५९ ॐ दण्डाय स्वाहा
८६० ॐ दमयित्रे स्वाहा
८६१ ॐ दमाय स्वाहा
८६२ ॐ अपराजिताय स्वाहा
८६३ ॐ सर्वसहाय स्वाहा
८६४ ॐ नियन्त्रे स्वाहा
८६५ ॐ नियमाय स्वाहा
८६६ ॐ यमाय स्वाहा
८६७ ॐ सत्त्ववते स्वाहा
८६८ ॐ सात्त्विकाय स्वाहा
८६९ ॐ सत्याय स्वाहा
८७० ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा
८७१ ॐ अभिप्रायाय स्वाहा
८७२ ॐ प्रियार्हाय स्वाहा

८७३ ॐ अर्हाय स्वाहा
८७४ ॐ प्रियकृते स्वाहा
८७५ ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा
८७६ ॐ विहायसगतये स्वाहा
८७७ ॐ ज्योतिषे स्वाहा
८७८ ॐ सुरुचये स्वाहा
८७९ ॐ हुतभुजे स्वाहा
८८० ॐ विभवे स्वाहा
८८१ ॐ रवये स्वाहा
८८२ ॐ विरोचनाय स्वाहा
८८३ ॐ सूर्याय स्वाहा
८८४ ॐ सवित्रे स्वाहा
८८५ ॐ रविर्लोचनाय स्वाहा
८८६ ॐ अनन्ताय स्वाहा
८८७ ॐ हुतभुजे स्वाहा
८८८ ॐ भोक्त्रे स्वाहा
८८९ ॐ सुखदाय स्वाहा
८९० ॐ नैकजाय स्वाहा
८९१ ॐ अग्रजाय स्वाहा
८९२ ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा
८९३ ॐ सदामर्षिणे स्वाहा
८९४ ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा
८९५ ॐ अद्भुताय स्वाहा
८९६ ॐ सनात्नमः स्वाहा
८९७ ॐ सनातनतमाय स्वाहा
८९८ ॐ कपिलाय स्वाहा
८९९ ॐ कपये स्वाहा
९०० ॐ अव्ययाय स्वाहा
९०१ ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा
९०२ ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा
९०३ ॐ स्वस्तिने स्वाहा
९०४ ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा
९०५ ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा
९०६ ॐ अरौद्राय स्वाहा
९०७ ॐ कुण्डलिने स्वाहा
९०८ ॐ चक्रिणे स्वाहा
९०९ ॐ विक्रमिणे स्वाहा
९१० ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा
९११ ॐ शब्दातिगाय स्वाहा
९१२ ॐ शब्दसहाय स्वाहा
९१३ ॐ शिशिराय स्वाहा
९१४ ॐ शर्वरीकराय स्वाहा
९१५ ॐ अक्रूराय स्वाहा
९१६ ॐ पेशलाय स्वाहा
९१७ ॐ दक्षाय स्वाहा
९१८ ॐ दक्षिणाय स्वाहा
९१९ ॐ क्षमिणांवराय स्वाहा
९२० ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा
९२१ ॐ वीतभयाय स्वाहा

९२२ ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा
९२३ ॐ उत्तारणाय स्वाहा
९२४ ॐ दुष्कृतिघ्ने स्वाहा
९२५ ॐ पुण्याय स्वाहा
९२६ ॐ दुःस्वप्ननाशनाय स्वाहा
९२७ ॐ वीरघ्ने स्वाहा
९२८ ॐ रक्षणाय स्वाहा
९२९ ॐ सद्भ्यः स्वाहा
९३० ॐ जीवनाय स्वाहा
९३१ ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा
९३२ ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा
९३३ ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा
९३४ ॐ जितमन्यवे स्वाहा
९३५ ॐ भयापहाय स्वाहा
९३६ ॐ चतुरस्राय स्वाहा
९३७ ॐ गम्भीरात्मने स्वाहा
९३८ ॐ विदिशाय स्वाहा
९३९ ॐ व्यादिशाय स्वाहा
९४० ॐ दिशाय स्वाहा
९४१ ॐ अनादये स्वाहा
९४२ ॐ भुवे स्वाहा
९४३ ॐ भुवोलक्ष्म्यै स्वाहा
९४४ ॐ सुवीराय स्वाहा
९४५ ॐ रुचिराङ्गदाय स्वाहा
९४६ ॐ जननाय स्वाहा
९४७ ॐ जनजन्मादये स्वाहा
९४८ ॐ भीमाय स्वाहा
९४९ ॐ भीमपराक्रमाय स्वाहा
९५० ॐ आधारनिलयाय स्वाहा
९५१ ॐ धात्रे स्वाहा
९५२ ॐ पुष्पहासाय स्वाहा
९५३ ॐ प्रजागराय स्वाहा
९५४ ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा
९५५ ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा
९५६ ॐ प्राणदाय स्वाहा
९५७ ॐ प्रणवाय स्वाहा
९५८ ॐ पणाय स्वाहा
९५९ ॐ प्रमाणाय स्वाहा
९६० ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा
९६१ ॐ प्राणभृत स्वाहा
९६२ ॐ प्राणजीवनाय स्वाहा
९६३ ॐ तत्त्वाय स्वाहा
९६४ ॐ तत्त्वविदे स्वाहा
९६५ ॐ एकात्मने स्वाहा
९६६ ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय स्वाहा
९६७ ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे स्वाहा

९६८ ॐ ताराय स्वाहा
९६९ ॐ सवित्रे स्वाहा
९७० ॐ प्रपितामहाय स्वाहा
९७१ ॐ यज्ञाय स्वाहा
९७२ ॐ यज्ञपतये स्वाहा
९७३ ॐ यज्वने स्वाहा
९७४ ॐ यज्ञाङ्गाय स्वाहा
९७५ ॐ यज्ञवाहनाय स्वाहा
९७६ ॐ यज्ञभृते स्वाहा
९७७ ॐ यज्ञकृते स्वाहा
९७८ ॐ यज्ञिने स्वाहा
९७९ ॐ यज्ञभुजे स्वाहा
९८० ॐ यज्ञसाधनाय स्वाहा
९८१ ॐ यज्ञान्तकृते स्वाहा
९८२ ॐ यज्ञगुह्याय स्वाहा
९८३ ॐ अन्नाय स्वाहा
९८४ ॐ अन्नदाय स्वाहा
९८५ ॐ आत्मयोनये स्वाहा
९८६ ॐ स्वयञ्जाताय स्वाहा
९८७ ॐ वैखानाय स्वाहा
९८८ ॐ सामगायनाय स्वाहा
९८९ ॐ देवकीनन्दनाय स्वाहा
९९० ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा
९९१ ॐ क्षितीशाय स्वाहा
९९२ ॐ पापनाशनाय स्वाहा
९९३ ॐ शङ्खभृते स्वाहा
९९४ ॐ नन्दकिने स्वाहा
९९५ ॐ चक्रिणे स्वाहा
९९६ ॐ शार्ङ्गधन्वने स्वाहा
९९७ ॐ गदाधराय स्वाहा
९९८ ॐ रथाङ्गपाणये स्वाहा
९९९ ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा
१००० ॐ सर्वप्रहरणायुधाय स्वाहा

इति विष्णुसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारः समाप्तः

शिव जी

अथ शिवसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः ।

१ ॐ स्थिराय स्वाहा
२ ॐ स्थाणवे स्वाहा
३ ॐ प्रभवे स्वाहा
४ ॐ भीमाय स्वाहा
५ ॐ प्रवराय स्वाहा
६ ॐ वरदाय स्वाहा
७ ॐ वराय स्वाहा
८ ॐ सर्वात्मने स्वाहा
९ ॐ सर्वविख्याताय स्वाहा
१० ॐ सर्वस्मै स्वाहा
११ ॐ सर्वकराय स्वाहा
१२ ॐ भवाय स्वाहा
१३ ॐ जटिने स्वाहा
१४ ॐ चर्मिणे स्वाहा
१५ ॐ शिखण्डिने स्वाहा
१६ ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा
१७ ॐ सर्वभावनाय स्वाहा
१८ ॐ हराय स्वाहा
१९ ॐ हरिणाक्षाय स्वाहा
२० ॐ सर्वभूतहराय स्वाहा
२१ ॐ वृत्तये स्वाहा
२२ ॐ प्रभवे स्वाहा
२३ ॐ निवृत्तये स्वाहा
२४ ॐ नियताय स्वाहा
२५ ॐ शाश्वताय स्वाहा
२६ ॐ ध्रुवाय स्वाहा
२७ ॐ श्मशानवासिने स्वाहा
२८ ॐ भगवते स्वाहा
२९ ॐ खेचराय स्वाहा
३० ॐ गोचराय स्वाहा
३१ ॐ आनन्दाय स्वाहा
३२ ॐ अभिवाद्याय स्वाहा
३३ ॐ महाकर्मणे स्वाहा
३४ ॐ तपस्विने स्वाहा
३५ ॐ भूतभावनाय स्वाहा
३६ ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय स्वाहा
३७ ॐ सर्वलोकप्रजापतये स्वाहा
३८ ॐ महारूपाय स्वाहा
३९ ॐ महाकयाय स्वाहा
४० ॐ वृषरूपाय स्वाहा
४१ ॐ महायशसे स्वाहा
४२ ॐ महात्मने स्वाहा

४३ ॐ सर्वभूतात्मने स्वाहा
४४ ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
४५ ॐ महाहनवे स्वाहा
४६ ॐ लोकपालाय स्वाहा
४७ ॐ अन्तर्हितात्मने स्वाहा
४८ ॐ प्रसादाय स्वाहा
४९ ॐ हयगर्दभये स्वाहा
५० ॐ पवित्राय स्वाहा
५१ ॐ महते स्वाहा
५२ ॐ नियमाय स्वाहा
५३ ॐ नियमाश्रिताय स्वाहा
५४ ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा
५५ ॐ स्वयम्भूताय स्वाहा
५६ ॐ आदये स्वाहा
५७ ॐ आदिकराय स्वाहा
५८ ॐ निधये स्वाहा
५९ ॐ महस्राक्षाय स्वाहा
६० ॐ विशालाक्षाय स्वाहा
६१ ओं सोमाय स्वाहा
६२ ओं नक्षत्रसाधकाय स्वाहा
६३ ओं चन्द्राय स्वाहा
६४ ओं सूर्याय स्वाहा
६५ ओं शनये स्वाहा
६६ ओं केतवे स्वाहा
६७ ओं ग्रहाय स्वाहा
६८ ओं ग्रहपतये स्वाहा
६९ ओं वराय स्वाहा
७० ओं अत्रये स्वाहा
७१ ओं अत्र्यानमस्कर्त्रे स्वाहा
७२ ओं मृगवाणार्पणाय स्वाहा
७३ ओं अनघाय स्वाहा
७४ ओं महातपसे स्वाहा
७५ ओं घोरतपसे स्वाहा
७६ ओं अदीनाय स्वाहा
७७ ओं दीनसाधकाय स्वाहा
७८ ओं संवत्सराय स्वाहा
४९ ओं मन्त्राय स्वाहा
८० ओं प्रमाणाय स्वाहा
८१ ओं परमतपसे स्वाहा
८२ ओं योगिने स्वाहा
८३ ओं योज्याय स्वाहा
८४ ओं महाबीजाय स्वाहा
८५ ओं महारेतसे स्वाहा
८६ ओं महाबलाय स्वाहा
८७ ओं सुवर्णरेतसे स्वाहा
८८ ओं सर्वज्ञाय स्वाहा
८९ ओं सुबीजाय स्वाहा
९० ओं बीजवाहनाय स्वाहा
९१ ओं दशबाहवे स्वाहा
९२ ओं अनिमिषाय स्वाहा

९३ ओं नीलकण्ठाय स्वाहा
९४ ओं उमापतये स्वाहा
९५ ओं विश्वरूपाय स्वाहा
९६ ओं स्वयंश्रेष्ठाय स्वाहा
९७ ओं बलवीराय स्वाहा
९८ ओं अबलाय स्वाहा
९९ ओं गणाय स्वाहा
१०० ओं गणकर्त्रे स्वाहा
१०१ ओं गणपतये स्वाहा
१०२ ओं दिग्वाससे स्वाहा
१०३ ओं कामाय स्वाहा
१०४ ओं मन्त्रविदे स्वाहा
१०५ ओं परमाय स्वाहा
१०६ ओं मन्त्राय स्वाहा
१०७ ओं सर्वभावकराय स्वाहा
१०८ ओं हराय स्वाहा
१०९ ओं कमण्डलुधराय स्वाहा
११० ओं धन्विने स्वाहा
१११ ओं बाणहस्ताय स्वाहा
११२ ओं कपालवते स्वाहा
११३ ओं अशनिने स्वाहा
११४ ओं शतघ्निने स्वाहा
११५ ओं खड्गिने स्वाहा
११६ ओं पट्टिशिने स्वाहा
११७ ओं आयुधिने स्वाहा
११८ ओं महते स्वाहा
११९ ओं स्रुवहस्ताय स्वाहा
१२० ओं सुरूपाय स्वाहा
१२१ ओं तेजसे स्वाहा
१२२ ओं तेजस्करनिधये स्वाहा
१२३ ओं उष्णीषिणे स्वाहा
१२४ ओं सुवक्त्राय स्वाहा
१२५ ओं उदग्राय स्वाहा
१२६ ओं विनताय स्वाहा
१२७ ओं दीर्घाय स्वाहा
१२८ ओं हरिकेशाय स्वाहा
१२९ ओं सुतीर्थाय स्वाहा
१३० ओं कृष्णाय स्वाहा
१३१ ओं शृगालरूपाय स्वाहा
१३२ ओं सिद्धार्थाय स्वाहा
१३३ ओं मुण्डाय स्वाहा
१३४ ओं सर्वशुभकराय स्वाहा
१३५ ओं अजाय स्वाहा
१३६ ओं बहुरूपाय स्वाहा
१३७ ओं गन्धधारिणे स्वाहा
१३८ ओं कपर्दिने स्वाहा
१३९ ओं ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा
१४० ओं ऊर्ध्वलिङ्गाय स्वाहा
१४१ ओं ऊर्ध्वशायिने स्वाहा
१४२ ओं नभस्थलाय स्वाहा

१४३ ओं त्रिजटाय स्वाहा
१४४ ओं चीरवाससे स्वाहा
१४५ ओं रुद्राय स्वाहा
१४६ ओं सेनापतये स्वाहा
१४७ ओं विभवे स्वाहा
२४८ ओं अहश्चराय स्वाहा
१४९ ओं नक्तञ्चराय स्वाहा
१५० ओं तिग्ममन्यवे स्वाहा
१५१ ओं सुवर्चसे स्वाहा
१५२ ओं गजघ्ने स्वाहा
१५३ ओं दैत्यघ्ने स्वाहा
१५४ ओं कालाय स्वाहा
१५५ ओं लोकधात्रे स्वाहा
१५६ ओं गुणाकराय स्वाहा
१५७ ओं सिंहशार्दूलरूपाय स्वाहा
१५८ ओं आर्द्रचर्माम्बरावृताय स्वाहा
१५९ ओं कालयोगिने स्वाहा
१६० ओं महानादाय स्वाहा
१६१ ओं सर्वकामाय स्वाहा
१६२ ओं चतुष्पथाय स्वाहा
१६३ ओं निशाचराय स्वाहा
१६४ ओं प्रेतचारिणे स्वाहा
१६५ ओं भूतचारिणे स्वाहा
१६६ ओं महेश्वराय स्वाहा
१६७ ओं बहुभूताय स्वाहा
१६८ ओं बहुधाराय स्वाहा
१६९ ओं स्वर्भानवे स्वाहा
१७० ओं अमिताय स्वाहा
१७१ ओं गतये स्वाहा
१७२ ओं नृत्यप्रियाय स्वाहा
१७३ ओं नित्यनर्ताय स्वाहा
१७४ ओं नर्तकाय स्वाहा
१७५ ओं सर्वलालसाय स्वाहा
१७६ ओं घोराय स्वाहा
१७७ ओं महातपसे स्वाहा
१७८ ओं पाशाय स्वाहा
१७९ ओं नित्याय स्वाहा
१८० ओं गिरिरुहाय स्वाहा
१८१ ओं नभसे स्वाहा
१८२ ओं सहस्रहस्ताय स्वाहा
१८३ ओं विजयाय स्वाहा
१८४ ओं व्यवसायाय स्वाहा
१८५ ओं अतन्द्रिताय स्वाहा
१८६ ओं अघर्षणाय स्वाहा
१८७ ओं धर्षणात्मने स्वाहा
१८८ ओं यज्ञघ्ने स्वाहा
१८९ ओं कामनाशकाय स्वाहा
१९० ओं दक्षयागापहारिणे स्वाह

१९१ ओं सुमक्षाध्याय स्वाहा
१९२ ओं मध्यमाय स्वाहा
१९३ ओं तेजांपहारिणे स्वाहा
१९४ ओं बलघ्ने स्वाहा
१९५ ओं मुदिताय स्वाहा
१९६ ओं अर्थाय स्वाहा
१९७ ओं अजिताय स्वाहा
१९८ ओं अवराय स्वाहा
१९९ ओं मम्भीराय स्वाहा
२०० ओं गम्भीराय स्वाहा
२०१ ओं गंभीरबलवाहनाय स्वाहा
२०२ ओं न्यग्रोधरूपाय स्वाहा
२०३ ओं न्यग्रोधाय स्वाहा
२०४ ओं वृक्षकर्णस्थितये स्वाहा
२०५ ओं विभवे स्वाहा
२०६ ओं सुतीक्ष्णदशनाय स्वाहा
२०७ ओं महाकायाय स्वाहा
२०८ ओं महाननाय स्वाहा
२०९ ओं विष्वक्सेनाय स्वाहा
२१० ओं हरये स्वाहा
२११ ओं यज्ञाय स्वाहा
२१२ ओं संयुगापीडवाहनाय स्वाहा
२१३ ओं तीक्ष्णतापाय स्वाहा
२१४ ओं हर्यश्वाय स्वाहा
२१५ ओं सहाय स्वाहा
२१६ ओं कर्मकालविदे स्वाहा
२१७ ओं विष्णुप्रसादिताय स्वाहा
२१८ ओं यज्ञाय स्वाहा
२१९ ओं समुद्राय स्वाहा
२२० ओं वडवामुखाय स्वाहा
२२१ ओं हुताशनसहाय स्वाहा
२२२ ओं प्रशान्तात्मने स्वाहा
२२३ ओं हुताशनाय स्वाहा
२२४ ओं उग्रतेजसे स्वाहा
२२५ ओं महातेजसे स्वाहा
२२६ ओं जन्याय स्वाहा
२२७ ओं विजयकालविदे स्वाहा
२२८ ओं ज्योतिषामयनाय स्वाहा
२२९ ओं सिद्धये स्वाहा
२३० ओं सर्वविग्रहाय स्वाहा
२३१ ओं शिखिने स्वाहा
२३२ ओं मुण्डिने स्वाहा
२३३ ओं जटिने स्वाहा
२३४ ओं ज्वालिने स्वाहा

२३५ ओं मूर्तिज्ञाय स्वाहा
२३६ ओं मूर्द्धगाय स्वाहा
२३७ ओं बलिने स्वाहा
२३८ ओं वेणविने स्वाहा
२३९ ओं पणविने स्वाहा
२४० ओं तालिने स्वाहा
२४१ ओं खलिने स्वाहा
२४२ ओं कालकटकटाय स्वाहा
२४३ ओं नक्षत्रविग्रहमतये स्वाहा
२४४ ओं गुणबुद्धये स्वाहा
२४५ ओं लगाय स्वाहा
२४६ ओं अगमाय स्वाहा
२४७ ओं प्रजापतये स्वाहा
२४८ ओं विश्वबाहवे स्वाहा
२४९ ओं विभागाय स्वाहा
२५० ओं सर्वगाय स्वाहा
२५१ ओं अमुखाय स्वाहा
२५२ ओं विमोचनाय स्वाहा
२५३ ओं सुसरणाय स्वाहा
२५४ ओं हिरण्यकवचोद्भवाय स्वाहा
२५५ ओं मेढ्रजाय स्वाहा
२५६ ओं ललचारिणे स्वाहा
२५७ ओं महीचारिणे स्वाहा
२५८ ओं स्नुताय स्वाहा
२५९ ओं सर्वतूर्यनिनादिने स्वाहा
२६० ओं सर्वातोद्यपरिग्रहाय स्वाहा
२६१ ओं व्यालरूपाय स्वाहा
२६२ ओं गुहावासिने स्वाहा
२६३ ओं गुहाय स्वाहा
२६४ ओं मालिने स्वाहा
२६५ ओं तरङ्गविदे स्वाहा
२६६ ओं त्रिदशाय स्वाहा
२६७ ओं त्रिकालधृषे स्वाहा
२६८ ओं कर्मसर्वबन्ध-विमोचनाय स्वाहा
२६९ ओं असुरेन्द्राणां बन्धनाय स्वाहा
२७० ओं युधिशत्रुविनाशिने स्वाहा
२७१ ओं सांख्यप्रसादाय स्वाहा
२७२ ओं दुर्वाससे स्वाहा
२७३ ओं सर्वसाधुनिषेविताय स्वाहा
२७४ ओं प्रस्कन्दनाथ स्वाहा
२७५ ओं विभागज्ञाय स्वाहा
२७६ ओं अतुल्याय स्वाहा

२७७ ॐ यज्ञभागविदे स्वाहा
२७८ ॐ सर्वचारिणे स्वाहा
२७९ ॐ सर्ववासाय स्वाहा
२८० ॐ दुर्वाससे स्वाहा
२८१ ॐ वासवाय स्वाहा
२८२ ॐ अमराय स्वाहा
२८३ ॐ हेमाय स्वाहा
२८४ ॐ हेमकराय स्वाहा
२८५ ॐ अयज्ञसर्वधारिणे स्वाहा
२८६ ॐ धरोत्तमाय स्वाहा
२८७ ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा
२८८ ॐ महाक्षाय स्वाहा
२८९ ॐ विजयाक्षाय स्वाहा
२९० ॐ विशारदाय स्वाहा
२९१ ॐ सर्वकामदाय स्वाहा
२९२ ॐ सर्वकालप्रसादाय स्वाहा
२९३ ॐ सुबलाय स्वाहा
२९४ ॐ बलरूपधृषे स्वाहा
२९५ ॐ संग्रहाय स्वाहा
२९६ ॐ निग्रहाय स्वाहा
२९७ ॐ कर्त्रे स्वाहा
२९८ ॐ सर्पचीरनिवासाय स्वाहा
२९९ ॐ मुख्याय स्वाहा
३०० ॐ अमुख्याय स्वाहा
३०१ ॐ देहाय स्वाहा
३०२ ॐ काहलये स्वाहा
३०३ ॐ सर्वकामवराय स्वाहा
३०४ ॐ सर्वदाय स्वाहा
३०५ ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
३०६ ॐ आकाशनिर्विरूपाय स्वाहा
३०७ ॐ निपातिने स्वाहा
३०८ ॐ अवशाय स्वाहा
३०९ ॐ खगाय स्वाहा
३१० ॐ रौद्ररूपाय स्वाहा
३११ ॐ अंशवे स्वाहा
३१२ ॐ आदित्याय स्वाहा
३१३ ॐ बहुरश्मये स्वाहा
३१४ ॐ सुवर्चसिने स्वाहा
३१५ ॐ वसुवेगाय स्वाहा
३१६ ॐ महावेगाय स्वाहा
३१७ ॐ मनोवेगाय स्वाहा
३१८ ॐ निशाचराय स्वाहा
३१९ ॐ सर्ववासिने स्वाहा
३२० ॐ श्रियावासिने स्वाहा
३२१ ॐ उपदेशकराय स्वाहा
३२२ ॐ अकराय स्वाहा

३२३ ॐ मुनये स्वाहा
३२४ ॐ आत्मनिरालोकाय स्वाहा
३२५ ॐ सम्भग्नाय स्वाहा
३२६ ॐ सहस्रदाय स्वाहा
३२७ ॐ पक्षिणे स्वाहा
३२८ ॐ पक्षरूपाय स्वाहा
३२९ ॐ अतिदीप्ताय स्वाहा
३३० ॐ विशाम्पतये स्वाहा
३३१ ॐ उन्मादाय स्वाहा
३३२ ॐ मदनाय स्वाहा
३३३ ॐ कामाय स्वाहा
३३४ ॐ अश्वत्थाय स्वाहा
३३५ ॐ अर्थकराय स्वाहा
३३६ ॐ यशसे स्वाहा
३३७ ॐ वामदेवाय स्वाहा
३३८ ॐ वामाय स्वाहा
३३९ ॐ प्राचे स्वाहा
३४० ॐ दक्षिणाय स्वाहा
३४१ ॐ वामनाय स्वाहा
३४२ ॐ सिद्धयोगिने स्वाहा
३४३ ॐ महर्षय स्वाहा
३४४ ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
३४५ ॐ सिद्धसाधकाय स्वाहा
३४६ ॐ भिक्षवे स्वाहा
३४७ ॐ भिक्षरूपाय स्वाहा
३४८ ॐ विपणाय स्वाहा
३४९ ॐ मृदवे स्वाहा
३५० ॐ अव्ययाय स्वाहा
३५१ ॐ महासेनाय स्वाहा
३५२ ॐ विशाखाय स्वाहा
३५३ ॐ षष्टिभागाय स्वाहा
३५४ ॐ गवाम्पतये स्वाहा
३५५ ॐ वज्रहस्ताय स्वाहा
३५६ ॐ विष्कम्भिने स्वाहा
३५७ ॐ चमूस्तम्भनाय स्वाहा
३५८ ॐ वृत्तावृत्तकराय स्वाहा
३५९ ॐ तालाय स्वाहा
३६० ॐ मधवे स्वाहा
३६१ ॐ मधुकलोचनाय स्वाहा
३६२ ॐ वाचस्पत्याय स्वाहा
३६३ ॐ वाजसनाय स्वाहा
३६४ ॐ आश्रमपूजिताय स्वाहा
३६५ ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा
३६६ ॐ लोकचारिणे स्वाहा
३६७ ॐ सर्वचारिणे स्वाहा
३६८ ॐ विचारविदे स्वाहा
३६९ ॐ ईशानाय स्वाहा
३७० ॐ ईश्वराय स्वाहा

३७१ ॐ कालाय स्वाहा
३७२ ॐ निशाचारिणे स्वाहा
३७३ ॐ पिनाकधृगे स्वाहा
३७४ ॐ निमित्तस्थाय स्वाहा
३७५ ॐ निमित्ताय स्वाहा
३७६ ॐ नन्दये स्वाहा
३७७ ॐ नन्दिकराय स्वाहा
३७८ ॐ हरये स्वाहा
३७९ ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा
३८० ॐ नन्दिने स्वाहा
३८१ ॐ नन्दनाय स्वाहा
३८२ ॐ नन्दिवर्धनाय स्वाहा
३८३ ॐ भगहारिणे स्वाहा
३८४ ॐ निहन्त्रे स्वाहा
३८५ ॐ कालाय स्वाहा
३८६ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
३८७ ॐ पितामहाय स्वाहा
३८८ ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा
३८९ ॐ महालिङ्गाय स्वाहा
३९० ॐ चारुलिङ्गाय स्वाहा
३९१ ॐ लिङ्गाध्यक्षाय स्वाहा
३९२ ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा
३९३ ॐ योगाध्यक्षाय स्वाहा
३९४ ॐ युगावहाय स्वाहा
३९५ ॐ बीजाध्यक्षाय स्वाहा
३९६ ॐ बीजकर्त्रे स्वाहा
३९७ ॐ अध्यात्मानुगताय स्वाहा
३९८ ॐ बलाय स्वाहा
३९९ ॐ इतिहासाय स्वाहा
४०० ॐ सङ्कल्पाय स्वाहा
४०१ ॐ गौतमाय स्वाहा
४०२ ॐ निशाकराय स्वाहा
४०३ ॐ दम्भाय स्वाहा
४०४ ॐ अदम्भाय स्वाहा
४०५ ॐ वैदम्भाय स्वाहा
४०६ ॐ वश्याय स्वाहा
४०७ ॐ वशकराय स्वाहा
४०८ ॐ कलये स्वाहा
४०९ ॐ लोककर्त्रे स्वाहा
४१० ॐ पशुपतये स्वाहा
४११ ॐ महाकर्त्रे स्वाहा
४१२ ॐ अनौषधाय स्वाहा
४१३ ॐ अक्षराय स्वाहा
४१४ ॐ परब्रह्मणे स्वाहा
४१५ ॐ बलवते स्वाहा
४१६ ॐ शक्राय स्वाहा
४१७ ॐ नीतये स्वाहा
४१८ ॐ अनीतये स्वाहा
४१९ ॐ शुद्धात्मने स्वाहा

४२० ॐ मार्गाय स्वाहा
४२१ ॐ क्षुद्राय स्वाहा
४२२ ॐ गतागताय स्वाहा
४२३ ॐ बहुप्रसादाय स्वाहा
४२४ ॐ सुस्वप्नाय स्वाहा
४२५ ॐ दर्पणाय स्वाहा
४२६ ॐ अमित्रजिते स्वाहा
४२७ ॐ वेदकराय स्वाहा
४२८ ॐ मन्त्रकराय स्वाहा
४२९ ॐ विदुषे स्वाहा
४३० ॐ समरमर्दनाय स्वाहा
४३१ ॐ महामेघनिवासिने स्वाहा
४३२ ॐ महाघोराय स्वाहा
४३३ ॐ वंशिने स्वाहा
४३४ ॐ कराय स्वाहा
४३५ ॐ अग्निज्वालाय स्वाहा
४३६ ॐ महाज्वालाय स्वाहा
४३७ ॐ अतिधूम्राय स्वाहा
४३८ ॐ हुताय स्वाहा
४३९ ॐ हविषे स्वाहा
४४० ॐ वृषणाय स्वाहा
४४१ ॐ शङ्कराय स्वाहा
४४२ ॐ वर्चस्विने स्वाहा
४४३ ॐ धूमकेतनस्य स्वाहा
४४४ ॐ नीलाय स्वाहा
४४५ ॐ अङ्गलुब्धाय स्वाहा
४४६ ॐ शोभनाय स्वाहा
४४७ ॐ निरवग्रहाय स्वाहा
४४८ ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा
४४९ ॐ स्वस्तिभावाय स्वाहा
४५० ॐ भागिने स्वाहा
४५१ ॐ भागकराय स्वाहा
४५२ ॐ लघवे स्वाहा
४५३ ॐ उत्सङ्गाय स्वाहा
४५४ ॐ महाङ्गाय स्वाहा
४५५ ॐ महागर्भपरायणाय स्वाहा
४५६ ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा
४५७ ॐ सुवर्णाय स्वाहा
४५८ ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय स्वाहा
४५९ ॐ महापादाय स्वाहा
४६० ॐ महाहस्ताय स्वाहा
४६१ ॐ महाकायाय स्वाहा
४६२ ॐ महायशसे स्वाहा
४६३ ॐ महामूर्ध्ने स्वाहा
४६४ ॐ महामात्राय स्वाहा
४६५ ॐ महानेत्राय स्वाहा
४६६ ॐ निशालयाय स्वाहा

४६७ ॐ महान्तकाय स्वाहा
४६८ ॐ महाकर्णाय स्वाहा
४६९ ॐ महोष्ठाय स्वाहा
४७० ॐ महाहनवे स्वाहा
४७१ ॐ महानाशाय स्वाहा
४७२ ॐ महाकम्बवे स्वाहा
४७३ ॐ महाग्रीवाय स्वाहा
४७४ ॐ श्मशानभाजे स्वाहा
४७५ ॐ महावक्षसे स्वाहा
४७६ ॐ महोरस्काय स्वाहा
४७७ ॐ अन्तरात्मने स्वाहा
४७८ ॐ मृगालयाय स्वाहा
४७९ ॐ लम्बनाय स्वाहा
४८० ॐ लम्बितोष्ठाय स्वाहा
४८१ ॐ महामायाय स्वाहा
४८२ ॐ पयोनिधये स्वाहा
४८३ ॐ महादन्ताय स्वाहा
४८४ ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा
४८५ ॐ महाजिह्वाय स्वाहा
४८६ ॐ महामुखाय स्वाहा
४८७ ॐ महानखाय स्वाहा
४८८ ॐ महारोम्णे स्वाहा
४८९ ॐ महाकेशाय स्वाहा
४९० ॐ महाजटाय स्वाहा
४९१ ॐ प्रसन्नाय स्वाहा
४९२ ॐ प्रसादाय स्वाहा
४९३ ॐ प्रत्ययाय स्वाहा
४९४ ॐ गिरिसाधनाय स्वाहा
४९५ ॐ स्नेहनाय स्वाहा
४९६ ॐ अस्नेहनाय स्वाहा
४९७ ॐ अजिताय स्वाहा
४९८ ॐ महामुनये स्वाहा
४९९ ॐ वृक्षाकाराय स्वाहा
५०० ॐ वृक्षकेतवे स्वाहा
५०१ ॐ अनलाय स्वाहा
५०२ ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
५०३ ॐ गण्डनिले स्वाहा
५०४ ॐ मेरुधाम्ने स्वाहा
५०५ ॐ देवाधिपतये स्वाहा
५०६ ॐ अथर्वशीर्षाय स्वाहा
५०७ ॐ सामास्याय स्वाहा
५०८ ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय स्वाहा
५०९ ॐ यजुःपादभुजाय स्वाहा
५१० ॐ गुह्याय स्वाहा
५११ ॐ प्रकाशाय स्वाहा
५१२ ॐ जङ्गमाय स्वाहा
५१३ ॐ अमोघार्थाय स्वाहा
५१४ ॐ प्रसादाय स्वाहा
५१५ ॐ आभिगम्याय स्वाहा

५१६ ॐ सुदर्शनाय स्वाहा
५१७ ॐ उपकाराय स्वाहा
५१८ ॐ प्रियाय स्वाहा
५१९ ॐ सर्वाय स्वाहा
५२० ॐ कनकाय स्वाहा
५२१ ॐ काञ्चनच्छवये स्वाहा
५२२ ॐ नाभये स्वाहा
५२३ ॐ नन्दिकराय स्वाहा
५२४ ॐ भावाय स्वाहा
५२५ ॐ पुष्करस्थपतये स्वाहा
५२६ ॐ स्थिराय स्वाहा
५२७ ॐ द्वादशाय स्वाहा
५२८ ॐ त्रासनाय स्वाहा
५२९ ॐ आद्याय स्वाहा
५३० ॐ यज्ञाय स्वाहा
५३१ ॐ यज्ञसमाहिताय स्वाहा
५३२ ॐ नक्ताय स्वाहा
५३३ ॐ कलये स्वाहा
५३४ ॐ कालाय स्वाहा
५३५ ॐ मकराय स्वाहा
५३६ ॐ कलपूजिताय स्वाहा
५३७ ॐ सगणाय स्वाहा
५३८ ॐ गणकराय स्वाहा
५३९ ॐ भूतवाहनसारथये स्वाहा
५४० ॐ भस्मशयाय स्वाहा
५४१ ॐ भस्मगोप्त्रे स्वाहा
५४२ ॐ भस्मभूताय स्वाहा
५४३ ॐ तरवे स्वाहा
५४४ ॐ गणाय स्वाहा
५४५ ॐ लोकपाय स्वाहा
५४६ ॐ अलोकाय स्वाहा
५४७ ॐ महात्मने स्वाहा
५४८ ॐ सर्वपूजिताय स्वाहा
५४९ ॐ शुक्लाय स्वाहा
५५० ॐ त्रिशुक्लाय स्वाहा
५५१ ॐ सम्पन्नाय स्वाहा
५५२ ॐ शुचये स्वाहा
५५३ ॐ भूतनिषेविताय स्वाहा
५५४ ॐ आश्रमस्थाय स्वाहा
५५५ ॐ क्रियावस्थाय स्वाहा
५५६ ॐ विश्वकर्मपतये स्वाहा
५५७ ॐ वराय स्वाहा
५५८ ॐ विशालशाखाय स्वाहा
५५९ ॐ ताम्रोष्ठाय स्वाहा
५६० ॐ अम्बुजाय स्वाहा
५६१ ॐ सुनिश्चलाय स्वाहा
५६२ ॐ कपिलाय स्वाहा

५६३ ॐ कपिशाय स्वाहा
५६४ ॐ शुक्लाय स्वाहा
५६५ ॐ आयुषे स्वाहा
५६६ ॐ पराय स्वाहा
५६७ ॐ अपराय स्वाहा
५६८ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा
५६९ ॐ अदितये स्वाहा
५७० ॐ तार्क्ष्याय स्वाहा
५७१ ॐ सुविज्ञेयाय स्वाहा
५७२ ॐ सुशारदाय स्वाहा
५७३ ॐ परश्वधायुधाय स्वाहा
५७४ ॐ देवाय स्वाहा
५७५ ॐ अनुकारिणे स्वाहा
५७६ ॐ सुबान्धवाय स्वाहा
५७७ ॐ तुम्बवीणाय स्वाहा
५७८ ॐ महाक्रोधाय स्वाहा
५७९ ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा
५८० ॐ जलेशयाय स्वाहा
५८१ ॐ उग्राय स्वाहा
५८२ ॐ वंशकराय स्वाहा
५८३ ॐ वंशाय स्वाहा
५८४ ॐ वंशनादाय स्वाहा
५८५ ॐ आनन्दिताय स्वाहा
५८६ ॐ सर्वाङ्गरूपाय स्वाहा
५८७ ॐ मायाविने स्वाहा
५८८ ॐ सुहृदाय स्वाहा
५८९ ॐ अनिलाय स्वाहा
५९० ॐ अनलाय स्वाहा
५९१ ॐ बन्धनाय स्वाहा
५९२ ॐ बन्धकर्त्रे स्वाहा
५९३ ॐ सुबन्धनविमोचनाय स्वाहा
५९४ ॐ सयज्ञारये स्वाहा
५९५ ॐ सकामारये स्वाहा
५९६ ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा
५९७ ॐ महायुधाय स्वाहा
५९८ ॐ बहुधानिन्दिताय स्वाहा
५९९ ॐ शर्वाय स्वाहा
६०० ॐ शङ्कराय स्वाहा
६०१ ॐ शङ्कराय स्वाहा
६०२ ॐ अधनाय स्वाहा
६०३ ॐ अमरेशाय स्वाहा
६०४ ॐ महादेवाय स्वाहा
६०५ ॐ विश्वदेवाय स्वाहा
६०६ ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा
६०७ ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा
६०८ ॐ अनिलाभाय स्वाहा
६०९ ॐ चेकिताय स्वाहा

६१० ॐ हविषे स्वाहा
६११ ॐ अजैकपादे स्वाहा
६१२ ॐ कपालिने स्वाहा
६१३ ॐ त्रिशङ्कवे स्वाहा
६१४ ॐ अजिताय स्वाहा
६१५ ॐ शिवाय स्वाहा
६१६ ॐ धन्वन्तरये स्वाहा
६१७ ॐ धूमकेतवे स्वाहा
६१८ ॐ स्कन्दाय स्वाहा
६१९ ॐ वैश्रवणाय स्वाहा
६२० ॐ धात्रे स्वाहा
६२१ ॐ शक्राय स्वाहा
६२२ ॐ विष्णवे स्वाहा
६२३ ॐ भिन्नाय स्वाहा
६२४ ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
६२५ ॐ ध्रुवाय स्वाहा
६२६ ॐ धराय स्वाहा
६२७ ॐ प्रभावाय स्वाहा
६२८ ॐ सवगर्वाय स्वाहा
६२९ ॐ अर्यम्णे स्वाहा
६३० ॐ सवित्रे स्वाहा
६३१ ॐ रवये स्वाहा
६३२ ॐ उषङ्गवे स्वाहा
६३३ ॐ विधात्रे स्वाहा
६३४ ॐ मान्धात्रे स्वाहा
६३५ ॐ भूतभावनाय स्वाहा
६३६ ॐ विभवे स्वाहा
६३७ ॐ वर्णविभाविने स्वाहा
६३८ ॐ सर्वकामगुणावहाय स्वाहा
६३९ ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
६४० ॐ महागर्भाय स्वाहा
६४१ ॐ चन्द्रवक्त्राय स्वाहा
६४२ ॐ अनिलाय स्वाहा
६४३ ॐ अनलाय स्वाहा
६४४ ॐ बलवते स्वाहा
६४५ ॐ उपशान्ताय स्वाहा
६४६ ॐ पुराणाय स्वाहा
६४७ ॐ पुण्यचञ्चवे स्वाहा
६४८ ॐ इत्यै स्वाहा
६४९ ॐ कुरुकर्त्रे स्वाहा
६५० ॐ कुरुवासिने स्वाहा
६५१ ॐ पुरुहूताय स्वाहा
६५२ ॐ गुणौषधाय स्वाहा
६५३ ॐ सर्वाशयाय स्वाहा
६५४ ॐ दर्भचारिणे स्वाहा
६५५ ॐ सर्वप्राणिपतये स्वाहा
६५६ ॐ देवदेवाय स्वाहा
६५७ ॐ सुखासक्ताय स्वाहा
६५८ ॐ सदसते स्वाहा

६५९ ॐ सर्वरत्नविदे स्वाहा
६६० ॐ कैलाशगिरिवासिने स्वाहा
६६१ ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय स्वाहा
६६२ ॐ कूलहारिणे स्वाहा
६६३ ॐ कूलकर्त्रे स्वाहा
६६४ ॐ बहुविद्याय स्वाहा
६६५ ॐ बहुप्रदाय स्वाहा
६६६ ॐ वणिजाय स्वाहा
६६७ ॐ वर्धकिने स्वाहा
६६८ ॐ वृक्षाय स्वाहा
६६९ ॐ वकुलाय स्वाहा
६७० ॐ चन्दनाय स्वाहा
६७१ ॐ छन्दाय स्वाहा
६७२ ॐ सारग्रीवाय स्वाहा
६७३ ॐ महाजत्रवे स्वाहा
६७४ ॐ अलोलाय स्वाहा
६७५ ॐ महौषधाय स्वाहा
६७६ ॐ सिद्धार्थकारिणे स्वाहा
६७७ ॐ छन्दोव्याकरणोत्तर-सिद्धार्थाय स्वाहा
६७८ ॐ सिंहनादाय स्वाहा
६७९ ॐ सिंहदंष्ट्राय स्वाहा
६८० ॐ सिंहगाय स्वाहा
६८१ ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा
६८२ ॐ प्रभावात्मने स्वाहा
६८३ ॐ जगत्कालस्थानाय स्वाहा
६८४ ॐ लोकहिताय स्वाहा
६८५ ॐ तरवे स्वाहा
६८६ ॐ सारङ्गाय स्वाहा
६८७ ॐ नवचक्राङ्गाय स्वाहा
६८८ ॐ केतुमालिने स्वाहा
६८९ ॐ सभायनाय स्वाहा
६९० ॐ भूतालयाय स्वाहा
६९१ ॐ भूतपतये स्वाहा
६९२ ॐ अहोरात्राय स्वाहा
६९३ ॐ अनिन्दिताय स्वाहा
६९४ ॐ सर्वभूतवाहत्रे स्वाहा
६९५ ॐ सर्वभूतनिलयाय स्वाहा
६९६ ॐ विभवे स्वाहा
६९७ ॐ भवाय स्वाहा
६९८ ॐ अमोघाय स्वाहा
६९९ ॐ संयताय स्वाहा
७०० ॐ अश्वाय स्वाहा
७०१ ॐ भोजनाय स्वाहा
७०२ ॐ प्राणधारणाय स्वाहा
७०३ ॐ धृतिमते स्वाहा

७०४ ॐ मतिमते स्वाहा
७०५ ॐ दक्षाय स्वाहा
७०६ ॐ सत्कृताय स्वाहा
७०७ ॐ युगाधिपाय स्वाहा
७०८ ॐ गोपालाय स्वाहा
७०९ ॐ गोपतये स्वाहा
७१० ॐ ग्रामाय स्वाहा
७११ ॐ गोचर्मवसनाय स्वाहा
७१२ ॐ हरये स्वाहा
७१३ ॐ हिरण्यबाहवे स्वाहा
७१४ ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय स्वाहा
७१५ ॐ प्रकृष्टारये स्वाहा
७१६ ॐ महाहर्षाय स्वाहा
६१७ ॐ जितकामाय स्वाहा
६१८ ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा
७१९ ॐ गान्धाराय स्वाहा
७२० ॐ सुवासाय स्वाहा
७२१ ॐ तपःसक्ताय स्वाहा
७२२ ॐ रतये स्वाहा
७२३ ॐ नराय स्वाहा
७२४ ॐ महागीताय स्वाहा
७२५ ॐ महानृत्याय स्वाहा
७२६ ॐ अप्सरोगणसेविताय स्वाहा
७२७ ॐ महाकेतवे स्वाहा
७२८ ॐ महाधातवे स्वाहा
७२९ ॐ नैकसानुचराय स्वाहा
७३० ॐ चलाय स्वाहा
७३१ ॐ आवेदनीयाय स्वाहा
७३२ ॐ आदेशाय स्वाहा
७३३ ॐ सर्वगन्धसुखावहाय स्वाहा
७३४ ॐ तोरणाय स्वाहा
७३५ ॐ तारणाय स्वाहा
७३६ ॐ वाताय स्वाहा
७३७ ॐ परिधिने स्वाहा
७३८ ॐ पतिखेचराय स्वाहा
७३९ ॐ संयोगवर्धनाय स्वाहा
७४० ॐ गुणाधिकवृद्धाय स्वाहा
७४१ ॐ अधिकवृद्धाय स्वाहा
७४२ ॐ नित्यात्मसहाय स्वाहा
७४३ ॐ देवासुरपतये स्वाहा
७४४ ॐ पत्ये स्वाहा
७४५ ॐ युक्ताय स्वाहा
७४६ ॐ युक्तबाहवे स्वाहा
[illegible] ॐ दिविसुपर्वदेवाय स्वाहा

७४८ ॐ आषाढाय स्वाहा
७४९ ॐ सुषाढाय स्वाहा
७५० ॐ ध्रुवाय स्वाहा
७५१ ॐ हरिणाय स्वाहा
७५२ ॐ हराय स्वाहा
७५३ ॐ आवर्तमानवपुषे स्वाहा
७५४ ॐ वसुश्रेष्ठाय स्वाहा
७५५ ॐ महापथाय स्वाहा
७५६ ॐ विमर्षशिरोहारिणये स्वाहा
७५७ ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय स्वाहा
७५८ ॐ अक्षरयोगिने स्वाहा
७५९ ॐ सर्वयोगिने स्वाहा
७६० ॐ महाबलाय स्वाहा
७६१ ॐ समाम्नायाय स्वाहा
७६२ ॐ असमाम्नायाय स्वाहा
७६३ ॐ तीर्थदेवाय स्वाहा
७६४ ॐ महारथाय स्वाहा
७६५ ॐ निर्जीवाय स्वाहा
७६६ ॐ जीवनाय स्वाहा
७६७ ॐ मन्त्राय स्वाहा
७६८ ॐ शुभाक्षाय स्वाहा
७६९ ॐ बहुकर्कशाय स्वाहा
७७० ॐ रत्नप्रभूताय स्वाहा
७७१ ॐ रत्नाङ्गाय स्वाहा
७७२ ॐ महार्णवनिपानविदे स्वाहा
७७३ ॐ मूलाय स्वाहा
७७४ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा
७७५ ॐ अमृताय स्वाहा
७७६ ॐ व्यक्ताव्यक्ताय स्वाहा
७७७ ॐ तपोनिधय स्वाहा
७७८ ॐ आरोहणाय स्वाहा
७७९ ॐ अधिरोधाय स्वाहा
७८० ॐ शीलधारिणे स्वाहा
७८१ ॐ महायशसे स्वाहा
७८२ ॐ सेनाकल्पाय स्वाहा
७८३ ॐ महाकल्पाय स्वाहा
७८४ ॐ योगाय स्वाहा
७८५ ॐ युगकराय स्वाहा
७८६ ॐ हरये स्वाहा
७८७ ॐ युगरूपाय स्वाहा
७८८ ॐ महारूपाय स्वाहा
७८९ ॐ महागहनाय स्वाहा
७९० ॐ वधाय स्वाहा
७९१ ॐ न्यायनिर्वपणाय स्वाहा

७९२ ॐ पादाय स्वाहा
७९३ ॐ पण्डिताय स्वाहा
७९४ ॐ अचलोपमाय स्वाहा
७९५ ॐ बहुमालाय स्वाहा
७९६ ॐ महामालाय स्वाहा
७९७ ॐ शशिहरसुलोचनाय स्वाहा
७९८ ॐ विस्तारलवणकूपाय स्वाहा
७९९ ॐ त्रियुगाय स्वाहा
८०० ॐ सफलोदयाय स्वाहा
८०१ ॐ त्रिनेत्राय स्वाहा
८०२ ॐ विषाणाङ्गाय स्वाहा
८०३ ॐ मणिविद्धाय स्वाहा
८०४ ॐ जटाधराय स्वाहा
८०५ ॐ विन्दवे स्वाहा
८०६ ॐ विसर्गाय स्वाहा
८०७ ॐ सुमुखाय स्वाहा
८०८ ओं शराय स्वाहा
८०९ ओं सर्वायुधाय स्वाहा
८१० ओं सहाय स्वाहा
८११ ओं निवेदनाय स्वाहा
८१२ ओं सुखजाताय स्वाहा
८१३ ओं सुगन्धाराय स्वाहा
८१४ ओं महाधनुषे स्वाहा
८१५ ओं गन्धपालिभगवते स्वाहा
८१६ ओं सर्वकर्मोत्थानाय स्वाहा
८१७ ओं मन्थानबहुलवाहवे स्वाहा
८१८ ओं सकलाय स्वाहा
८१९ ओं सर्वलोचनाय स्वाहा
८२० ओं तलस्तालाय स्वाहा
८२१ ओं करस्थालिने स्वाहा
८२२ ओं ऊर्ध्वसंहननाय स्वाहा
८२३ ओं महते स्वाहा
८२४ ओं छत्राय स्वाहा
८२५ ओं सुच्छत्राय स्वाहा
८२६ ओं विख्यातलोकाय स्वाहा
८२७ ओं सर्वाश्रयक्रमाय स्वाहा
८२८ ओं मुण्डाय स्वाहा
८२९ ओं विरूपाय स्वाहा
८३० ओं विकृताय स्वाहा
८३१ ओं दण्डिने स्वाहा
८३२ ओं कुण्डिने स्वाहा
८३३ ओं विकुर्वाणाय स्वाहा
८३४ ओं हर्यक्षाय स्वाहा
८३५ ओं ककुभाय स्वाहा
८३६ वज्रिणे स्वाहा

८३७ ओं शतजिह्वाय स्वाहा
८३८ ओं सहस्रपदे स्वाहा
८३९ ओं सहस्रमूर्ध्ने स्वाहा
८४० ओं देवेन्द्राय स्वाहा
८४१ ओं सर्वदेवमयाय स्वाहा
८४२ ओं गुरवे स्वाहा
८४३ ओं सहस्रबाहवे स्वाहा
८४४ ओं सर्वाङ्गाय स्वाहा
८४५ ओं शरण्याय स्वाहा
८४६ ओं सर्वलोककृते स्वाहा
८४७ ओं पवित्राय स्वाहा
८४८ ओं त्रिककुन्मन्त्राय स्वाहा
८४९ ओं कनिष्ठाय स्वाहा
८५० ओं कृष्णपिंगलाय स्वाहा
८५१ ओं ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे स्वाहा
८५२ ओं शतघ्नीपाशशक्तिमते स्वाहा
८५३ ओं पद्मगर्भाय स्वाहा
८५४ ओं महागर्भाय स्वाहा
८५५ ओं ब्रह्मगर्भाय स्वाहा
८५६ ओं जलजोद्भवाय स्वाहा
८५७ ओं गभस्तये स्वाहा
८५८ ओं ब्रह्मकृते स्वाहा
८५९ ओं ब्रह्मिणे स्वाहा
८६० ओं ब्रह्मविदे स्वाहा
८६१ ओं ब्राह्मणाय स्वाहा
८६२ ओं गतये स्वाहा
८६३ ओं अनन्तरूपाय स्वाहा
८६४ ओं नैकात्मने स्वाहा
८६५ ओं स्वयम्भुवतिग्मतेजसे स्वाहा
८६६ ओं ऊर्ध्वगात्मने स्वाहा
८६७ ओं पशुपतये स्वाहा
८६८ ओं घातरंहसे स्वाहा
८६९ ओं मनोजवाय स्वाहा
८७० ओं चन्दनिने स्वाहा
८७१ ओं पद्मनालाग्राय स्वाहा
८७२ ओं सुरभ्युत्तारणाय स्वाहा
८७३ ओं नराय स्वाहा
८७४ ओं कर्णिकारमहास्रग्विणे स्वाहा
८७५ ओं नीलमौलये स्वाहा
८७६ ओं पिनाकधृषे स्वाहा
८७७ ओं उमापतये स्वाहा
८७८ ओं उमाकान्ताय स्वाहा
८७९ ओं जाह्नवीधृषे स्वाहा
८८० ओं उमाधवाय स्वाहा
८८१ ओं वरवराहाय स्वाहा
८८२ ओं वरदाय स्वाहा

८८३ ओं वरेण्याय स्वाहा
८८४ ओं सुमहास्वनाय स्वाहा
८८५ ओं महाप्रसादाय स्वाहा
८८६ ओं दमनाय स्वाहा
८८७ ओं शत्रुघ्ने स्वाहा
८८८ ओं श्वेतपिङ्गलाय स्वाहा
८८९ ओं पीतात्मने स्वाहा
८९० ओं परमात्मने स्वाहा
८९१ ओं प्रयतात्मने स्वाहा
८९२ ओं प्रधानधृषे स्वाहा
८९३ ओं सर्वपार्श्वमुखाय स्वाहा
८९४ ओं त्र्यक्षाय स्वाहा
८९५ ओं सर्वधारणवराय स्वाहा
८९६ ओं चराचरात्मने स्वाहा
८९७ ओं सूक्ष्मात्मने स्वाहा
८९८ ओं अमृतगोवृषेश्वराय स्वाहा
८९९ ओं साध्यर्षये स्वाहा
९०० ओं आदित्यवसवे स्वाहा
९०१ ओं विवस्वत्सवित्रमृताय स्वाहा
९०२ ओं व्यासाय स्वाहा
९०३ ओं सर्वसुसंक्षेपविस्तराय स्वाहा
९०४ ओं पर्ययनराय स्वाहा
९०५ ओं क्रतवे स्वाहा
९०६ ओं संवत्सराय स्वाहा
९०७ ओं मासाय स्वाहा
९०८ ओं पक्षाय स्वाहा
९०९ ओं संख्यासमापनाय स्वाहा
९१० ओं कलायै स्वाहा
९११ ओं काष्ठायै स्वाहा
९१२ ओं लवेभ्यः स्वाहा
९१३ ओं मात्राभ्यः स्वाहा
९१४ ओं मुहूर्ताहःक्षपाभ्यः स्वाहा
९१५ ओं क्षणेभ्यः स्वाहा
९१६ ओं विश्वक्षेत्राय स्वाहा
९१७ ओं प्रजाबीजाय स्वाहा
९१८ ओं लिङ्गाय स्वाहा
९१९ ओं आद्यनिर्गमाय स्वाहा
९२० ओं सते स्वाहा
९२१ ओं असते स्वाहा
९२२ ओं व्यक्ताय स्वाहा
९२३ ओं अव्यक्ताय स्वाहा
९२४ ओं पित्रे स्वाहा
९२५ ओं मात्रे स्वाहा
९२६ ओं पितामहाय स्वाहा
९२७ ओं स्वर्गद्वाराय स्वाहा

९२८ ओं प्रजाद्वाराय स्वाहा
९२९ ओं मोक्षद्वाराय स्वाहा
९३० ओं त्रिविष्टपाय स्वाहा
९३१ ओं निर्वाणाय स्वाहा
९३२ ओं ह्लादनाय स्वाहा
९३३ ओं ब्रह्मलोकाय स्वाहा
९३४ ओं परागतये स्वाहा
९३५ ओं देवासुरविनिर्मात्रे स्वाहा
९३६ ओं देवासुरपरायणाय स्वाहा
९३७ ओं देवासुरगुरवे स्वाहा
९३८ ओं देवाय स्वाहा
९३९ ओं देवासुरनमस्कृताय स्वाहा
९४० ओं देवासुरमहामात्राय स्वाहा
९४१ ओं देवासुरगणाश्रयाय स्वाहा
९४२ ओं देवासुरगणाध्यक्षाय स्वाहा
९४३ ओं देवासुरगणाग्रण्ये स्वाहा
९४४ ओं देवातिदेवाय स्वाहा
९४५ ओं देवर्षये स्वाहा
९४६ ओं देवासुरवरप्रदाय स्वाहा
९४७ ओं देवासुरेश्वराय स्वाहा
९४८ ओं विश्वाय स्वाहा
९४९ ओं देवासुरमहेश्वराय स्वाहा
९५० ओं सर्वदेवमयाय स्वाहा
९५१ ओं अचिन्त्याय स्वाहा
९५२ ओं देवात्मने स्वाहा
९५३ ओं आत्मसम्भवाय स्वाहा
९५४ ओं उद्भिदे स्वाहा
९५५ ओं त्रिविक्रमाय स्वाहा
९५६ ओं वैद्याय स्वाहा
९५७ ओं विरजाय स्वाहा
९५८ ओं नीरजाय स्वाहा
९५९ ओं अमराय स्वाहा
९६० ओं ईड्याय स्वाहा
९६१ ओं हस्तीश्वराय स्वाहा
९६२ ओं व्याघ्राय स्वाहा
९६३ ओं देवसिंहाय स्वाहा
९६४ ओं नरर्षभाय स्वाहा
९६५ ओं विबुधाय स्वाहा
९६६ ओं अग्रवराय स्वाहा
९६७ ओं सूक्ष्माय स्वाहा
९६८ ओं सर्वदेवाय स्वाहा
९६९ ओं तपोमयाय स्वाहा
९७० ओं सुयुक्ताय स्वाहा

९७१ ओं शोभनाय स्वाहा
९७२ ओं वज्रिणे स्वाहा
९७३ ओं प्रासानां प्रभवाय स्वाहा
९७४ ओं अव्याय स्वाहा
९७५ ओं गुहाय स्वाहा
९७६ ओं कान्ताय स्वाहा
९७७ ओं निजसर्गाय स्वाहा
९७८ ओं पवित्राय स्वाहा
९७९ ओं सर्वपावनाय स्वाहा
९८० ओं शृङ्गिणे स्वाहा
९८१ ओं शृङ्गप्रियाय स्वाहा
९८२ ओं वभ्रवे स्वाहा
९८३ ओं राजराजाय स्वाहा
९८४ ओं निरानयाय स्वाहा
९८५ ओं अभिरामाय स्वाहा
९८६ ओं सुरगणाय स्वाहा
९८७ ओं विरामाय स्वाहा
९८८ ओं सर्वसाधनाय स्वाहा
९८९ ओं ललाटाक्षाय स्वाहा
९९० ओं विश्वदेवाय स्वाहा
९९१ ओं हरिणाय स्वाहा
९९२ ओं ब्रह्मवर्चसे स्वाहा
९९३ ओं स्थावरपतये स्वाहा
९९४ ओं नियमेन्द्रियवर्धनाय स्वाहा
९९५ ओं सिद्धार्थाय स्वाहा
९९६ ओं सिद्धभूतार्थाय स्वाहा
९९७ ओं अचिन्त्याय स्वाहा
९९८ ओं सत्यव्रताय स्वाहा
९९९ ओं शुचये स्वाहा
१००० ओं व्रताधिपाय स्वाहा
१००१ ओं पराय स्वाहा
१००२ ओं ब्रह्मणे स्वाहा
१००३ ओं भक्तानां परमगतये स्वाहा
१००४ ओं विमुक्ताय स्वाहा
१००५ ओं मुक्ततेजसे स्वाहा
१००६ ओं श्रीमते स्वाहा
१००७ ओं श्रीवर्धनाय स्वाहा
१००८ ओं जगते स्वाहा

इति शिवसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारः समाप्तः ।

०

हनुमान सहस्र नाम

अथ हनुमत्सहस्रनामावल्याः

स्वाहाकारविधिः

अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः हनुमान् देवता अनुष्टुप् छन्दः रां बीजं मं शक्तिः श्रीहनुमत्प्रीत्यर्थं हनुमत्सहस्र-नामभिः हवनकरणे विनियोगः ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् ।
अभयं वरदं दोर्भ्यां चिन्तयेन्मारुतात्मजम् ॥ २ ॥

१ ॐ हनुमते स्वाहा
२ ॐ श्रीप्रदाय ,
३ ॐ वायुपुत्राय ,
४ ॐ रुद्राय ,
५ ॐ अनघाय ,
६ ॐ अजराय ,
७ ॐ अमृत्यवे ,
८ ॐ वीरवीराय ,
९ ॐ ग्रामवासाय ,
१० ॐ जनाश्रयाय ,
११ ॐ धनदाय ,
१२ ॐ निर्गुणाय ,
१३ ॐ कायाय ,
१४ ॐ वीराय ,
१५ ॐ निधिपतये स्वाहा
१६ ॐ मुनये ,
१७ ॐ पिङ्गाक्षाय ,
१८ ॐ वरदाय ,
१९ ॐ वाग्मिने ,
२० ॐ सीताशोकविनाशनाय स्वाहा
२१ ॐ शिवाय .
२२ ॐ शर्वाय ,
२३ ॐ पराय ,
२४ ॐ अव्यक्ताय ,
२५ ॐ व्यक्तव्यक्ताय ,
२६ ॐ रसाधराय ,
२७ ॐ पिङ्गकेशाय ,
२८ ॐ पिङ्गरोम्णे ,

२९ ॐ श्रुतिगम्याय स्वाहा
३० ॐ सनातनाय ,,
३१ ॐ अनादये ,,
३२ ॐ भगवते ,,
३३ ॐ देवाय ,,
३४ ॐ विश्वहेतवे ,,
३५ ॐ निराश्रयाय ,,
३६ ॐ आरोग्यकर्त्रे ,,
३७ ॐ विश्वेशाय ,,
३८ ॐ विश्वनायकाय ,,
३९ ॐ हरीश्वराय ,,
४० ॐ भर्गाय ,,
४१ ॐ रामाय ,,
४२ ॐ रामभक्ताय ,,
४३ ॐ कल्याणाय ,,
४४ ॐ प्रकृतिस्थिराय ,,
४५ ॐ विश्वम्भराय ,,
४६ ॐ विश्वमूर्तये ,,
४७ ॐ विश्वाकाराय ,,
४८ ॐ विश्वदाय ,,
४९ ॐ विश्वात्मने ,,
५० ॐ विश्वसेव्याय ,,
५१ ॐ विश्वाय ,,
५२ ॐ विश्वहराय ,,
५३ ॐ रवये ,,
५४ ॐ विश्वचेष्टाय स्वाहा
५५ ॐ विश्वागम्याय ,,
५६ ॐ विश्वध्येयाय ,,
५७ ॐ कलाधराय ,,
५८ ॐ प्लवंगमाय ,,
५९ ॐ कपिश्रेष्ठाय ,,
६० ॐ ज्येष्ठाय ,,
६१ ॐ विद्याय ,,
६२ ॐ वनेचराय ,,
६३ ॐ बालाय ,,
६४ ॐ वृद्धाय ,,
६५ ॐ यूने ,,
६६ ॐ तत्त्वाय ,,
६७ ॐ तत्त्वगम्याय ,,
६८ ॐ सख्ये ,,
६९ ॐ अजाय ,,
७० ॐ अञ्जनीसूनवे ,,
७१ ॐ अव्यग्राय ,,
७२ ॐ ग्रामस्वान्ताय ,,
७३ ॐ धराधराय ,,
७४ ॐ भूर्लोकाय ,,
७५ ॐ भुवर्लोकाय ,,
७६ ॐ स्वर्लोकाय ,,
७७ ॐ महर्लोकाय ,,
७८ ॐ जनलोकाय ,,

७९ ॐ तपसे स्वाहा
८० ॐ अव्ययाय ,
८१ ॐ सत्याय ,
८२ ॐ ओङ्कारगम्याय ,
८३ ॐ प्रणवाय ,
८४ ॐ व्यापकाय ,
८५ ॐ अमलाय ,
८६ ॐ शिवाय ,
८७ ॐ धर्मप्रतिष्ठात्रे ,
८८ ॐ रामेष्टाय ,
८९ ॐ फाल्गुनप्रियाय ,
९० ॐ गोष्पदिने ,
९१ ॐ कृतवारीशाय ,
९२ ॐ पूर्णकामाय ,
९३ ॐ धराधिपाय ,
९४ ॐ रक्षोघ्नाय ,
९५ ॐ पुण्डरीकाक्षाय ,
९६ ॐ शरणागतवत्सलाय ,
९७ ॐ जानकीप्राणदात्रे ,
९८ ॐ रक्षः प्राणापहारकाय स्वाहा
९९ ॐ पूर्णाय स्वाहा
१०० ॐ सत्याय ,
१०१ ॐ पीतवाससे ,
१०२ ॐ दिवाकरसमप्रभाय स्वाहा
१०३ ॐ द्रोणहर्त्रे स्वाहा
१०४ ॐ शक्तिनेत्रे ,
१०५ ॐ शक्तये ,
१०६ ॐ राक्षसमारकाय ,
१०७ ॐ रक्षोघ्नाय ,
१०८ ॐ रामदूताय ,
१०९ ॐ शाकिनीजीविकाहराय स्वाहा
११० ॐ भुभुकारहतारातये ,
१११ ॐ गर्वाय स्वाहा
११२ ॐ पर्वतच्छेदनाय ,
११३ ॐ हेतवे ,
११४ ॐ अहेतवे ,
११५ ॐ प्रांशवे ,
११६ ॐ विश्वभर्त्रे ,
११७ ॐ जगद्गुरवे ,
११८ ॐ जगन्नेत्रे ,
११९ ॐ जगन्नाथाय ,
१२० ॐ जगदीशाय ,
१२१ ॐ जनेश्वराय ,
१२२ ॐ जगच्छ्रिताय ,
१२३ ॐ हरये ,
१२४ ॐ श्रीशाय ,
१२५ ॐ गरुडस्मयभञ्जकाय स्वाहा
१२६ ॐ पार्थध्वजाय स्वाहा

१२७ ॐ वायुपुत्राय स्वाहा
१२८ ॐ अमितपुच्छाय ,
१२९ ॐ अमितप्रभाय ,
१३० ॐ ब्रह्मपुच्छाय ,
१३१ ॐ परब्रह्मणे ,
१३२ ॐ पुच्छरोमेष्टाय ,
१३३ ॐ सुग्रीवादियुताय ,
१३४ ॐ ज्ञानिने ,
१३५ ॐ वानराय ,
१३६ ॐ वानरेश्वराय ,
१३७ ॐ कल्पस्थायिने ,
१३८ ॐ चिरञ्जीविने ,
१३९ ॐ प्रसन्नाय ,
१४० ॐ सदाशिवाय ,
१४१ ॐ सन्नताय ,
१४२ ॐ सद्गतये ,
१४३ ॐ युक्तये ,
१४४ ॐ मुक्तिदाय ,
१४५ ॐ कीर्तिनायकाय ,
१४६ ॐ कीर्तये ,
१४७ ॐ कीर्तिप्रदाय ,
१४८ ॐ समुद्राय ,
१४९ ॐ श्रीप्रदाय ,
१५० ॐ शिवाय ,
१५१ ॐ उदधिक्रमणाय ,
१५२ ॐ देवाय स्वाहा
१५३ ॐ संसारभयनाशनाय ,
१५४ ॐ बालिबन्धकृते ,
१५५ ॐ विश्वजेत्रे ,
१५६ ॐ विश्वप्रतिष्ठिताय ,
१५७ ॐ लङ्कारये ,
१५८ ॐ कालपुरुषाय ,
१५९ ॐ लङ्केशगृहभञ्जनाय स्वाहा
१६० ॐ भूतावासाय स्वाहा
१६१ ॐ वासुदेवाय ,
१६२ ॐ वसवे ,
१६३ ॐ त्रिभुवनेश्वराय ,
१६४ ॐ श्रीरामरूपाय ,
१६५ ॐ कृष्णाय ,
१६६ ॐ लङ्काप्रासादभञ्जकाय स्वाहा
१६७ ॐ कृष्णाय स्वाहा
१६८ ॐ कृष्णस्तुताय ,
१६९ ॐ शान्ताय ,
१७० ॐ शान्तिदाय ,
१७१ ॐ विश्वपावनाय ,
१७२ ॐ विश्वभोक्त्रे ,
१७३ ॐ मारिघ्नाय ,
१७४ ॐ ब्रह्मचारिणे ,

१७५ ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा
१७६ ॐ ऊर्ध्वगाय ,
१७७ ॐ लांगूलिने ,
१७८ ॐ मालिने ,
१७९ ॐ लांगूलाहतराक्षसाय स्वाहा
१८० ॐ समीरत-नुजायस्वाहा
१८१ ॐ वीराय ,
१८२ ॐ वीरमाराय ,
१८३ ॐ जयप्रदाय ,
१८४ ॐ जगन्मङ्गलदाय ,
१८५ ॐ पुण्याय ,
१८६ ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा
१८७ ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा
१८८ ॐ पुण्यगीतये ,
१८९ ॐ जगत्पावनपावनाय स्वाहा
१९० ॐ देवेशाय स्वाहा
१९१ ॐ मितमाराय ,
१९२ ॐ रामभक्तिविधायकाय स्वाहा
१९३ ॐ धात्रे ,
१९४ ॐ ध्येयाय ,
१९५ ॐ भगाय ,
१९६ ॐ साक्षिणे ,
१९७ ॐ चेत्रे ,
१९८ ॐ चैतन्यविग्रहाय स्वाहा
१९९ ॐ ज्ञानदाय ,
२०० ॐ प्राणदाय ,
२०१ ॐ प्राणाय ,
२०२ ॐ जगत्प्राणाय ,
२०३ ॐ समीरणाय ,
२०४ ॐ विभीषणप्रियाय ,
२०५ ॐ शूराय स्वाहा
२०६ ॐ पिप्लाश्रयाय ,
२०७ ॐ सिद्धिदाय ,
२०८ ॐ सिद्धाश्रयाय ,
२०९ ॐ कालाय ,
२१० ॐ कालभक्षकाय ,
२११ ॐ भर्जिताय ,
२१२ ॐ लङ्केशनिधनस्थायिने स्वाहा
२१३ ॐ लंकाविदाहकाय ,
२१४ ॐ ईश्वराय ,
२१५ ॐ चन्द्रसूर्याग्निनेत्राय स्वाहा
२१६ ॐ कालाग्नये ,
२१७ ॐ प्रलयान्तकाय ,
२१८ ॐ कपीनाय ,
२१९ ॐ कपीशाय ,
२२० ॐ पुण्यराशये ,

२२१ ॐ द्वादशराशिगाय स्वाहा
२२२ ॐ सर्वाश्रयाय ,
२२३ ॐ अप्रमेयात्मने ,
२२४ ॐ रेवत्यादिनिवारकाय स्वाहा
२२५ ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे स्वाहा
२२६ ॐ सीताजीवनहेतुकाय स्वाहा
२२७ ॐ रामध्येयाय स्वाहा
२२८ ॐ हृषीकेशाय ,
२२९ ॐ विष्णुभक्ताय स्वाहा
२३० ॐ जटिने ,
२३१ ॐ बलिने ,
२३२ ॐ सिद्धाय ,
२३३ ॐ देवादिदर्पघ्ने ,
२३४ ॐ होत्रे ,
२३५ ॐ धात्रे ,
२३६ ॐ कर्त्रे ,
२३७ ॐ जगत्प्रभवे ,
२३८ ॐ नगरग्रामपालाय ,
२३९ ॐ शुद्धाय ,
२४० ॐ बुद्धाय ,
२४१ ॐ निरन्तनाय ,
२४२ ॐ निरञ्जनाय ,
२४३ ॐ निर्विकल्पाय ,
२४४ ॐ गुणातीताय स्वाहा
२४५ ॐ भयङ्कराय ,
२४६ ॐ हनुमते ,
२४७ ॐ दुराराध्याय ,
२४८ ॐ तपस्साध्याय ,
२४९ ॐ अमरेश्वराय ,
२५० ॐ जानकीघनशोकोत्थतापहर्त्रे स्वाहा
२५१ ॐ पराशराय ,
२५२ ॐ वाङ्मयाय ,
२५३ ॐ सद्सद्रूपाय ,
२५४ ॐ कारणाय ,
२५५ ॐ प्रकृतेः पराय ,
२५६ ॐ भाग्यदाय ,
२५७ ॐ निर्मलाय ,
२५८ ॐ नेत्रे ,
२५९ ॐ पुच्छलङ्काविदाहकाय स्वाहा
२६० ॐ पुच्छबद्धाय ,
२६१ ॐ यातुधानाय ,
२६२ ॐ यातुधानरिपुप्रियाय स्वाहा
२६३ ॐ छायापहारिणे स्वाहा
२६४ ॐ भूतेशाय ,
२६५ ॐ लोकेशाय ,
२६६ ॐ सद्गतिप्रदाय ,

२६७ ॐ प्लवङ्गेश्वराय स्वाहा
२६८ ॐ क्रोधाय
२६९ ॐ क्रोधसंरक्तलोचनाय स्वाहा
२७० ॐ क्रोधहर्त्रे ,
२७१ ॐ तापहर्त्रे ,
२७२ ॐ भक्ताभयाय ,
२७३ ॐ वरप्रदाय ,
२७४ ॐ भक्तानुकम्पिने ,
२७५ ॐ विश्वेशाय ,
२७६ ॐ पुरुहूताय ,
२७७ ॐ पुरन्दराय ,
२७८ ॐ अग्नये ,
२७९ ॐ विभावसये ,
२८० ॐ भास्वते ,
२८१ ॐ यमाय ,
२८२ ॐ निर्ऋतये ,
२८३ ॐ वरुणाय ,
२८४ ॐ वायुगतिमते ,
२८५ ॐ वायवे ,
२८६ ॐ कुबेराय ,
२८७ ॐ ईश्वराय ,
२८८ ॐ रवये ,
२८९ ॐ चन्द्राय ,
२९० ॐ कुजाय ,
२९१ ॐ सौम्याय ,
२९२ ॐ गुरवे स्वाहा
२९३ ॐ काव्याय ,
२९४ ॐ शनैश्चराय ,
२९५ ॐ राहवे ,
२९६ ॐ केतवे ,
२९७ ॐ मरुते ,
२९८ ॐ होत्रे ,
२९९ ॐ धात्रे ,
३०० ॐ हर्त्रे ,
३०१ ॐ समीरजाय ,
३०२ ॐ मशकीकृतदेवारये ,
३०३ ॐ दैत्यारये स्वाहा
३०४ ॐ मधुसूदनाय ,
३०५ ॐ कामाय ,
३०६ ॐ कपये ,
३०७ ॐ कामपालाय ,
३०८ ॐ कपिलाय ,
३०९ ॐ विश्वजीवनाय ,
३१० ॐ भागीरथीपदाम्भोजाय स्वाहा
३११ ॐ सेतुबन्धविशारदाय स्वाहा
३१२ ॐ स्वाहाकाराय ,
३१३ ॐ स्वधाकाराय ,
३१४ ॐ हविषे ,

३१५ ॐ कव्याय स्वाहा
३१६ ॐ हव्याय ,
३१७ ॐ प्रकाशकाय ,
३१८ ॐ स्वप्रकाशाकाय ;
३१९ ॐ महावीराय ,
३२० ॐ लघवे ,
३२१ ॐ अमितविक्रमाय ,
३२२ ॐ भण्डानोड्डानगतिमते स्वाहा
३२३ ॐ सद्गतये ,
३२४ ॐ पुरुषोत्तमाय ,
३२५ ॐ जगदात्मने ,
३२६ ॐ जगद्योनये ,
३२७ ॐ जगदन्ताय ,
३२८ ॐ अनन्तकाय ,
३२९ ॐ विपाप्मने ,
३३० ॐ निष्कलङ्काय ,
३३१ ॐ महते ,
३३२ ॐ महदहङ्कृतये ,
३३३ ॐ रवाय ,
३३४ ॐ वायवे ,
३३५ ॐ पृथिव्यै ,
३३६ ॐ आपाय ,
३३७ ॐ वह्नये ,
३३८ ॐ दिक्कालाय ,
३३९ ॐ एकस्थाय स्वाहा
३४० ॐ क्षेत्रज्ञाय ,
३४१ ॐ क्षेत्रहन्त्रे ,
३४२ ॐ पल्वलीकृतसागराय स्वाहा
३४३ ॐ हिरण्मयाय ,
३४४ ॐ पुराणाय ,
३४५ ॐ खेचराय ,
३४६ ॐ भूचराय ;
३४७ ॐ मनसे ,
३४८ ॐ हिरण्यगर्भाय ,
३४९ ॐ सुत्राम्णे ,
३५० ॐ राजराजाय ,
३५१ ॐ विशाम्पतये ,
३५२ ॐ वेदान्तवेद्याय ,
३५३ ॐ उद्गीथाय ,
३५४ ॐ वेदाय ,
३५५ ॐ वेदाङ्गपारगाय ,
३५६ ॐ प्रतिग्रामस्थितये स्वाहा
३५७ ॐ सद्यः स्फूर्तिदात्रे ,
३५८ ॐ गुणाकाराय ,
३५९ ॐ नक्षत्रमालिने ,
३६० ॐ भूतात्मने ,
३६१ ॐ सुरभये ,
३६२ ॐ कल्पपादपाय ,

३६३ ॐ चिन्तामणये स्वाहा
३६४ ॐ गुणनिधये ,
३६५ ॐ प्रजाद्वाराय ,
३६६ ॐ अनुत्तमाय ,
३६७ ॐ पुण्यश्लोकाय ,
३६८ ॐ पुरारातये ,
३६९ ॐ ज्योतिष्मते ,
३७० ॐ शर्वरीपतये ,
३७१ ॐ किलकिलिरावसंत्रस्त-
भूतप्रेतपिशाचकाय
स्वाहा
३७२ ॐ ऋणत्रयहराय ,
३७३ ॐ सूक्ष्माय ,
३७४ ॐ स्थूलकाय ,
३७५ ॐ सर्वगतये ,
३७६ ॐ पुंसे ,
३७७ ॐ अपस्मारहराय ,
३७८ ॐ स्मर्त्रे ,
३७९ ॐ श्रुतये ,
३८० ॐ गाथायै ,
३८१ ॐ स्मृतये ,
३८२ ॐ मनवे ,
३८३ ॐ स्वर्गद्वाराय ,
३८४ ॐ प्रजाद्वाराय ,
३८५ ॐ मोक्षद्वाराय ,
३८६ ॐ यतीश्वराय स्वाहा
३८७ ॐ नादरूपाय ,
३८८ ॐ परब्रह्मणे ,
३८९ ॐ ब्रह्मणे ,
३९० ॐ ब्रह्मपुरातनाय ,
३९१ ॐ एकाय ,
३९२ ॐ अनेकाय ,
३९३ ॐ जनाय ,
३९४ ॐ शुक्लाय ,
३९५ ॐ स्वयंज्योतिषे ,
३९६ ॐ अनाकुलाय ,
३९७ ॐ ज्योतिर्ज्योतिषे
स्वाहा
३९८ ॐ अनादये ,
३९९ ॐ सात्त्विकाय ,
४०० ॐ राजसाय ,
४०१ ॐ तमसे ,
४०२ ॐ तमोहर्त्रे ,
४०३ ॐ निरालम्बाय ,
४०४ ॐ निराकाराय ,
४०५ ॐ गुणाकराय ,
४०६ ॐ गुणाश्रयाय ,
४०७ ॐ गुणमयाय ,
४०८ ॐ बृहत्कायाय ,
४०९ ॐ बृहद्यशसे ,

४१० ॐ बृहद्धनुषे स्वाहा
४११ ॐ बृहत्पादाय ,
४१२ ॐ बृहन्मूर्ध्ने ,
४१३ ॐ बृहत्स्वनाय ,
४१४ ॐ बृहत्कायाय ,
४१५ ॐ बृहन्नासाय ,
४१६ ॐ बृहद्बाहवे ,
४१७ ॐ बृहत्तनवे ,
४१८ ॐ बृहद्यत्नाय ,
४१९ ॐ बृहत्कार्याय ,
४२० ॐ बृहत्पुच्छाय ,
४२१ ॐ बृहत्कराय ,
४२२ ॐ बृहद्‌गतये ,
४२३ ॐ बृहत्सेव्याय ,
४२४ ॐ बृहल्लोकाय ,
४२५ ॐ फलप्रदाय ,
४२६ ॐ बृहच्छक्तये ,
४२७ ॐ बृहद्वाञ्छाफलदाय स्वाहा
४२८ ॐ बृहदीश्वराय ,
४२९ ॐ बृहल्लोकनुताय ,
४३० ॐ द्रष्ट्रे ,
४३१ ॐ विद्योदात्रे ,
४३२ ॐ जगद्‌गुरवे ,
४३३ ॐ देवाचार्याय ,
४३४ ॐ सत्यवादिने ,
४३५ ॐ ब्रह्मवादिने स्वाहा
४३६ ॐ कलाधराय ,
४३७ ॐ सप्तपातालगामिने स्वाहा
४३८ ॐ मलयाचलसंश्रयाय स्वाहा
४३९ ॐ उत्तराशास्थिताय स्वाहा
४४० ॐ श्रीदाय ,
४४१ ॐ दिव्यौषधीवशाय स्वाहा
४४२ ॐ खगाय ,
४४३ ॐ शाखामृगाय ,
४४४ ॐ कपीन्द्राय ,
४४५ ॐ पुराणाय ,
४४६ ॐ प्राणचञ्चुराय ,
४४७ ओं चतुराय ,
४४८ ओं ब्राह्मणाय ,
४४९ ओं योगिने ,
४५० ओं योगगम्याय ,
४५१ ओं परावराय ,
४५२ ओं अनादये ,
४५३ ओं निधनाय ,
४५४ ओं व्यासाय ,
४५५ ओं वैकुण्ठाय ,
४५६ ओं पृथ्वीपतये ,

४५७ ओं अपराजितये स्वाहा
४५८ ओं जितारातये ,
४५९ ओं सदानन्ददाय ,
४६० ओं ईशित्रे ,
४६१ ओं गोपालाय ,
४६२ ओं गोपतये ,
४६३ ओं योध्रे ,
४६४ ओं कलयें ,
४६५ ओं कालाय ,
४६६ ओं परात्पराय ,
४६७ ओं मनोवेगिने ,
४६८ ओं सदायोगिने ,
४६९ ओ संहारभयनाशनाय स्वाहा
४७० ओं तत्त्वदात्रे .
४७१ ओं तत्त्वज्ञाय ,
४७२ ओं तत्त्वाय ,
४७३ ओं तत्त्वप्रकाशाय ,
४७४ ओं शुद्धाय ,
४७५ ओं बुधाय ,
४७६ ओं नित्ययुक्ताय ,
४७७ ओं भक्ताकाराय ,
४७८ ओं जगद्रथाय ,
४७९ ओं प्रलयाय ,
४८० ओं अमितमायाय ,
४८१ ओं मायातीताय स्वाहा
४८२ ओं विमत्सराय ,
४८३ ओं मायानिर्जितरक्षसे स्वाहा
४८४ ओं मायानिर्मितविष्टपाय स्वाहा
४८५ ओं मायाश्रयाय ,
४८६ ओं निर्लेपाय ,
४८७ ओं मायानिवर्त्तकाय,
४८८ ओं सुखाय ,
४८९ ओं सुखासुखप्रदाय ,
४९० ओं नागाय ,
४९१ ओं महेशकृतसंस्तवाय स्वाहा
४९२ ओं महेश्वराय ,
४९३ ओं सत्यसन्धाय ,
४९४ ओ शरभाय ,
४९५ ओं कलिपावनाय ,
४९६ ओं रसाय ,
४९७ ओं रसज्ञाय ,
४९८ ओं सन्मानाय ,
४९९ ओं रूपाय ,
५०० ओं चक्षुषे ,
५०१ ओं स्तुतये ,
५०२ ओं रवाय ,

५०३ ओं प्राणाय स्वाहा
५०४ ओं गन्धाय ,
५०५ ओं स्पर्शाय ,
५०६ ओं स्पर्शनाय ,
५०७ ओं अहङ्कारमानगाय ,
५०८ ओं नेतिनेतीतिगम्याय स्वाहा
५०९ ओं वैकुण्ठभजनप्रियाय स्वाहा
५१० ओं गिरिशाय ,
५११ ओं गिरिजाकान्ताय ,
५१२ ओं दुर्वाससे ,
५१३ ओं कवये ,
५१४ ओं अङ्गिरसे ,
५१५ ओं भृगवे ,
५१६ ओं वाशिष्ठाय ,
५१७ ओं चयवनाय ,
५१८ ओं नारदाय ,
५१९ ओं तुम्बराय ,
५२० ओं अमलाय ,
५२१ ओं विश्वक्षेत्राय ,
५२२ ओं विश्वबीजाय ,
५२३ ओं विश्वनेत्राय ,
५२४ ओं विश्वपाय ,
५२५ ओं याजकाय ,
५२६ ओं यजमानाय स्वाहा
५२७ ओं पावकाय ,
५२८ ओं पित्रे ,
५२९ ओं श्रद्धायै ,
५३० ओं बुद्ध्यै ,
५३१ ओं क्षमायै ,
५३२ ओं तन्द्रायै ,
५३३ ओं मन्त्राय ,
५३४ ओं मन्त्रयित्रे ,
५३५ ओं सुराय ,
५३६ ओं राजेन्द्राय ,
५३७ ओं भूपतये ,
५३८ ओं रुण्डमालिने ,
५३९ ओं संसारसारथये ,
५४० ओं नित्याय ,
५४१ ओं सम्पूर्णकामाय स्वाहा
५४२ ओं भक्तकामदुघे ,
५४३ ओं उत्तमाय ,
५४४ ओं गणपाय ,
५४५ ओं केशवाय ,
५४६ ओं भ्रात्रे ,
५४७ ओं पित्रे ,
५४८ ओं मात्रे ,
५४९ ओं मारुतये ,

५५० सहस्रमूर्ध्ने ,
५५१ सहस्रास्याय ,
५५२ सहस्राक्षाय ,
५५३ ओं सहस्रपादाय ,
५५४ ओं कामजिते ,
५५५ ओं कामदहनाय ,
५५६ ओं कामाय ,
५५७ ओं कामफलप्रदाय ,
५५८ ओं मुद्रापहारिणे ,
५५९ ओं रक्षोघ्नाय ,
५६० ओं क्षितिभारहराय स्वाहा
५६१ ओं अकलाय ,
५६२ ओं नखदंष्ट्रायुधाय स्वाहा
५६३ ओं विष्णवे ,
५६४ ओं भक्ताभयवरप्रदाय स्वाहा
५६५ ओं दर्पघ्ने ,
५६६ ओं दर्पदाय ,
५६७ ओं इष्टाय ,
५६८ ओं शतमूर्त्तये ,
५६९ ओं अमूर्तिमते ,
५७० ओं महानिधये ,
५७१ ओं महाभागाय ,
५७२ ओं महागर्भाय ,
५७३ ओं महर्द्धिदाय स्वाहा
५७४ ओं महाकाराय ,
५७५ ओं महायोगिने ,
५७६ ओं महातेजसे ,
५७७ ओं महाद्युतये ,
५७८ ओं महाकर्मणे ,
५७९ ओं महानादाय ,
५८० ओं महामन्त्राय ,
५८१ ओं महामतये ,
५८२ ओं महाशयाय ,
५८३ ओं महोदराय ,
५८४ ओं महादेवात्मकाय ,
५८५ ओं विभवे ,
५८६ ओं रुद्रकर्मणे ,
५८७ ओं अकृतकर्मणे ,
५८८ ओं रत्ननाभाय ,
५८९ ओं कृतागमाय ,
५९० ओं अम्भोनिधिलंघनाय स्वाहा
५९१ ओं सिंहाय ,
५९२ ओं सत्यधर्माय ,
५९३ ओं प्रमोदनाय ,
५९४ ओं जितामित्राय ,
५९५ ओं जयाय ,
५९६ ओं सोमाय ,

५९७ ओं विजयाय स्वाहा
५९८ ओं वायुवाहनाय ,
५९९ ओं जीवाय ,
६०० ओं धात्रे ,
६०१ ओं सहस्रांशवे ,
६०२ ओं मुकुन्दाय ,
६०३ ओं भूरिदक्षिणाय ,
६०४ ओं सिद्धार्थाय ,
६०५ ओं सिद्धिदाय ,
६ ६ ओं सिद्धिसङ्कल्पाय ,
६०७ ओं सिद्धहेतुकाय ,
६०८ ओं सप्तपातालचरणाय स्वाहा
६०९ ओं सप्तर्षिगणवन्दिताय स्वाहा
६१० ओं सप्ताब्धिलंघनाय स्वाहा
६११ ओं वीराय ,
६१२ ओं सप्तद्वीपोरुमण्डलाय स्वाहा
६१३ ओं सप्ताङ्गराज्यसुखदाय स्वाहा
६१४ ओं सप्तमातृनिवेशिताय स्वाहा
६१५ ओं सप्तस्वर्लोकमुकुटाय स्वाहा
६१६ ओं सप्तहोत्रे स्वाहा
६१७ ओं स्वराश्रयाय ,
६१८ ओं सप्तच्छन्दाय ,
६१९ ओं निधये ,
६२० ओं सप्तच्छन्दसे ,
६२१ ओं सप्तजनाश्रयाय ,
६२२ ओं सप्तसामाय ,
६२३ ओं उपगीताय ,
६२४ ओं सप्तपातालसंश्रयाय स्वाहा
६२५ ओं बलभीमाय ,
६२६ ओं पातालदेवताहन्त्रे ,
६२७ ओं शास्त्रे ,
६२८ ओं चातुर्यसागराय ,
६२९ ओं उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डाय स्वाहा
६३० ओं चपलाङ्गाय ,
६३१ ओं प्रतोषकाय ,
६३२ ओं वैष्णवाय ,
६३३ ओं विश्वरूपात्मने ,
६३४ ओं वनारये ,
६३५ ओं कल्पभूरुहाय ,
६३६ ओं लोहिताङ्गाय ,
६३७ ओं गदापाणये ,
६३८ ओं धूर्त्ताय ,

६३९ ओं सिन्दूरलेपनाय स्वाहा
६४० ओं कोटिकन्दर्पसौन्दर्याय स्वाहा
६४१ ओं कपिवृन्दप्रपूजिताय स्वाहा
६४२ ओं रुद्रावताराय ,
६४३ ओं गम्भीराय ,
६४४ ओं गम्भीरध्वानसम्भवाय स्वाहा
६४५ ओं सामगैकशिरोरत्नाय स्वाहा
६४६ ओं गानविद्याप्रकाशकाय स्वाहा
६४७ ओं स्वर्णयज्ञोपवीतिने ,
६४८ ओं कुमाराय ,
६४९ ओं ब्रह्मदीक्षिताय ,
६५० ओं अश्रमाय ,
६५१ ओं परमोत्साहाय ,
६५२ ओं ऐश्वर्योदार्यसागराय स्वाहा
६५३ ओं पञ्चाननाय ,
६५४ ओं विराडात्मने ,
६५५ ओं स्वराजे ,
६५६ ओं एकादशाननाय ,
६५७ ओं विधिस्तुताय ,
६५८ ओं कृपामूर्तये ,
६५९ ओं रामहृदे स्वाहा
६६० ओं भक्तवत्सलाय ,
६६१ ओं अदाह्याय ,
६६२ ओं अच्छेद्याय ,
६६३ ओं आधाराय ,
६६४ ओं वज्राङ्गाय ,
६६५ ओं भुजविक्रमाय ,
६६६ ओं श्रीरामहृदयानन्दाय स्वाहा
६६७ ओं चिरायुषे ,
६६८ ओं पूर्णपिण्डजाय ,
६६९ ओं ध्यानशीलाय ,
६७० ओं प्रशान्तात्मने ,
६७१ ओं रामनामामृताशनाय स्वाहा
६७२ ओं मेघरूपाय ,
६७३ ओं मेघवृष्टिनिवारकाय स्वाहा
६७४ ओं मेघजीवनहेतवे ,
६७५ ओं मेघश्यामाय ,
६७६ ओं परात्मकाय ,
६७७ ओं समीर-तनयाय ,
६७८ ओं बोध्ने ,
६७९ ओं तत्त्वविद्याविशारदाय स्वाहा

६८० ओं अमोघाय स्वाहा
६८१ ओं अमोघदृष्टये ,
६८२ ओं दिष्टदाय ,
६८३ ओं अनिष्टनाशाय ,
६८४ ओं अर्थाय ,
६८५ ओं अनर्थापहारिणे ,
६८६ ओं समर्थाय ,
६८७ ओं रामसेवकाय ,
६८८ ओं अर्थिने ,
६८९ ओं धन्याय ,
६९० ओं सुरारातये ,
६९१ ओं पुण्डरीकाक्षाय ,
६९२ ओं आत्मभुवे ,
६९३ ओं सङ्कर्षणाय ,
६९४ ओं विशुद्धात्मने ,
६९५ ओं विद्याराशये ,
६९६ ओं सुरेश्वराय ,
६९७ ओं अचलोद्धारकाय ,
६९८ ओं नित्याय ,
६९९ ओं सेतुकृते ,
७०० ओं रामसारथये ,
७०१ ओं आनन्दाय ,
७०२ ओं परमानन्दाय ,
७०३ ओं मत्स्याय ,
७०४ ओं कूर्माय ,
७०५ ओं निधये स्वाहा
७०६ ओं शूराय ,
७०७ ओं वराहाय ,
७०८ ओं नारसिंहाय ,
७०९ ओं वामनाय ,
७१० ओं जमदग्निजाय ,
७११ ओं रामाय ,
७१२ ओं कृष्णाय ,
७१३ ओं शिवाय ,
७१४ ओं बुद्धाय ,
७१५ ओं कल्किने ,
७१६ ओं रामाश्रयाय ,
७१७ ओं हराय ,
७१८ ओं नन्दिने ,
७१९ ओं भृङ्गिणे ,
७२० ओं चण्डिने ,
७२१ ओं गणेशाय ,
७२२ ओं गणसेविताय ,
७२३ ओं कर्माध्यक्षाय ,
७२४ ओं सुरारामाय ,
७२५ ओं विश्रामाय ,
७२६ ओं जगतीपतये ,
७२७ ओं जगन्नाथाय ,
७२८ ओं कपीशाय ,
७२९ ओं सर्वावासाय ,

७३० ओं सदाश्रयाय स्वाहा
७३१ ओं सुग्रीवादिस्तुताय स्वाहा
७३२ ओं दान्ताय ,
७३३ ओं सर्वकर्मणे ,
७३४ ओं प्लवङ्गमाय ,
७३५ ओं नखादारितरक्षसे स्वाहा
७३६ ओं नखयुद्धविशारदाय स्वाहा
७३७ ओं कुशलाय ,
७३८ ओं सुघनाय ,
७३९ ओं शेषाय ,
७४० ओं वासुकये ,
७४१ ओं तक्षकाय ,
७४२ ओं सुवर्णवर्णाय ,
७४३ ओं बलाढ्याय ,
७४४ ओं पुरजेत्रे ,
७४५ ओं अघनाशनाय ,
७४६ ओं कैवल्याय ,
७४७ ओं कैवल्यदीपाय ,
७४८ ओं गरुडाय ,
७४९ ओं पन्नगाय ,
७५० ओं गुरवे ,
७५१ ओं किलकिलरावहताराातये स्वाहा
७५२ ओं गर्वाय स्वाहा
७५३ ओं पर्वतभेदनाय ,
७५४ ओं वज्राङ्गाय ,
७५५ ओं वज्रवज्राय ,
७५६ ओं भक्ताय ,
७५७ ओं भक्तवज्रनिवारणाय स्वाहा
७५८ ओं नखायुधाय ,
७५९ ओं मणिग्रीवाय ,
७६० ओं ज्वालिने ,
७६१ ओं मालिने ,
७६२ ओं भास्कराय ,
७६३ ओं प्रौढप्रतापाय ,
७६४ ओं स्नपनाय ,
७६५ ओं भक्ततापनिवारकाय स्वाहा
७६६ ओं शरणाय ,
७६७ ओं जीवाय ,
७६८ ओं भोक्त्रे ,
७६९ ओं नानाचेष्टाय ,
७७० ओं चञ्चलाय ,
७७१ ओं स्वस्थाय ,
७७२ ओं अस्वास्थ्यघ्ने ,
७७३ ओं दुःखशातनाय ,
७७४ ओं पवनात्मजाय ;

७७५ ओं पावनाय स्वाहा
७७६ ओं पवनाय ,
७७७ ओं कान्ताय ,
७७८ ओं भक्ताङ्गाय ,
७७९ ओं सहनाय ,
७८० ओं बलाय ,
७८१ ओं मेघनादरिपवे ,
७८२ ओं मेघनादसंहतराक्षसाय स्वाहा
७८३ ओं क्षराय ,
७८४ ओं अक्षराय ,
७८५ ओं विनीतात्मने ,
७८६ ओं वानरेशाय ,
७८७ ओं सताङ्गतये ,
७८८ ओं श्रीकण्ठाय ,
७८९ ओं शितिकण्ठाय ,
७९० ओं सहायाय ,
७९१ ओं असहनकाय ,
७९२ ओं अस्थूलाय ,
७९३ ओं अनणवे ,
७९४ ओं भर्गाय ,
७९५ ओं देवाय ,
७९६ ओं संसृतिनाशाय ,
७९७ ओं अध्यात्मविद्याय ,
७९८ ओं साराय स्वाहा
७९९ ओं अध्यात्मकुशलाय स्वाहा
८०० ओं सुधिये ,
८०१ ओं अकल्मषाय ,
८०२ ओं सत्यहेतवे ,
८०३ ओं सत्यदाय ,
८०४ ओं सत्यगोचराय ,
८०५ ओं सत्यगर्भाय ,
८०६ ओं सत्यरूपाय ,
८०७ ओं सत्याय ,
८०८ ओं सत्यपराक्रमाय ,
८०९ ओं अञ्जनीप्राणलिङ्गाय स्वाहा
८१० ओं वायुवंशोद्वहाय ,
८११ ओं अश्रुतये ,
८१२ ओं भद्ररूपाय ,
८१३ ओं सुरूपाय ,
८१४ ओं चित्ररूपधृषे ,
८१५ ओं मैनाकवन्दिताय ,
८१६ ओं सूक्ष्मदशनाय ,
८१७ ओं विजयाय ,
८१८ ओं जयाय ;
८१९ ओं क्रान्तिदिङ्मण्डलाय स्वाहा

८२० ओं रुद्राय स्वाहा	८४३ ओं वर्णनिर्मिताय स्वाहा
८२१ ओं प्रकटीकृतविक्रमाय स्वाहा	८४४ ओं विग्रहाय ,,
	८४५ ओं उलूखलमुखाय ,,
८२२ ओं कम्बुकण्ठाय ,,	८४६ ओं सिद्धाय ,,
८२३ ओं प्रसन्नात्मने ,,	८४७ ओं संस्तुताय ,,
८२४ ओं ह्रस्वनासाय ,,	८४८ ओं प्रथमेश्वराय ,,
८२५ ओं वृकोदराय ,,	८४९ ओं श्लिष्टजंघाय ,,
८२६ ओं लम्बोष्ठाय ,,	८५० ओं श्लिष्टपाणये ,,
८२७ ओं कुण्डलिने ,,	८५१ ओं श्लिष्टजानवे ,,
८२८ ओं चित्रमालिने ,,	८५२ ओं शिखाधराय ,,
८२९ ओं योगविदाम्बराय ,,	८५३ ओं सुशर्मणे ,,
८३० ओं विपश्चिते ,,	८५४ ओं अमितशर्मिणे ,,
८३१ ओं कवये ,,	८५५ ओं नारायणपरायणाय स्वाहा
८३२ ओं आनन्दविग्रहाय ,,	
८३३ ओं अनन्वशासनाय ,,	८५६ ओं जिष्णवे ,,
८३४ ओं फल्गुनीसूनवे ,,	८५७ ओं भविष्णवे ,,
८३५ ओं अव्यग्राय ,,	८५८ ओं रोचिष्णवे ,,
८३६ ओं योगात्मने ,,	८५९ ओं ग्रसिष्णवे ,,
८३७ ओं योगतत्पराय ,,	८६० ओं स्थास्नवे ,,
८३८ ओं योगविदे ,,	८६१ ओं हरये ,,
८३९ ओं योगकर्त्रे ,,	८६२ ओं रुद्रानुकृते ,,
८४० ओं योगयोनये ,,	८६३ ओं वृक्षकम्पनाय ,,
८४१ ओं दिगम्बराय ,,	८६४ ओं भूमिकम्पनाय ,,
८४२ ओं अकारादि-हकारान्ताय स्वाहा	८६५ ओं गुणप्रवाहाय ,,
	८६६ ओं सूत्रात्मने ,,

८६७ ओं वीतरागाय स्वाहा	८९० ओं पञ्चमातृकाय स्वाहा
८६८ ओं स्तुतिप्रियाय ,	८९१ ओं रञ्जनाय ,
८६९ ओं नागकन्याभयध्वंसिने स्वाहा	८९२ ओं ध्वजाय ,
	८९३ ओं योगिने ,
८७० ओं ऋतुपर्णाय ,	८९४ ओं वृन्दवन्द्याय ,
८७१ ओं कपालभृते ,	८९५ ओं श्रियाय ,
८७२ ओं अनाकुलाय ,	८९६ ओं शत्रुघ्नाय ,
८७३ ओं भगाय ,	८९७ ओं अनन्तविक्रमाय ,
८७४ ओं अपायाय ,	८९८ ओं ब्रह्मचारिणे ,
८७५ ओं अनपायाय ,	८९९ ओं इन्द्रियरिपवे ,
८७६ ओं वेदपारगाय ,	९०० ओं धृतदण्डाय ,
८७७ ओं अक्षराय ,	९०१ ओं दशात्मकाय ,
८७८ ओं पुरुषाय ,	९०२ ओं अप्रपञ्चाय ,
८७९ ओं लोकनाथाय ,	९०३ ओं सदाकाराय ,
८८० ओं ऋक्षप्रभवे ,	९०४ ओं शूरसेनाविदारकाय स्वाहा
८८१ ओं दृढाय ,	
८८२ ओं अष्टाङ्गयोगाय ,	९०५ ओं वृद्धाय ,
८८३ ओं फलभुवे ,	९०६ ओं प्रमोदाय ,
८८४ ओं सत्यसन्धाय ,	९०७ ओं आनन्दाय ,
८८५ ओं पुरुष्टुताय ,	९०८ ओं सप्तजिह्वपतये ,
८८६ ओं श्मशानस्थाननिलयाय स्वाहा	९०९ ओं धराय ,
	९१० ओं नवद्वारपुराधाराय,
८८७ ओं प्रेतविद्रावणाय ,	९११ ओं प्रत्यग्राय ,
८८८ ओं श्रमाय ,	९१२ ओं सामगायकाय ,
८८९ ओं पञ्चाक्षरपराय ,	९१३ ओं षट्चक्रधाम्ने ,

६१४ ओं स्वर्लोकाय स्वाहा
६१५ ओं भयहृते ,
६१६ ओं नामदाय ,
६१७ ओं अमदाय ,
६१८ ओं सर्ववश्यकराय ,
६१९ ओं शक्तये ,
६२० ओं अनन्ताय ,
६२१ ओं अनन्तमङ्गलाय ,
६२२ ओं अष्टमूर्तिधराय ,
६२३ ओं नेत्रे ,
६२४ ओं विरूपाय ,
६२५ ओं स्वरसुन्दराय ,
६२६ ओं धूम्रकेतवे ,
६२७ ओं महाकेतवे ,
६२८ ओं सत्यकेतवे ,
६२९ ओं महारथाय ,
६३० ओं नन्दीप्रियाय ,
६३१ ओं स्वतन्त्राय ,
६३२ ओं मेखलिने ,
६३३ ओं डमरुप्रियाय ,
६३४ ओं लोहाङ्गाय ,
६३५ ओं सर्वविदे ,
६३६ ओं धन्विने ,
६३७ ओं खड्गदाय ,
६३८ ओं शर्वाय ,
६३९ ओं ईश्वराय स्वाहा
६४० ओं फलभुजे ,
६४१ ओं फलहस्ताय ,
६४२ ओं सर्वकर्मफलप्रदाय,
६४३ ओं धर्माध्यक्षाय ,
६४४ ओं धर्मफलाय ,
६४५ ओं धर्माय ,
६४६ ओं धर्मप्रदाय ,
६४७ ओं अर्थदाय ,
६४८ ओं पञ्चविंशतितत्त्वज्ञाय स्वाहा
६४९ ओं तारकब्रह्मतत्पतये स्वाहा
६५० ओं त्रिमार्गवसतिने ,
६५१ ओं भीमाय ,
६५२ ओं सर्वदुष्टनिवर्हणाय,
६५३ ओं ऊर्जस्वते ,
६५४ ओं निष्कलाय ,
६५५ ओं शूलिने ,
६५६ ओं मालिने ,
६५७ ओं गर्जाय ,
६५८ ओं निशाचराय ,
६५९ ओं रक्ताम्बरधराय ,
६६० ओं रक्ताय ,
६६१ ओं रक्तमालाविभूषणाय स्वाहा

९६२ ओं बनमालिने स्वाहा
९६३ ओं शुभाङ्गाय ,,
९६४ ओं श्वेताय ,,
९६५ ओं श्वेताम्बराय ,,
९६६ ओं यूने ,,
९६७ ओं जयाय ,,
९६८ ओं अजेयाय ,,
९६९ ओं परीवादाय ,,
९७० ओं सहस्रवदनाय ,,
९७१ ओं कवये ,,
९७२ ओं शाकिनी-डाकिनी-
यक्ष-रक्षोभूतप्रभञ्जकाय
स्वाहा
९७३ ओं सद्योजाताय ,,
९७४ ओं कायगतये ,,
९७५ ओं ज्ञानमूर्तये ,,
९७६ ओं यशस्कराय ,,
९७७ ओं शम्भुतेजसे ,,
९७८ ओं सार्वभौमाय ,,
९७९ ओं विष्णुभक्ताय ,,
९८० ओं प्लवङ्गमाय ,,
९८१ ओं चतुर्नवतिमन्त्रज्ञाय
स्वाहा
९८२ ओं पौलस्त्यबलदर्पघ्ने ,,
९८३ ओं सर्वलक्ष्मीप्रदाय ,,
९८४ ओं श्रीमते ,,
९८५ ओं अङ्गदप्रियाय ,,
९८६ ओं इतिनुदे ,,
९८७ ओं स्मृतये ,,
९८८ ओं बीजाय ,,
९८९ ओं सुरेशाय ,,
९९० ओं संसारभयनाशनाय ,,
९९१ ओं उत्तमाय ,,
९९२ ओं श्रीपरिवाराय ,,
९९३ ओं श्रीभुवे ,,
९९४ ओं उग्राय ,,
९९५ ओं कामदुघे ,,
९९६ ओं तारकाय ,,
९९७ ओं भगवते ,,
९९८ ओं त्रात्रे ,,
९९९ ओं स्वरितदात्रे ,,
१००० ओं सुमङ्गलाय ,,

अनेन सहस्रनाम्नाऽमुकद्रव्यसमर्पणेन श्रीहनुमद्देवता प्रीयताम् ॥

अथ रामसहस्रनामावल्याः स्वाहाकार विधिः

विनियोगः

अस्य श्रीराम-सहस्रनामस्तोत्र-मन्त्रस्य भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामो देवता, चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं हवने (तुलसीदलसमर्पणे च) विनियोगः ।

करन्यासः

श्रीरामचन्द्राय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । सीतापतये तर्जनीभ्यां नमः । रघुनाथाय मध्यमाभ्यां नमः । भरताग्रजाय अनामिकाभ्यां नमः । दशरथात्मजाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हनुमत्प्रभवे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यासः

श्रीरामचन्द्राय हृदयाय नमः । सीतापतये शिरसे स्वाहा । रघुनाथाय शिखायै वषट् । भरताग्रजाय कवचाय हुम् । दशरथात्मजाय नेत्रत्रयाय वौषट् । हनुमत्प्रभवे अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृत-शर-धनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नव-कमलदल-स्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढ-सीता-मुखकमल-मिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥ १ ॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥ २ ॥

नमोऽस्तु रामाय स-लक्ष्मणाय
देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्र-यमा-ऽनिलेभ्यः
नमोऽस्तु चन्द्रार्क-मरुद्गणेभ्यः ॥ ३ ॥

१ ॐ अनादये स्वाहा
२ ॐ अधिवासाय स्वाहा
३ ॐ अच्युताय स्वाहा
४ ॐ आधाराय स्वाहा
५ ॐ आत्मप्रचालकाय स्वाहा
६ ॐ आदये स्वाहा
७ ॐ आत्मभुजे स्वाहा
८ ॐ इच्छाचारिणे स्वाहा
९ ॐ इभवन्धारिणे स्वाहा
१० ॐ इडानाडीश्वराय स्वाहा
११ ॐ इन्द्रियेशाय स्वाहा
१२ ॐ ईश्वराय स्वाहा
१३ ॐ ईतिविनाशकाय स्वाहा
१४ ॐ उमाप्रियाय स्वाहा
१५ ॐ उदारज्ञाय स्वाहा नाम
१६ ॐ उमोत्साहाय स्वाहा
१७ ॐ उत्साहाय स्वाहा
१८ ॐ उत्कण्ठाय स्वाहा
१९ ॐ उद्यमप्रियाय स्वाहा
२० ॐ ऊनसाववलप्रदाय स्वाहा
२१ ॐ ऊधाब्धिदानकर्त्रे स्वाहा
२२ ॐ ऋक्षदुःखविमोचकाय स्वाहा
२३ ॐ ऋणमुक्तिकराय स्वाहा
२४ ॐ एकपत्नये स्वाहा
२५ ॐ एकबाणधृषे स्वाहा
२६ ॐ ऐन्द्रजालिकाय स्वाहा
२७ ॐ ऐश्वर्यभोक्त्रे स्वाहा

२८ ॐ ऐश्वर्याय स्वाहा
२९ ॐ ओषधिरसप्रदाय स्वाहा
३० ॐ ओण्ड्रपुष्पाभिलाषिणे स्वाहा
३१ ॐ औत्तानपादिसुखप्रियाय स्वाहा
३२ ॐ औदार्यगुणसम्पन्नाय स्वाहा
३३ ॐ औदराय स्वाहा
३४ ॐ औषधाय स्वाहा
३५ ॐ अंसिने स्वाहा
३६ ॐ अक्रूरपूरकाय स्वाहा
३७ ॐ काकुत्स्थाय स्वाहा
३८ ॐ कमलानाथाय स्वाहा
३९ ॐ कोदण्डिने स्वाहा
४० ॐ कामनाशनाय स्वाहा
४१ ॐ कार्मुकिने स्वाहा
४२ ॐ काननस्थाय स्वाहा
४३ ॐ कौसल्यानन्दवर्धनाय स्वाहा
४४ ॐ कोदण्डभञ्जनाय स्वाहा
४५ ॐ काकध्वंसिने स्वाहा
४६ ॐ कामुकभजनाय स्वाहा
४७ ॐ कामारिपूजकाय स्वाहा
४८ ॐ कर्त्रे स्वाहा
४९ ॐ कर्बूरकुलनाशनाय स्वाहा
५० ॐ कबन्धारये स्वाहा
५१ ॐ क्रतुत्रात्रे स्वाहा
५२ ॐ कौशिकाह्लादकारकाय स्वाहा
५३ ॐ काकपक्षधराय स्वाहा
५४ ॐ कृष्णाय स्वाहा
५५ ॐ कृष्णोत्पलदलप्रभाय स्वाहा
५६ ॐ कञ्जनेत्राय स्वाहा
५७ ॐ कृपामूर्त्तये स्वाहा
५८ ॐ कुम्भकर्णविदारणाय स्वाहा
५९ ॐ कपिमित्राय स्वाहा
६० ॐ कपित्रात्रे स्वाहा
६१ ॐ कपिकालाय स्वाहा
६२ ॐ कपीश्वराय स्वाहा
६३ ॐ कृतसत्याय स्वाहा
६४ ॐ कलाभोगिने स्वाहा
६५ ॐ कलानाथमुखच्छवये स्वाहा
६६ ॐ काननिने स्वाहा
६७ ॐ कामिनीसङ्गिने स्वाहा
६८ ॐ कुशतातायस्वाहा
६९ ॐ कुशासनाय स्वाहा

७० ॐ कैकेयी-यशःसंहर्त्रे स्वाहा
७१ ॐ कृपासिन्धवे स्वाहा
७२ ॐ कृपामयाय स्वाहा
७३ ॐ कुमाराय स्वाहा
७४ ॐ कुकुरत्रात्रे स्वाहा
७५ ॐ करुणामयविग्रहाय स्वाहा
७६ ॐ कारुण्याय स्वाहा
७७ ॐ कुमुदानन्दाय स्वाहा
७८ ॐ कौसल्यागर्भसेवनाय स्वाहा
७९ ॐ कन्दर्पनिन्दिताङ्गाय स्वाहा
८० ॐ कोटिचन्द्रनिभाननाय स्वाहा
८१ ॐ कमलापूजिताय स्वाहा
८२ ॐ कामाय स्वाहा
८३ ॐ कमलापरिसेविताय स्वाहा
८४ ॐ कौसल्येयाय स्वाहा
८५ ॐ कृपाधात्रे स्वाहा
८६ ॐ कल्पद्रुमनिषेविताय स्वाहा
८७ ॐ खड्गहस्ताय स्वाहा
८८ ॐ खरध्वंसिने स्वाहा
८९ ॐ खरसैन्यविदारणाय स्वाहा
९० ॐ खरपुत्रप्राणहर्त्रे स्वाहा
९१ ॐ खण्डितासुरजीवनाय स्वाहा
९२ ॐ खलन्तिकाय स्वाहा
९३ ॐ स्वस्थवराय स्वाहा
९४ ॐ खण्डितेशधनुषे स्वाहा
९५ ॐ खेदिने स्वाहा
९६ ॐ खेदहराय स्वाहा
९७ ॐ खेददायकाय स्वाहा
९८ ॐ खेदवारणाय स्वाहा
९९ ॐ खेदघ्ने स्वाहा
१०० ॐ खरघ्ने स्वाहा
१०१ ॐ खङ्गिक्षिप्रप्रसाददायकाय स्वाहा
१०२ ॐ खेलत्खञ्जननेत्राय स्वाहा
१०३ ॐ खेलत्सरसिजाननाय स्वाहा
१०४ ॐ खगचञ्चुसुनासाय स्वाहा
१०५ ॐ खञ्जनेशसुलोचनाय स्वाहा
१०६ ॐ खञ्जरीटपतये स्वाहा
१०७ ॐ खञ्जरीटविचञ्चलाय स्वाहा

१०८ ॐ गुणाकराय स्वाहा
१०९ ॐ गुणानन्दाय स्वाहा
११० ॐ गञ्जितेशधनुषे स्वाहा
१११ ॐ गुणसिन्धवे स्वाहा
११२ ॐ गयावासिने स्वाहा
११३ ॐ गयाक्षेत्रप्रकाशकाय स्वाहा
११४ ॐ गुहमित्राय स्वाहा
११५ ॐ गुहत्रात्रे स्वाहा
११६ ॐ गुहपूज्याय स्वाहा
११७ ॐ गुहेश्वराय स्वाहा
११८ ॐ गुरुगौरवकर्त्रे स्वाहा
११९ ॐ गुरुगौरवरक्षकाय स्वाहा
१२० ॐ गुणिने स्वाहा
१२१ ॐ गुणप्रियाय स्वाहा
१२२ ॐ गीताय स्वाहा
१२३ ॐ गर्गाश्रमनिषेवकाय स्वाहा
१२४ ॐ गवेशाय स्वाहा
१२५ ॐ गवयत्रात्रे स्वाहा
१२६ ॐ गवाक्षामोददायकाय स्वाहा
१२७ ॐ गन्धमादनपूज्याय स्वाहा
१२८ ॐ गन्धमादनसेविताय स्वाहा
१२९ ॐ गौरभार्याय स्वाहा
१३० ॐ गुरुत्रात्रे स्वाहा
१३१ ॐ गुरुयज्ञाधिपालकाय स्वाहा
१३२ ॐ गोदावरीतीरवासिने स्वाहा
१३३ ॐ गङ्गास्नानाय स्वाहा
१३४ ॐ गणाधिपाय स्वाहा
१३५ ॐ गरुत्मतरथिने स्वाहा
१३६ ॐ गुर्विणे स्वाहा
१३७ ॐ गुणात्मने स्वाहा
१३८ ॐ गुणेश्वराय स्वाहा
१३९ ॐ गरुडिने स्वाहा
१४० ॐ गण्डकीवासिने स्वाहा
१४१ ॐ गण्डकीतीरचारणाय स्वाहा
१४२ ॐ गर्भवास-नियन्त्रे स्वाहा
१४३ ॐ गुरुसेवापरायणाय स्वाहा
१४४ ॐ गीष्पतिस्तूयमानाय स्वाहा
१४५ ॐ गीर्वाणत्राणकारकाय स्वाहा
१४६ ॐ गौरीशपूजनाय स्वाहा
१४७ ॐ गौरीहृदयानन्द-वर्धनाय स्वाहा

१४८ ॐ गीतप्रियाय स्वाहा
१४९ ॐ गीतरताय स्वाहा
१५० ॐ गीर्वाणवन्दिताय स्वाहा
१५१ ॐ घनश्यामाय स्वाहा
१५२ ॐ घनानन्दाय स्वाहा
१५३ ॐ घोरराक्षसघातकाय स्वाहा
१५४ ॐ घनविघ्नविनाशाय स्वाहा
१५५ ॐ घनानन्दविनाशकाय स्वाहा
१५६ ॐ घनानन्दाय स्वाहा
१५७ ॐ घनानाग्निने स्वाहा
१५८ ॐ घनगर्जिनिवारणाय स्वाहा
१५९ ॐ घोरकानन-वासिने स्वाहा
१६० ॐ घोरशस्त्रविनाशकाय स्वाहा
१६१ ॐ घोरबाणभराय स्वाहा
१६२ ॐ घोराय स्वाहा
१६३ ॐ घोरधन्वने स्वाहा
१६४ ॐ घोरपराक्रमाय स्वाहा
१६५ ॐ धर्मबिन्दुमुखश्रीमते स्वाहा
१६६ ॐ धर्मबिन्दुविभूषिताय स्वाहा
१६७ ॐ घोरमारीचहर्त्रे स्वाहा
१६८ ॐ घोरवीरविघातकाय स्वाहा
१६९ ॐ चन्द्रवक्त्राय स्वाहा
१७० ॐ चञ्चलाक्षाय स्वाहा
१७१ ॐ चन्द्रमूर्त्तये स्वाहा
१७२ ॐ चतुष्कलाय स्वाहा
१७३ ॐ चन्द्रकान्तये स्वाहा
१७४ ॐ चकोराक्षाय स्वाहा
१७५ ॐ चकोरीनयनप्रियाय स्वाहा
१७६ ॐ चण्डबाणाय स्वाहा
१७७ ॐ चण्डधन्वने स्वाहा
१७८ ॐ चकोरीप्रियदर्शनाय स्वाहा
१७९ ॐ चतुराय स्वाहा
१८० ॐ चातुरीमुक्ताय स्वाहा
१८१ ॐ चातुरीचित्तचोरकाय स्वाहा
१८२ ॐ चलत्खड्गाय स्वाहा
१८३ ॐ चलद्बाणाय स्वाहा
१८४ ॐ चतुरङ्गबलान्विताय स्वाहा

१८५ ॐ चारुनेत्राय स्वाहा
१८६ ॐ चारुवक्त्राय स्वाहा
१८७ ॐ चारुहासाय स्वाहा
१८८ ॐ चारुप्रियाय स्वाहा
१८९ ॐ चिन्तामणिविभूषाङ्गाय स्वाहा
१९० ॐ चिन्तामणिमनोरथिने स्वाहा
१९१ ॐ चिन्तामणि-मणि-प्रियाय स्वाहा
१९२ ॐ चित्तहर्त्रे स्वाहा
१९३ ॐ चित्तरूपिणे स्वाहा
१९४ ॐ चलच्चित्ताय स्वाहा
१९५ ॐ चिताञ्चिताय स्वाहा
१९६ ॐ चराचरभयत्रात्रे स्वाहा
१९७ ॐ चराचराय स्वाहा
१९८ ॐ मनोहराय स्वाहा
१९९ ॐ चतुर्वेदमयाय स्वाहा
२०० ॐ चिन्त्याय स्वाहा
२०१ ॐ चिन्तासागरवारणाय स्वाहा
२०२ ॐ चण्डकोदण्डधारिणे स्वाहा
२०३ ॐ चण्डकोदण्डखण्डनाय स्वाहा
२०४ ॐ चण्डप्रतापयुक्ताय स्वाहा
२०५ ॐ चण्डेषवे स्वाहा
२०६ ॐ चण्डविक्रमाय स्वाहा
२०७ ॐ चतुर्विक्रमयुक्ताय स्वाहा
२०८ ॐ चतुरङ्गबलापहाय स्वाहा
२०९ ॐ चतुराननपूज्याय स्वाहा
२१० ॐ चतुःसागरशासित्रे स्वाहा
२११ ॐ चमूनाथाय स्वाहा
२१२ ॐ चमूभर्त्रे स्वाहा
२१३ ॐ चमूपूज्याय स्वाहा
२१४ ॐ चमूयुताय स्वाहा
२१५ ॐ चमूहर्त्रे स्वाहा
२१६ ॐ चमूभञ्जिने स्वाहा
२१७ ॐ चमूतेजोविनाशकाय स्वाहा
२१८ ॐ चामरिणे स्वाहा
२१९ ॐ चारुचरणाय स्वाहा
२२० ॐ चरुणारुणशोभनाय स्वाहा
२२१ ॐ चर्मिणे स्वाहा
२२२ ॐ चर्मप्रियाय स्वाहा
२२३ ॐ चारुमृगचर्मविभूषिताय स्वाहा

२२४ ॐ चिद्रूपिणे स्वाहा
२२५ ॐ चिदानन्दाय स्वाहा
२२६ ॐ चित्स्वरूपिणे स्वाहा
२२७ ॐ चराचराय स्वाहा
१२८ ॐ छत्ररूपिणे स्वाहा
२२९ ॐ छत्रभङ्गिने स्वाहा
२३० ॐ छात्रगणविभूषिताय स्वाहा
२३१ ॐ छात्राय स्वाहा
२३२ ॐ छत्रप्रियाय स्वाहा
२३३ ॐ छत्रिणे स्वाहा
२३४ ॐ छत्रमोहार्तपालकाय स्वाहा
२३५ ॐ छत्रचामरयुक्ताय स्वाहा
२३६ ॐ छत्रचामरमण्डिताय स्वाहा
२३७ ॐ छत्रचामरहर्त्रे स्वाहा
२३८ ॐ छत्रचामरदायकाय स्वाहा
२३९ ॐ छत्रधारिणे स्वाहा
२४० ॐ छत्रहर्त्रे स्वाहा
२४१ ॐ छत्रत्यागिने स्वाहा
२४२ ॐ छत्रदाय स्वाहा
२४३ ॐ छत्ररूपिणे स्वाहा
२४४ ॐ छलत्यागिने स्वाहा
२४५ ॐ छलात्मने स्वाहा
२४६ ॐ छलविग्राय स्वाहा
२४७ ॐ छिद्रहर्त्रे स्वाहा
२४८ ॐ छिद्ररूपिणे स्वाहा
२४९ ॐ छिद्रौघविनिषूदनाय स्वाहा
२५० ॐ छिन्नशत्रवे स्वाहा
२५१ ॐ छिन्नरोगाय स्वाहा
२५२ ॐ छिन्नधन्वने स्वाहा
२५३ ॐ छलापहाय स्वाहा
२५४ ॐ छिन्नच्छत्रप्रदायनाय स्वाहा
२५५ ॐ छेदकारिणे स्वाहा
२५६ ॐ छलापघ्ने स्वाहा
२५७ ॐ जानकीशाय स्वाहा
२५८ ॐ जितामित्राय स्वाहा
२५९ ॐ जानकीहृदयप्रियाय स्वाहा
२६० ॐ जानकीपालकाय स्वाहा
२६१ ॐ जेत्रे स्वाहा
२६२ ॐ जितशत्रवे स्वाहा
२६३ ॐ जितासुराय स्वाहा
२६४ ॐ जानक्युद्धारकाय स्वाहा
२६५ ॐ जिष्णवे स्वाहा
२६६ ॐ जितसिन्धवे स्वाहा
२६७ ॐ जयप्रदाय स्वाहा

२६८ ॐ जानकीजीवनानन्दाय स्वाहा
२६९ ॐ जानकीप्राणवल्लभाय स्वाहा
२७० ॐ जानकीप्राणभर्त्रे स्वाहा
२७१ ॐ जानकीदृष्टिमोहनाय स्वाहा
२७२ ॐ जानकीचित्तहर्त्रे स्वाहा
२७३ ॐ जानकीदुःखभञ्जनाय स्वाहा
२७४ ॐ जयदाय स्वाहा
२७५ ॐ जयकर्त्रे स्वाहा
२७६ ॐ जगदीशाय स्वाहा
२७७ ॐ जनार्दनाय स्वाहा
२७८ ॐ जनप्रियाय स्वाहा
२७९ ॐ जनानन्दाय स्वाहा
२८० ॐ जनपालाय स्वाहा
२८१ ॐ जनोत्सुकाय स्वाहा
२८२ ॐ जितेन्द्रियाय स्वाहा
२८३ ॐ जितक्रोधाय स्वाहा
२८४ ॐ जीवेशाय स्वाहा
२८५ ॐ जीवनप्रियाय स्वाहा
२८६ ॐ जटायुर्मोक्षदाय स्वाहा
२८७ ॐ जीवत्रात्रे स्वाहा
२८८ ॐ जीवनदायकाय स्वाहा
२८९ ॐ जयन्तारये स्वाहा
२९० ॐ जानकीशाय स्वाहा
२९१ ॐ जनकोत्सवदायकाय स्वाहा
२९२ ॐ जगत्त्रात्रे स्वाहा
२९३ ॐ जगत्पात्रे स्वाहा
२९४ ॐ जगत्कर्त्रे स्वाहा
२९५ ॐ जगत्पतये स्वाहा
२९६ ॐ जाड्यघ्ने स्वाहा
२९७ ॐ जाड्यहर्त्रे स्वाहा
२९८ ॐ जाड्येन्धनहुताशनाय स्वाहा
२९९ ॐ जगन्मूर्त्तये स्वाहा
३०० ॐ जगत्कर्त्रे स्वाहा
३०१ ॐ जगतांपापनाशनाय स्वाहा
३०२ ॐ जगच्चिन्त्याय स्वाहा
३०३ ॐ जगद्वन्द्याय स्वाहा
३०४ ॐ जगज्जेत्रे स्वाहा
३०५ ॐ जगत्प्रभवे स्वाहा
३०६ ॐ जनकारिविहर्त्रे स्वाहा
३०७ ॐ जगज्जाड्यविनाशकाय स्वाहा
३०८ ॐ जटिने स्वाहा
३०९ ॐ जटिलरूपाय स्वाहा

३१० ॐ जटाधारिणे स्वाहा
३११ ॐ जटावहाय स्वाहा
३१२ ॐ झर्झरप्रियवाद्याय स्वाहा
३१३ ॐ झञ्झावातनिवारकाय स्वाहा
३१४ ॐ झञ्झारवस्वनाय स्वाहा
३१५ ॐ झान्ताय स्वाहा
३१६ ॐ झार्णाय स्वाहा
३१७ ॐ झार्णवभूषिताय स्वाहा
३१८ ॐ टङ्कारये स्वाहा
३१९ ॐ टङ्कदात्रे स्वाहा
३२० ॐ टीकादृष्टिस्वरूपधृताय स्वाहा
३२१ ॐ ठकारवर्णनियमाय स्वाहा
३२२ ॐ डमरुध्वनिकारकाय स्वाहा
३२३ ॐ ढक्कावाद्यप्रियाय स्वाहा
३२४ ॐ ढार्णाय स्वाहा
३२५ ॐ ढक्कवाद्यमहोत्सुकाय स्वाहा
३२६ ॐ तीर्थसेविन स्वाहा
३२७ ॐ तीर्थवासिने स्वाहा
३२८ ॐ तरवे स्वाहा
३२९ ॐ तीर्थतीरनिवासकाय स्वाहा
३३० ॐ तालभेत्रे स्वाहा
३३१ ॐ तालघातिने स्वाहा
३३२ ॐ तपोनिष्ठाय स्वाहा
३३३ ॐ तपःप्रभवे स्वाहा
३३४ ॐ तापसाश्रमसेविने स्वाहा
३३५ ॐ तपोधनसमाश्रयाय स्वाहा
३३६ ॐ तपोवनस्थिताय स्वाहा
३३७ ॐ तपसे स्वाहा
३३८ ॐ तापसपूजिताय स्वाहा
३३९ ॐ तन्त्रीभार्याय स्वाहा
३४० ॐ तनूकर्त्रे स्वाहा
३४१ ॐ त्रैलोक्यवश-कारकाय स्वाहा
३४२ ॐ त्रिलोकीशाय स्वाहा
३४३ ॐ त्रिगुणकाय स्वाहा
३४४ ॐ त्रिगुण्याय स्वाहा
३४५ ॐ त्रिदिवेश्वराय स्वाहा
३४६ ॐ त्रिदिवेशाय स्वाहा
३४७ ॐ त्रिसर्गेशाय स्वाहा
३४८ ॐ त्रिमूर्त्तये स्वाहा
३४९ ॐ त्रिगुणात्मकाय स्वाहा
३५० ॐ तन्त्ररूपाय स्वाहा
३५१ ॐ तन्त्रविज्ञाय स्वाहा
३५२ ॐ तन्त्रविज्ञानदायकाय स्वाहा

३५३ ॐ तारेशवदनोद्योतिने स्वाहा
३५४ ॐ तारेशमुखमण्डलाय स्वाहा
३५५ ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा
३५६ ॐ त्रिपादूर्ध्वाय स्वाहा
३५७ ॐ त्रिस्वराय स्वाहा
३५८ ॐ त्रिप्रवाहकाय स्वाहा
३५९ ॐ त्रिपुरारिकृतभक्तये स्वाहा
३६० ॐ त्रिपुरारिप्रपूजिताय स्वाहा
३६१ ॐ त्रिपुरेशाय स्वाहा
३६२ ॐ त्रिसर्गाय स्वाहा
३६३ ॐ त्रिविधाय स्वाहा
३६४ ॐ त्रितनवे स्वाहा
३६५ ॐ तूणिने स्वाहा
३६६ ॐ तूणीरयुक्ताय स्वाहा
३६७ ॐ तूणबाणधराय स्वाहा
३६८ ॐ ताटकावधकर्त्रे स्वाहा
३६९ ॐ ताटकाप्राणघातकाय स्वाहा
३७० ॐ ताटकाभयकर्त्रे स्वाहा
३७१ ॐ ताटकादर्पनाशकाय स्वाहा
३७२ ॐ थकारवर्णनियमाय स्वाहा
३७३ ॐ थकारप्रियदर्शनाय स्वाहा
३७४ ॐ दीनबन्धवे स्वाहा
३७५ ॐ दयासिन्धवे स्वाहा
३७६ ॐ दारिद्र्यापद्विनाशकाय स्वाहा
३७७ ॐ दयामयाय स्वाहा
३७८ ॐ दयामूर्त्तये स्वाहा
३७९ ॐ दयासागराय स्वाहा
३८० ॐ दिव्यमूर्त्तये स्वाहा
३८१ ॐ दीर्घबाहवे स्वाहा
३८२ ॐ दीर्घनेत्राय स्वाहा
३८३ ॐ दुरासदाय स्वाहा
३८४ ॐ दुराधर्षाय स्वाहा
३८५ ॐ दुराराध्याय स्वाहा
३८६ ॐ दुर्मदाय स्वाहा
३८७ ॐ दुर्गनाशनाय स्वाहा
३८८ ॐ दैत्यारये स्वाहा
३८९ ॐ दनुजेन्द्रारये स्वाहा
३९० ॐ दानवेन्द्रविनाशनाय स्वाहा
३९१ ॐ दूर्वादलश्याममूर्त्तये स्वाहा
३९२ ॐ दूर्वादलघनच्छवये स्वाहा
३९३ ॐ दूरदर्शिने स्वाहा
३९४ ॐ दीर्घदर्शिने स्वाहा

३९५ ॐ दुष्टारिबलहारकाय स्वाहा
३९६ ॐ दशग्रीववधाकांक्षिणे स्वाहा
३९७ ॐ दशकन्धरनाशकाय स्वाहा
३९८ ॐ दूर्वादलश्यामकान्ताय स्वाहा
३९९ ॐ दूर्वादलसमप्रभाय स्वाहा
४०० ॐ दात्रे स्वाहा
४०१ ॐ दानपराय स्वाहा
४०२ ॐ दिव्याय स्वाहा
४०३ ॐ दिव्यसिंहासनस्थिताय स्वाहा
४०४ ॐ दिव्यदोलासमासीनाय स्वाहा
४०५ ॐ दिव्यचामरमण्डिताय स्वाहा
४०६ ॐ दिव्यच्छत्रसमायुक्ताय स्वाहा
४०७ ॐ दिव्यालङ्कारमण्डिताय स्वाहा
४०८ ॐ दिव्याङ्गनाप्रमोदाय स्वाहा
४०९ ॐ दिलीपान्वयसम्भवाय स्वाहा
४१० ॐ दूषणारये स्वाहा
४११ ॐ दिव्यरूपिणे स्वाहा
४१२ ॐ देवाय स्वाहा
४१३ ॐ दशरथात्मजाय स्वाहा
४१४ ॐ दिव्यदाय स्वाहा
४१५ ॐ दधिभुजे स्वाहा
४१६ ॐ दात्रे स्वाहा
४१७ ॐ दुःखसागरभञ्जनाय स्वाहा
४१८ ॐ दण्डिने स्वाहा
४१९ ॐ दण्डधराय स्वाहा
४२० ॐ दान्ताय स्वाहा
४२१ ॐ दन्तुराय स्वाहा
४२२ ॐ दनुजापहाय स्वाहा
४२३ ॐ धैर्याय स्वाहा
४२४ ॐ धीराय स्वाहा
४२५ ॐ धरानाथाय स्वाहा
४२६ ॐ धनेशाय स्वाहा
४२७ ॐ धरणिपतये स्वाहा
४२८ ॐ धन्विने स्वाहा
४२९ ॐ धनुष्मते स्वाहा
४३० ॐ धेनुष्काय स्वाहा
४३१ ॐ धनुर्भङ्क्त्रे स्वाहा
४३२ ॐ धनाधिपाय स्वाहा
४३३ ॐ धार्मिकाय स्वाहा

४३४ ॐ धर्मशीलाय स्वाहा
४३५ ॐ धर्मिष्ठाय स्वाहा
४३६ ॐ धर्मपालकाय स्वाहा
४३७ ॐ धर्मपात्रे स्वाहा
४३८ ॐ धर्मयुक्ताय स्वाहा
४३९ ॐ धर्मनिन्दकवर्जकाय स्वाहा
४४० ॐ धर्मात्मने स्वाहा
४४१ ॐ धरणीत्यागिने स्वाहा
४४२ ॐ धर्मयूपाय स्वाहा
४४३ ॐ धनार्थदाय स्वाहा
४४४ ॐ धर्मारण्यकृतवासाय स्वाहा
४४५ ॐ धर्मारण्यनिषेवकाय स्वाहा
४४६ ॐ धरोद्धर्त्रे स्वाहा
४४७ ॐ धरावासिने स्वाहा
४४८ ॐ धैर्यवते स्वाहा
४४९ ॐ धरणीधराय स्वाहा
४५० ॐ नारायणाय स्वाहा
४५१ ॐ नराय स्वाहा
४५२ ॐ नेत्रे स्वाहा
४५३ नन्दिकेश्वरपूजिताय स्वाहा
४५४ ॐ नायकाय स्वाहा
४५५ ॐ नृपतये स्वाहा
४५६ ॐ नेत्रे स्वाहा
४५७ ॐ नेयाय स्वाहा
४५८ ॐ नटाय स्वाहा
४५९ ॐ नरपतये स्वाहा
४६० ॐ नरेशाय स्वाहा
४६१ ॐ नगरत्यागिने स्वाहा
४६२ ॐ नन्दिग्रामकृताश्रयाय स्वाहा
४६३ ॐ नवीनेन्दुकलाकान्तये स्वाहा
४६४ ॐ नौपतये स्वाहा
४६५ ॐ नृपतेः पतये स्वाहा
४६६ ॐ नौलेशाय स्वाहा
४६७ ॐ नीलसन्तापिने स्वाहा
४६८ ॐ नीलदेहाय स्वाहा
४६९ ॐ नलेश्वराय स्वाहा
४७० ॐ नीलाङ्गाय स्वाहा
४७१ ॐ नीलमेघाभाय स्वाहा
४७२ ॐ नीलाञ्जनसमद्युतये स्वाहा
४७३ ॐ नीलोत्पलदलप्रख्याय स्वाहा
४७४ ॐ नीलोत्पलदलेक्षणाय स्वाहा
४७५ ॐ नवीनकेतकीकुन्दाय स्वाहा

४७६ ॐ मालावृन्दविराजिताय स्वाहा
४७७ ॐ नारीशाय स्वाहा
४७८ ॐ नागरीप्रणाय स्वाहा
४७९ ॐ नीलबाहवे स्वाहा
४८० ॐ नदिने स्वाहा
४८१ ॐ नदाय स्वाहा
४८२ ॐ निद्रात्यागिने स्वाहा
४८३ ॐ निद्रिताय स्वाहा
४८४ ॐ निद्रालवे स्वाहा
४८५ ॐ नदबन्धकाय स्वाहा
४८६ ॐ नादाय स्वाहा
४८७ ॐ नादस्वरूपाय स्वाहा
४८८ ॐ नादात्मने स्वाहा
४८९ ॐ नादमण्डिताय स्वाहा
४९० ॐ पूर्णानन्दाय स्वाहा
४९१ ॐ परब्रह्मणे स्वाहा
४९२ ॐ परन्तेजसे स्वाहा
४९३ ॐ परात्पराय स्वाहा
४९४ ॐ परंधाम्ने स्वाहा
४९५ ॐ परंमूर्त्तये स्वाहा
४९६ ॐ परहंसाय स्वाहा
४९७ ॐ परावराय स्वाहा
४९८ ॐ पूर्णाय स्वाहा
४९९ ॐ पूर्णोदराय स्वाहा
५०० ॐ पूर्वाय स्वाहा
५०१ ॐ पूर्णारिविनिषूदनाय स्वाहा
५०२ ॐ प्रकाशाय स्वाहा
५०३ ॐ प्रकटाय स्वाहा
५०४ ॐ प्राप्याय स्वाहा
५०५ ॐ पद्मनेत्राय स्वाहा
५०६ ॐ परात्पराय स्वाहा
५०७ ॐ पूर्णब्रह्मणे स्वाहा
५०८ ॐ पूर्णमूर्त्तये स्वाहा
५०९ ॐ पूर्णतेजसे स्वाहा
५१० ॐ परंवपुषे स्वाहा
५११ ॐ पद्मबाहवे स्वाहा
५१२ ॐ पद्मवक्त्राय स्वाहा
५१३ ॐ पश्चाननप्रपूजिताय स्वाहा
५१४ ॐ प्रपञ्चाय स्वाहा
५१५ ॐ पञ्चपूताय स्वाहा
५१६ ॐ पञ्चाम्नाय स्वाहा
५१७ ॐ परप्रभवे स्वाहा
५१८ ॐ पराय स्वाहा
५१९ ॐ पद्मेशाय स्वाहा
५२० ॐ पद्मकोशाय स्वाहा
५२१ ॐ पद्माक्षाय स्वाहा
५२२ ओं पद्मलोचनाय स्वाहा
५२३ ओं पद्मापतये स्वाहा

५२४ ओं पुराणाय स्वाहा
५२५ ओं पुराणपुरुषाय स्वाहा
५२६ ओं प्रभवे स्वाहा
५२७ ओं पयोधिशयनाय स्वाहा
५२८ ओं पालाय स्वाहा
५२९ ओं पालकाय स्वाहा
५३० ओं पृथिवीपतये स्वाहा
५३१ ओं पवनात्मजवन्द्याय स्वाहा
५३२ ओं पवनात्मजसेविताय स्वाहा
५३३ ओं पञ्चप्राणाय स्वाहा
५३४ ओं पञ्चवायवे स्वाहा
५३५ ओं पञ्चाङ्गाय स्वाहा
५३६ ओं पञ्चसायकाय स्वाहा
५३७ ओं पञ्चबाणाय स्वाहा
५३८ ओं पूरकाय स्वाहा
५३९ ओं प्रपञ्चनाशकाय स्वाहा
५४० ओं प्रियाय स्वाहा
५४१ ओं पातालाय स्वाहा
५४२ ओं प्रमथाय स्वाहा
५४३ ओं प्रौढाय स्वाहा
५४४ ओं पाशिने स्वाहा
५४५ ओं प्रार्थ्याय स्वाहा
५४६ ओं प्रियम्वदाय स्वाहा
५४७ ओं प्रियकराय स्वाहा
५४८ ओं पण्डितात्मने स्वाहा
५४९ ओं पापघ्ने स्वाहा
५५० ओं पापनाशनाय स्वाहा
५५१ ओं पाण्डयेशाय स्वाहा
५५२ ओं पूर्णशीलाय स्वाहा
५५३ ओं पद्मिने स्वाहा
५५४ ओं पद्मसमर्चिताय स्वाहा
५५५ ओं फणीशाय स्वाहा
५५६ ओं फणिशायिने स्वाहा
५५७ ओं फणिपूज्याय स्वाहा
५५८ ओं फणान्विताय स्वाहा
५५९ ओं फलमूलप्रभोक्त्रे स्वाहा
५६० ओं फलदात्रे स्वाहा
५६१ ओं फलेश्वराय स्वाहा
५६२ ओं फणिरूपाय स्वाहा
५६३ ओं फणिभर्त्रे स्वाहा
५६४ ओं फणिभुग्वाहनाय स्वाहा
५६५ ओं फल्गुतीर्थसदास्नायिने स्वाहा
५६६ ओं फल्गुतीर्थप्रकाशकाय स्वाहा
५६७ ओं फलाशिने स्वाहा
५६८ ओं फलदाय स्वाहा
५६९ ओं फुल्लाय स्वाहा

५७० ओं फलकाय स्वाहा
५७१ ओं फलभक्षकाय स्वाहा
५७२ ओं बुधाय स्वाहा
५७३ ओं बौधप्रियाय स्वाहा
५७४ ओं बुद्धाय स्वाहा
५७५ ओं बुद्धाचारनिवारकाय स्वाहा
५७६ ओं बहुदाय स्वाहा
५७७ ओं बलदाय स्वाहा
५७८ ओं ब्रह्मणे स्वाहा
५७९ ओं ब्रह्मण्याय स्वाहा
५८० ओं ब्रह्मदायकाय स्वाहा
५८१ ओं भरतेशाय स्वाहा
५८२ ओं भारतीशाय स्वाहा
५८३ ओं भरद्वाजप्रपूजिताय स्वाहा
५८४ ओं भर्त्रे स्वाहा
५८५ ओं भगवते स्वाहा
५८६ ओं भोक्त्रे स्वाहा
५८७ ओं भीतिघ्नाय स्वाहा
५८८ ओं भयनाशनाय स्वाहा
५८९ ओं भवाय स्वाहा
५९० ओं भीतिहराय स्वाहा
५९१ ओं भव्याय स्वाहा
५९२ ओं भूपतये स्वाहा
५९३ ओं भूपवन्दिताय स्वाहा
५९४ ओं भूपालाय स्वाहा
५९५ ओं भवनाय स्वाहा
५९६ ओं भोगिने स्वाहा
५९७ ओं भावनाय स्वाहा
५९८ ओं भुवनप्रियाय स्वाहा
५९९ ओं भारावताराय स्वाहा
६०० ओं भारहर्त्रे स्वाहा
६०१ ओं भारभृते स्वाहा
६०२ ओं भरताग्रजाय स्वाहा
६०३ ओं भूभुजे स्वाहा
६०४ ओं भुवनभर्त्रे स्वाहा
६०५ ओं भूनाथाय स्वाहा
६०६ ओं भूतिसुन्दराय स्वाहा
६०७ ओं मेद्याय स्वाहा
६०८ ओं भेदकराय स्वाहा
६०९ ओं भेत्रे स्वाहा
६१० ओं भूतासुरविनाशनाय स्वाहा
६११ ओं भूमिदाय स्वाहा
६१२ ओं भूमिहर्त्रे स्वाहा
६१३ ओं भूमिदात्रे स्वाहा
६१४ ओं भूमिपाय स्वाहा
६१५ ओं भूतेशाय स्वाहा
६१६ ओं भूतनाशाय स्वाहा

६१७ ॐ भूतेशपरिपूजिताय स्वाहा
६१८ ॐ भूधराय स्वाहा
६१९ ॐ भूधराधीशाय स्वाहा
६२० ॐ भूधरात्मने स्वाहा
६२१ ॐ भयापहाय स्वाहा
६२२ ॐ भयदाय स्वाहा
६२३ ॐ भयदात्रे स्वाहा
६२४ ॐ भयहर्त्रे स्वाहा
६२५ ॐ भयावहाय स्वाहा
६२६ ॐ भक्षाय स्वाहा
६२७ ॐ भक्ष्याय स्वाहा
६२८ ॐ भवानन्दाय स्वाहा
६२९ ॐ भवमूर्तये स्वाहा
६३० ॐ भवोद्याय स्वाहा
६३१ ॐ भवाब्धये स्वाहा
६३२ ॐ भारतीनाथाय स्वाहा
६३३ ॐ भरताय स्वाहा
६३४ ॐ भूमये स्वाहा
६३५ ॐ भूधराय स्वाहा
६३६ ॐ मारीचारये स्वाहा
६३७ ॐ मरुतत्रात्रे स्वाहा
६३८ ॐ माधवाय स्वाहा
६३९ ॐ मधुसूदनाय स्वाहा
६४० ॐ मन्दोदरीस्तूयमानाय स्वाहा
६४१ ॐ मधुगद्गदभाषणाय स्वाहा
६४२ ॐ मन्दाय स्वाहा
६४३ ॐ मन्दारवे स्वाहा
६४४ ॐ मन्त्रे स्वाहा
६४५ ॐ मङ्गलाय स्वाहा
६४६ ॐ मतिदायकाय स्वाहा
६४७ ॐ मायिने स्वाहा
६४८ ॐ मारीचहन्त्रे स्वाहा
६४९ ॐ मदनाय स्वाहा
६५० ॐ मातृपालकाय स्वाहा
६५१ ॐ महामायाय स्वाहा
६५२ ॐ महाकायाय स्वाहा
६५३ ॐ महातेजसे स्वाहा
६५४ ॐ महाबलाय स्वाहा
६५५ ॐ महाबुद्धये स्वाहा
६५६ ॐ महाशक्तये स्वाहा
६५७ ॐ महादर्पाय स्वाहा
६५८ ॐ मयशसे स्वाहा
६५९ ॐ महात्मने स्वाहा
६६० ॐ माननीयाय स्वाहा
६६१ ॐ मूर्त्ताय स्वाहा
६६२ ॐ मरकतच्छवये स्वाहा
६६३ ॐ मुरारये स्वाहा
६६४ ॐ मकराक्षारये स्वाहा

६६५ ॐ मत्तमातङ्गविक्रमाय स्वाहा
६६६ ॐ मधुकैटभहन्त्रे स्वाहा
६६७ ॐ मातङ्गवनसेविताय स्वाहा
६६८ ॐ मदनारिप्रभवे स्वाहा
६६९ ॐ मत्ताय स्वाहा
६७० ॐ मार्तण्डवशभूषणाय स्वाहा
६७१ ॐ मदाय स्वाहा
६७२ ॐ मदविनाशिने स्वाहा
६७३ ॐ मर्दनाय स्वाहा
६७४ ॐ मुनिपूजकाय स्वाहा
६७५ ॐ मुक्तिदाय स्वाहा
६७६ ॐ मरकताभाय स्वाहा
६७७ ॐ महिम्ने स्वाहा
६७८ ॐ मननाश्रयाय स्वाहा
६७९ ॐ मर्मज्ञाय स्वाहा
६८० ॐ मर्मघातिने स्वाहा
६८१ ॐ मन्दारकुसुमप्रियाय स्वाहा
६८२ ॐ मन्दरस्थाय स्वाहा
६८३ ॐ मुहूर्तात्मने स्वाहा
६८४ ॐ मङ्गलाय स्वाहा
६८५ ॐ मङ्गलालकाय स्वाहा
६८६ ॐ मिहिराय स्वाहा
६८७ ॐ मण्डलेशाय स्वाहा
६८८ ॐ मन्यवे स्वाहा
६८९ ॐ मान्याय स्वाहा
६९० ॐ महोदधये स्वाहा
६९१ ॐ मारुताय स्वाहा
६९२ ॐ मारुतेयाय स्वाहा
६९३ ॐ मारुतोत्थाय स्वाहा
६९४ ॐ मरुते स्वाहा
६९५ ॐ यशस्याय स्वाहा
६९६ ॐ यशोराशये स्वाहा
६९७ ॐ यादवाय स्वाहा
६९८ ॐ यदुनन्दनाय स्वाहा
६९९ ॐ यशोदाहृदयानन्दाय स्वाहा
७०० ॐ यशोदात्रे स्वाहा
७०१ ॐ यशोहराय स्वाहा
७०२ ॐ युद्धतेजसे स्वाहा
७०३ ॐ युद्धकर्त्रे स्वाहा
७०४ ॐ योधाय स्वाहा
७०५ ॐ युद्धस्वरूपकाय स्वाहा
७०६ ॐ योगाय स्वाहा
७०७ ॐ योगीश्वराय स्वाहा
७०८ ॐ योगिने स्वाहा
७०९ ॐ योगेन्द्राय स्वाहा

७१० ॐ योगपावनाय स्वाहा
७११ ॐ योगात्मने स्वाहा
७१२ ॐ योगकर्त्रे स्वाहा
७१३ ॐ योगभृते स्वाहा
७१४ ॐ योगदायकाय स्वाहा
७१५ ॐ योधाय स्वाहा
७१६ ॐ योधगणासङ्गिने स्वाहा
७१७ ॐ योगकृते स्वाहा
७१८ ॐ योगभूषणाय स्वाहा
७१९ ॐ यूने स्वाहा
७२० ॐ युवतीभर्त्रे स्वाहा
७२१ ॐ युवभ्रात्रे स्वाहा
७२२ ॐ युवजकाय स्वाहा
७२३ ॐ रामभद्राय स्वाहा
७२४ ॐ रामचन्द्राय स्वाहा
७२५ ॐ राघवाय स्वाहा
७२६ ॐ रघुनन्दनाय स्वाहा
७२७ ॐ रामाय स्वाहा
७२८ ॐ रावणहन्त्रे स्वाहा
७२९ ॐ रावणारये स्वाहा
७३० ॐ रमापतये स्वाहा
७३१ ॐ रजनीचरहन्त्रे स्वाहा
७३२ ॐ राक्षसीप्राणहारकाय स्वाहा
७३३ ॐ रक्ताक्षाय स्वाहा
७३४ ॐ रक्तपद्माक्षाय स्वाहा
७३५ ॐ रमणाय स्वाहा
७३६ ॐ राक्षसान्तकाय स्वाहा
७३७ ॐ राघवेन्द्राय स्वाहा
७३८ ॐ रमाभर्त्रे स्वाहा
७३९ ॐ रमेशाय स्वाहा
७४० ॐ रक्तलोचनाय स्वाहा
७४१ ॐ रणरामाय स्वाहा
७४२ ॐ रणासक्ताय स्वाहा
७४३ ॐ रणाय स्वाहा
७४४ ॐ रक्ताय स्वाहा
७४५ ॐ रणात्मकाय स्वाहा
७४६ ॐ रङ्गस्थाय स्वाहा
७४७ ॐ रङ्गभूमिस्थाय स्वाहा
७४८ ॐ रङ्गशायिने स्वाहा
७४९ ॐ रणार्गलाय स्वाहा
७५० ॐ रेवास्नामिने स्वाहा
७५१ ॐ रमानाथाय स्वाहा
७५२ ॐ रणदर्पविनाशनाय स्वाहा
७५३ ॐ राजागजेश्वराय स्वाहा
७५४ ॐ राज्ञे स्वाहा
७५५ ॐ राजमण्डलमण्डिताय स्वाहा
५६ ॐ राज्यदाय स्वाहा

७५७ ॐ राज्यहर्त्रे स्वाहा
७५८ ॐ रमणीप्राणवल्लभाय स्वाहा
७५९ ॐ राज्यत्यागिने स्वाहा
७६० ॐ राज्यभोगिने स्वाहा
७६१ ॐ रसिकाय स्वाहा
७६२ ॐ रघूद्वहाय स्वाहा
७६३ ॐ राजेन्द्राय स्वाहा
७६४ ॐ रघुनाथाय स्वाहा
७६५ ॐ रक्षोघ्ने स्वाहा
७६६ ॐ रावणान्तकाय स्वाहा
७६७ ॐ लक्ष्मीकान्ताय स्वाहा
७६८ ॐ लक्ष्मीनाथाय स्वाहा
७६९ ॐ लक्ष्मीशाय स्वाहा
७७० ॐ लक्ष्मणाग्रजाय स्वाहा
७७१ ॐ लक्ष्मणत्राणकर्त्रे स्वाहा
७७२ ॐ लक्ष्मणप्रीतिपालकाय स्वाहा
७७३ ॐ लीलावताराय स्वाहा
७७४ ॐ लङ्कारये स्वाहा
७७५ ॐ लङ्केशाय स्वाहा
७७६ ॐ लक्ष्मणेश्वराय स्वाहा
७७७ ॐ लक्ष्मणप्राणकाय स्वाहा
७७८ ॐ लक्ष्मणप्रतिपालकाय स्वाहा
७७९ ॐ लङ्केशघातकाय स्वाहा
७८० ॐ लङ्केशप्राणहारकाय स्वाहा
७८१ ॐ लङ्कानाथवीर्यहर्त्रे स्वाहा
७८२ ॐ लाक्षारसविलोचनाय स्वाहा
७८३ ॐ लवंगकुसुमासक्ताय स्वाहा
७८४ ॐ लवंगकुसुमप्रियाय स्वाहा
७८५ ॐ लञ्नापालनाय स्वाहा
७८६ ॐ लक्षाय स्वाहा
७८७ ॐ लिङ्गरूपिणे स्वाहा
७८८ ॐ लसत्तनवे स्वाहा
७८९ ॐ लावण्यरामाय स्वाहा
७९० ॐ लावण्याय स्वाहा
७९१ ॐ लक्ष्मीनारायणात्मकाय स्वाहा
७९२ ॐ लवणाम्बुधिबन्धाय स्वाहा
७९३ ॐ लवणाम्बुधिसेतुकृते स्वाहा
७९४ ॐ लीलामयाय स्वाहा
७९५ ॐ लवणजिते स्वाहा

७९६ ॐ लीलाय स्वाहा
७९७ ॐ लवणाजित्प्रियाय स्वाहा
७९८ ॐ वसुधापालकाय स्वाहा
७९९ ॐ विष्णवे स्वाहा
८०० ॐ विदुषे स्वाहा
८०१ ॐ विद्वज्जनप्रियाय स्वाहा
८०२ ॐ वसुधेशाय स्वाहा
८०३ ॐ वासुकीशाय स्वाहा
८०४ ॐ वरिष्ठाय स्वाहा
८०५ ॐ वरवाहनाय स्वाहा
८०६ ॐ वेदाय स्वाहा
८०७ ॐ विशिष्टाय स्वाहा
८०८ ॐ वक्त्रे स्वाहा
८०९ ॐ वदान्याय स्वाहा
८१० ॐ वरदाय स्वाहा
८११ ॐ विभवे स्वाहा
८१२ ॐ विधये स्वाहा
८१३ ॐ विधात्रे स्वाहा
८१४ ॐ वासिष्ठाय स्वाहा
८१५ ॐ वसिष्ठाय स्वाहा
८१६ ॐ वसुपालकाय स्वाहा
८१७ ॐ वसवे स्वाहा
८१८ ॐ वसुमतीभर्त्रे स्वाहा
८१९ ॐ वसुमते स्वाहा
८२० ॐ वसुदायकाय स्वाहा
८२१ ॐ वाग्धारिणे स्वाहा
८२२ ॐ वनस्थाय स्वाहा
८२३ ॐ वनवासिने स्वाहा
८२४ ॐ वनाश्रयाय स्वाहा
८२५ ॐ विश्वभर्त्रे स्वाहा
८२६ ॐ विश्वपात्रे स्वाहा
८२७ ॐ विश्वनाशाय स्वाहा
८२८ ॐ विभावशवे स्वाहा
८२९ ॐ विभवे स्वाहा
८३० ॐ विभज्यमानाय स्वाहा
८३१ ॐ विभक्ताय स्वाहा
८३२ ॐ वधबन्धनाय स्वाहा
८३३ ॐ विविक्ताय स्वाहा
८३४ ॐ वरदाय स्वाहा
८३५ ॐ वन्द्याय स्वाहा
८३६ ॐ विरक्ताय स्वाहा
८३७ ॐ वीरदर्पघ्ने स्वाहा
८३८ ॐ वीराय स्वाहा
८३९ ॐ वीरगुरवे स्वाहा
८४० ॐ वीरदर्पध्वंसिने स्वाहा
८४१ ॐ विशाम्पतये स्वाहा
८४२ ॐ वानरारये स्वाहा
८४३ ॐ वानरात्मने स्वाहा
८४४ ॐ वीराय स्वाहा

८४५ ॐ वानरपालकाय स्वाहा
८४६ ॐ वाहनाय स्वाहा
८४७ ॐ वाहनस्थाय स्वाहा
८४८ ॐ वनाशिने स्वाहा
८४९ ॐ विश्वकारकाय स्वाहा
८५० ॐ वरेण्याय स्वाहा
८५१ ॐ वरदात्रे स्वाहा
८५२ ॐ वरदाय स्वाहा
८५३ ॐ वरवश्चकाय स्वाहा
८५४ ॐ वसुदाय स्वाहा
८५५ ॐ वासुदेवाय स्वाहा
८५६ ॐ वसवे स्वाहा
८५७ ॐ वन्दनाय स्वाहा
८५८ ॐ विद्याधराय स्वाहा
८५९ ॐ विद्याविन्ध्याय स्वाहा
८६० ॐ विन्ध्याचलाशनाय स्वाहा
८६१ ॐ विद्याप्रियाय स्वाहा
८६२ ॐ विशिष्टात्मने स्वाहा
८६३ ॐ वाद्यमण्डप्रियाय स्वाहा
८६४ ॐ वन्द्याय स्वाहा
८६५ ॐ वसुदेवाय स्वाहा
८६६ ॐ वसुप्रियाय स्वाहा
८६७ ॐ वसुप्रदाय स्वाहा
८६८ ॐ श्रीदाय स्वाहा
८६९ ॐ श्रीशाय स्वाहा
८७० ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा
८७१ ॐ श्रीपतये स्वाहा
८७३ ॐ शरणाश्रयाय स्वाहा
८७२ ॐ श्रीधराय स्वाहा
८७४ ॐ श्रीकराय स्वाहा
८७५ ॐ श्रीलाय स्वाहा
८७६ ॐ शरण्याय स्वाहा
८७७ ॐ शरणात्मकाय स्वाहा
८७८ ॐ शिवाचिंताय स्वाहा
८७९ ॐ शिवप्राणाय स्वाहा
८८० ॐ शिवदाय स्वाहा
८८१ ॐ शिवपूजकाय स्वाहा
८८२ ॐ शिवकर्त्रे स्वाहा
८८३ ॐ शिवहर्त्रे स्वाहा
८८४ ॐ शिवात्मने स्वाहा
८८५ ॐ शिववाञ्छकाय स्वाहा
८८६ ॐ शायकिने स्वाहा
८८७ ॐ शङ्करात्मने स्वाहा
८८८ ॐ शङ्करार्चनतत्पराय स्वाहा
८८९ ॐ शङ्करेशाय स्वाहा
८९० ॐ शिशवे स्वाहा
८९१ ॐ शौरये स्वाहा
८९२ ॐ शाब्दिकाय स्वाहा

८९३ ॐ शब्दरूपकाय स्वाहा
८९४ ॐ शब्दभेदिने स्वाहा
८९५ ॐ शब्दहर्त्रे स्वाहा
८९६ ॐ शायकाय स्वाहा
८९७ ॐ शरणार्तिघ्ने स्वाहा
८९८ ॐ शर्वाय स्वाहा
८९९ ॐ शर्वप्रभवे स्वाहा
९०० ॐ शूलिने स्वाहा
९०१ ॐ शूलपाणिप्रपूजिताय स्वाहा
९०२ ॐ शार्ङ्गिणे स्वाहा
९०३ ॐ शङ्करात्मने स्वाहा
९०४ ॐ शिवाय स्वाहा
९०५ ॐ शकटभञ्जनाय स्वाहा
९०६ ॐ शान्ताय स्वाहा
९०७ ॐ शान्तये स्वाहा
९०८ ॐ शान्तिदात्रे स्वाहा
९०९ ॐ शान्तिकृते स्वाहा
९१० ॐ शान्तिकारकाय स्वाहा
९११ ॐ शान्तिकाय स्वाहा
११२ ॐ शङ्खधारिणे स्वाहा
९१३ ॐ शङ्खिने स्वाहा
९१४ ॐ शङ्खध्वनिप्रियाय स्वाहा
९१५ ॐषट्चक्रभेदनकराय स्वाहा
९१६ ॐ षट्गुणाय स्वाहा
९१७ ॐ षडूर्मिकाय स्वाहा
९१८ ॐ षडिन्द्रियाय स्वाहा
९१९ ॐ षडङ्गायने स्वाहा
९२० ॐ षोडशाय स्वाहा
९२१ ॐ षोडशात्मकाय स्वाहा
९२२ ॐ स्फुरत्कुण्डलहाराय-ऽऽढ्याय स्वाहा
९२३ ॐ स्फुरन्मरकतच्छवये स्वाह
९२४ ॐ सदानन्दाय स्वाहा
९२५ ॐ सतीभर्त्रे स्वाहा
९२६ ॐ सर्वेशाय स्वाहा
९२७ ॐ सज्जनप्रियाय स्वाहा
९२८ ॐ सर्वात्मने स्वाहा
९२९ ॐ सर्वकर्त्रे स्वाहा
९३० ॐ सर्वधात्रे स्वाहा
९३१ ॐ सनातनाय स्वाहा
९३२ ॐ सिद्धाय स्वाहा
९३३ ॐ साध्याय स्वाहा
९३४ ॐ साधकेन्द्राय स्वाहा
९३५ ॐ साधकाय स्वाहा
९३६ ॐ साधकप्रियाय स्वाहा
९३७ ॐ सिद्धेशाय स्वाहा
९३८ ॐ सिद्धिदाय स्वाहा
९३९ ॐ साधवे स्वाहा

९४० ॐ सत्कर्त्रे स्वाहा
९४१ ॐ सदीश्वराय स्वाहा
९४२ ॐ सद्गतये स्वाहा
९४२ ॐ सच्चिदानन्दाय स्वाहा
९४४ ॐ सद्ब्रह्मणे स्वाहा
९४५ ॐ सकलात्मकाय स्वाहा
९४६ ॐ सतीप्रियाय स्वाहा
९४७ ॐ सतीभार्याय स्वाहा
९४८ ॐ स्वाध्याय स्वाहा
९४९ ॐ सतीपतये स्वाहा
९५० ॐ सत्कवये स्वाहा
९५१ ॐ सकलत्रात्रे स्वाहा
९५२ ॐ सर्वपापप्रमोचकाय स्वाहा
९५३ ॐ सर्वशास्त्रमयाय स्वाहा
९५४ ॐ सर्वाम्नायनमस्कृताय स्वाहा
९५५ ॐ सर्वदेवमयाय स्वाहा
९५६ ॐ सर्वयज्ञस्वरूपकाय स्वाहा
९५७ ॐ सर्वाय स्वाहा
९५८ ॐ सङ्कटहर्त्रे स्वाहा
९५९ ॐ साहसिने स्वाहा
९६० ॐ सगुणात्मकाय स्वाहा
९६१ ॐ सुस्निग्धाय स्वाहा
९६२ ॐ सुखदात्रे स्वाहा
९६३ ॐ सत्त्वाय स्वाहा
९६४ ॐ सत्त्वगुणाश्रयाय स्वाहा
९६५ ॐ सत्याय स्वाहा
९६६ ॐ सत्यव्रताय स्वाहा
९६७ ॐ सत्यवते स्वाहा
९६८ ॐ सत्यपालकाय स्वाहा
९६९ ॐ सत्यात्मने स्वाहा
९७० ॐ सुभगाय स्वाहा
९७१ ॐ सौभाग्याय स्वाहा
९७२ ॐ सगरान्वराय स्वाहा
९७३ ॐ सीतापतये स्वाहा
९७४ ॐ ससीताय स्वाहा
९७५ ॐ सात्वताय स्वाहा
९७६ ॐ सात्वताम्पतये स्वाहा
९७७ ॐ हरये स्वाहा
९७८ ॐ हरिने स्वाहा
९७९ ॐ हलाय स्वाहा
९८० ॐ हरकोदण्डखण्डनाय स्वाहा
९८१ ॐ हुङ्कारध्वनिपूरणाय स्वाहा
९८२ ॐ हुङ्कारध्वनिसम्भवाय स्वाहा
९८३ ॐ हर्त्रे स्वाहा
९८४ ॐ हरये स्वाहा

९८५ ॐ हरात्मने स्वाहा
९८६ ॐ हारभूषणभूषिताय स्वाहा
९८७ ॐ हरकार्मुकभङ्क्त्रे स्वाहा
९८८ ॐ हरपूजापरायणाय स्वाहा
९८९ ॐ क्षोणीशाय स्वाहा
९९० ॐ क्षितिभुजे स्वाहा
९९१ ॐ क्षोणीनेत्रे स्वाहा
९९२ ॐ क्षमापराय स्वाहा
९९३ ॐ क्षमाशीलाय स्वाहा
९९४ ॐ क्षमायुताय स्वाहा
९९५ ॐ क्षोदिने स्वाहा
९९६ ॐ क्षोदविमोचनाय स्वाहा
९९७ ॐ क्षेमङ्कराय स्वाहा
९९८ ॐ क्षेमाय स्वाहा
९९९ ॐ क्षेमप्रदायकाय स्वाहा
१००० ॐ ज्ञानप्रदाय स्वाहा



गणेश नामसहस्र

अथ गणेशसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः

विनियोगः

अस्य श्रीमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महागणपतिर्देवता, गं बीजम्, हुं शक्तिः, स्वाहा कीलकम् श्रीमहागणपतिप्रीत्यर्थं महागणपतिसहस्रनामभिः हवने (सहस्रदूर्वाङ्कुरैः सहस्रमोदकैश्च) विनियोगः ।

न्यासः

ॐ गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः । ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा । ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः शिखायैः वषट् । ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः कवचाय हुम् । ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् ।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ १ ॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् ।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥ २ ॥
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् ।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ ३ ॥

१ ॐ गणेश्वराय स्वाहा
२ ॐ गणक्रीडाय स्वाहा
३ ॐ गणनाथाय स्वाहा
४ ॐ गणाधिपाय स्वाहा
५ ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा
६ ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा
७ ॐ गजवक्त्राय स्वाहा
८ ॐ महोदराय स्वाहा
९ ॐ लम्बोदराय स्वाहा
१० ॐ धूम्रवर्णाय स्वाहा
११ ॐ विकटाय स्वाहा
१२ ॐ विघ्ननायकाय स्वाहा
१३ ॐ सुमुखाय स्वाहा
१४ ॐ दुर्मुखाय स्वाहा
१५ ॐ बुद्धाय स्वाहा
१६ ॐ विघ्नराजाय स्वाहा
१७ ॐ गजाननाय स्वाहा
१८ ॐ भीमाय स्वाहा
१९ ॐ प्रमोदाय स्वाहा
२० ॐ आमोदाय स्वाहा
२१ ॐ सुरानन्दाय स्वाहा
२२ ॐ मदोत्कटाय स्वाहा
२३ ॐ हेरम्बाय स्वाहा
२४ ॐ शम्बराय स्वाहा
२५ ॐ शम्भवे स्वाहा
२६ ॐ लम्बकर्णाय स्वाहा
२७ ॐ महाबलाय स्वाहा
२८ ॐ नन्दनाय स्वाहा
२९ ॐ अलम्पटाय स्वाहा
३० ॐ अभीरवे स्वाहा
३१ ॐ मेघनादाय स्वाहा
३२ ॐ गणञ्जयाय स्वाहा
३३ ॐ विनायकाय स्वाहा
३४ ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा
३५ ॐ धीरशूराय स्वाहा
३६ ॐ वरप्रदाय स्वाहा
३७ ॐ महागणपतये स्वाहा
३८ ॐ बुद्धिप्रियाय स्वाहा
३९ ॐ क्षिप्रप्रसादनाय स्वाहा
४० ॐ रुद्रप्रियाय स्वाहा
४१ ॐ गणाध्यक्षाय स्वाहा
४२ ॐ उमापुत्राय स्वाहा
४३ ॐ अघनाशनाय स्वाहा
४४ ॐ कुमारगुरवे स्वाहा
४५ ॐ ईशानपुत्राय स्वाहा
४६ ॐ मूषकवाहनाय स्वाहा
४७ ॐ सिद्धिप्रियाय स्वाहा
४८ ॐ सिद्धिपतये स्वाहा
४९ ॐ सिद्धाय स्वाहा
५० ॐ सिद्धिविनायकाय स्वाहा

५१ ॐ अविघ्नाय स्वाहा
५२ ॐ तुम्बुरवे स्वाहा
५३ ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा
५४ ॐ मोहनीप्रियाय स्वाहा
५५ ॐ कटङ्कटाय स्वाहा
५६ ॐ राजपुत्राय स्वाहा
५७ ॐ शालकाय स्वाहा
५८ ॐ सम्मिताय स्वाहा
५९ ॐ अमिताय स्वाहा
६० ॐ कूष्माण्डसामसम्भूतये स्वाहा
६१ ॐ दुर्जयाय स्वाहा
६२ ॐ धूर्जयाय स्वाहा
६३ ॐ जयाय स्वाहा
६४ ॐ भूपतये स्वाहा
६५ ॐ भुवनपतये स्वाहा
६६ ॐ भूतानांपतये स्वाहा
६७ ॐ अव्ययाय स्वाहा
६८ ॐ विश्वकर्त्रे स्वाहा
६९ ॐ विश्वमुखाय स्वाहा
७० ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
७१ ॐ निधये स्वाहा
७२ ॐ घृणये स्वाहा
७३ ॐ कवये स्वाहा
७४ ॐ कवीनामृषभाय स्वाहा
७५ ॐ ब्रह्मणां पतये स्वाहा
७६ ॐ ब्रह्मणस्पतये स्वाहा
७७ ॐ ज्येष्ठराजाय स्वाहा
७८ ॐ निधिपतये स्वाहा
७९ ॐ निधिप्रियपतिप्रियाय स्वाहा
८० ॐ हिरण्मयपुरान्तस्थाय स्वाहा
८१ ॐ सूर्यमण्डलमध्यगाय स्वाहा
८२ ॐ कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलाय स्वाहा
८३ ॐ पूषदन्तभिदे स्वाहा
८४ ॐ उमाङ्ककेलिकुतुकिने स्वाहा
८५ ॐ मुक्तिदाय स्वाहा
८६ ॐ कुलपालनाय स्वाहा
८७ ॐ किरीटिने स्वाहा
८८ ॐ कुण्डलिने स्वाहा
८९ ॐ हारिणे स्वाहा
९० ॐ वनमालिने स्वाहा
९१ ॐ मनोमयाय स्वाहा
९२ ॐ वैमुख्यहतदैत्यश्रिये स्वाहा
९३ ॐ पादाहतिजितक्षितये स्वाहा

९४ ॐ सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखलिने स्वाहा
९५ ॐ दुर्निमित्तहृते स्वाहा
९६ ॐ दुःस्वप्नहृते स्वाहा
९७ ॐ प्रसहनाय स्वाहा
९८ ॐ गुणिने स्वाहा
९९ ॐ नादप्रतिष्ठिताय स्वाहा
१०० ॐ सुरूपाय स्वाहा
१०१ ॐ सर्वनेत्राधिवासाय स्वाहा
१०२ ॐ वीरासनाश्रयाय स्वाहा
१०३ ॐ पीताम्बराय स्वाहा
१०४ ॐ खण्डरदाय स्वाहा
१०५ ॐ खण्डेन्दुकृतशेखराय स्वाहा
१०६ चित्राङ्कश्यामदशनाय स्वाहा
१०७ ॐ भालचन्द्राय स्वाहा
१०८ ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा
१०९ ॐ योगाधिपाय स्वाहा
११० ॐ तारकस्थाय स्वाहा
१११ ॐ पुरुषाय स्वाहा
११२ ॐ गजगर्णकाय स्वाहा
११३ ॐ गणाधिराजाय स्वाहा
११४ ॐ विजयस्थिराय स्वाहा
११५ ॐ गजपतिध्वजिने स्वाहा
११६ ॐ देवदेवाय स्वाहा
११७ ॐ स्मरप्राणदीपकाय स्वाहा
११८ ॐ वायुकीलकाय स्वाहा
११९ ॐ विपश्चिद्वरदाय स्वाहा
१२० ॐ नादोन्नादभिन्नबलाहकाय स्वाहा
१२१ ॐ वराहरदनाय स्वाहा
१२२ ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा
१२३ ॐ व्याघ्राजिनाम्बराय स्वाहा
१२४ ॐ इच्छाशक्तिधराय स्वाहा
१२५ ॐ देवत्रात्रे स्वाहा
१२६ ॐ दैत्यविमर्दनाय स्वाहा
१२७ ॐ शम्भुवक्त्रोद्भवाय स्वाहा
१२८ ॐ शम्भुकोपघ्ने स्वाहा
१२९ ॐ शम्भुहास्यभुवे स्वाहा
१३० ॐ शम्भुतेजसे स्वाहा
१३१ ॐ शिवाशोकहारिणे स्वा स्वाहा
१३२ ॐ गौरीसुखावहा आसनाधाराय
१३३ ॐ उमाङ्गमल स्वाहा

१३४ ॐ गौरीतेजोभुवे स्वाहा
१३५ ॐ स्वर्धुनीभवाय स्वाहा
१३६ ॐ यज्ञकायाय स्वाहा
१३७ ॐ महानादाय स्वाहा
१३८ ॐ गिरिवर्ष्मणे स्वाहा
१३९ ॐ शुभाननाय स्वाहा
१४० ॐ सर्वात्मने स्वाहा
१४१ ॐ सर्वदेवात्मने स्वाहा
१४२ ॐ ब्रह्ममूर्ध्ने स्वाहा
१४३ ॐ ककुप्श्रुतये स्वाहा
१४४ ॐ ब्रह्माण्डकुम्भाय स्वाहा
१४५ ॐ चिद्व्योमभालाय स्वाहा
१४६ ॐ सत्यशिरोरुहाय स्वाहा
१४७ ॐ जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषाय स्वाहा
१४८ ॐ अग्न्यर्कसोमदृशे स्वाहा
१४९ ॐ गिरीन्द्रैकरदाय स्वाहा
१५० ॐ धर्माधर्मोष्ठाय स्वाहा
१५१ ॐ सामबृंहिताय स्वाहा
१५२ ॐ ग्रहर्क्षदशनाय स्वाहा
७२
[illegible] ॐ वाणीजिह्वाय स्वाहा
७३ ॐ क[illegible]
[illegible]भवनासिकाय स्वाहा
७४ ॐ कवीनो

१५५ ॐ कुलाचलांसाय स्वाहा
१५६ ॐ सोमार्कघण्टाय स्वाहा
१५७ ॐ रुद्रशिरोधराय स्वाहा
१५८ ॐ नदीनदभुजाय स्वाहा
१५९ ॐ सर्पाङ्गुलीकाय स्वाहा
१६० ॐ तारकानखाय स्वाहा
१६१ ॐ भ्रूमध्यसंस्थितकराय स्वाहा
१६२ ॐ ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय स्वाहा
१६३ ॐ व्योमनाभये स्वाहा
१६४ ॐ श्रीहृदयाय स्वाहा
१६५ ॐ मेरुपृष्ठाय स्वाहा
१६६ ॐ अर्णवोदराय स्वाहा
१६७ ॐ कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषाय स्वाहा
१६८ ॐ पृथ्वीकटये स्वाहा
१६९ ॐ सृष्टिलिङ्गाय स्वाहा
१७० ॐ शैलोरवे स्वाहा
१७१ ॐ दस्रजानुकाय स्वाहा
१७२ ॐ पातालजङ्घाय स्वाहा
१७३ ॐ मुनिपदे स्वाहा
१७४ ॐ कालाङ्गुष्ठाय स्वाहा
१७५ ॐ त्रयीतनवे स्वाहा

१७६ ॐ ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलाय स्वाहा
१७७ ॐ हृदयालाननिश्चलाय स्वाहा
१७८ ॐ हृत्पद्मकर्णिकाशालि-वियत्केलिसरोवराय स्वाहा
१७९ ॐ सद्भक्तध्याननिगडाय स्वाहा
१८० ॐ पूजावारीनिवारिताय स्वाहा
१८१ ॐ प्रतापिने स्वाहा
१८२ ॐ कश्यपसुताय स्वाहा
१८३ ॐ गणपाय स्वाहा
१८४ ॐ विष्टपिने स्वाहा
१८५ ॐ बलिने स्वाहा
१८६ ॐ यशस्विने स्वाहा
१८७ ॐ धार्मिकाय स्वाहा
१८८ ॐ स्वोजसे स्वाहा
१८९ ॐ प्रथमाय स्वाहा
१९० ॐ प्रथमेश्वराय स्वाहा
१९१ ॐ चिन्तामणिद्वीपपतये स्वाहा
१९२ ॐ कल्पद्रुमवनालयाय स्वाहा
१९३ ॐ रत्नमण्डपमध्यस्थाय स्वाहा
१९४ ॐ रत्नसिंहासनाश्रमाय स्वाहा
१९५ ॐ तीव्राशिरोधृतपदाय स्वाहा
१९६ ॐ ज्वालिनीमौलिलालिताय स्वाहा
१९७ ॐ नन्दानन्दितपीठश्रिये स्वाहा
१९८ ॐ भोगदाभूषितासनाय स्वाहा
१९९ ॐ सकामदायिनीपीठाय स्वाहा
२०० ॐ स्फुरदुग्रासनाश्रमाय स्वाहा
२०१ ॐ तेजोवतीशिरोरत्नाय स्वाहा
२०२ ॐ सत्यानित्यावतंसिताय स्वाहा
२०३ ॐ सविघ्ननाशिनीपीठाय स्वाहा
२०४ ॐ सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयाय स्वाहा
२०५ ॐ लिपिपद्मासनाधाराय स्वाहा

२०६ ॐ वह्निधामत्रयाश्रयाय स्वाहा
२०७ ॐ उन्नतप्रपदाय स्वाहा
२०८ ॐ गूढगुल्फाय स्वाहा
२०९ ॐ प्रवृतपार्ष्णिकाय स्वाहा
२१० ॐ पीनजंघाय स्वाहा
२११ ॐ श्लिष्टजानवे स्वाहा
२१२ ॐ स्थूलोरवे स्वाहा
२१३ ॐ प्रोन्नमत्कटये स्वाहा
२१४ ॐ निम्ननाभये स्वाहा
२१५ ॐ स्थूलकुक्षये स्वाहा
२१६ ॐ पीनवक्षसे स्वाहा
२१७ ॐ बृहद्भुजाय स्वाहा
२१८ ॐ पीनस्कन्धाय स्वाहा
२१९ ॐ कम्बुकण्ठाय स्वाहा
२२० ॐ लम्बोष्ठाय स्वाहा
२२१ ॐ लम्बनासिकाय स्वाहा
२२२ ॐ भग्नवामरदाय स्वाहा
२२३ ॐ तुङ्गसव्यदन्ताय स्वाहा
२२४ ॐ महाहनवे स्वाहा
२२५ ॐ ह्रस्वनेत्रत्रयाय स्वाहा
२२६ ॐ शूर्पकर्णाय स्वाहा
२२७ ॐ निबिडमस्तकाय स्वाहा
२२८ ॐ स्तबकाकारकुम्भाग्राय स्वाहा
२२९ ॐ रत्नमौलये स्वाहा
२३० ॐ निरङ्कुशाय स्वाहा
२३१ ॐ सर्पहारकटिसूत्राय स्वाहा
२३२ ॐ सर्पयज्ञोपवीतवते स्वाहा
२३३ ॐ सर्पकोटीरकटकाय स्वाहा
२३४ ॐ सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय स्वाहा
२३५ ॐ सर्पकक्ष्योदराबन्धाय स्वाहा
२३६ ॐ सर्पराजोत्तरीयकाय स्वाहा
२३७ ॐ रक्ताय स्वाहा
२३८ ॐ रक्ताम्बरधराय स्वाहा
२३९ ॐ रक्तमाल्यविभूषणाय स्वाहा
२४० ॐ रक्तेक्षणाय स्वाहा
२४१ ॐ रक्तकराय स्वाहा
२४२ ॐ रक्तताल्वोष्ठपल्लवाय स्वाहा
२४३ ॐ श्वेताय स्वाहा

२४४ ॐ श्वेताम्बरधराय स्वाहा
२४५ ॐ श्वेतमाल्यवि-
भूषणाय स्वाहा
२४६ ॐ श्वेतातपत्ररुचिराय
स्वाहा
२४७ ॐ श्वेतचामरवीजिताय
स्वाहा
२४८ ॐ सर्वावयवसम्पूर्णसर्व-
लक्षणलक्षिताय स्वाहा
२४९ ॐ सर्वाभरणशोभाढ्याय
स्वाहा
२५० ॐ सर्वशोभासमन्विताय
स्वाहा
२५१ ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय
स्वाहा
२५२ ॐ सर्वकारणकारणाय
स्वाहा
२५३ ॐ सर्वदैककराय स्वाहा
२५४ ॐ शार्ङ्गिणे स्वाहा
२५५ ॐ बीजापूरिणे स्वाहा
२५६ ॐ गदाधराय स्वाहा
२५७ ॐ इक्षुचापधराय स्वाहा
२५८ ॐ शूलिने स्वाहा
२५९ ॐ चक्रपाणये स्वाहा
२६० ॐ सरोजभृते स्वाहा
२६१ ॐ पाशिने स्वाहा
२६२ ॐ धृतोत्पलाय स्वाहा
२६३ ॐ शालीमञ्जरीभृते स्वाहा
२६४ ॐ स्वदन्तभृते स्वाहा
२६५ ॐ कल्पवल्लीधराय स्वाहा
२६६ ॐ विश्वाभयदैककराय
स्वाहा
२६७ ॐ वशिने स्वाहा
२६८ ॐ अक्षमालाधराय स्वाहा
२६९ ॐ ज्ञानमुद्रावते स्वाहा
२७० ॐ मुद्गरायुधाय स्वाहा
२७१ ॐ पूर्णपात्रिणे स्वाहा
२७२ ॐ कम्बुधराय स्वाहा
२७३ ॐ विधृतालिसमुद्गकाय
स्वाहा
२७४ ॐ मातुलिङ्गधराय स्वाहा
२७५ ॐ चूतकलिकाभृते स्वाहा
२७६ ॐ कुठारवते स्वाहा
२७७ ॐ पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्ण-
रत्नाभिवर्षकाय स्वाहा
२७८ ॐ भारतीसुन्दरीनाथाय
स्वाहा
२७९ ॐ विनायकरतिप्रियाय
स्वाहा

२८० ॐ महालक्ष्मीप्रियतमाय स्वाहा
२८१ ॐ सिद्धलक्ष्मीमनोरमाय स्वाहा
२८२ ॐ रमारमेशपूर्वाङ्गाय स्वाहा
२८३ ॐ दक्षिणोमामहेश्वराय स्वाहा
२८४ ॐ महीवराहवामाङ्गाय स्वाहा
२८५ ॐ रतिकन्दर्पपश्चिमाय स्वाहा
२८६ ॐ आमोदमोदजननाय स्वाहा
२८७ ॐ सप्रमोदप्रमोदनाय स्वाहा
२८८ ॐ समेधितसमृद्धिश्रिये स्वाहा
२८९ ॐ ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय स्वाहा
२९० ॐ दत्तसौमुख्यसुमुखाय स्वाहा
२९१ ॐ कान्तिकन्दलिताश्रयाय स्वाहा
२९२ ॐ मदनावत्याश्रितांघ्रये स्वाहा
२९३ ॐ कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखाय स्वाहा
२९४ ॐ विघ्नसम्पल्लवोपघ्नाय स्वाहा
२९५ ॐ सेवोन्निद्रमदद्रवाय स्वाहा
२९६ ॐ विघ्नकृन्निघ्नचरणाय स्वाहा
२९७ ॐ द्राविणीशक्तिसत्कृताय स्वाहा
२९८ ॐ तीव्राप्रसन्ननयनाय स्वाहा
२९९ ॐ ज्वालिनीपालितैकदृशे स्वाहा
३०० ॐ मोहिनीमोहनाय स्वाहा
३०१ ॐ भोगदायिनीकान्ति-मण्डिताय स्वाहा
३०२ ॐ कामिनीकान्तवक्त्रश्रिये स्वाहा
३०३ ॐ अधिष्ठितवसुन्धराय स्वाहा
३०४ ॐ वसुन्धरामदोन्नद्धमहा-शङ्खनिधिप्रभवे स्वाहा
३०५ ॐ नमद्वसुमतीमलिमहा-पद्मनिधिप्रभवे स्वाहा
३०६ ॐ सर्वसद्गुरुसंसेव्याय स्वाहा

३०७ ॐ शोचिष्केशहृदाश्रयाय स्वाहा
३०८ ॐ ईशानमूर्ध्ने स्वाहा
३०९ ॐ देवेन्द्रशिखायै स्वाहा
३१० ॐ पवननन्दनाय स्वाहा
३११ ॐ अग्रप्रत्यग्रनयनाय स्वाहा
३१२ ॐ दिव्यास्त्राणांप्रयोगविदे स्वाहा
३१३ ॐ ऐरावतादिसर्वाशावारणावरणप्रियाय स्वाहा
३१४ ॐ वज्राद्यस्त्रपरीवाराय स्वाहा
३१५ ॐ गणचण्डसमाश्रयाय स्वाहा
३१६ ॐ जयाजयपरीवाराय स्वाहा
३१७ ॐ विजयाविजयावहाय स्वाहा
३१८ ॐ अजितार्चितपादाब्जाय स्वाहा
३१९ ॐ नित्यानित्यावतंसिताय स्वाहा
३२० ॐ विलासिनीकृतोल्लासाय स्वाहा
३२१ ॐ शौण्डीसौन्दर्यमण्डिताय स्वाहा
३२२ ॐ अनन्तानन्तसुखदाय स्वाहा
३२३ ॐ सुमङ्गलसुमङ्गलाय स्वाहा
३२४ ॐ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेविताय स्वाहा
३२५ ॐ सुभगासंश्रितपदाय स्वाहा
३२६ ॐ ललितालालिताश्रयाय स्वाहा
३२७ ॐ कामिनीकामनाय स्वाहा
३२८ ॐ काममालिनीकेलिलालिताय स्वाहा
३२९ ॐ सरस्वत्याश्रयाय स्वाहा
३३० ॐ गौरीनन्दनाय स्वाहा
३३१ ॐ श्रीनिकेतनाय स्वाहा
३३२ ॐ गुरुगुप्तपदाय स्वाहा
३३३ ॐ वाचासिद्धाय स्वाहा
३३४ ॐ वागीश्वरीपतये स्वाहा
३३५ ॐ नलिनीकामुकाय स्वाहा
३३६ ॐ वामारामाय स्वाहा
३३७ ॐ ज्येष्ठामनोरमाय स्वाहा
३३८ ॐ रौद्रीमुद्रितपादाब्जाय स्वाहा
३३९ ॐ हुंबीजाय स्वाहा

३४० ॐ तुङ्गशक्तिकाय स्वाहा
३४१ ॐ विश्वादिजननत्राणाय स्वाहा
३४२ ॐ स्वाहाशक्तये स्वाहा
३४३ ॐ सकीलकाय स्वाहा
३४४ ॐ अमृताब्धिकृतावासाय स्वाहा
३४५ ॐ मदघूर्णितलोचनाय स्वाहा
३४६ ॐ उच्छिष्टगणाय स्वाहा
३४७ ॐ उच्छिष्टगणेशाय स्वाहा
३४८ ॐ गणनायकाय स्वाहा
३४९ ॐ सार्वकालिकसंसिद्धये स्वाहा
३५० ॐ नित्यशैवाय स्वाहा
३५१ ॐ दिगम्बराय स्वाहा
३५२ ॐ अनपायाय स्वाहा
३५३ ॐ अनन्तदृष्टये स्वाहा
३५४ ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
३५५ ॐ अजरामराय स्वाहा
३५६ ॐ अनाविलाय स्वाहा
३५७ ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा
३५८ ॐ अच्युताय स्वाहा
३५९ ॐ अमृताय स्वाहा
३६० ॐ अक्षराय स्वाहा
३६१ ॐ अप्रतर्क्याय स्वाहा
३६२ ॐ अक्षयाय स्वाहा
३६३ ॐ अजय्याय स्वाहा
३६४ ॐ अनाधाराय स्वाहा
३६५ ॐ अनामयाय स्वाहा
३६६ ॐ अमलाय स्वाहा
३६७ ॐ अमोघसिद्धये स्वाहा
३६८ ॐ अद्वैताय स्वाहा
३६९ ॐ अघोराय स्वाहा
३७० ॐ अप्रमिताननाय स्वाहा
३७१ ॐ अनाकाराय स्वाहा
३७२ ॐ अब्धिभूम्यग्निबलघ्नाय स्वाहा
३७३ ॐ अव्यक्तलक्षणाय स्वाहा
३७४ ॐ आधारपीठाय स्वाहा
३७५ ॐ आधाराय स्वाहा
३७६ ॐ आधाराधेयवर्जिताय स्वाहा
३७७ ॐ आखुकेतनाय स्वाहा
३७८ ॐ आशापूरकाय स्वाहा
३७९ ॐ आखुमहारथाय स्वाहा
३८० ॐ इक्षुसागरमध्यस्थाय स्वाहा
३८१ ॐ इक्षुभक्षणलालसाय स्वाहा
३८२ ॐ इक्षुचापातिरेकश्रिये स्वाहा

३८३ ॐ इक्षुचापनिषेविताय स्वाहा
३८४ ॐ इन्द्रगोपसमानश्रिये स्वाहा
३८५ ॐ इन्द्रनीलसमद्युतये स्वाहा
३८६ ॐ इन्दीवरदलश्यामाय स्वाहा
३८७ ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय स्वाहा
३८८ ॐ इध्मप्रियाय स्वाहा
३८९ ॐ इडाभागाय स्वाहा
३९० ॐ इडाधाम्ने स्वाहा
३९१ ॐ इन्दिराप्रियाय स्वाहा
३९२ ॐ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसिने स्वाहा
३९३ ॐ इतिकर्तव्यतेप्सिताय स्वाहा
३९४ ॐ ईशानमौलये स्वाहा
३९५ ॐ ईशानाय स्वाहा
३९६ ॐ ईशानसुताय स्वाहा
३९७ ॐ ईतिघ्ने स्वाहा
३९८ ॐ ईषणात्रयकल्पान्ताय स्वाहा
३९९ ॐ ईहामात्रविवर्जिताय स्वाहा
४०० ॐ उपेन्द्राय स्वाहा
४०१ ॐ उडुभृन्मौलये स्वाहा
४०२ ॐ उण्डेरकबलिप्रियाय स्वाहा
४०३ ॐ उन्नताननाय स्वाहा
४०४ ॐ उत्तुङ्गाय स्वाहा
४०५ ॐ उदारत्रिदशाग्रण्यै स्वाहा
४०६ ॐ ऊर्जस्वते स्वाहा
४०७ ॐ ऊष्मलमदाय स्वाहा
४०८ ॐ ऊहापोहदुरासदाय स्वाहा
४०९ ॐ ऋग्यजुःसामसम्भूतये स्वाहा
४१० ॐ ऋद्धिसिद्धिप्रदायकाय स्वाहा
४११ ॐ ऋजुचित्तैकसुलभाय स्वाहा
४१२ ॐ ऋणत्रयविमोचकाय स्वाहा
४१३ ॐ लुप्तविघ्नायस्वभक्तानां स्वाहा
४१४ ॐ लुप्तशक्तयेसुरद्विषां स्वाहा
४१५ ॐ लुप्तश्रियेविमुखार्चानां स्वाहा

४१६ ॐ लूताविस्फोटनाशनाय स्वाहा
४१७ ॐ एकारपीठमध्यस्थाय स्वाहा
४१८ ॐ एकपादकृतासनाय स्वाहा
४१९ ॐ एजिताखिलदैत्यश्रिये स्वाहा
४२० ॐ एधिताखिलसंश्रयाय स्वाहा
४२१ ॐ ऐश्वर्यनिधये स्वाहा
४२२ ॐ ऐश्वर्याय स्वाहा
४२३ ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदाय स्वाहा
४२४ ॐ ऐरम्मदसमोन्मेषाय स्वाहा
४२५ ॐ ऐरावतनिभाननाय स्वाहा
४२६ ॐ ओङ्कारवाच्याय स्वाहा
४२७ ॐ ओङ्काराय स्वाहा
४२८ ॐ ओजस्वते स्वाहा
४२९ ॐ ओषधीपतये स्वाहा
४३० ॐ औदार्यनिधये स्वाहा
४३१ ॐ औद्धत्यधुर्याय स्वाहा
४३२ ॐ औन्नत्यनिस्वनाय स्वाहा
४३३ ॐ अंकुशायसुरनागानां स्वाहा
४३४ ॐ अंकुशायसुरविद्विषां स्वाहा
४३५ ॐ अःसमस्तविसर्गान्तपदेषुपरिकीर्तिताय स्वाहा
४३६ ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा
४३७ ॐ कल्पाय स्वाहा
४३८ ॐ कपर्दिने स्वाहा
४३९ ॐ कलभाननाय स्वाहा
४४० ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा
४४१ ॐ कर्मकर्त्रे स्वाहा
४४२ ॐ कर्माकर्मफलप्रदाय स्वाहा
४४३ ॐ कदम्बगोलकाकाराय स्वाहा
४४४ ॐ कूष्माण्डगणनायकाय स्वाहा
४४५ ॐ कारुण्यदेहाय स्वाहा
४४६ ॐ कपिलाय स्वाहा
४४७ ॐ कथकाय स्वाहा
४४८ ॐ कटिसूत्रभृते स्वाहा
४५९ ॐ खर्वाय स्वाहा
४५० ॐ खड्गप्रियाय स्वाहा
४५१ ॐ खड्गखान्तान्तस्थाय स्वाहा

४५२ ॐ खनिर्मलाय स्वाहा
४५३ ॐ खल्वाटशृङ्गनिलयाय स्वाहा
४५४ ॐ खट्वांगिने स्वाहा
४५५ ॐ खदुरासदाय स्वाहा
४५६ ॐ गुणाढ्याय स्वाहा
४५७ ॐ गहनाय स्वाहा
४५८ ॐ गस्थाय स्वाहा
४५९ ॐ गद्यपद्यसुधार्णवाय स्वाहा
४६० ॐ गद्यगानप्रियाय स्वाहा
४६१ ॐ गर्जाय स्वाहा
४६२ ॐ गीतगीर्वाणपूर्वजाय स्वाहा
४६३ ॐ गुह्याचाररताय स्वाहा
४६४ ॐ गुह्याय स्वाहा
४६५ ॐ गुह्यागमनिरूपिताय स्वाहा
४६६ ॐ गुहाशयाय स्वाहा
४६७ ॐ गुहाब्धिस्थाय स्वाहा
४६८ ॐ गुरुगम्याय स्वाहा
४६९ ॐ गुरोर्गुरवे स्वाहा
४७० ॐ घण्टाघर्घरिकामालिने स्वाहा
४७१ ॐ घटकुम्भाय स्वाहा
४७२ ॐ घटोदराय स्वाहा
४७३ ॐ चण्डाय स्वाहा
४७४ ॐ चण्डेश्वरसुहृदे स्वाहा
४७५ ॐ चण्डीशाय स्वाहा
४७६ ॐ चण्डविक्रमाय स्वाहा
४७७ ॐ चराचरपतये स्वाहा
४७८ ॐ चिन्तामणिचर्वणलालसाय स्वाहा
४७९ ॐ छन्दसे स्वाहा
४८० ॐ छन्दवपुषे स्वाहा
४८१ ॐ छन्दोदुर्लक्ष्याय स्वाहा
४८२ ॐ छन्दविग्रहाय स्वाहा
४८३ ॐ जगद्योनये स्वाहा
४८४ ॐ जगत्साक्षिणे स्वाहा
४८५ ॐ जगदीशाय स्वाहा
४८६ ॐ जगन्मयाय स्वाहा
४८७ ॐ जपाय स्वाहा
४८८ ॐ जपपराय स्वाहा
४८९ ॐ जप्याय स्वाहा
४९० ॐ जिह्वासिंहासनप्रभवे स्वाहा
४९१ ॐ झलज्झल्लोल्लसद्दानझङ्कारिभ्रमराकुलाय स्वाहा
४९२ ॐ टङ्कारस्फारसंरावाय स्वाहा

४९३ ॐ टङ्कारिमणिनूपुराय स्वाहा
४९४ ॐ ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रैकसिद्धिदाय स्वाहा
४९५ ॐ डिण्डिमुण्डाय स्वाहा
४९६ ॐ डाकिनीशाय स्वाहा
४९७ ॐ डामराय स्वाहा
४९८ ॐ डिण्डिमप्रियाय स्वाहा
४९९ ॐ ढक्कानिनादमुदिताय स्वाहा
५०० ॐ ढौकाय स्वाहा
५०१ ॐ ढुण्ढिविनायकाय स्वाहा
५०२ ॐ तत्त्वानां परमाय तत्त्वाय स्वाहा
५०३ ॐ तत्त्वंपदनिरूपिताय स्वाहा
५०४ ॐ तारकान्तरसंस्थानाय स्वाहा
५०५ ॐ तारकाय स्वाहा
५०६ ॐ तारकान्तकाय स्वाहा
५०७ ॐ स्थाणवे स्वाहा
५०८ ॐ स्थाणुप्रियाय स्वाहा
५०९ ॐ स्थात्रे स्वाहा
५१० ॐ स्थावराय जंगमाय जगते स्वाहा
५११ ॐ दक्षयज्ञप्रमथनाय स्वाहा
५१२ ॐ दात्रे स्वाहा
५१३ ॐ दानवमोहनाय स्वाहा
५१४ ॐ दयावते स्वाहा
५१५ ॐ दिव्यविभवाय स्वाहा
५१६ ॐ दण्डभृते स्वाहा
५१७ ॐ दण्डनायकाय स्वाहा
५१८ ॐ दन्तप्रभिन्नाभ्रमालाय स्वाहा
५१९ ॐ दैत्यवारणदारणाय स्वाहा
५२० ॐ दंष्ट्रालग्नद्विपघटाय स्वाहा
५२१ ॐ देवार्थनृगजाकृतय स्वाहा
५२२ ॐ धनधान्यपतये स्वाहा
५२३ ॐ धन्याय स्वाहा
५२४ ॐ धनदाय स्वाहा
५२५ ॐ धरणीधराय स्वाहा
५२६ ॐ ध्यानैकप्रकटाय स्वाहा
५२७ ॐ ध्येयाय स्वाहा
५२८ ॐ ध्यानाय स्वाहा
५२९ ॐ ध्यानपरायणाय स्वाहा
५३० ॐ नन्द्याय स्वाहा
५३१ ॐ नन्दियप्रियाय स्वाहा

५३२ ॐ नादाय स्वाहा
५३३ ॐ नादमध्यप्रतिष्ठिताय स्वाहा
५३४ ॐ निष्कलाय स्वाहा
५३५ ॐ निर्मलाय स्वाहा
५३६ ॐ नित्याय स्वाहा
५३७ ॐ नित्यानित्याय स्वाहा
५३८ ॐ निरामयाय स्वाहा
५३९ ॐ परस्मै व्योम्ने स्वाहा
५४० ॐ परस्मै धाम्ने स्वाहा
५४१ ॐ परमात्मने स्वाहा
५४२ ॐ परस्मैपदाय स्वाहा
५४३ ॐ परात्पराय स्वाहा
५४४ ॐ पशुपतये स्वाहा
५४५ ॐ पशुपाशविमोचकाय स्वाहा
५४६ ॐ पूर्णानन्दाय स्वाहा
५४७ ॐ परानन्दाय स्वाहा
५४८ ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय स्वाहा
५४९ ॐ पद्मप्रसन्ननयनाय स्वाहा
५५० ॐ प्राणताज्ञानमोचनाय स्वाहा
५५१ ॐ प्रमाणप्रत्ययातीताय स्वाहा
५५२ ॐ प्रणतार्तिनिवारणाय स्वाहा
५५३ ॐ फलहस्ताय स्वाहा
५५४ ॐ फणिपतये स्वाहा
५५५ ॐ फेत्काराय स्वाहा
५५६ ॐ फाणितप्रियाय स्वाहा
५.७ ॐ बाणार्चिताङ्घ्रियुगलाय स्वाहा
५५८ ॐ बालकेलिकुतूहलिने स्वाहा
५५९ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
५६० ॐ ब्रह्मार्चितपदाय स्वाहा
५६१ ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा
५६२ ॐ बृहस्पतये स्वाहा
५६३ ॐ बृहत्तमाय स्वाहा
५६४ ॐ ब्रह्मपराय स्वाहा
५६५ ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा
५६६ ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय स्वाहा
५६७ ॐ बृहन्नादाग्र्यचीत्काराय स्वाहा
५६८ ॐ ब्रह्माण्डावलिमेखलाय स्वाहा
५६९ ॐ भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीकाय स्वाहा
५७० ॐ भर्गाय स्वाहा

५७१ ॐ भद्राय स्वाहा
५७२ ॐ भयापहाय स्वाहा
५७३ ॐ भगवते स्वाहा
५७४ ॐ भक्तिसुलभाय स्वाहा
५७५ ॐ भूतिदाय स्वाहा
५७६ ॐ भूतिभूषणाय स्वाहा
५७७ ॐ भव्याय स्वाहा
५७८ ॐ भूतालयाय स्वाहा
५७९ ॐ भोगदात्रे स्वाहा
५८० ॐ भ्रूमध्यगोचराय स्वाहा
५८१ ॐ मन्त्राय स्वाहा
५८२ ॐ मन्त्रपतये स्वाहा
५८३ ॐ मन्त्रिणे स्वाहा
५८४ ॐ मदमत्तमनोरमाय स्वाहा
५८५ ॐ मेखलावते स्वाहा
५८६ ॐ मन्दगतये स्वाहा
५८७ ॐ मतिमत्कमलेक्षणाय स्वाहा
५८८ ॐ महाबलाय स्वाहा
५८९ ॐ महावीर्याय स्वाहा
५९० ॐ महाप्राणाय स्वाहा
५९१ ॐ महामनसे स्वाहा
५९२ ॐ यज्ञाय स्वाहा
५९३ ॐ यज्ञपतये स्वाहा
५९४ ॐ यज्ञगोप्त्रे स्वाहा
५९५ ॐ यज्ञफलप्रदाय स्वाहा
५९६ ॐ यशस्कराय स्वाहा
५९७ ॐ योगगम्याय स्वाहा
५९८ ॐ याज्ञिकाय स्वाहा
५९९ ॐ याजकप्रियाय स्वाहा
६०० ॐ रसाय स्वाहा
६०१ ॐ रसप्रियाय स्वाहा
६०२ ॐ रस्याय स्वाहा
६०३ ॐ रञ्जकाय स्वाहा
६०४ ॐ रावणार्चिताय स्वाहा
६०५ ॐ रक्षोरक्षाकराय स्वाहा
६०६ ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा
६०७ ॐ राज्यसुखप्रदाय स्वाहा
६०८ ॐ लक्ष्याय स्वाहा
६०९ ॐ लक्ष्यप्रदाय स्वाहा
६१० ॐ लक्ष्याय स्वाहा
६११ ॐ लयस्थाय स्वाहा
६१२ ॐ लड्डुकप्रियाय स्वाहा
६१३ ॐ लानप्रियाय स्वाहा
६१४ ॐ लास्यपराय स्वाहा
६१५ ॐ लाभकृल्लोकविश्रुताय स्वाहा
६१६ ॐ वरेण्याय स्वाहा
६१७ ॐ वह्निवदनाय स्वाहा
६१८ ॐ वन्द्याय स्वाहा

६१९ ॐ वेदान्तगोचराय स्वाहा
६२० ॐ विकर्त्रे स्वाहा
६२१ ॐ विश्वतश्चक्षुषे स्वाहा
६२२ ॐ विधात्रे स्वाहा
६२३ ॐ विश्वतोमुखाय स्वाहा
६२४ ॐ वामदेवाय स्वाहा
६२५ ॐ विश्वनेत्रे स्वाहा
६२६ ॐ वज्रिवज्रनिवारणाय स्वाहा
६२७ ॐ विश्वबन्धनविष्कम्भाधाराय स्वाहा
६२८ ॐ विश्वेश्वरप्रभवे स्वाहा
६२९ ॐ शब्दब्रह्मणे स्वाहा
६३० ॐ शमप्राप्याय स्वाहा
६३१ ॐ शम्भुशक्तिगणेश्वराय स्वाहा
६३२ ॐ शास्त्रे स्वाहा
६३३ ॐ शिखाग्रनिलयाय०
६३४ ॐ शरण्याय स्वाहा
६३५ ॐ शिखरीश्वराय स्वाहा
६३६ ॐ षड्ऋतुकुसुमस्रग्विणे स्वाहा
६३७ ॐ षडाधाराय स्वाहा
६३८ ॐ षडक्षराय स्वाहा
६३९ ॐ संसारवैद्याय स्वाहा
६४० ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
६४१ ॐ सर्वभेषजभेषजाय स्वाहा
६४२ ॐ सृष्टिस्थितिलयक्रीडाय स्वाहा
६४३ ॐ सुरकुञ्जरभेदनाय स्वाहा
६४४ ॐ सिन्दूरितमहाकुम्भाय स्वाहा
६४५ ॐ सदसद्व्यक्तिदायकाय स्वाहा
६४६ ॐ साक्षिणे स्वाहा
६४७ ॐ समुद्रमथनाय स्वाहा
६४८ ॐ स्वसंवेद्याय स्वाहा
६४९ ॐ स्वदक्षिणाय स्वाहा
६५० ॐ स्वतन्त्राय स्वाहा
६५१ ॐ सत्यसङ्कल्पाय स्वाहा
६५२ ॐ सामगानरताय स्वाहा
६५३ ॐ सुखिने स्वाहा
६५४ ॐ हंसाय स्वाहा
६५५ ॐ हस्तिपिशाचीशाय स्वाहा
६५६ ॐ हवनाय स्वाहा
६५७ ॐ हव्यकव्यभुजे स्वाहा
६५८ ॐ हव्याय स्वाहा

६५९ ॐ हुतप्रियाय स्वाहा
६६० ॐ हर्षाय स्वाहा
६६१ ॐ हृल्लेखामन्त्रमध्यगाय स्वाहा
६६२ ॐ क्षेत्राधिपाय स्वाहा
६६३ ॐ क्षमाभर्त्रे स्वाहा
६६४ ॐ क्षमापरपरायणाय स्वाहा
६६५ ॐ क्षिप्रक्षेमङ्कराय स्वाहा
६६६ ॐ क्षेमानन्दाय स्वाहा
६६७ ॐ क्षोणीसुरद्रुमाय स्वाहा
६६८ ॐ धर्मप्रदाय स्वाहा
६६९ ॐ अर्थदाय स्वाहा
६७० ॐ कामदात्रे स्वाहा
६७१ ॐ सौभाग्यवर्धनाय स्वाहा
६७२ ॐ विद्याप्रदाय स्वाहा
६७३ ॐ विभवदाय स्वाहा
६७४ ॐ भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय स्वाहा
६७५ ॐ आभिरूप्यकराय स्वाहा
६७६ ॐ वीरश्रीप्रदाय स्वाहा
६७७ ॐ विजयप्रदाय स्वाहा
६७८ ॐ सर्ववश्यकराय स्वाहा
६७९ ॐ गर्भदोषघ्ने स्वाहा
६८० ॐ पुत्रपौत्रदाय स्वाहा
६८१ ॐ मेधादाय स्वाहा
६८२ ॐ कीर्त्तिदाय स्वाहा
६८३ ॐ शोकहारिणे स्वाहा
६८४ ॐ दौर्भाग्यनाशनाय स्वाहा
६८५ ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय स्वाहा
६८६ ॐ रुष्टचित्तप्रसादनाय स्वाहा
६८७ ॐ पराभिचारशमनाय०
६८८ ॐ दुःखभञ्जनकारकाय स्वाहा
६८९ ॐ लवाय स्वाहा
६९० ॐ त्रुटयै स्वाहा
६९१ ॐ कलायै स्वाहा
६९२ ॐ काष्ठायै स्वाहा
६९३ ॐ निमेषाय स्वाहा
६९४ ॐ तत्पराय स्वाहा
६९५ ॐ क्षणाय स्वाहा
६९६ ॐ घटयै स्वाहा
६९७ ॐ मुहूर्ताय स्वाहा
६९८ ॐ प्रहराय स्वाहा
६९९ ॐ दिवा स्वाहा

७०० ॐ नक्तं स्वाहा
७०१ ॐ अहर्निशं स्वाहा
७०२ ॐ पक्षाय स्वाहा
७०३ ॐ मासाय स्वाहा
७०४ ॐ अयनाय स्वाहा
७०५ ॐ वर्षाय स्वाहा
७०६ ॐ युगाय स्वाहा
७०७ ॐ कल्पाय स्वाहा
७०८ ॐ महालयाय स्वाहा
७०९ ॐ राशये स्वाहा
७१० ॐ तारायै स्वाहा
७११ ॐ तिथये स्वाहा
७१२ ॐ यागाय स्वाहा
७१३ ॐ वाराय स्वाहा
७१४ ॐ करणाय स्वाहा
७१५ ॐ अंशकाय स्वाहा
७१६ ॐ लग्नाय स्वाहा
७१७ ॐ होरायै स्वाहा
७१८ ॐ कालचक्राय स्वाहा
७१९ ॐ मेरवे स्वाहा
७२० ॐ सप्तर्षिभ्यो स्वाहा
७२१ ॐ ध्रुवाय स्वाहा
७२२ ॐ राहवे स्वाहा
७२३ ॐ मन्दाय स्वाहा
७२४ ॐ कवये स्वाहा
७२५ ॐ जीवाय स्वाहा
७२६ ॐ बुधाय स्वाहा
७२७ ॐ भौमाय स्वाहा
७२८ ॐ शशिने स्वाहा
७२९ ॐ रवये स्वाहा
७३० ॐ कालाय स्वाहा
७३१ ॐ सृष्टये स्वाहा
७३२ ॐ स्थितये स्वाहा
७३३ ॐ विश्वस्मै स्थावराय जंगमाय च यते स्वाहा
७३४ ॐ भुवे स्वाहा
७३५ ॐ अद्भ्यो स्वाहा
७३६ ॐ अग्नये स्वाहा
७३७ ॐ मरुते स्वाहा
७३८ ॐ व्योम्ने स्वाहा
७३९ ॐ अहङ्कृतये स्वाहा
७४० ॐ प्रकृत्यै स्वाहा
७४१ ॐ पुंसे स्वाहा
७४२ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
७४३ ॐ विष्णवे स्वाहा
७४४ ॐ शिवाय स्वाहा
७४५ ॐ रुद्राय स्वाहा
७४६ ॐ ईशाय स्वाहा
७४७ ॐ शक्त्यै स्वाहा
७४८ ॐ सदाशिवाय स्वाहा

७४९ ॐ त्रिदशेभ्यो स्वाहा
७५० ॐ पितृभ्यो स्वाहा
७५१ ॐ सिद्धेभ्यो स्वाहा
७५२ ॐ यक्षेभ्यो स्वाहा
७५३ ॐ रक्षोभ्यो स्वाहा
७५४ ॐ किन्नरेभ्यो स्वाहा
७५५ ॐ साध्येभ्यो स्वाहा
७५६ ॐ विद्याधरेभ्यो स्वाहा
७५७ ॐ भूतेभ्यो स्वाहा
७५८ ॐ मनुष्येभ्यो स्वाहा
७५९ ॐ पशुभ्यो स्वाहा
७६० ॐ खगेभ्यो स्वाहा
७६१ ॐ समुद्रेभ्यो स्वाहा
७६२ ॐ सरिद्भ्यो स्वाहा
७६३ ॐ शैलेभ्यो स्वाहा
७६४ ॐ भूताय स्वाहा
७६५ ॐ भव्याय स्वाहा
७६६ ॐ भवोद्भवाय स्वाहा
७६७ ॐ साङ्ख्याय स्वाहा
७६८ ॐ पातञ्जलाय स्वाहा
७६९ ॐ योगाय स्वाहा
७७० ॐ पूराणेभ्यो स्वाहा
७७१ ॐ श्रुतये स्वाहा
७७२ ॐ स्मृतये स्वाहा
७७३ ॐ वेदाङ्गेभ्यो स्वाहा
७७४ ॐ सदाचाराय स्वाहा
७७५ ॐ मीमांसायै स्वाहा
७७६ ॐ न्यायविस्तराय स्वाहा
७७७ ॐ आयुर्वेदाय स्वाहा
७७८ ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा
७७९ ॐ गान्धर्वाय स्वाहा
७८० ॐ काव्यनाटकाय स्वाहा
७८१ ॐ वैखानसाय स्वाहा
७८२ ॐ भागवताय स्वाहा
७८३ ॐ सात्वताय स्वाहा
७८४ ॐ पाञ्चरात्रकाय स्वाहा
७८५ ॐ शैवाय स्वाहा
७८६ ॐ पाशुपताय स्वाहा
७८७ ॐ कालामुखाय स्वाहा
७८८ ॐ भैरवशासनाय स्वाहा
७८९ ॐ शाक्ताय स्वाहा
७९० ॐ वैनायकाय स्वाहा
७९१ ॐ सौराय स्वाहा
७९२ ॐ जैनाय स्वाहा
७९३ ॐ आर्हतसंहितायै स्वाहा
७९४ ॐ सते स्वाहा
७९५ ॐ असते स्वाहा
७९६ ॐ व्यक्ताय स्वाहा
७९७ ॐ अव्यक्ताय स्वाहा
७९८ ॐ सचेतनाय स्वाहा

८९९ ॐ अचेतनाय स्वाहा
९०० ॐ बन्धाय स्वाहा
८०१ ॐ मोक्षाय स्वाहा
८०२ ॐ सुखाय स्वाहा
८०३ ॐ भोगाय स्वाहा
८०४ ॐ अयोगाय स्वाहा
८०५ ॐ सत्याय स्वाहा
८०६ ॐ अणवे स्वाहा
८०७ ॐ महते स्वाहा
८०८ ॐ स्वस्ति स्वाहा
८०९ ॐ हुं स्वाहा
८१० ॐ फण्णमः स्वाहा
८११ ॐ स्वधा स्वाहा
८१२ ॐ स्वाहा स्वाहा
८१३ ॐ श्रौषण्णमः स्वाहा
८१४ ॐ वौषण्णमः स्वाहा
८१५ ॐ वषण्णमः स्वाहा
८१६ ॐ नमो स्वाहा
८१७ ॐ ज्ञानाय स्वाहा
८१८ ॐ विज्ञानाय स्वाहा
८१९ ॐ आनन्दाय स्वाहा
८२० ॐ बोधाय स्वाहा
८२१ ॐ संविदे स्वाहा
८२२ ॐ समाय स्वाहा
८२३ ॐ यमाय स्वाहा
८२४ ॐ एकस्मै स्वाहा
८२५ ॐ एकाक्षराधाराय स्वाहा
८२६ ॐ एकाक्षरपरायणाय स्वाहा
८२७ ॐ एकाग्रधिये स्वाहा
८२८ ॐ एकवीराय स्वाहा
८२९ ॐ एकानेकस्वरूपधृषे०
८३० ॐ द्विरूपाय स्वाहा
८३१ ॐ द्विभुजाय स्वाहा
८३२ ॐ द्व्यक्षाय स्वाहा
८३३ ॐ द्विरदाय स्वाहा
८३४ ॐ द्विपरक्षकाय स्वाहा
८३५ ॐ द्वैमातुराय स्वाहा
८३६ ॐ द्विवदनाय स्वाहा
८३७ ॐ द्वन्द्वातीताय स्वाहा
८३८ ॐ द्वयातिगाय स्वाहा
८३९ ॐ त्रिधाम्ने स्वाहा
८४० ॐ त्रिकराय स्वाहा
८४१ ॐ त्रेतात्रिवर्गफलदायकाय स्वाहा
८४२ ॐ त्रिगुणात्मने स्वाहा
८४३ ॐ त्रिलोकादये स्वाहा
८४४ ॐ त्रिशक्तीशाय स्वाहा
८४५ ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा

८४६ ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
८४७ ॐ चतुर्दन्ताय स्वाहा
८४८ ॐ चतुरात्मने स्वाहा
८४९ ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा
८५० ॐ चतुर्विधोपायमयाय स्वाहा
८५१ ॐ चतुर्वर्णाश्रमाश्रयाय०
८५२ ॐ चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकाय स्वाहा
८५३ ॐ चतुर्थीपूजनप्रीताय स्वाहा
८५४ ॐ चतुर्थीतिथिसम्भवाय स्वाहा
८५५ ॐ पञ्चाक्षरात्मने स्वाहा
८५६ ॐ पञ्चात्मने स्वाहा
८५७ ॐ पञ्चास्याय स्वाहा
८५८ ॐ पञ्चकृत्यकृते स्वाहा
८५९ ॐ पञ्चाधाराय स्वाहा
८६० ॐ पञ्चवर्णाय स्वाहा
८६१ ॐ पञ्चाक्षरपरायणाय०
८६२ ॐ पञ्चतालाय स्वाहा
८६३ ॐ पञ्चकराय स्वाहा
८६४ ॐ पञ्चप्रणवभाविताय स्वाहा
८६५ ॐ पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये स्वाहा
८६६ ॐ पञ्चावरणवारिताय०
८६७ ॐ पञ्चभक्ष्यप्रियाय स्वाहा
८६८ ॐ पञ्चबाणाय स्वाहा
८६९ ॐ पञ्चशिवात्मकाय स्वाहा
८७० ॐ षट्कोणपीठाय स्वाहा
८७१ ॐ षट्चक्राधाम्ने स्वाहा
८७२ ॐ षड्ग्रन्थिभेदकाय स्वाहा
८७३ ॐ षडध्वध्वान्तविध्वंसिने स्वाहा
८७४ ॐ षडंगुलमहाह्रदाय स्वाहा
८७५ ॐ षण्मुखाय स्वाहा
८७६ ॐ षण्मुखभ्रात्रे स्वाहा
८७७ ॐ षट्शक्तिपरिवारिताय स्वाहा
८७८ ॐ षड्वैरिवर्गविध्वंसिने स्वाहा
८७९ ॐ षड्भिर्भयभञ्जनाय स्वाहा
८८० ॐ षट्तर्कदूराय स्वाहा
८८१ ॐ षट्कर्मनिरताय स्वाहा
८८२ ॐ षड्साश्रयाय स्वाहा
८८३ ॐ सप्तपातालचरणाय स्वाहा

८८४ ॐ सप्तद्वीपोरुमण्डलाय स्वाहा
८८५ ॐ सप्तस्वर्लोकमुकुटाय स्वाहा
८८६ ॐ सप्तसप्तिवरप्रदाय स्वाहा
८८७ ॐ सप्ताङ्गराज्यसुखदाय स्वाहा
८८८ ॐ सप्तर्षिगणमण्डिताय स्वाहा
८८९ ॐ सप्तच्छन्दोनिधये स्वाहा
८९० ॐ सप्तहोत्रे स्वाहा
८९१ ॐ सप्तस्वराश्रयाय स्वाहा
८९२ ॐ सप्ताब्धिकेलिकासाराय स्वाहा
८९३ ॐ सप्तमातृनिषेविताय स्वाहा
८९४ ॐ सप्तच्छन्दोमोदमदाय स्वाहा
८९५ ॐ सप्तच्छन्दोमखप्रभवे स्वाहा
८९६ ॐ अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये स्वाहा
८९७ ॐ अष्टप्रकृतिकारणाय स्वाहा
८९८ ॐ अष्टाङ्गयोगफलभुवे स्वाहा
८९९ ॐ अष्टपत्राम्बुजासनाय स्वाहा
९०० ॐ अष्टशक्तिसमृद्धश्रिये स्वाहा
९०१ ॐ अष्टैश्वर्यप्रदायकाय स्वाहा
९०२ ॐ अष्टपीठोपपीठश्रिये स्वाहा
९०३ ॐ अष्टमातृसमावृताय स्वाहा
९०४ ॐ अष्टभैरवसेव्याय स्वाहा
९०५ ॐ अष्टवसुवन्द्याय स्वाहा
९०६ ॐ अष्टमूर्तिभृते स्वाहा
९०७ ॐ अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये स्वाहा
९०८ ॐ अष्टद्रव्यहविःप्रियाय स्वाहा
९०९ ॐ नवनागासनाध्यासिने स्वाहा
९१० ॐ नवनिध्यनुशासित्रे स्वाहा
९११ ॐ नवद्वारपुराधाराय स्वाहा
९१२ ॐ नवधारनिकेतनाय स्वाहा

९१३ ॐ नवनारायणस्तुत्याय स्वाहा
९१४ ॐ नवदुर्गानिषेविताय स्वाहा
९१५ ॐ नवनाथमहानाथाय स्वाहा
९१६ ॐ नवनागविभूषणाय स्वाहा
९१७ ॐ नवरत्नविचित्राङ्गाय स्वाहा
९१८ ॐ नवशक्तिशिरोधृताय स्वाहा
९१९ ॐ दशात्मकाय स्वाहा
९२० ॐ दशभुजाय स्वाहा
९२१ ॐ दशदिक्पतिवन्दिताय स्वाहा
९२२ ॐ दशाध्याय स्वाहा
९२३ ॐ दशप्राणाय स्वाहा
९२४ ॐ दशेन्द्रियनियामकाय स्वाहा
९२५ ॐ दशाक्षरमहामन्त्राय०
९२६ ॐ दशाशाव्यापिविग्रहाय स्वाहा
९२७ ॐ एकादशादिभीरुद्रैः स्तुताय स्वाहा
९२८ ॐ एकादशाक्षराय स्वाहा
९२९ ॐ द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय स्वाहा
९३० ॐ द्वादशान्तनिकेतनाय स्वाहा
९३१ ॐ त्रयोदशभिदाभिन्नविश्वेदेवाधिदैवताय स्वाहा
९३२ ॐ चतुर्दशेन्द्रवरदाय स्वाहा
९३३ ॐ चतुर्दशमनुप्रभवे स्वाहा
९३४ ॐ चतुर्दशादिविद्याढ्याय स्वाहा
९३५ ॐ चतुर्दशजगत्प्रभवे स्वाहा
९३६ ॐ सामपञ्चदशाय स्वाहा
९३७ ॐ पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय स्वाहा
९३८ ॐ षोडशाधारनिलयाय स्वाहा
९३९ ॐ षोडशस्वरमातृकाय स्वाहा
९४० ॐ षोशान्तपदावासाय स्वाहा
९४१ ॐ षोडशेन्दुकलात्मकाय स्वाहा

९४२ ॐ कलासप्तदश्यै स्वाहा
९४३ ॐ सप्तदशाय स्वाहा
९४४ ॐ सप्तदशाक्षराय स्वाहा
९४५ ॐ अष्टादशद्वीपपतये स्वाहा
९४६ ॐ अष्टादशपुराणकृते स्वाहा
९४७ ॐ अष्टादशौषधीसृष्टये स्वाहा
९४८ ॐ अष्टादशविधिस्मृताय स्वाहा
९४९ ॐ अष्टादशलिपिव्यष्टि-समष्टिज्ञानकोविदाय स्वाहा
९५० ॐ एकविंशायपुंसे स्वाहा
९५१ ॐ एकविंशत्यङ्गुलिपल्लवाय स्वाहा
९५२ ॐ चतुर्विंशतितत्त्वात्मने स्वाहा
९५३ ॐ पञ्चविंशाख्यपूरुषाय स्वाहा
९५४ ॐ सप्तविंशतितारेशाय स्वाहा
९५५ ॐ सप्तविंशतियोगकृते स्वाहा
९५६ ॐ द्वात्रिंशत्भैरवाधीशाय-स्वाहा
९५७ ॐ चतुस्त्रिंशन्महान्हृदाय स्वाहा
९५८ ॐ षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतये स्वाहा
९५९ ॐ अष्टात्रिंशत्कलातनवे स्वाहा
९६० ॐ नमदेकोनपञ्चाशन्मरु-द्गणनिरर्गलाय स्वाहा
९६१ ॐ पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै स्वाहा
९६२ ॐ पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय स्वाहा
९६३ ॐ पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय स्वाहा
९६४ ॐ पञ्चाशन्मातृकालयाय स्वाहा
९६५ ॐ द्विपञ्चाशद्वपुश्रेणये स्वाहा
९६६ ॐ त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयाय स्वाहा
९६७ ॐ चतुःषष्ट्यर्णनिर्णेत्रे स्वाहा
९६८ ॐ चतुःषष्टिकलानिधये स्वाहा
९६९ ॐ चतुःषष्टिमहासिद्धयो-गिनीवृन्दवन्दिताय स्वाहा

९७० ॐ अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्र-
भैरवभावनाय स्वाहा
९७१ ॐ चतुर्नवतिमन्त्रात्मने
स्वाहा
९७२ ॐ षण्णवत्यधिकप्रभवे
स्वाहा
९७३ ॐ शतानन्दाय स्वाहा
९७४ ॐ शतधृतये स्वाहा
९७५ ॐ शतपत्रायतेक्षणाय
स्वाहा
९७६ ॐ शतानीकाय स्वाहा
९७७ ॐ शतमखाय स्वाहा
९७८ ॐ शतधारावरायुधाय
स्वाहा
९७९ ॐ सहस्रपत्रनिलयाय स्वाहा
९८० ॐ सहस्रफणभूषणाय स्वाहा
९८१ ॐ सहस्रशीर्ष्णेपुरुषाय
स्वाहा
९८२ ॐ सहस्राक्षाय स्वाहा
९८३ ॐ सहस्रपदे स्वाहा
९८४ ॐ सहस्रनामसंस्तुत्याय
स्वाहा
९८५ ॐ सहस्राक्षबलापहाय स्वाहा
९८६ ॐ दशसाहस्रफणभृत्फणि-
राजकृतसनाय स्वाहा
९८७ ॐ अष्टाशीतिसहस्राद्यम-
हर्षिस्तोत्रयन्त्रिताय स्वाहा
९८८ ॐ लक्षाधीशप्रियाधाराय
स्वाहा
९८९ ॐ लक्षाधारमनोमयाय
स्वाहा
९९० ॐ चतुर्लक्षजपप्रीताय
स्वाहा
९९१ ॐ चतुर्लक्षप्रकाशिताय
स्वाहा
९९२ ॐ चतुरशीतिलक्षाणां
जीवानां देहसंस्थिताय स्वाहा
९९३ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाशाय
स्वाहा
९९४ ॐ कोटिचन्द्रांशुनिर्मलाय
स्वाहा
९९५ ॐ शिवाभवाध्युष्टकोटि-
विनायकधुरन्धराय स्वाहा
९९६ ॐ सप्तकोटिमहामन्त्र-
मन्त्रितावयवद्युतये स्वाहा
९९७ ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी-
प्रणतपादुकाय स्वाहा
९९८ ॐ अनन्तनाम्ने स्वाहा
९९९ ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा
१००० ॐ अनन्तानन्तसौख्य-
दाय स्वाहा

दुर्गा सहस्र

अथ दुर्गासहस्रनामावली

विनियोग:

ॐ एषां दकारादि-श्रीदुर्गासहस्रनाम्नां महामन्त्राणां श्रीशिवः साक्षात्कर्ता ऋषिः, श्रीदुर्गादेवता, दुँ बीजं, दुँ कीलकम्, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थे रोग-दारिद्र्य-दौर्भाग्य-शोक-दुःखविनाशनार्थे सर्वाशापूरणार्थे च हवने (पाठे) विनियोगः ।

१ ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा
२ ॐ दुर्गतिहरायै स्वाहा
३ ॐ दुर्गाचलनिवासिन्यै स्वाहा
४ ॐ दुर्गमार्गानुसंचारायै स्वाहा
५ ॐ दुर्गमार्गनिवासिन्यै स्वाहा
६ ॐ दुर्गमार्गप्रविष्टायै स्वाहा
७ ॐ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै स्वाहा
८ ॐ दुर्गमार्गकृतावासायै स्वाहा
९ ॐ दुर्गमार्गजयप्रियायै स्वाहा
१० ॐ दुर्गमार्गगृहीतार्चायै स्वाहा
११ ॐ दुर्गमार्गस्थितात्मिकायै स्वाहा
१२ ॐ दुर्गमार्गस्तुतिपरायै स्वाहा
१३ ॐ दुर्गमार्गस्मृतिपरायै स्वाहा
१४ ॐ दुर्गमार्गसदास्थाप्यै स्वाहा
१५ ॐ दुर्गमार्गरतिप्रियायै स्वाहा
१६ ॐ दुर्गमार्गस्थलस्थानायै स्वाहा
१७ ॐ दुर्गमार्गविलासिन्यै स्वाहा
१८ ॐ दुर्गमार्गव्यक्तवस्त्रायै स्वाहा
१९ ॐ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्यै स्वाहा

२० ॐ दुर्गासुरनिहन्त्र्यै स्वाहा
२१ ॐ दुर्गासुरनिषूदिन्यै स्वाहा
२२ ॐ दुर्गासुरहरायै स्वाहा
२३ ॐ दूत्यै स्वाहा
२४ ॐ दुर्गासुरविनाशिन्यै स्वाहा
२५ ॐ दुर्गासुरवधोन्मत्तायै स्वाहा
२६ ॐ दुर्गासुरवधोत्सुकायै स्वाहा
२७ ॐ दुर्गासुरवधोत्साहायै स्वाहा
२८ ॐ दुर्गासुरवधोद्यतायै स्वाहा
२९ ॐ दुर्गासुरवधप्रेप्सवे स्वाहा
३० ॐ दुर्गासुरमखान्तकृते स्वाहा
३१ ॐ दुर्गासुरध्वंसतोषायै स्वाहा
३२ ॐ दुर्गदानवदारिण्यै स्वाहा
३३ ॐ दुर्गविद्रावणकर्यै स्वाहा
३४ ॐ दुर्गविद्राविण्यै स्वाहा
३५ ॐ दुर्गविक्षोभणकर्यै स्वाहा
३६ ॐ दुर्गशीर्षनिकृन्तिन्यै स्वाहा
३७ ॐ दुर्गविध्वंसनकर्यै स्वाहा
३८ ॐ दुर्गदैत्यनिकृन्तिन्यै स्वाहा
३९ ॐ दुर्गदैत्यप्राणहरायै०
४० ॐ दुर्गदैत्यान्तकारिण्यै स्वाहा
४१ ॐ दुर्गदैत्यहरत्रात्रे स्वाहा
४२ ॐ दुर्गदैत्यासृगुन्मुदायै स्वाहा
४३ ॐ दुर्गदैत्याशनकर्यै स्वाहा
४४ ॐ दुर्गचर्माम्बरावृतायै स्वाहा
४५ ॐ दुर्गयुद्धोत्सवकर्यै स्वाहा
४६ ॐ दुर्गयुद्धविशारदायै स्वाहा
४७ ॐ दुर्गयुद्धासवरतायै स्वाहा
४८ ॐ दुर्गयुद्धविमर्दिन्यै ,,
४९ ॐ दुर्गयुद्धहास्यरतायै ,,
५० ॐ दुर्गयुद्धहासिन्यै ,,
५१ ॐ दुर्गयुद्धमहामत्तायै ,,

५२ ॐ दुर्गयुद्धानुसारिण्यै स्वाहा
५३ ॐ दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहायै ,,
५४ ॐ दुर्गदेशनिषेविण्यै ,,
५५ ॐ दुर्गदेशवासरतायै ,,
५६ ॐ दुर्गदेशविलासिन्यै ,,
५७ ॐ दुर्गदेशार्चनरतायै ,,
५८ ॐ दुर्गदेशजनप्रियायै ,,
५९ ॐ दुर्गमस्थानसंस्थानायै ,,
६० ॐ दुर्गमध्यानुसाधनायै ,,
६१ ॐ दुर्गमायै स्वाहा
६२ ॐ दुर्गमध्यानायै स्वाहा
६३ ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै ,,
६४ ॐ दुर्गमागमसंधानायै ,,
६५ ॐ दुर्गमागमसंस्तुतायै ,,
६६ ॐ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै ,,
६७ ॐ दुर्गमश्रुतिसंमतायै ,,
६८ ॐ दुर्गमश्रुतिमान्यायै ,,
६९ ॐ दुर्गमश्रुतिपूजितायै ,,
७० ॐ दुर्गमश्रुतिसुप्रीतायै ,,
७१ ॐ दुर्गमश्रुतिहर्षदायै ,,
७२ ॐ दुर्गमश्रुतिसंस्थानायै ,,
७३ ॐ दुर्गमश्रुतिमानितायै ,,
७४ ॐ दुर्गमाचारसन्तुष्टायै ,,
७५ ॐ दुर्गमाचारतोषितायै ,,
७६ ॐ दुर्गमाचारनिर्वृत्तायै ,,
७७ ॐ दुर्गमाचारपूजितायै स्वाहा
७८ ॐ दुर्गमाचारकलितायै ,,
७९ ॐ दुर्गमस्थानदायिन्यै ,,
८० ॐ दुर्गमप्रेमनिरतायै ,,
८१ ॐ दुर्गमद्रविणप्रदायै ,,
८२ ॐ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थायै ,,
८३ ॐ दुर्गमाम्बुजवासिन्यै ,,
८४ ॐ दुर्गनाडीमार्गगत्यै ,,
८५ ॐ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै ,,
८६ ॐ दुर्गनाडीपद्मरतायै ,,
८७ ॐ दुर्गनाड्यम्बुजस्थितायै ,,
८८ ॐ दुर्गनाडीगतायातायै ,,
८९ ॐ दुर्गनाडीकृतास्पदायै ,,
९० ॐ दुर्गनाडीरतरतायै ,,
९१ ॐ दुर्गनाडीशसंस्तुतायै ,,
९२ ॐ दुर्गनाडीश्वररतायै ,,
९३ ॐ दुर्गनाडीशचुम्बितायै ,,
९४ ॐ दुर्गनाडीशक्रोडस्थायै ,,
९५ ॐ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुकायै ,,
९६ ॐ दुर्गनाड्यारोहणायै ,,
९७ ॐ दुर्गनाडीनिषेवितायै ,,
९८ ॐ दरिस्थानायै ,,
९९ ॐ दरिस्थानवासिन्यै ,,
१०० ॐ दनुजान्तकृते ,,
१०१ ॐ दरीकृततपस्यायै ,,

१०२ ॐ दरीकृतहरार्चनायै स्वाहा	१२७ ॐ दानवारिकृतार्चायै स्वाहा
१०३ ॐ दरीज्ञापितदिष्टायै ,,	१२८ ॐ दानवारिविभूतिदायै ,,
१०४ ॐ दरीकृतरतिक्रियायै ,,	१२९ ॐ दानवारिमहानन्दायै०
१०५ ॐ दरीकृतहरार्हायै ,,	१३० ॐ दानवारिरतिप्रियायै०
१०६ ॐ दरीक्रीडितपुत्रिकायै ,,	१३१ ॐ दानवारिदानरतायै०
१०७ ॐ दरीसंदर्शनरतायै ,,	१३२ ॐ दानवारिकृतास्पदायै ,,
१०८ ॐ दरीरोपितवृश्चिकायै ,,	१३३ ॐ दानवारिस्तुतिरतायै ,,
१०९ ॐ दरीगुप्तिकौतुकाढ्या०	१३४ ॐ दानवारिस्मृतिप्रियायै ,,
११० ॐ दरीभ्रमणतत्परायै ,,	१३५ ॐ दानवार्याहाररतायै ,,
१११ ॐ दनुजान्तकर्यै ,,	१३६ ॐ दानवारिप्रबोधिन्यै ,,
११२ ॐ दीनायै ,,	१३७ ॐ दानवारिधृतप्रेमायै ,,
११३ ॐ दनुसंतानदारिण्यै ,,	१३८ ॐ दुःखशोकविमोचिन्यै ,,
११४ ॐ दनुजध्वंसिन्यै ,,	१३९ ॐ दुःखहन्त्र्यै स्वाहा
११५ ॐ दूतायै ,,	१४० ॐ दुःखदात्र्यै ,,
११६ ॐ दनुजेन्द्रविनाशिन्यै ,,	१४१ ॐ दुःखनिर्मूलकारिण्यै ,,
११७ ॐ दानवध्वंसिन्यै ,,	१४२ ॐ दुःखनिर्मूलनकर्यै ,,
११८ ॐ देव्यै ,,	१४३ ॐ दुःखदार्यरिनाशिन्यै ,,
११९ ॐ दानवानां भयंकर्यै ,,	१४४ ॐ दुःखहरायै ,,
१२० ॐ दानव्यै ,,	१४५ ॐ दुःखनाशायै ,,
१२१ ॐ दानवाराध्यायै ,,	१४६ ॐ दुःखग्रामायै ,,
१२२ ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै ,,	१४७ ॐ दुरासदायै ,,
१२३ ॐ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै ,,	१४८ ॐ दुःखहीनायै ,,
१२४ ॐ दानवद्वेषिणीसत्यै ,,	१४९ ॐ दुःखधीरायै ,,
१२५ ॐ दानवारिप्रेमरतायै ,,	१५० ॐ द्रविणाचारदायिन्यै ,,
१२६ ॐ दानवारिप्रपूजितायै०	१५१ ॐ द्रविणोत्सर्गसंतुष्टायै ,,

१५२ ॐ द्रविणत्यागतोषिकायै० १७७ ॐ दीनगेहत्रिलासिन्यै स्वाहा
१५३ ॐ द्रविणस्पर्शसंतुष्टायै स्वाहा १७८ ॐ दीनमात्रप्रेमरतायै ,,
१५४ ॐ द्रविणस्पर्शमानदायै ,, १७९ ॐ दीनमात्रविनोदिन्यै ,,
१५५ ॐ द्रविणस्पर्शहर्षाढ्यायै ,, १८० ॐ दीनमानवचेतःस्थायै ,,
१५६ ॐ द्रविणस्पर्शतुष्टिदायै ,, १८१ ॐ दीनमानवहर्षदायै ,,
१५७ ॐ द्रविणस्पर्शनकर्यै ,, १८२ ॐ दीनदैन्यविघातेच्छा०,,
१५८ ॐ द्रविणस्पर्शनातुरायै ,, १८३ ॐ दीनद्रविणदायिन्यै ,,
१५९ ॐ द्रविणस्पर्शनात्साहा०,, १८४ ॐ दीनसाधनसंतुष्टायै ,,
१६० ॐ द्रविणस्पर्शसाधितायै,, १८५ ॐ दीनदर्शनदायिन्यै ,,
१६१ ॐ द्रविणस्पर्शनमतायै ,, १८६ ॐ दीनपुत्रादिदात्र्यै ,,
१६२ ॐ द्रविणस्पर्शपुत्रिकायै ,, १८७ ॐ दीनसम्पद्विधानिण्यै,,
१६३ ॐ द्रविणस्पर्शरक्षिण्यै ,, १८८ ॐ दत्तात्रेयध्यानरतायै ,,
१६४ ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै ,, १८९ ॐ दत्तात्रेयप्रपूजितायै ,,
१६५ ॐ द्रविणाकर्षणकर्यै ,, १९० ॐ दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धायै ,,
१६६ ॐ द्रविणौघविसर्जिन्यै ,, १९१ ॐ दत्तात्रेयविभावितायै ,,
१६७ ॐ द्रविणाचलदानाढ्यायै,, १९२ ॐ दत्तात्रेयकृतार्हायै ,,
१६८ ॐ द्रविणाचलवासिन्यै ,, १९३ ॐ दत्तात्रेयप्रसाधितायै ,,
१६९ ॐ दीनमात्रे ,, १९४ ॐ दत्तात्रेयहर्षदात्र्यै ,,
१७० ॐ दीनबन्धवे ,, १९५ ॐ दत्तात्रेयसुखप्रदायै ,,
१७१ ॐ दीनविघ्नविनाशिन्यै ,, १९६ ॐ दत्तात्रेयस्तुतायै ,,
१७२ ॐ दीनसेव्यायै ,, १९७ ॐ दत्तात्रेयनुतायै ,,
१७३ ॐ दीनसिद्धायै ,, १९८ ॐ दत्तात्रेयप्रेमरतायै ,,
१७४ ॐ दीनसाध्यायै ,, १९९ ॐ दत्तात्रेयानुमानितायै ,,
१७५ ॐ दिगम्बर्यै ,, २०० ॐ दत्तात्रेयसद्गुणगीतायै ,,
१७६ ॐ दीनगेहकृतानन्दायै ,, २०१ ॐ दत्तात्रेयकुटुम्बिन्यै ,,

२०२ ॐ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै ,,
२०३ ॐ दत्तात्रेयशरीरिण्यै ,,
२०४ ॐ दत्तात्रेयकृतानन्दायै ,,
२०५ ॐ दत्तात्रेयांसलंभनायै ,,
२०६ ॐ दत्तात्रेयविभूतिस्थायै ,,
२०७ ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै ,,
२०८ ॐ दत्तात्रेयगीतिरतायै ,,
२०९ ॐ दत्तात्रेयधनप्रदायै ,,
२१० ॐ दत्तात्रेयदुःखहरायै ,,
२११ ॐ दत्तात्रेयवरप्रदायै ,,
२१२ ॐ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्यै ,,
२१३ ॐ दत्तात्रेयभयापहायै ,,
२१४ ॐ देवकन्यायै ,,
२१५ ॐ देवमान्यायै ,,
२१६ ॐ देवदुःखविनाशिन्यै ,,
२१७ ॐ देवसिद्धायै ,,
२१८ ॐ देवपूज्यायै ,,
२१९ ॐ देवेज्यायै ,,
२२० ॐ देववन्दितायै ,,
२२१ ॐ देवमान्यायै ,,
२२२ ॐ देवधन्यायै ,,
२२३ ॐ देवविघ्नविनाशिन्यै ,,
२२४ ॐ देवरम्यायै ,,
२२५ ॐ देवरतायै ,,
२२६ ॐ देवकौतुकतत्परायै ,,
२२७ ॐ देवक्रीडायै स्वाहा
२२८ ॐ देवव्रीडायै ,,
२२९ ॐ देववैरिविनाशिन्यै ,,
२३० ॐ देवकामायै स्वाहा ,,
२३१ ॐ देवरामायै ,,
२३२ ॐ देवद्विष्टविनाशिन्यै ,,
२३३ ॐ देवदेवप्रियायै ,,
२३४ ॐ देव्यै ,,
२३५ ॐ देवदानववन्दितायै ,,
२३६ ॐ देवदेवरतानन्दायै ,,
२३७ ॐ देवदेववरोत्सुकायै ,,
२३८ ॐ देवदेवप्रेमरतायै ,,
२३९ ॐ देवदेवप्रियंवदायै ,,
२४० ॐ देवदेवप्राणतुल्यायै ,,
२४१ ॐ देवदेवनितम्बिन्यै ,,
२४२ ॐ देवदेवहृतमनसे ,,
२४३ ॐ देवदेवसुखावहायै ,,
२४४ ॐ देवदेवक्रोडरतायै ,,
२४५ ॐ देवदेवसुखप्रदायै ,,
२४६ ॐ देवदेवमहानन्दायै ,,
२४७ ॐ देवदेवप्रचुम्बितायै ,,
२४८ ॐ देवदेवोपभुक्तायै ,,
२४९ ॐ देवदेवानुसेवितायै ,,
२५० ॐ देवदेवगतप्राणायै ,,
२५१ ॐ देवदेवगतात्मिकायै ,,

२५२ ॐ देवदेवहर्षदात्र्यै स्वाहा
२५३ ॐ देवदेवसुखप्रदायै स्वाहा
२५४ ॐ देवदेवमहानन्दायै स्वाहा
२५५ ॐ देवदेवविलासिन्यै स्वाहा
२५६ ॐ देवदेवधर्मपत्न्यै स्वाहा
२५७ ॐ देवदेवमनोगतायै स्वाहा
२५८ ॐ देवदेववध्वै स्वाहा
२५९ ॐ देवदेवार्चनप्रियायै स्वाहा
२६० ॐ देवदेवाङ्कनिलयायै स्वाहा
२६१ ॐ देवदेवाङ्गशायिन्यै स्वाहा
२६२ ॐ देवदेवाङ्गसुखिन्यै स्वाहा
२६३ ॐ देवदेवाङ्गवासिन्यै स्वाहा
२६४ ॐ देवदेवाङ्गभूषायै स्वाहा
२६५ ॐ देवदेवाङ्गभूषणायै स्वाहा
२६६ ॐ देवदेवप्रियकर्यै स्वाहा
२६७ ॐ देवदेवाप्रियान्तकृते स्वाहा
२६८ ॐ देवदेवप्रियप्राणायै स्वाहा
२६९ ॐ देवदेवप्रियात्मिकायै स्वाहा
२७० ॐ देवदेवार्चकप्राणायै स्वाहा
२७१ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै स्वाहा
२७२ ॐ देवदेवार्चकोत्साहायै स्वाहा
२७३ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै स्वाहा
२७४ ॐ देवदेवार्चकाविघ्नायै स्वाहा
२७५ ॐ देवदेवप्रस्वै स्वाहा
२७६ ॐ देवदेवस्य जनन्यै स्वाहा
२७७ ॐ देवदेवविधायिन्यै स्वाहा
२७८ ॐ देवदेवस्य रमण्यै स्वाहा
२७९ ॐ देवदेवहृदाश्रयायै स्वाहा
२८० ॐ देवदेवेष्टदेव्यै स्वाहा
२८१ ॐ देवतापसपातिन्यै स्वाहा
२८२ ॐ देवताभावसन्तुष्टायै स्वाहा
२८३ ॐ देवताभावतोषितायै स्वाहा
२८४ ॐ देवताभाववरदायै स्वाहा
२८५ ॐ देवताभावसिद्धिदायै स्वाहा
२८६ ॐ देवाताभावसंसिद्धायै स्वाहा

२८७ ॐ देवताभावसंभवायै स्वाहा
२८८ ॐ देवताभावसुखिन्यै स्वाहा
२८९ ॐ देवताभाववन्दितायै स्वाहा
२९० ॐ देवताभावसुप्रीतायै स्वाहा
२९१ ॐ देवताभावहर्षदायै स्वाहा
२९२ ॐ देवताविघ्नहन्त्र्यै स्वाहा
२९३ ॐ देवताद्विष्टनाशिन्यै स्वाहा
२९४ ॐ देवतापूजितपदायै स्वाहा
२९५ ॐ देवताप्रेमतोषितायै स्वाहा
२९६ ॐ देवतागारनिलयायै स्वाहा
२९७ ॐ देवतासौख्यदायिन्यै स्वाहा
२९८ ॐ देवतानिलभावायै स्वाहा
२९९ ॐ देवताहृतमानसायै स्वाहा
३०० ॐ देवताकृतपादार्चायै स्वाहा
३०१ ॐ देवताहृतभक्तिकायै स्वाहा
३०२ ॐ देवतागर्वमध्यस्थायै स्वाहा
३०३ ॐ देवतायै स्वाहा
३०४ ॐ देवतायै स्वाहा
३०५ ॐ दनवे स्वाहा
३०६ ॐ दुं दुर्गायै नमोनाम्न्यै स्वाहा
३०७ ॐ दुं फट् मन्त्रस्वरूपायै स्वाहा
३०८ ॐ दूं नमोमन्त्रस्वरूपायै स्वाहा
३०९ ॐ दृं नमोमूर्तिकात्मिकायै स्वाहा
३१० ॐ दूरदर्शिप्रियायै स्वाहा
३११ ॐ दुष्टायै स्वाहा
३१२ ॐ दुष्टभूतनिषेवितायै स्वाहा
३१३ ॐ दूरदर्शिप्रेमरतायै स्वाहा
३१४ ॐ दूरदर्शिप्रियंवदायै स्वाहा
३१५ ॐ दूरदर्शिसिद्धिदात्र्यै स्वाहा
३१६ ॐ दूरदर्शिप्रतोषितायै स्वाहा
३१७ ॐ दूरदर्शिकण्ठसंस्थायै स्वाहा

३१८ ॐ दूरदर्शिप्रहर्षितायै स्वाहा
३१९ ॐ दूरदर्शिगृहीतार्चायै स्वाहा
३२० ॐ दूरदर्शिप्रतर्पितायै स्वाहा
३२१ ॐ दूरदर्शिप्राणतुल्यायै स्वाहा
३२२ ॐ दूरदर्शिसुखप्रदायै स्वाहा
३२३ ॐ दूरदर्शिभ्रान्तिहरायै स्वाहा
३२४ ॐ दूरदर्शिहृदास्पदायै स्वाहा
३२५ ॐ दूरदर्श्यरिविद्भावायै स्वाहा
३२६ ॐ दीर्घदर्शिप्रमोदिन्यै स्वाहा
३२७ ॐ दीर्घदर्शिप्राणतुल्यायै स्वाहा
३२८ ॐ दीर्घदर्शिवरप्रदायै स्वाहा
३२९ ॐ दीर्घदर्शिहर्षदात्र्यै स्वाहा
३३० ॐ दीर्घदर्शिप्रहर्षितायै स्वाहा
३३१ ॐ दीर्घदर्शिमहानन्दायै स्वाहा
३३२ ॐ दीर्घदर्शिगृहालयायै स्वाहा
३३३ ॐ दीर्घदर्शिगृहीतार्चायै स्वाहा
३३४ ॐ दीर्घदर्शिहृतार्हणायै स्वाहा
३३५ ॐ दयायै स्वाहा
३३६ ॐ दानवत्यै स्वाहा
३३७ ॐ दात्र्यै स्वाहा
३३८ ॐ दयालवे स्वाहा
३३९ ॐ दीनवत्सलायै स्वाहा
३४० ॐ दयार्द्रायै स्वाहा
३४१ ॐ दयाशीलायै स्वाहा
३४२ ॐ दयाढ्यायै स्वाहा
३४३ ॐ दयात्मिकायै स्वाहा
३४४ ॐ दयायै स्वाहा
३४५ ॐ दानवत्यै स्वाहा
३४६ ॐ दात्र्यै स्वाहा
३४७ ॐ दयालवे स्वाहा
३४८ ॐ दीनवत्सलायै स्वाहा
३४९ ॐ दयार्द्रायै स्वाहा
३५० ॐ दयाशीलायै स्वाहा
३५१ ॐ दयाढ्यायै स्वाहा
३५२ ॐ दयात्मिकायै स्वाहा
३५३ ॐ दयाम्बुधये स्वाहा
३५४ ॐ दयासारायै स्वाहा
३५५ ॐ दयासागरपारगायै स्वाहा

३५६ ॐ दयासिन्धवे स्वाहा
३५७ ॐ दयाभारायै स्वाहा
३५८ ॐ दयावत्करुणाकर्यै स्वाहा
३५९ ॐ दयावद्वत्सलायै स्वाहा
३६० ॐ देव्यै स्वाहा
३६१ ॐ दयायै स्वाहा
३६२ ॐ दानरतायै स्वाहा
३६३ ॐ दयावद्भक्तिसुखिन्यै स्वाहा
३६४ ॐ दयावत्परितोषितायै स्वाहा
३६५ ॐ दयावत्स्नेहनिरतायै स्वाहा
३६६ ॐ दयावत्प्रतिपादिकायै स्वाहा
३६७ ॐ दयावत्त्राणकर्यै स्वाहा
३६८ ॐ दयावन्मुक्तिदायिन्यै स्वाहा
३६९ ॐ दयावद्भावसन्तुष्टायै ,,
३७० ॐ दयावत्परितोषितायै स्वाहा
३७१ ॐ दयावत्तारणपरायै स्वाहा
३७२ ॐ दयावत्सिद्धिदायिन्यै स्वाहा
३७३ ॐ दयावत्पुत्रवद्भावायै स्वाहा
३७४ ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै स्वाहा
३७५ ॐ दयावद्देहनिलयायै ,,
३७६ ॐ दयाबन्धवे ,,
३७७ ॐ दयाश्रयायै ,,
३७८ ॐ दयालुवात्सल्यकर्यै ,,
३७९ ॐ दयालुसिद्धिदायिन्यै ,,
३८० ॐ दयालुशरणासक्तायै ,,
३८१ ॐ दयालुर्देहमन्दिरायै ,,
३८२ ॐ दयालुभक्तिभावस्थायै ,,
३८३ ॐ दयालुप्राणरूपिण्यै ,,
३८४ ॐ दयालुसुखदायै ,,
३८५ ॐ दम्भायै ,,
३८६ ॐ दयालुप्रेमवर्षिण्यै ,,
३८७ ॐ दयालुवशगायै ,,
३८८ ॐ दीर्घायै ,,
३८९ ॐ दीर्घाङ्ग्यै ,,
३९० ॐ दीर्घलोचनायै ,,
३९१ ॐ दीर्घनेत्रायै ,,
३९२ ॐ दीर्घचक्षुषे ,,
३९३ ॐ दीर्घबाहुलतात्मिकायै ,,
३९४ ॐ दीर्घकेश्यै ,,
३९५ ॐ दीर्घमुख्यै ,,

३९६ ॐ दीर्घघोणायै स्वाहा
३९७ ॐ दारुणायै ,,
३९८ ॐ दारुणासुरहन्त्र्यै ,,
३९९ ॐ दारुणासुरदारिण्यै ,,
४०० ॐ दारुणाहवकर्त्र्यै ,,
४०१ ॐ दारुणाहवहर्षितायै ,,
४०२ ॐ दारुणाहवहोमाढ्यायै,,
४०३ ॐ दारुणाचलनाशिन्यै ,,
४०४ ॐ दारुणाचारनिरतायै ,,
४०५ ॐ दारुणोत्सवहर्षितायै ,,
४०६ ॐ दारुणोद्यतरूपायै ,,
४०७ ॐ दारुणारिनिवारिण्यै ,,
४०८ ॐ दारुणेक्षणसंयुक्तायै ,,
४०९ ॐ दोश्चतुष्कविराजितायै,,
४१० ॐ दशदोष्कायै ,,
४११ ॐ दशभुजायै ,,
४१२ ॐ दशबाहुविराजितायै ,,
४१३ ॐ दशास्त्रधारिण्यै ,,
४१४ ॐ देव्यै ,,
४१५ ॐ दशदिक्ख्यातविक्रमायै
स्वाहा
४१६ ॐ दशरथार्चितपदायै ,,
४१७ ॐ दाशरथिप्रियायै ,,
४१८ ॐ दाशरथिप्रेमतुष्टायै ,,
४१९ ॐ दाशरथिरतिप्रियायै ,,

४२० ॐ दाशरथिप्रियकर्यै स्वाहा
४२१ ॐ दाशरथिप्रियम्वदायै,,
४२२ ॐ दाशरथीष्टसंदात्र्यै ,,
४२३ ॐ दाशरथीष्टदेवतायै ,,
४२४ ॐ दाशरथिद्वेषनाशायै ,,
४२५ ॐ दाशरथ्यानुकूल्यदायै,,
४२६ ॐ दाशरथिप्रियतमायै ,,
४२७ ॐ दाशरथिप्रपूजितायै ,,
४२८ ॐ दशाननारिसम्पूज्यायै,,
४२९ ॐ दशाननारिदेवतायै ,,
४३० ॐ दशाननारिप्रमदायै ,,
४३१ ॐ दशाननारिजन्मभूम्यै,,
४३२ ॐ दशाननारिरतिदायै ,,
४३३ ॐ दशाननारिसेवितायै ,,
४३४ ॐ दशाननारिसुखदायै ,,
४३५ ॐ दशाननारिवैरिहृते ,,
४३६ ॐ दशाननारीष्टदेव्यै ,,
४३७ ॐ दशग्रीवारिवन्दितायै ,,
४३ ॐ दशग्रीवारिजनन्यै ,,
४३९ ॐ दशग्रीवारिभाविन्यै ,,
४४० ॐ दशग्रीवारिसहितायै ,,
४४१ ॐ दशग्रीवसमाजितायै ,,
४४२ ॐ दशग्रीवारि-रमण्यै ,,
४४३ ॐ दशग्रीववध्वे ,,
४४४ ॐ दशग्रीवनाशकर्त्र्यै ,,

४४५ ॐ दशग्रीववरप्रदायै स्वाहा
४४६ ॐ दशग्रीवपुरस्थायै ,,
४४७ ॐ दशग्रीववधोत्सुकायै ,,
४४८ ॐ दशग्रीवप्रीतिदात्र्यै ,
४४९ ॐ दशग्रीवविनाशिन्यै ,,
४५० ॐ दशग्रीवाहवकर्य्यै ,,
४५१ ॐ दशग्रीवानपायिन्यै ,,
४५२ ॐ दशग्रीवप्रिया-वन्द्यायै,,
४५३ ॐ दशग्रीव-हृतायै ,,
४५४ ॐ दशग्रीवाहितकर्य्यै ,,
४५५ ॐ दशग्रीवेश्वरप्रियायै ,,
४५६ ॐ दशग्रीवेश्वरप्राणायै ,,
४५७ ॐ दशग्रीव-वरप्रदायै ,,
४५८ ॐ दशग्रीवेश्वररतायै ,,
४५९ ॐ दशवर्षीयकन्यकायै ,,
४६० ॐ दशवर्षीयबालायै ,,
४६१ ॐ दशवर्षीयवासिन्यै ,,
४६२ ॐ दशपापहरायै ,,
४६३ ॐ दम्याय ,,
४६४ ॐ दशहस्तविभूषितायै ,,
४६५ ॐ दशशस्त्रलसद्दोष्कायै ,,
४६६ ॐ दशदिक्पालवन्दितायै ,,
४६७ ॐ दशावताररूपायै ,,
४६८ ॐ दशावताररूपिण्यै ,,
४६९ ॐ दशविद्याभिन्नदेव्यै ,,
४७० ॐ दशप्राणस्वरूपिण्यै स्वाहा
४७१ ॐ दशविद्यास्वरूपायै ,,
४७२ ॐ दशविद्यामय्यै ,,
२७३ ॐ दृक्स्वरूपायै ,,
२७४ ॐ दृक्प्रदात्र्यै ,,
४७५ ॐ दृग्रूपायै ,,
४७६ ॐ दृक्प्रकाशिन्यै ,,
४७७ ॐ दिगन्तरायै ,,
४७८ ॐ दिगन्तस्थायै ,,
४७९ ॐ दिगम्बरविलासिन्यै ,,
४८० ॐ दिगम्बरसमाजस्थायै ,,
४८१ ॐ दिगम्बरप्रपूजितायै ,,
४८२ ॐ दिगम्बरसहचर्य्यै ,,
४८३ ॐ दिगम्बरकृतास्पदायै ,,
४८४ ॐ दिगम्बरहृताचित्तायै ,,
४८५ ॐ दिगम्बरकथाप्रियायै ,,
४८६ ॐ दिगम्बरगुणरतायै ,,
४८७ ॐ दिगम्बरस्वरूपिण्यै ,,
४८८ ॐ दिगम्बरशिरोधार्य्यायै ,,
४८९ ॐ दिगम्बरहृताश्रयायै ,,
४९० ॐ दिगम्बरप्रेमरतायै ,,
४९१ ॐ दिगम्बररतातुरायै ,,
४९२ ॐ दिगम्बरीस्वरूपायै ,,
४९३ ॐ दिगम्बरीगणार्चितायै ,,
४९४ ॐ दिगम्बरीगणप्राणायै ,,

४९५ ॐ दिगम्बरीगणप्रियायै स्वाहा
४९६ ॐ दिगम्बरीगणाराध्यायै ,,
४९७ ॐ दिगम्बरगणेश्वर्यै ,,
४९८ ॐ दिगम्बरगणस्पर्श-मदिरापानविह्वलायै ,,
४९९ ॐ दिगम्बरीकोटिवृतायै ,,
५०० ॐ दिगम्बरीगणवृतायै ,,
५०१ ॐ दुरन्तायै ,,
५०२ ॐ दुष्कृतिहरायै ,,
५०३ ॐ दुर्ध्येयायै ,,
५०४ ॐ दुरतिक्रमायै ,,
५०५ ॐ दुरन्तदानवद्वेष्ट्र्यै ,,
५०६ ॐ दुरन्तदनुजान्तकृते ,,
५०७ ॐ दुरन्तपापहन्त्र्यै ,,
५०८ ॐ दस्रनिस्तारकारिण्यै ,,
५०९ ॐ दस्रमानससंस्थानायै ,,
५१० ॐ दस्रज्ञानविवर्धिन्यै ,,
५११ ॐ दस्रसंभोगजन्यै ,,
५१२ ॐ दस्रसंभोगदायिन्यै ,,
५१३ ॐ दस्रसंभोगभवनायै ,,
५१४ ॐ दस्रविद्याविधायिन्यै ,,
५१५ ॐ दस्रोद्वेगहरायै ,,
५१६ ॐ दस्रजनन्यै ,,
५१७ ॐ दस्रसुन्दर्यै ,,
५१८ ॐ दस्रभक्तिविधाज्ञानायै ,,
५१९ ॐ दस्रद्विष्टविनाशिन्यै स्वाहा
५२० ॐ दस्रापकारदमन्यै ,,
५२१ ॐ दस्रसिद्धिविधायिन्यै ,,
५२२ ॐ दस्रताराराधितायै ,,
५२३ ॐ दस्रमातृप्रपूजितायै ,,
५२४ ॐ दस्रदैन्यहरायै ,,
५२५ ॐ दस्रतातनिषेवितायै ,,
५२६ ॐ दस्रपितृशतज्योतिषे ,,
५२७ ॐ दस्रकौशलदायिन्यै ,,
५२८ ॐ दशशीर्षारिसहितायै ,,
५२९ ॐ दशशीर्षारिकामिन्यै ,,
५३० ॐ दशशीर्षपुर्यै ,,
५३१ ॐ देव्यै ,,
५३२ ॐ दशशीर्षसभाजितायै ,,
४३३ ॐ दशशीर्षारिसुप्रीतायै ,,
५३४ ॐ दशशीर्षवधुप्रियायै ,,
५३५ ॐ दशशीर्षशिरश्छेत्र्यै ,,
५३६ ॐ दशशीर्षनितम्बिन्यै ,,
५३७ ॐ दशशीर्षहरप्राणायै ,,
५३८ ॐ दशशीर्षहरात्मिकायै ,,
३३९ ॐ दशशीर्षहराराध्यायै ,,
५४० ॐ दशशीर्षारिवन्दितायै ,,
५४१ ॐ दशशीर्षारिसुखदायै ,,
५४२ ॐ दशशीर्षकपालिन्यै ,,
५४३ ॐ दशशीर्षज्ञानदात्र्यै ,,

५४४ ॐ दशशीर्षारिदेहिन्यै स्वाहा
५४५ ॐ दशशीर्षवधोपात्तश्री-
रामचन्द्ररूपतायै ,,
५४६ ॐ दशशीर्षराष्ट्रदेव्यै ,,
५४७ ॐ दशशीर्षारिसारिण्यै ,,
५४८ ॐ दशशीर्षभ्रातृतुष्टायै ,,
५४९ ॐ दशशीर्षवधूप्रियायै ,,
५५० ॐ दशशीर्षवधूप्राणायै ,,
५५१ ॐ दशशीर्षवधूरतायै ,,
५५२ ॐ दैत्यगुरुरतासाध्व्यै ,,
५५३ ॐ दैत्यगुरुप्रपूजितायै ,,
५५४ ॐ दैत्यगुरूपदेष्ट्र्यै ,,
५५५ ॐ दैत्यगुरुनिषेवितायै ,,
५५६ ॐ दैत्यगुरुमतप्राणायै ,,
५५७ ॐ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै ,,
५५८ ॐ दुरन्तदुःखशमन्यै ,,
५५९ ॐ दुरन्तदमनीतम्यै ,,
५६० ॐ दुरन्तशोकशमन्यै ,,
५६१ ॐ दुरन्तरोगनाशिन्यै ,,
५६२ ॐ दुरन्तवैरिदमन्यै ,,
५६३ ॐ दुरन्तदैत्यनाशिन्यै ,,
५६४ ॐ दुरन्तकलुशघ्न्यै ,,
५६५ ॐ दुष्कृतिस्तोमनाशिन्यै ,,
५६६ ॐ दुराशयायै ,,
५६७ ॐ दुराधारायै ,,
५६८ ॐ दुर्जयायै स्वाहा
५६९ ॐ दुष्टकामिन्यै ,,
५७० ॐ दर्शनीयायै ,,
५७१ ॐ दृश्यायै ,,
५७२ ॐ अदृश्यायै ,,
५७३ ॐ दृष्टिगोचरायै ,,
५७४ ॐ दूतीयागप्रियायै ,,
५७५ ॐ दूत्यै ,,
५७६ ॐ दूतीयागकरप्रियायै ,,
५७७ ॐ दूतीयागकरानन्दायै ,,
५७८ ॐ दूतीयागसुखप्रदायै ,,
५७९ ॐ दूतीयागकरायातायै ,,
५८० ॐ दूतीयागप्रमोदिन्यै ,,
५८१ ॐ दुर्वासःपूजितायै ,,
५८२ ॐ दुर्वासोमुनिभावितायै ,,
५८३ ॐ दुर्वासोऽर्चितपादायै ,,
५ ४ ॐ दुर्वासो मौनभावितायै ,,
५८५ ॐ दुर्वासोमुनिवन्द्यायै ,,
५८६ ॐ दुर्वासोमुनिदेवतायै ,,
५८७ ॐ दुर्वासोमुनिमात्रे ,,
५८८ ॐ दुर्वासोमुनिसिद्धिदायै ,,
५८९ ॐ दुर्वासोमुनिभावस्थायै ,,
५९० ॐ दर्वासोमुनिसेवितायै ,,
५९१ ॐ दुर्वासोमुनिचित्तस्थायै ,,
५९२ ॐ दुर्वासोमुनिमण्डितायै ,,

५९३ ॐ दुर्वासोमुनिसञ्चारायै	स्वाहा	६१८ ॐ दुरोन्मदायै	स्वाहा
५९४ ॐ दुर्वासोहृदयङ्गमायै	,,	६१९ ॐ दस्रसिद्धायै	,,
५९५ ॐ दुर्वासोहृदयाराध्यायै	,,	६२० ॐ दस्रसंस्थायै	,,
५९६ ॐ दुर्वासोहृत्सरोजगायै	,,	६२१ ॐ दस्रतापविमोचिन्यै	,,
५९७ ॐ दुर्वासस्तापसाराध्यायै	,,	६२२ ॐ दस्रक्षोभहरानित्यायै	,,
५९८ ॐ दुर्वासस्तापसाश्रयायै	,,	६२३ ॐ दस्रलोकगतात्मिकायै	,,
५९९ ॐ दुर्वासस्तापसरतायै	,,	६२४ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्यायै	,,
६०० ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै	,,	६२५ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनाप्रियायै	,,
६०१ ॐ दुर्वासामुनिकन्यायै	,,	६२६ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धायै	,,
६०२ ॐ दुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदायै	,,	६२७ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुकायै	,,
६०३ ॐ दरराज्यै	,,	६२८ ॐ दैत्यगुरुप्रियतमायै	,,
६०४ ॐ दरहरायै	,,	६२९ ॐ देवगुरुनिषेवितायै	,,
६०५ ॐ दरयुक्तायै	,,	६३० ॐ देवगुरुप्रसूरूपायै	,,
६०६ ॐ दरापायै	,,	६३१ ॐ देवगुरुकृतार्हणायै	,,
६०७ ॐ दरघ्न्यै	,,	६३२ ॐ देवगुरुप्रेमयुतायै	,,
६०८ ॐ दरहन्त्र्यै	,,	६३३ ॐ देवगुरुवनुमानितायै	,,
६०९ ॐ दरयुक्तायै	,,	६३४ ॐ देवगुरुप्रभावज्ञायै	,,
६१० ॐ दराश्रयायै	,,	६३५ ॐ देवगुरुसुखप्रदायै	,,
६११ ॐ दरस्मेरायै	,,	६३६ ॐ देवगुरुज्ञानदात्र्यै	,,
६१२ ॐ दरापाङ्ग्यै	,,	६३७ ॐ देवगुरुप्रमोदिन्यै	,,
६१३ ॐ दयादात्र्यै	,,	६३८ ॐ दैत्यस्त्रीगणसम्पूज्यायै	,,
६१४ ॐ दयाश्रयायै	,,	६३९ ॐ दैत्यस्त्रीगणपूजितायै	,,
६१५ ॐ दस्रपूज्यायै	,,	६४० ॐ दैत्यस्त्रीगणरूपायै	,,
६१६ ॐ दस्रमात्रे	,,	६४१ ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहारिण्यै	,,
६१७ ॐ दस्रदेव्यै	,,	६४२ ॐ देवस्त्रीगणपूज्यायै	,,

६४३ ॐ देवस्त्रीगणवन्दितायै स्वाहा
६४४ ॐ देवस्त्रीगणचित्तस्थायै ''
६४५ ॐ देवस्त्रीगणभूषितायै ''
६४६ ॐ देवस्त्रीगणसंसिद्धायै ''
६४७ ॐ देवस्त्रीगणतोषितायै ''
६४८ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुचामरवीजितायै ''
६४९ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपितायै ''
६५० ॐ देवाङ्गनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमायै ''
६५१ ॐ देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुकायै ''
६५२ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थदीपमालाविलोकनायै ''
६५३ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिन्यै ''
६५४ ॐ देवनारीकरगतवासकासवपापिन्यै ''
६५५ ॐ देवनारीकङ्कतिकाकृतकेशनिमार्जनायै ''
६५६ ॐ देवनारीसेव्यगात्रायै ''
६५७ ॐ देवनारीकृतोत्सुकायै ''
६५८ ॐ देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजितायै ''
६५९ ॐ देवनारीविचित्राङ्ग्यै स्वाहा
६६० ॐ देवस्त्रीदत्तभोजनायै ''
६६१ ॐ देवस्त्रीगणगीतायै ''
६६२ ॐ देवस्त्रीगीतसोत्सुकायै ''
६६३ ॐ देवस्त्रीनृत्यसुखिन्यै ''
६६४ ॐ देवस्त्रीनृत्यदर्शिन्यै ''
६६५ ॐ देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादपदाम्बुजायै ''
६६६ ॐ देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारुतल्पनिषेदुष्यै ''
६६७ ॐ देवनारी-चारुकराकलिताङ्घ्र्यादिदेहिकायै ''
६६८ ॐ देवनारीकरव्यग्रतालवृन्दमरुत्सुकायै ''
६६९ ॐ देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसायै ''
६७० ॐ देवकोटिस्तुतिनुतायै ''
६७१ ॐ देवकोटिकृतार्हणायै ''
६७२ ॐ देवकोटिगीतगुणायै ''
६७३ ॐ देवकोटिकृतस्तुत्यै ''
६७४ ॐ दन्तदष्ट्योद्वेगफलायै ''
६७५ ॐ देवकोलाहलाकुलायै ''
६७६ ॐ द्वेषरागपरित्यक्तायै ''
६७७ ॐ द्वेषरागविवर्जितायै ''
६७८ ॐ दामपूज्यायै ''

६७९ ॐ दामभूषायै स्वाहा
६८० ॐ दामोदरविनाशिन्यै ,,
६८१ ॐ दामोदरप्रेमरतायै ,,
६८२ ॐ दामोदरभगिन्यै ,,
६८३ ॐ दामोदरप्रस्वे ,,
६८४ ॐ दामोदरपत्न्यै ,,
६८५ ॐ दामोदरपतिव्रतायै ,,
६८६ ॐ दामोदराऽभिन्नदेहायै ,,
६८७ ॐ दामोदररतिप्रियायै ,,
६८८ ॐ दामोदराऽभिन्नतनवे ,,
६८९ ॐ दामोदरकृतास्पदायै ,,
६९० ॐ दामोदरकृतप्राणायै ,,
६९१ ॐ दामोदरगतात्मिकायै ,,
६९२ ॐ दामोदरकौतुकाढ्यायै ,,
६९३ ॐ दामोदरकलाकुलायै ,,
६९४ ॐ दामोदरालिङ्गिताङ्ग्यै ,,
६९५ ॐ दामोदरकुतूहलायै ,,
६९६ ॐ दामोदरकृताह्लादायै ,,
६९७ ॐ दामोदरसुचुम्बितायै ,,
६९८ ॐ दामोदरसुताकृष्टायै ,,
६९९ ॐ दामोदरसुखप्रदायै ,,
७०० ॐ दामोदरसहाढ्यायै ,,
७०१ ॐ दामोदरसहायिन्यै ,,
७०२ ॐ दामोदरगुणज्ञायै ,,
७०३ ॐ दामोदरवरप्रदायै ,,
७०४ ॐ दामोदरानुकूलायै स्वाहा
७०५ ॐ दामोदरनितम्बिन्यै ,,
७०६ ॐ दामोदरजलक्रीडाकुशलायै ,,
७०७ ॐ दर्शनप्रियायै ,,
७०८ ॐ दामोदरजलक्रीडात्यक्त-
स्वजनसौहृदायै ,,
७०९ ॐ दामोदरलसद्रासकेलि-
कौतुकिन्यै ,,
७१० ॐ दामोदरभ्रातृकायै ,,
७११ ॐ दामोदरपरायणायै ,,
७१२ ॐ दामोदरधरायै ,,
७१३ ॐ दामोदरवैरिविनाशिन्यै ,,
७१४ ॐ दामोदरोपजायायै ,,
७१५ ॐ दामोदरनिमन्त्रितायै ,,
७१६ ॐ दामोदरपराभूतायै ,,
७१७ ॐ दामोदरपराजितायै ,,
७१८ ॐ दामोदरसमाक्रान्तायै ,,
७१९ ॐ दामोदरहताशुभायै ,,
७२० ॐ दामोदरोत्सवरतायै ,,
७२१ ॐ दामोदरोत्सवावहायै ,,
७२२ ॐ दामोदरस्तन्यदात्र्यै ,,
७२३ ॐ दामोदरगवेषितायै ,,
७२४ ॐ दमयन्तीसिद्धिदात्र्यै ,,
७२५ ॐ दमयन्तीप्रसाधितायै ,,
७२६ ॐ दमयन्तीष्टदेव्यै ,,

७२७ ॐ दमयन्तीस्वरूपिण्यै स्वाहा
७२८ ॐ दमयन्तीकृतार्चायै ,,
७२९ ॐ दमनर्षिविभावितायै ,,
७३० ॐ दमनर्षिप्राणतुल्यायै ,,
७३१ ॐ दमनर्षिस्वरूपिण्यै ,,
७३२ ॐ दमनर्षिस्वरूपायै ,,
७३३ ॐ दम्भपूरितविग्रहायै ,,
७३४ ॐ दम्भहन्त्र्यै ,,
७३५ ॐ दम्भदात्र्यै ,,
७३६ ॐ दम्भलोकविमोहिन्यै ,,
७३७ ॐ दम्भशीलायै ,,
७३८ ॐ दम्भहरायै ,,
७३९ ॐ दम्भवत्परिमर्दिन्यै ,,
७४० ॐ दम्भरूपायै ,,
७४१ ॐ दम्भकर्यै ,,
७४२ ॐ दम्भसन्तानदारिण्यै ,,
७४३ ॐ दत्तमोक्षायै ,,
७४४ ॐ दत्तधनायै ,,
७४५ ॐ दत्तारोग्यायै ,,
७४६ ॐ दाम्भिकायै ,,
७४७ ॐ दत्तपुत्रायै ,,
७४८ ॐ दत्तदारायै ,,
७४९ ॐ दत्तहारायै ,,
७५० ॐ दारिकायै ,,
७५१ ॐ दत्तभोगायै ,,
७५२ ॐ दत्तशोकायै स्वाहा
७५३ ॐ दत्तहस्त्यादिवाहनायै ,,
७५४ ॐ दत्तमत्यै ,,
७५५ ॐ दत्तभार्यायै ,,
७५६ ॐ दत्तशास्त्रावबोधिकायै ,,
७५७ ॐ दत्तपानायै ,,
७५८ ॐ दत्तदानायै ,,
७५९ ॐ दत्तदारिद्र्यनाशिन्यै ,,
७६० ॐ दत्तसौधावनीवासायै ,,
७६१ ॐ दत्तस्वर्गायै ,,
७६२ ॐ दासदायै ,,
७६३ ॐ दास्यतुष्टायै ,,
७६४ ॐ दास्यहरायै ,,
७६५ ॐ दासदासीशतप्रदायै ,,
७६६ ॐ दाररूपायै ,,
७६७ ॐ दारवासायै ,,
७६८ ॐ दारवासिहृद्दास्पदायै ,,
७६९ ॐ दारवासिजनाराध्यायै ,,
७७० ॐ दारवासिजनप्रियायै ,,
७७१ ॐ दारवासिविनिर्मितायै ,,
७७२ ॐ दारवासिसमर्चितायै ,,
७७३ ॐ दारवास्याहृतप्राणायै ,,
७७४ ॐ दारवास्यरिनाशिन्यै ,,
७७५ ॐ दारवासिविघ्नहरायै ,,
७७६ ॐ दारवासिविमुक्तिदायै ,,

७७७ ॐ दाराग्निरूपिण्यै ,,
७७८ ॐ दारायै ,,
७७९ ॐ दारकार्यविनाशिन्यै ,,
७८० ॐ दम्पत्यै ,,
७८१ ॐ दम्पतीष्टायै ,,
७८२ ॐ दम्पतीप्राणरूपिकायै ,,
७८३ ॐ दम्पतीस्नेहनिरतायै ,,
७८४ ॐ दाम्पत्यसाधनप्रियायै ,,
७८५ ॐ दाम्पत्यसुखसेनायै ,,
७८६ ॐ दाम्पत्यसुखदायिन्यै ,,
७८७ ॐ दम्पत्याचारनिरतायै ,,
७८८ ॐ दम्पत्यामोदमोदितायै ,,
७८९ ॐ दम्पत्यामोदसुखिन्यै ,,
७९० ॐ दम्पत्याह्लादकारिण्यै ,,
७९१ ॐ दम्पतीष्टपादपद्मायै ,,
७९२ ॐ दाम्पत्यप्रेमरूपिण्यै ,,
७९३ ॐ दाम्पत्यभोगभवनायै ,,
७९४ ॐ दाडिमीफलभोजिन्यै ,,
७९५ ॐ दाडिमीफलसन्तुष्टायै ,,
७९६ ॐ दाडिमीफलमानसायै ,,
७९७ ॐ दाडिमीवृक्षसंस्थानायै ,,
७९८ ॐ दाडिमीवृक्षवासिन्यै ,,
७९९ ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै ,,
८०० ॐ दाडिमीवनवासिन्यै ,,
८०१ ॐ दाडिमीफलसाम्योरु-
प योधरसमन्वितायै ,,
८०२ ॐ दक्षिणायै ,,
८०३ ॐ दक्षिणारूपायै ,,
८०४ ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै ,,
८०५ ॐ दक्षकन्यायै ,,
८०६ ॐ दक्षपुत्र्यै ,,
८०७ ॐ दक्षमात्रे ,,
८०८ ॐ दक्षस्वे ,,
८०९ ॐ दक्षगोत्रायै ,,
८१० ॐ दक्षसुतायै ,,
८११ ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै ,,
८१२ ॐ दक्षयज्ञनाशकर्त्र्यै ,,
८१३ ॐ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै ,,
८१४ ॐ दक्षप्रसूत्यै ,,
८१५ ॐ दक्षेज्यायै ,,
८१६ ॐ दक्षवंशैकपावन्यै ,,
८१७ ॐ दक्षात्मजायै ,,
८१८ ॐ दक्षसूनवे ,,
८१९ ॐ दक्षजायै ,,
८२० ॐ दक्षजातिकायै ,,
८२१ ॐ दक्षजन्मने ,,
८२२ ॐ दक्षजनुषे ,,
८२३ ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै ,,
८२४ ॐ दक्षजनुषे ,,
८२५ ॐ दक्षयागध्वंसिन्यै ,,
८२६ ॐ दक्षकन्यकायै ,,

८२७ ॐ दक्षिणाचारनिरतायै स्वाहा
८२८ ॐ दक्षिणाचारतुष्टिदायै ,,
८२९ ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धायै ,,
८३० ॐ दक्षिणाचारभावितायै ,,
८३१ ॐ दक्षिणाचारसुखिन्यै ,,
८३२ ॐ दक्षिणाचारसाधितायै ,,
८३३ ॐ दक्षिणाचारमोक्षाप्त्यै ,,
८३४ ॐ दक्षिणाचारवन्दितायै ,,
८३५ ॐ दक्षिणाचारशरणायै ,,
८३६ ॐ दक्षिणाचारहर्षितायै ,,
८३७ ॐ द्वारपालप्रियायै ,,
८३८ ॐ द्वारवासिन्यै ,,
८३९ ॐ द्वारसंस्थितायै ,,
८४० ॐ द्वाररूपायै ,,
८४१ ॐ द्वारसंस्थायै ,,
८४२ ॐ द्वारदेशनिवासिन्यै ,,
८४३ ॐ द्वारकयै ,,
८४४ ॐ द्वारधात्र्यै ,,
८४५ ॐ दोषमात्रविवर्जितायै ,,
८४६ ॐ दोषकरायै ,,
८४७ ॐ दोषहरायै ,,
८४८ ॐ दोषराशिविनाशिन्यै ,,
८४९ ॐ दोषाकरविभूषाढ्यायै ,,
८५० ॐ दोषाकरकपालिन्यै ,,
८५१ ॐ दोषाकरसहस्राभायै ,,
८५२ ॐ दोषाकरसमाननायै स्वाहा
८५३ ॐ दोषाकरमुख्यै ,
८५४ ॐ दिव्यायै ,
८५५ ॐ दोषाकरवराग्रजायै ,
८५६ ॐ दोषाकरसमज्योतिषे ,
८५७ ॐ दोषाकरसुशीतलायै ,
८५८ ॐ दोषाकरश्रेण्यै ,
८५९ ॐ दोषसदृशापाङ्गवीक्षणायै ,
८६० ॐ दोषाकरेष्टदेव्यै ,
८६१ ॐ दोषाकरनिषेवितायै ,
८६२ ॐ दोषाकरप्राणरूपायै ,
८६३ ॐ दोषाकरमरीचिकायै ,
८६४ ॐ दोषाकरोल्लसद्भालायै ,
८६५ ॐ दोषाकरसुहर्षिण्यै ,
८६६ ॐ दोषाकरशिरोभूषायै ,
८६७ ॐ दोषाकरवधूप्रियायै ,
८६८ ॐ दोषाकरवधूप्राणायै ,
८६९ ॐ दोषाकरवधूमतायै ,
८७० ॐ दोषाकरवधूप्रीतायै ,
८७१ ॐ दोषाकरवध्वै ,
८७२ ॐ दोषापूज्यायै ,
८७३ ॐ दोषापूजितायै ,
८७४ ॐ दोषहारिण्यै ,
८७५ ॐ दोषाजापमहानन्दायै ,
८७६ ॐ दोषाजापपरायणायै ,

८७७ ॐ दोषापुरश्चाररतायै स्वाहा
८७८ ॐ दोषापूजकपुत्रिण्यै ,,
८७९ ॐ दोषापूजकवात्सल्यकारिणीजगदम्बिकायै ,,
८८० ॐ दोषापूजकवैरिघ्न्यै ,,
८८१ ॐ दोषापूजकविघ्नहृते ,,
८८२ ॐ दोषापूजकसन्तुष्टायै ,,
८८३ ॐ दोषापूजकमुक्तिदायै ,,
८८४ ॐ दमप्रसूनसम्पूज्यायै ,,
८८५ ॐ दमपुष्पप्रियायै ,,
८८६ ॐ दुर्योधनप्रपूज्यायै ,,
८८७ ॐ दुःशासनसमर्चितायै ,,
८८८ ॐ दण्डपाणिप्रियायै ,,
८८९ ॐ दण्डपाणिमात्रे ,,
८९० ॐ दयानिधये ,,
८९१ ॐ दण्डपाणिसमाराध्यायै ,,
८९२ ॐ दण्डपाणिप्रपूजितायै ,,
८९३ ॐ दण्डपाणिगृहासक्तायै ,,
८९४ ॐ दण्डपाणिप्रियंवदायै ,,
८९५ ॐ दण्डपाणिप्रियतमायै ,,
८९६ ॐ दण्डपाणिमनोहरायै ,,
८९७ ॐ दण्डपाणिहृतप्राणायै ,,
८९८ ॐ दण्डपाणिसुसिद्धिदायै ,,
८९९ ॐ दण्डपाणिपरामृष्टायै ,,
९०० ॐ दण्डपाणिप्रहर्षितायै ,,
९०१ ॐ दण्डपाणिविघ्नहरायै स्वाहा
९०२ ॐ दण्डपाणिशिरोधृतायै ,,
९०३ ॐ दण्डपाणिप्राप्तचर्यायै ,,
९०४ ॐ दण्डपाण्युन्मुख्यै ,,
९०५ ॐ दण्डपाणिप्राप्तपदायै ,,
९०६ ॐ दण्डपाणिवरोन्मुख्यै ,,
९०७ ॐ दण्डहस्तायै ,,
९०८ ॐ दण्डपाण्यै ,,
९०९ ॐ दण्डबाहवे ,,
९१० ॐ दरान्तकृते ,,
९११ ॐ दण्डदोष्कायै ,,
९१२ ॐ दण्डकरायै ,,
९१३ ॐ दण्डचित्तकृतास्पदायै ,,
९१४ ॐ दण्डिविद्यायै ,,
९१५ ॐ दण्डिमात्रे ,,
९१६ ॐ दण्डिखण्डकनाशिन्यै ,,
९१७ ॐ दण्डिप्रियायै ,,
९१८ ॐ दण्डिपूज्यायै ,,
९१९ ॐ दण्डिसन्तोषदायिन्यै ,,
९२० ॐ दस्युपूज्यायै ,,
९२१ ॐ दस्युरतायै ,,
९२२ ॐ दस्युद्रविणदायिन्यै ,,
९२३ ॐ दस्युवर्गकृतार्हायै ,,
९२४ ॐ दस्युवर्गविनाशिन्यै ,,
९२५ ॐ दस्युनिर्णाशिन्यै ,,

९२६	ॐ दस्युकुलनिर्णाशिन्यै	स्वाहा	९५१	ओं दाम्भर्यायै	स्वाहा
९२७	ॐ दस्युप्रियकर्यै	,,	९५२	ओं दर्वीपात्रानुदामिन्यै	,,
९२८	ॐ दस्युनृत्यदर्शनतत्परायै	,,	९५३	ओं दमघोषप्रपूज्यायै	,,
९२९	ॐ दुष्टदण्डकर्यै	,,	९५४	ओं दमघोषवरदायै	,,
९३०	ॐ दुष्टवर्गविद्राविण्यै	,,	९५५	ओं दमघोषसमाराध्यायै	,,
९३१	ॐ दुष्टवर्गनिग्रहार्हायै	,,	९५६	ओं दावाग्निरूपिण्यै	,,
९३२	ॐ दूषकप्राणनाशिन्यै	,,	९५७	ओं दावाग्निरूपायै	,,
९३३	ॐ दूषकोत्तापजनन्यै	,,	९५८	ओं दावाग्निनिर्णाशित-महाबलायै	,,
९३४	ॐ दूषकारिष्टकारिण्यै	,,			
९३५	ॐ दूषकद्वेषणकर्यै	,,	९५९	ओं दन्तदंष्ट्रासुरकलायै	,,
९३६	ॐ दाहिकायै	,,	९६०	ओं दन्तचर्चितहस्तिकायै	,,
९३७	ॐ दहनात्मिकायै	,,	९६१	ओं दन्तदंष्ट्रस्यन्दनायै	,,
९३८	ॐ दारुकारिनिहन्त्र्यै	,,	९६२	ओं दन्तनिर्णाशितासुरायै	,,
९३९	ॐ दारुकेश्वरपूजितायै	,,	९६३	ओं दधिपूज्यायै	,,
९४०	ॐ दारुकेश्वरमात्रे	,,	९६४	ओं दधिप्रीतायै	,,
९४१	ॐ दारुकेश्वरवन्दितायै	,,	९६५	ओं दधीचिरवदायिन्यै	,,
९४२	ॐ दर्भहस्तायै	,,	९६६	ओं दधीचीष्टदेवतायै	,,
९४३	ओं दर्भयुतायै	,,	९६७	ओं दधीचिमोक्षदायिन्यै	,,
९४४	ओं दर्भकर्मविवर्जितायै	,,	९६८	ओं दधीचिदैन्यहन्त्र्यै	,,
९४५	ओं दर्भमय्यै	,,	९६९	ओं दधीचिदरदारिण्यै	,,
९४६	ओं दर्भतनवे	,,	९७०	ओं दधीचिभक्तिसुखिन्यै	,,
९४७	ओं दर्भसर्वस्वरूपिण्यै	,,	९७१	ओं दधीचिमुनिसेवितायै	,,
९४८	ओं दर्भकर्माचाररतायै	,,	९७२	ओं दधीचिज्ञानदात्र्यै	,,
९४९	ओं दर्भहस्तकृतार्हणायै	,,	९७३	दधीचिगुणदायिन्यै	,,
९५०	ओं दर्भानुकूलायै	,,	९७४	ओं दधीचिकुलसम्भूषायै	,,

९७५ ॐ दधीचिभुक्तिमुक्तिदायै स्वाहा
९७६ ॐ दधीचिकुलदेव्यै ,,
९७७ ॐ दधीचिकुलदेवतायै ,,
९७८ ॐ दधीचिकुलगम्यायै ,,
९७९ ॐ दधीचिकुलपूजितायै ,,
९८० ॐ दधीचिसुखदात्र्यै ,,
९८१ ॐ दधीचिदैन्यहारिण्यै ,,
९८२ ॐ दधीचिदुःखहन्त्र्यै ,,
९८३ ॐ दधीचिकुलसुन्दर्यै ,,
९८४ ॐ दधीचिकुलसम्भूतायै ,,
९८५ ॐ दधीचिकुलपालिन्यै ,,
९८६ ॐ दधीचिदानगम्यायै ,,
९८७ ॐ दधीचिदानमानिन्यै ,,
९८८ ॐ दधीचिदानसन्तुष्टायै ,,
९८९ ॐ दधीचिदानदेवतायै स्वाहा
९९० ॐ दधीचिजयसंप्रीतायै ,,
९९१ ॐ दधीचिजपमानसायै ,,
९९२ ॐ दधीचिजपपूजाढ्यायै ,,
९९३ ॐ दधीचिजपमालिकायै ,,
९९४ ॐ दधीचिजपसन्तुष्टायै ,,
९९५ ॐ दधीधिजपतोषिण्यै ,,
९९६ ॐ दधीचितापसाराध्यायै ,,
९९७ ॐ दधीचिशुभदायिन्यै
९९८ ॐ दूर्वायै ,,
९९९ ॐ दूर्वादलश्यामायै ,,
१००० ॐ दूर्वादलसमद्युतये ,,

इति दुर्गाया दकारादिसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारः समाप्तः ।

अथ लक्ष्मीसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः

विनियोगः

अस्य श्रीमहालक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य श्रीमहाविष्णुर्भगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ह्रैं कीलकम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थे होमे (पूजने) विनियोगः ।

ध्यानम्-

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥

अमलकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिमुकुटविचित्रालङ्कृताकल्पजालै-
र्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥२॥

१ ॐ श्रियै	स्वाहा	१० ॐ त्यक्तभीत्यै	स्वाहा
२ ॐ वासुदेवमहिष्यै	,,	११ ॐ सर्वजगन्मय्यै	,,
३ ॐ पुंप्रधानेश्वरेश्वर्यै	,,	१२ ॐ षाड्गुण्यपूर्णायै	,,
४ ॐ अचिन्त्यानन्तविभवायै	,,	१३ ॐ त्रय्यन्तरूपायै	,,
		१४ ॐ आत्मानपगामिन्यै	,,
५ ॐ भावाभावविभाविन्यै	,,	१५ ॐ एकयोग्यायै	,,
६ ॐ अहंभावात्मिकायै	,,	१६ ॐ अशून्यभावाकृत्यै	,,
७ ॐ पद्मायै	,,	१७ ॐ तेजःप्रभाविन्यै	,,
८ ॐ शान्तानन्तजितात्मिकायै स्वाहा	,,	१८ ॐ भाव्याभावकभावायै	,,
		१९ ॐ आत्मभाव्यायै	,,
९ ॐ ब्रह्मभावंगतायै	,,	२० ॐ कामदुहे	,,

२१ ॐ आत्मभुवे	स्वाहा	४६ ॐ आत्माग्रतःस्थितायै	स्वा०
२२ ॐ भावाभावमय्यै	,,	४७ ॐ आज्ञासमविभक्ताङ्ग्यै	,,
२३ ॐ दिव्यायै	,,	४८ ॐ ज्ञानानन्दक्रियामय्यै	,,
२४ ॐ भेदाभेदकभावनायै	,,	४९ ॐ स्वातन्त्र्यरूपायै	,,
२५ ॐ जगत्कुटुम्बिन्यै	,,	५० ॐ देवोरःस्थितायै	,,
२६ ॐ अखिलाधारायै	,,	५१ ॐ तद्धर्मधर्मिण्यै	,,
२७ ॐ कामविजृम्भिण्यै	,,	५२ ॐ सर्वभूतेश्वर्यै	,,
२८ ॐ पञ्चकृत्यकर्यै	,,	५३ ॐ सर्वभूतमात्रे	,,
२९ ॐ पञ्चशक्तिमय्यै	,,	५४ ॐ आत्ममोहिन्यै	,,
३० ॐ आत्मवल्लभायै	,,	५५ ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै	,,
३१ ॐ भावाभावानुगायै	,,	५६ ॐ सर्वव्यापिन्यै	,,
३२ ॐ सर्वसम्मतायै	,,	५७ ॐ प्राप्तयोगिन्यै	,,
३३ ॐ आत्मोपगूहिन्यै	,,	५८ ॐ विमुक्तिदायिन्यै	,,
३४ ॐ अपृथक्चारिण्यै	,,	५९ ॐ भक्तगम्यायै	,,
३५ ॐ सौम्यायै	,,	६० ॐ संसारतारिण्यै	,,
३६ ॐ सौम्यरूपायै	,,	६१ ॐ धर्मार्थवादिन्यै	,,
३७ ॐ अव्यवस्थितायै	,,	६२ ॐ व्योमनिलयायै	,,
३८ ॐ आद्यन्तरहितायै	,,	६३ ॐ व्योमविग्रहायै	,,
३९ ॐ देव्यै	,,	६४ ॐ पञ्चव्योमपद्यै	,,
४० ॐ भवभाव्यस्वरूपिण्यै	,,	६५ ॐ रक्षव्यावृत्यै	,,
४१ ॐ महाविभूत्यै	,,	६६ ॐ प्राप्यपूरिण्यै	,,
४२ ॐ समतांगतायै	,,	६७ ॐ आनन्दरूपायै	,,
४३ ॐ ज्योतिर्गणेश्वर्यै	,,	६८ ॐ सर्वाप्तिशालिन्यै	,,
४४ ॐ सर्वकार्यकर्यै	,,	६९ ॐ शक्तिनायिकायै	,,
४५ ॐ धर्मस्वभावायै	,,	७० ॐ हिरण्यवर्णायै	,,

७१ ॐ हैरण्यप्राकारायै स्वाहा

७२ ॐ हेममालिन्यै ,,

७३ ॐ प्रस्फुरत्तायै ,,

७४ ॐ भद्रहोमायै ,,

७५ ॐ वेशिन्यै ,,

७६ ॐ रजतस्रजायै ,,

७७ ॐ स्वाज्ञाकार्यमरायै ,,

७८ ॐ नित्यसुरभ्यै ,,

७९ ॐ व्योमचारिण्यै ,,

८० ॐ योगक्षेमवहायै ,,

८१ ॐ सर्वसुलभायै ,,

८२ ॐ इच्छाक्रियात्मिकायै ,,

८३ ॐ महासमूहायै ,,

८४ ॐ निखिलप्ररोहायै ,,

८५ ॐ वेदगोचरायै ,,

८६ ॐ विस्मयाधायिन्यै ,,

८७ ॐ ब्रह्मसंहितायै ,,

८८ ॐ सुगुणोत्तरायै ,,

८९ ॐ प्रज्ञापरिमितायै ,,

९० ॐ आत्मानुरूपायै ,,

९१ ॐ सत्योपायार्जितायै ,,

९२ ॐ मनोज्ञेयायै ,,

९३ ॐ ज्ञानगम्यायै ,,

९४ ॐ नित्यमुक्तायै ,,

९५ ॐ आत्मसेविन्यै ,,

९६ ॐ कर्तृशक्त्यै स्वाहा

९७ ॐ सुगहनायै ,,

९८ ॐ भोक्तृशक्त्यै ,,

९९ ॐ गुणप्रियायै ,,

१०० ॐ ज्ञानशक्त्यै ,,

१०१ ॐ अनौपम्यायै ,,

१०२ ॐ परशक्त्यै ,,

१०३ ॐ निरामयायै ,,

१०४ ॐ अकलङ्कायै ,,

१०५ ॐ महाशक्त्यै ,,

१०६ ॐ निराधारायै ,,

१०७ ॐ विकासिन्यै ,,

१०८ ॐ महामायायै ,,

१०९ ॐ महानन्दायै ,,

११० ॐ ब्रह्मनीत्यै ,,

१११ ॐ निराश्रयायै ,,

११२ ॐ एकस्वरूपायै ,,

११३ ॐ त्रिविधायै ,,

११४ ॐ संख्यातीतायै ,,

११५ ॐ निरंजनायै ,,

११६ ॐ आत्मसत्तायै ,,

११७ ॐ नित्यशुचये ,,

११८ ॐ निर्विकल्पायै ,,

११९ ॐ सुखोचितायै ,,

१२० ॐ नित्यशान्तायै ,,

१२१ ॐ निस्तरङ्गायै स्वाहा
१२२ ॐ निर्भिन्नायै ,,
१२३ ॐ सर्वभेदिन्यै ,,
१२४ ॐ असंकीर्णायै ,,
१२५ ॐ अविधेयात्मने ,,
१२६ ॐ निषेद्ध्यायै ,,
१२७ ॐ सर्वपावन्यै ,,
१२८ ॐ निष्कामनायै ,,
१२९ ॐ सर्वरसायै ,,
१३० ॐ अभेद्यायै ,,
१३१ ॐ सर्वार्थसाधिन्यै ,,
१३२ ॐ अनिर्देश्यायै ,,
१३३ ॐ अपरिमितायै ,,
१३४ ॐ निर्विकारायै ,,
१३५ ॐ त्रिलक्षणायै ,,
१३६ ॐ अभयङ्कर्यै ,,
१३७ ॐ स्त्रीस्वरूपायै ,,
१३८ ॐ अव्यक्तायै ,,
१३९ ॐ सदसदाकृत्यै ,,
१४० ॐ अप्रतर्क्यायै ,,
१४१ ॐ अप्रतिहतायै ,,
१४२ ॐ नियन्त्र्यै ,,
१४३ ॐ यन्त्रग्राहिन्यै ,,
१४४ ॐ हार्दमूर्त्यै ,,
१४५ ॐ महामूर्त्यै ,,
१४६ ॐ अव्यक्तायै स्वाहा
१४७ ॐ विश्वगोपिन्यै ,,
१४८ ॐ वर्धमानायै ,,
१४९ ॐ अनवद्याङ्ग्यै ,,
१५० ॐ निरवद्यायै ,,
१५१ ॐ त्रिवर्गदायै ,,
१५२ ॐ अप्रमेयायै ,,
१५३ ॐ अमृतदुघायै ,,
१५४ ॐ कूटस्थायै ,,
१५५ ॐ कुलनन्दिन्यै ,,
१५६ ॐ अग्निगीतायै ,,
१५७ ॐ तन्त्रसिद्धायै ,,
१५८ ॐ योगसिद्ध्यायै ,,
१५९ ॐ अमरेश्वर्यै ,,
१६० ॐ विश्वसूत्यै ,,
१६१ ॐ तर्पयन्त्यै ,,
१६२ ॐ नित्यतृप्तायै ,,
१६३ ॐ महोषध्यै ,,
१६४ ॐ शब्दात्ययायै ,,
१६५ ॐ शब्दसहायै ,,
१६६ ॐ कृतज्ञायै ,,
१६७ ॐ कृतलक्षणायै ,,
१६८ ॐ त्रिवर्तिन्यै ,,
१६९ ॐ त्रिलोकस्थायै ,,
१७० ॐ भूर्भुवःस्वरयोनिजायै ,,

१७१ ॐ अग्राह्यायै	स्वाहा	१९६ ॐ परमाप्तायै	स्वाहा
१७२ ॐ अग्राह्यकायै	,,	१९७ ॐ जगन्निधये	,,
१७३ ॐ अनन्ताह्वयायै	,,	१९८ ॐ आत्मानपायिन्यै	,,
१७४ ॐ सर्वातिशायिन्यै	,,	१९९ ॐ तुल्यस्वरूपायै	,,
१७५ ॐ व्योमपद्मायै	,,	२०० ॐ समलक्षणायै	,,
१७६ ॐ कृतधुरायै	,,	२०१ ॐ तुल्यवृत्तायै	,,
१७७ ॐ पूर्णकामायै	,,	२०२ ॐ समवयसे	,,
१७८ ॐ महेश्वर्यै	,,	२०३ ॐ मोदमानायै	,,
१७९ ॐ सुवाच्यायै	,,	२०४ ॐ खगध्वजायै	,,
१८० ॐ वाचिकायै	,,	२०५ ॐ तुल्यचेष्टायै	,,
१८१ ॐ सत्यकथनायै	,,	२०६ ॐ तुल्यशीलायै	,,
१८२ ॐ सर्वपाविन्यै	,,	२०७ ॐ वरदायै	,,
१८३ ॐ लक्ष्यमाणायै	,,	२०८ ॐ कामरूपिण्यै	,,
१८४ ॐ लक्षयन्त्यै	,,	२०९ ॐ समग्रलक्षणायै	,,
१८५ ॐ जगज्ज्येष्ठायै	,,	२१० ॐ अनन्तायै	,,
१८६ ॐ शुभावहायै	,,	२११ ॐ तुल्यभूत्यै	,,
१८७ ॐ जगत्प्रतिष्ठायै	,,	२१२ ॐ सनातनायै	,,
१८८ ॐ भुवनभर्त्र्यै	,,	२१३ ॐ महर्द्ध्यै	,,
१८९ ॐ गूढप्रभाविन्यै	,,	२१४ ॐ सत्यसंकल्पायै	,,
१९० ॐ क्रियायोगात्मिकायै	,,	२१५ ॐ भूमिजायै	,,
१९१ ॐ मूर्तायै	,,	२१६ ॐ परमेश्वर्यै	,,
१९२ ॐ हृदब्जस्थायै	,,	२१७ ॐ जगन्मात्रे	,,
१९३ ॐ महाक्रमायै	,,	२१८ ॐ सूत्रवत्यै	,,
१९४ ॐ परमदिवे	,,	२१९ ॐ भूतधात्र्यै	,,
१९५ ॐ प्रथमजायै	,,	२२० ॐ यशस्विन्यै	,,

२२१ ॐ महाभिलापायै	स्वाहा	२४६ ॐ स्वस्तिकृयै	स्वाहा
२२२ ॐ सावित्र्यै	,,	२४७ ॐ राज्यलक्ष्म्यै	,,
२२३ ॐ प्रधानायै	,,	२४८ ॐ महासत्यै	,,
२२४ ॐ सर्वभासिन्यै	,,	२४९ ॐ जयलक्ष्म्यै	,,
२२५ ॐ नानावपुषे	,,	२५० ॐ महागोष्ठ्यै	,,
२२६ ॐ बहुविधायै	,,	२५१ ॐ मघोन्यै	,,
२२७ ॐ सर्वज्ञायै	,,	२५२ ॐ माधवप्रियायै	,,
२२८ ॐ पुण्यकीर्तनायै	,,	२५३ ॐ पद्मगर्भायै	,,
२२९ ॐ भूताश्रयायै	,,	२५४ ॐ वेदवत्यै	,,
२३० ॐ हृषीकेशायै	,,	२५५ ॐ विविक्तायै	,,
२३१ ॐ अशोकायै	,,	२५६ ॐ परमेष्ठिन्यै	,,
२३२ ॐ स्वाङ्गिवाहिकायै	,,	२५७ ॐ सुवर्णविन्दवे	,,
२३३ ॐ ब्रह्मात्मिकायै	,,	२५८ ॐ महत्यै	,,
२३४ ॐ पुण्यजन्यै	,,	२५९ ॐ महायोगिप्रियायै	,,
२३५ ॐ सत्यकामायै	,,	२६० ॐ अनघायै	,,
२३६ ॐ समाधिभुवे	,,	२६१ ॐ पद्मे स्थितायै	,,
२३७ ॐ हिरण्यगर्भायै	,,	२६२ ॐ वेदमय्यै	,,
२३८ ॐ गम्भीरायै	,,	२६३ ॐ कुमुदायै	,,
२३९ ॐ गोधूल्यै	,,	२६४ ॐ जयवाहिन्यै	,,
२४० ॐ कमलासनायै	,,	२६५ ॐ संहृत्यै	,,
२४१ ॐ जितक्रोधायै	,,	२६६ ॐ निर्मितायै	,,
२४२ ॐ कुमुदिन्यै	,,	२६७ ॐ ज्योतिषे	,,
२४३ ॐ वैजयन्त्यै	,,	२६८ ॐ नियत्यै	,,
२४४ ॐ मनोजवायै	,,	२६९ ॐ विविधोत्सवायै	,,
२४५ ॐ धनलक्ष्म्यै	,,	२७० ॐ रुद्रवन्द्यायै	,,

२७१ ॐ सिन्धुमत्यै	स्वाहा	२९६ ॐ भोगिन्यै	स्वाहा
२७२ ॐ वेदमात्रे	,,	२९७ ॐ भोगदायिन्यै	,,
२७३ ॐ मधुव्रतायै	,,	२९८ ॐ वसुप्रणायै	,,
२७४ ॐ विश्वम्भरायै	,,	२९९ ॐ उत्तमवध्वै	,,
२७५ ॐ हैमवत्यै	,,	३०० ॐ गायत्र्यै	,,
२७६ ॐ समुद्रायै	,,	३०१ ॐ कमलोद्भवायै	,,
२७७ ॐ इच्छाविहारिण्यै	,,	३०२ ॐ विद्वत्प्रियायै	,,
२७८ ॐ अनुकूलायै	,,	३०३ ॐ पद्मचिह्नायै	,,
२७९ ॐ यज्ञवत्यै	,,	३०४ ॐ वरिष्ठायै	,,
२८० ॐ शतकोट्यै	,,	३०५ ॐ कमलेक्षणायै	,,
२८१ ॐ सुपेशलायै	,,	३०६ ॐ पद्मप्रियायै	,,
२८२ ॐ धर्मोदयायै	,,	३०७ ॐ सुप्रसन्नायै	,,
२८३ ॐ धर्मसेत्रायै	,,	३०८ ॐ प्रमोदायै	,,
२८४ ॐ सुकुमार्यै	,,	३०९ ॐ प्रियपार्श्वगायै	,,
२८५ ॐ सभावत्यै	,,	३१० ॐ विश्वभूषायै	,,
२८६ ॐ भीमायै	,,	३११ ॐ कान्तिमत्यै	,,
२८७ ॐ ब्रह्मस्तुतायै	,,	३१२ ॐ कृष्णायै	,,
२८८ ॐ मध्यप्रभायै	,,	३१३ ॐ वीणारवोत्सुकायै	,,
२८९ ॐ देवर्षिवन्दितायै	,,	३१४ ॐ रोचिष्कर्यै	,,
२९० ॐ देवभोग्यायै	,,	३१५ ॐ स्वप्रकाशायै	,,
२९१ ॐ महाभागायै	,,	३१६ ॐ शोभमानायै	,,
२९२ ॐ प्रतिज्ञायै	,,	३१७ ॐ विहङ्गमायै	,,
२९३ ॐ पूर्णशेवध्यै	,,	३१८ ॐ देवाङ्गस्थायै	,,
२९४ ॐ सुवर्णायै	,,	३१९ ॐ परिणत्यै	,,
२९५ ॐ रुचिरप्रख्यायै	,,	३२० ॐ कामवत्सायै	,,

३२१ ॐ महासत्यै	स्वाहा	३४६ ॐ पृथुश्रोण्यै	स्वाहा
३२२ ॐ इल्त्वलायै	,,	३४७ ॐ सौम्यमुख्यै	,,
३२३ ॐ उत्पलनाभायै	,,	३४८ ॐ सुभगायै	,,
३२४ ॐ आधिशमन्यै	,,	३४९ ॐ विष्टरश्रुत्यै	,,
३२५ ॐ वरवर्णिन्यै	,,	३५० ॐ स्मिताननायै	,,
३२६ ॐ स्वनिष्ठायै	,,	३५१ ॐ चारुगत्यै	,,
३२७ ॐ पद्मनिलयायै	,,	३५२ ॐ निम्ननाभ्यै	,,
३२८ ॐ सद्गत्यै	,,	३५३ ॐ महास्तन्यै	,,
३२९ ॐ पद्मगन्धिन्यै	,,	३५४ ॐ स्निग्धवेण्यै	,,
३३० ॐ पद्मवर्णायै	,,	३५५ ॐ भगवत्यै	,,
३३१ ॐ कामयोन्यै	,,	३५६ ॐ सुकान्तायै	,,
३३२ ॐ चण्डिकायै	,,	३५७ ॐ वामलोचनायै	,,
३३३ ॐ चारुकोपनायै	,,	३५८ ॐ पल्लवाङ्घ्र्यै	,,
३३४ ॐ रतिस्नुषायै	,,	३५९ ॐ पद्ममनसे	,,
३३५ ॐ पद्मधरायै	,,	३६० ॐ पद्मबोधायै	,,
३३६ ॐ पूज्यायै	,,	३६१ ॐ महाप्सरसे	,,
३३७ ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै	,,	३६२ ॐ सरस्वत्यै	,,
३३८ ॐ नित्यकन्यायै	,,	३६३ ॐ चारुहासायै	,,
३३९ ॐ बिन्दुमालिन्यै	,,	३६४ ॐ शुभदृष्ट्यै	,,
३४० ॐ अक्षयायै	,,	३६५ ॐ ककुद्मिन्यै	,,
३४१ ॐ सर्वगन्धिन्यै	,,	३६६ ॐ कम्बुग्रीवायै	,,
३४२ ॐ गन्धात्मिकायै	,,	३६७ ॐ सुजघनायै	,,
३४३ ॐ सुरसिकायै	,,	३६८ ॐ रक्तपाण्यै	,,
३४४ ॐ दीप्तमूर्त्यै	,,	३६९ ॐ मनोरमायै	,,
३४५ ॐ सुमध्यमायै	,,	३७० ॐ पद्मिन्यै	,,

३७१ ॐ मन्दगमनायै	स्वाहा	३९६ ॐ विभीषिण्यै	स्वाहा
३७२ ॐ चतुर्दंष्ट्रायै	,,	३९७ ॐ असुधारिण्यै	,,
३७३ ॐ चतुर्भुजायै	,,	३९८ ॐ भद्रायै	,,
३७४ ॐ शुभरेखायै	,,	३९९ ॐ जयावहायै	,,
३७५ ॐ विलासभ्रुवे	,,	४०० ॐ चन्द्रवदनायै	,,
३७६ ॐ शुकवाण्यै	,,	४०१ ॐ कुटिलालकायै	,,
३७७ ॐ कलावत्यै	,,	४०२ ॐ चित्राम्बरायै	,,
३७८ ॐ ऋजुनासायै	,,	४०३ ॐ चित्रगन्धायै	,,
३७९ ॐ कलरवायै	,,	४०४ ॐ रत्नमौलिसमुज्ज्वलायै	
३८० ॐ वरारोहायै	,,	४०५ ॐ दिव्यायुधायै	,,
३८१ ॐ तलोदर्यै	,,	४०६ ॐ दिव्यमाल्यायै	,,
३८२ ॐ सन्ध्यायै	,,	४०७ ॐ विशाखायै	,,
३८३ ॐ विम्बाधरायै	,,	४०८ ॐ चित्रवाहनायै	,,
३८४ ॐ पूर्वभाषिण्यै	,,	४०९ ॐ अम्बिकायै	,,
३८५ ॐ श्रीसमाह्वयायै	,,	४१० ॐ सिन्धुतनयायै	,,
३८६ ॐ इक्षुचापायै	,,	४११ ॐ निःश्रेण्यै	,,
३८७ ॐ सुमशरायै	,,	४१२ ॐ सुमहासिन्यै	,,
३८८ ॐ दिव्यभूषायै	,,	४१३ ॐ सामप्रियायै	,,
३८९ ॐ मनोहरायै	,,	४१४ ॐ नवमृग्यै	,,
३९० ॐ वासव्यै	,,	४१५ ॐ सर्वसेव्यायै	,,
३९१ ॐ पाण्डरच्छत्रायै	,,	४१६ ॐ वराङ्गनायै	,,
३९२ ॐ करभोरवे	,,	४१७ ॐ गन्धद्वारायै	,,
३९३ ॐ तिलोत्तमायै	,,	४१८ ॐ दुराधर्षायै	,,
३९४ ॐ सीमन्तिन्यै	,,	४१९ ॐ नित्यपुष्टायै	,,
३९५ ॐ प्राणशक्त्यै	,,	४२० ॐ करीषिण्यै	,,

४२१ ॐ देवजुष्टायै स्वाहा
४२२ ॐ दिव्यवर्णायै ,,
४२३ ॐ दिव्यगन्धायै ,,
४२४ ॐ स्वकर्दमायै ,,
४२५ ॐ अनन्तरूपायै ,,
४२६ ॐ अनन्तस्थायै ,,
४२७ ॐ सर्वदानन्तसङ्गमायै ,,
४२८ ॐ यज्ञाशन्यै ,,
४२९ ॐ महावृष्ट्यै ,,
४३० ॐ सर्वपूज्यायै ,,
४३१ ॐ वषट्क्रियायै ,,
४३२ ॐ योगप्रियायै ,,
४३३ ॐ वियन्नाभ्यै ,,
४३४ ॐ अनन्तश्रियै ,,
४३५ ॐ अतीन्द्रियायै ,,
४३६ ॐ योगिसेव्यायै ,,
४३७ ॐ सत्यरतायै ,,
४३८ ॐ योगमायायै ,,
४३९ ॐ पुरातन्यै ,,
४४० ॐ सर्वेश्वर्यै ,,
४४१ ॐ सुतरुण्यै ,,
४४२ ॐ शरण्यायै ,,
४४३ ॐ धर्मदेवतायै ,,
४४४ ॐ सुतरायै ,,
४४५ ॐ संवृतज्योतिषे ,,
४४६ ॐ योगिन्यै स्वाहा
४४७ ॐ योगसिद्धिदायै ,,
४४८ ॐ सृष्टिशक्त्यै ,,
४४९ ॐ द्योतमानभूतायै ,,
४५० ॐ मङ्गलदेवतायै ,,
४५१ ॐ संहारशक्त्यै ,,
४५२ ॐ प्रबलायै ,,
४५३ ॐ निरुपाधयै ,,
४५४ ॐ परावरायै ,,
४५५ ॐ उत्तारिण्यै ,,
४५६ ॐ तारयन्त्यै ,,
४५७ ॐ शाश्वत्यै ,,
४५८ ॐ समितिञ्जयायै ,,
४५९ ॐ महाश्रियै ,,
४६० ॐ अजहत्कीर्त्यै ,,
४६१ ॐ योगश्रियै ,,
४६२ ॐ सिद्धिसाधन्यै ,,
४६३ ॐ पुण्यश्रियै ,,
४६४ ॐ पुण्यनिलयायै ,,
४६५ ॐ ब्रह्मश्रियै ,,
४६६ ॐ ब्राह्मणप्रियायै ,,
४६७ ॐ राजश्रियै ,,
४६८ ॐ राजकलितायै ,,
४६९ ॐ फलश्रियै ,,
४७० ॐ स्वर्गदायिन्यै ,,

४७१	ॐ देवश्रियै	स्वाहा	४९६	ॐ स्वैरवृत्त्यै	स्वाहा
४७२	ॐ अद्भुतकथायै	,,	४९७	ॐ रुक्मिण्यै	,,
४७३	ॐ वेदश्रियै	,,	४९८	ॐ सर्वसाक्षिण्यै	,,
४७४	ॐ श्रुतिमार्गिण्यै	,,	४९९	ॐ गान्धारिण्यै	,,
४७५	ॐ तमोपहायै	,,	५००	ॐ परगत्यै	,,
४७६	ॐ अध्ययनिधये	,,	५०१	ॐ तत्त्वगर्भायै	,,
४७७	ॐ लक्ष्मणायै	,,	५०२	ॐ भवाभवायै	,,
४७८	ॐ हृदयङ्गमायै	,,	५०३	ॐ अन्तर्वर्त्यै	,,
४७९	ॐ मृतसंजीविन्यै	,,	५०४	ॐ महामुद्रायै	,,
४८०	ॐ शुभ्रायै	,,	५०५	ॐ विष्णुदुर्गायै	,,
४८१	ॐ चन्द्रिकायै	,,	५०६	ॐ महाबलायै	,,
४८२	ॐ सर्वतोमुख्यै	,,	५०७	ॐ मदयन्त्यै	,,
४८३	ॐ सर्वोत्तमायै	,,	५०८	ॐ लोकधारिण्यै	,,
४८४	ॐ मित्रविन्दायै	,,	५०९	ॐ अदृश्यायै	,,
४८५	ॐ मैथिल्यै	,,	५१०	ॐ सर्वनिष्कृत्यै	,,
४८६	ॐ प्रियदर्शनायै	,,	५११	ॐ देवसेनायै	,,
४८७	ॐ सत्यभामायै	,,	५१२	ॐ आत्मफलदायै	,,
४८८	ॐ वेदवेद्यायै	,,	५१३	ॐ वसुधायै	,,
४८९	ॐ सीतायै	,,	५१४	ॐ मुख्यमातृकायै	,,
४९०	ॐ प्रणतपोषिण्यै	,,	५१५	ॐ क्षीरधारायै	,,
४९१	ॐ मूलप्रकृत्यै	,,	५१६	ॐ घृतमय्यै	,,
४९२	ॐ ईशानायै	,,	५१७	ॐ जुह्वत्यै	,,
४९३	ॐ शिवदायै	,,	५१८	ॐ यज्ञदक्षिणायै	,,
४९४	ॐ दीपप्रदीपिन्यै	,,	५१९	ॐ योगनिद्रायै	,,
४९५	ॐ अभिप्रियायै	,,	५२०	ॐ योगरतायै	,,

५२१ ॐ ब्रह्मचर्यायै स्वाहा
५२२ ॐ दुरत्ययायै ,,
५२३ ॐ सिद्धपिच्छायै ,,
५२४ ॐ महादुर्गायै ,,
५२५ ॐ जयन्त्यै ,,
५२६ ॐ खगवाहिन्यै ,,
५२७ ॐ जगत्प्रियायै ,,
५२८ ॐ विरूपाक्ष्यै ,,
५२९ ॐ सुवर्णायै ,,
५३० ॐ क्रूरतापिन्यै ,,
५३१ ॐ कात्यायन्यै ,,
५३२ ॐ कालरात्र्यै ,,
५३३ ॐ निशिदृष्टायै ,,
५३४ ॐ करालिकायै ,,
५३५ ॐ त्रिशूलिन्यै ,,
५३६ ॐ खड्गधरायै ,,
५३७ ॐ महाकाल्यै ,,
५३८ ॐ इन्द्रमालिन्यै ,,
५३९ ॐ एकवीरायै ,,
५४० ॐ भद्रकाल्यै ,,
५४१ ॐ सौनन्द्यै ,,
५४२ ॐ उल्लसद्गदायै ,,
५४३ ॐ नारायण्यै ,,
५४४ ॐ जगत्पूरिण्यै ,,
५४५ ॐ उर्वरायै ,,
५४६ ॐ द्रुहिणप्रसवे स्वाहा
५४७ ॐ यज्ञकामायै ,,
५४८ ॐ लेलिहानायै ,,
५४९ ॐ तीर्थकर्यै ,,
५५० ॐ उग्रविक्रमायै ,,
५५१ ॐ गरुत्मदुदयायै ,,
५५२ ॐ अत्युग्रायै ,,
५५३ ॐ वाराह्यै ,,
५५४ ॐ मातृभाषिण्यै ,,
५५५ ॐ अश्वक्रान्तायै ,,
५५६ ॐ रथक्रान्तायै ,,
५५७ ॐ विष्णुक्रान्तायै ,,
५५८ ॐ उरुचारिण्यै ,,
५५९ ॐ वैरोचिन्यै ,,
५६० ॐ नारसिंह्यै ,,
५६१ ॐ जीमूतायै ,,
५६२ ॐ शुभदेक्षणायै ,,
५६३ ॐ दीक्षाविधायै ,,
५६४ ॐ विश्वशक्त्यै ,,
५६५ ॐ निजशक्त्यै ,,
५६६ ॐ सुदर्शिन्यै ,,
५६७ ॐ प्रतीत्यै ,,
५६८ ॐ जगत्यै ,,
५६९ ॐ वन्यधारिण्यै ,,
५७० ॐ कलिनाशिन्यै ,,

५७१ ॐ अयोध्यायै	स्वाहा	५९५ ॐ गुह्यविद्यायै	स्वाहा
५७२ ॐ अच्छिन्नसन्तानायै	,,	५९६ ॐ अध्यात्मविद्यायै	,,
५७३ ॐ महारत्नायै	,,	५९७ ॐ कृतागमायै	,,
५७४ ॐ सुखावहायै	,,	५९८ ॐ आप्यायिन्यै	,,
५७५ ॐ राजवत्यै	,,	५९९ ॐ कलातीतायै	,,
५७६ ॐ अर्कप्रतिभायै	,,	६०० ॐ सुमित्रायै	,,
५७७ ॐ विनयित्र्यै	,,	६०१ ॐ परभक्तिदायै	,,
५७८ ॐ महाशनायै	,,	६०२ ॐ काङ्क्षमाणायै	,,
५७९ ॐ अमृतस्यन्दिन्यै	,,	६०३ ॐ महामायायै	,,
५८० ॐ सीमायै	,,	६०४ ॐ कोलकामायै	,,
५८१ ॐ यज्ञगर्भायै	,,	६०५ ॐ अमरावत्यै	,,
५८२ ॐ समीक्षणायै	,,	६०६ ॐ सुवीर्यायै	,,
५८३ ॐ आकूत्यै	,,	६०७ ॐ दुःस्वप्नहरायै	,,
५८४ ॐ ऋग्यजुःसामघोषायै	,,	६०८ ॐ देवक्यै	,,
		६०९ ॐ वसुदेवतायै	,,
५८५ ॐ आरामवधूत्सुकायै	,,	६१० ॐ सौदामिन्यै	,,
५८६ ॐ सोमपायै	,,	६११ ॐ मेघरथायै	,,
५८७ ॐ माधव्यै	,,	६१२ ॐ ऋद्धिदायै	,,
५८८ ॐ नित्यकल्याण्यै	,,	६१३ ॐ दैत्यमर्दिन्यै	,,
५८९ ॐ कमलार्चितायै	,,	६१४ ॐ श्रेयस्कर्यै	,,
५९० ॐ योगरूढ्यै	,,	६१५ ॐ चित्रलीलायै	,,
५९१ ॐ स्वार्थजुष्टायै	,,	६१६ ॐ एकाकिन्यै	,,
५९२ ॐ वह्निवर्णायै	,,	६१७ ॐ रत्नपादुकायै	,,
५९३ ॐ जितासुरायै	,,	६१८ ॐ मनस्यमानायै	,,
५९४ ॐ यज्ञविद्यायै	,,	६१९ ॐ तुलस्यै	,,

६२०	ॐ रोगनाशिन्यै	स्वाहा	६४५	ॐ दुरासदायै	स्वाहा
६२१	ॐ उरुप्रथायै	,,	६४६	ॐ अरुन्धत्यै	,,
६२२	ॐ तेजस्विन्यै	,,	६४७	ॐ कुण्डलिन्यै	,,
६२३	ॐ सुखोज्ज्वलायै	,,	६४८	ॐ भव्यायै	,,
६२४	ॐ मन्दरेखायै	,,	६४९	ॐ दुर्गतिनाशिन्यै	,,
६२५	ॐ अमृतनाशिन्यै	,,	६५०	ॐ मृत्युञ्जयायै	,,
६२६	ॐ ब्रह्मिष्ठायै	,,	६५१	ॐ त्रासहरायै	,,
६२७	ॐ वह्निशमन्यै	,,	६५२	ॐ निर्भयायै	,,
६२८	ॐ जुषमाणायै	,,	६५३	ॐ शत्रुसूदिन्यै	,,
६२९	ॐ गुणात्यय यै	,,	६५४	ॐ एकाक्षरायै	,,
६३०	ॐ कादम्बर्यै	,,	६५५	ॐ सुपुरन्ध्र्यै	,,
६३१	ॐ ब्रह्मर ायै	,,	६५६	ॐ सुरपक्षायै	,,
६३२	ॐ विधात्र्यै	,,	६५७	ॐ वरातुलायै	,,
६३३	ॐ उज्ज्वलहसिकायै	,,	६५८	ॐ सकृद्विभासायै	,,
६३४	ॐ अक्षोभ्यायै	,,	६५९	ॐ प्रद्युम्नायै	,,
६३५	ॐ सर्वतोभद्रायै	,,	६६०	ॐ हरिभद्रायै	,,
६३६	ॐ वयस्यायै	,,	६६१	ॐ धुरन्धरायै	,,
६३७	ॐ स्वस्तिदक्षिणायै	,,	६६२	ॐ बिल्वप्रियायै	,,
६३८	ॐ सहस्रास्यायै	,,	६६३	ॐ अवन्यै	,,
६३९	ॐ ज्ञानमात्रे	,,	६६४	ॐ चक्रहृदयायै	,,
६४०	ॐ वैश्वानर्यै	,,	६६५	ॐ कम्बुतीर्थगायै	,,
६४१	ॐ अक्षवर्तिन्यै	,,	६६६	ॐ सर्वमन्त्रात्मिकायै	,,
६४२	ॐ प्रत्यग्वरायै	,,	६६७	ॐ विद्युते	,,
६४३	ॐ वारणवत्यै	,,	६६८	ॐ यशोदायै	,,
६४४	ॐ अनसूयायै	,,	६६९	ॐ सर्वरञ्जिन्यै	,,

६७० ॐ ध्वजच्छत्राश्रयायै स्वाहा
६७१ ॐ भूम्यै ,,
६७२ ॐ वैष्णव्यै ,,
६७३ ॐ सद्गुणोज्ज्वलायै ,,
६७४ ॐ सुषेणायै ,,
६७५ ॐ लोकविदितायै ,,
६७६ ॐ कामसुवे ,,
६७७ ॐ जगदादिभुवे ,,
६७८ ॐ वेदान्तयोन्यै ,,
६७९ ॐ जिज्ञासायै ,,
६८० ॐ मनीषायै ,,
६८१ ॐ समदर्शिन्यै ,,
६८२ ॐ सहस्रशक्त्यै ,,
६८३ ॐ आवृत्त्यै ,,
६८४ ॐ सुस्थिरायै ,,
६८५ ॐ श्रेयसान्निधये ,,
६८६ ॐ रोहिण्यै ,,
६८७ ॐ रेवत्यै ,,
६८८ ॐ चन्द्रसोदर्यै ,,
६८९ ॐ भद्रमोदिन्यै ,,
६९० ॐ आर्यायै ,,
६९१ ॐ गव्यप्रियायै ,,
६९२ ॐ विश्वभाविन्यै ,,
६९३ ॐ सुविभाविन्यै ,,
६९४ ॐ सुप्रदृश्यायै स्वाहा
६९५ ॐ कामचारिण्यै ,,
६९६ ॐ अप्रमत्तायै ,,
६९७ ॐ ललन्तिकायै ,,
६९८ ॐ जगद्योन्यै ,,
७९९ ॐ मोक्षलक्ष्म्यै ,,
७०० ॐ सुदुर्लभायै ,,
७०१ ॐ भास्कर्यै ,,
७०२ ॐ पुण्यगेहस्थायै ,,
७०३ ॐ मनोज्ञायै ,,
७०४ ॐ विभवप्रदायै ,,
७०५ ॐ लोकस्वामिन्यै ,,
७०६ ॐ अच्युतार्थायै ,,
७०७ ॐ पुष्कलायै ,,
७०८ ॐ जगदाकृत्यै ,,
७०९ ॐ विचित्रहारिण्यै ,,
७१० ॐ कान्तायै ,,
७११ ॐ पाविन्यै ,,
७१२ ॐ भूतभाविन्यै ,,
७१३ ॐ प्राणिन्यै ,,
७१४ ॐ प्राणदायै ,,
७१५ ॐ विद्रुते ,,
७१६ ॐ विश्वब्रह्माण्डवासिन्यै ,,
७१७ ॐ सम्पूर्णायै ,,
७१८ ॐ परमोत्साहायै ,,

७१६ ॐ परमोत्साहायै स्वाहा
७२० ॐ श्रीपत्यै ,,
७२१ ॐ श्रीमत्यै ,,
७२२ ॐ श्रुत्यै ,,
७२३ ॐ श्रयन्त्यै ,,
७२४ ॐ श्रयमाणायै ,,
७२५ ॐ क्ष्मायै ,,
७२६ ॐ विश्वरूपायै ,,
७२७ ॐ प्रसादिन्यै ,,
७२८ ॐ हर्षिण्यै ,,
७२६ ॐ प्रथमायै ,,
७३० ॐ सर्व्वायै ,,
७३१ ॐ विशालायै ,,
७३२ ॐ कामवर्षिण्यै ,,
७३३ ॐ सुप्रतीकायै ,,
७३४ ॐ पृश्निमत्यै ,,
७३५ ॐ निवृत्त्यै ,,
७३६ ॐ विविधायै ,,
७३७ ॐ परायै ,,
७३८ ॐ सुयज्ञायै ,,
७३६ ॐ मधुरायै ,,
७४० ॐ श्रीदायै ,,
७४१ ॐ देवरात्यै ,,
७४२ ॐ महामनसे ,,
७४३ ॐ स्थूलायै ,,
७४४ ॐ सर्व्वाकृत्यै स्वाहा
७४५ ॐ सूक्ष्मायै ,,
७४६ ॐ निम्नगन्यायै ,,
७४७ ॐ तमोनुदायै ,,
७४८ ॐ तुष्ट्यै ,,
७४६ ॐ वागीश्वर्यै ,,
७५० ॐ पुष्ट्यै ,,
७५१ ॐ सर्व्वायै ,,
७५२ ॐ आद्यायै ,,
७५३ ॐ स्वरुशोषिण्यै ,,
७५४ ॐ शक्त्यात्मिकायै ,,
७५५ ॐ शब्दशक्त्यै ,,
७५६ ॐ विशिष्टायै ,,
७५७ ॐ वायुमत्यै ,,
७५८ ॐ अमायै ,,
७५६ ॐ आन्वीक्षिक्यै ,,
७६० ॐ त्रयीवार्तायै ,,
७६१ ॐ दण्डनीत्यै ,,
७६२ ॐ नियामिकायै ,,
७६३ ॐ व्याल्यै ,,
७६४ ॐ सङ्कर्षण्यै ,,
७६५ ॐ द्योतायै ,,
७६६ ॐ महादेव्यै ,,
७६७ ॐ अपराजितायै ,,
७६८ ॐ कपिलायै ,,

७६९ ॐ पिङ्गलायै स्वाहा
७७० ॐ स्वस्थायै ,,
७७१ ॐ बलाक्यै ,,
७७२ ॐ घोषनन्दिन्यै ,,
७७३ ॐ अजितायै ,,
७७४ ॐ कर्षण्यै ,,
७७५ ॐ क्षान्त्यै ,,
७७६ ॐ गरुडायै ,,
७७७ ॐ गरुडासनायै ,,
७७८ ॐ ह्लादिन्यै ,,
७७९ ॐ अनुग्रहायै ,,
७८० ॐ नित्यायै ,,
७८१ ॐ ब्रह्मविद्यायै ,,
७८२ ॐ हिरण्मय्यै ,,
७८३ ॐ मह्यै ,,
७८४ ॐ शुद्धविद्यायै ,,
७८५ ॐ पृथ्व्यै ,,
७८६ ॐ शतानन्दायै ,,
७८७ ॐ अंशुमालिन्यै ,,
७८८ ॐ यज्ञाश्रयायै ,,
७८९ ॐ ख्यातिपरायै ,,
७९० ॐ स्तव्यायै ,,
७९१ ॐ धृष्ट्यै ,,
७९२ ॐ त्रिकालगायै ,,
७९३ ॐ संबोधिन्यै ,,
७९४ ॐ शब्दपूर्णायै स्वाहा
७९५ ॐ विजयायै ,,
७९६ ॐ अंशुमत्यै ,,
७९७ ॐ कलायै ,,
७९८ ॐ शिवायै ,,
७९९ ॐ स्तुतिप्रियायै ,,
८०० ॐ ख्यात्यै ,,
८०१ ॐ जीवयन्त्यै ,,
८०२ ॐ पुनर्वसवे ,,
८०३ ॐ दीक्षायै ,,
८०४ ॐ भक्तार्तिहायै ,,
८०५ ॐ रक्षायै ,,
८०६ ॐ परीक्षायै ,,
८०७ ॐ यज्ञसंभवायै ,,
८०८ ॐ आर्द्रायै ,,
८०९ ॐ पुष्करिण्यै ,,
८१० ॐ पुण्यायै ,,
८११ ॐ गण्यायै ,,
८१२ ॐ दारिद्र्यभञ्जिन्यै ,,
८१३ ॐ धन्यायै ,,
८१४ ॐ मान्यायै ,,
८१५ ॐ पद्मनेम्यै ,,
८१६ ॐ भार्गव्यै ,,
८१७ ॐ वंशवर्धिन्यै ,,
८१८ ॐ तीक्ष्णप्रवृत्त्यै ,,

८१९ ॐ सत्कीर्त्यै	स्वाहा	८४४ ॐ करुणायै	स्वाहा
८२० ॐ निधिसेव्यायै	,,	८४५ ॐ भक्तवत्सलायै	,,
८२१ ॐ अघनाशिन्यै	,,	८४६ ॐ मेदिन्यै	,,
८२२ ॐ संज्ञायै	,,	८४७ ॐ उपनिषन्मिश्रायै	,,
८२३ ॐ निःसंशयायै	,,	८४८ ॐ सुमवीरवे	,,
८२४ ॐ पूर्वायै	,,	८४९ ॐ धनेश्वर्यै	,,
८२५ ॐ वनमालायै	,,	८५० ॐ दुर्मर्षण्यै	,,
८२६ ॐ वसुन्धरायै	,,	८५१ ॐ सुचरितायै	,,
८२७ ॐ पृथ्व्यै	,,	८५२ ॐ बोधायै	,,
८२८ ॐ महोत्कटायै	,,	८५३ ॐ शोभायै	,,
८२९ ॐ अहल्यायै	,,	८५४ ॐ सुवर्चलायै	,,
८३० ॐ मण्डलायै	,,	८५५ ॐ यमुनायै	,,
८३१ ॐ आश्रितमानदायै	,,	८५६ ॐ अक्षौहिण्यै	,,
८३२ ॐ सर्वस्यै	,,	८५७ ॐ गङ्गायै	,,
८३३ ॐ नित्योदितायै	,,	८५८ ॐ मन्दाकिन्यै	,,
८३४ ॐ उदारायै	,,	८५९ ॐ अमलाशयायै	,,
८३५ ॐ जृम्भमाणायै	,,	८६० ॐ गोदायै	,,
८३६ ॐ महोदयायै	,,	८६१ ॐ गोदावर्यै	,,
८३७ ॐ चन्द्रकान्तोदितायै	,,	८६२ ॐ चन्द्रभागायै	,,
८३८ ॐ सूर्यायै	,,	८६३ ॐ कावेर्यै	,,
८३९ ॐ चतुरश्रायै	,,	८६४ ॐ उदन्वत्यै	,,
८४० ॐ मनोजवायै	,,	८६५ ॐ सिनीवाल्यै	,,
८४१ ॐ बालायै	,,	८६६ ॐ कुह्वै	,,
८४२ ॐ कुमार्यै	,,	८६७ ॐ राकायै	,,
८४३ ॐ युवत्यै	,,	८६८ ॐ वारणायै	,,

८६९ ॐ सिन्धुमत्यै	स्वाहा	८९४ ॐ विद्ध्यै	स्वाहा
८७० ॐ अमायै	,,	८९५ ॐ प्रज्ञायै	,,
८७१ ॐ पूर्तये	,,	८९६ ॐ रामायै	,,
८७२ ॐ मायात्मिकायै	,,	८९७ ॐ परायै	,,
८७३ ॐ स्फूर्तये	,,	८९८ ॐ सन्ध्यायै	,,
८७४ ॐ व्याख्यायै	,,	८९९ ॐ सुभद्रायै	,,
८७५ ॐ सूत्रायै	,,	९०० ॐ सर्वमङ्गलायै	,,
८७६ ॐ प्रजावत्यै	,,	९०१ ॐ नन्दायै	,,
८७७ ॐ वृद्ध्यै	,,	९०२ ॐ भद्रायै	,,
८७८ ॐ स्थित्यै	,,	९०३ ॐ जयायै	,,
८७९ ॐ ध्रुवायै	,,	९०४ ॐ रिक्तायै	,,
८८० ॐ बुद्ध्यै	,,	९०५ ॐ तिथिपूर्णायै	,,
८८१ ॐ त्रिगुणायै	,,	९०६ ॐ ऋतंभरायै	,,
८८२ ॐ गुणगह्वरायै	,,	९०७ ॐ काष्ठायै	,,
८८३ ॐ अमोघायै	,,	९०८ ॐ कामेश्वर्यै	,,
८८४ ॐ शान्तिदायै	,,	९०९ ॐ निष्ठायै	,,
८८५ ॐ सत्यायै	,,	९१० ॐ काम्यायै	,,
८८६ ॐ ज्ञानदायै	,,	९११ ॐ राम्यायै	,,
८८७ ॐ उत्कर्षिण्यै	,,	९१२ ॐ धरायै	,,
८८८ ॐ शिवायै	,,	९१३ ॐ स्मृत्यै	,,
८८९ ॐ प्रकृत्यै	,,	९१४ ॐ शङ्खिन्यै	,,
८९० ॐ भामिन्यै	,,	९१५ ॐ चक्रिण्यै	,,
८९१ ॐ लोलायै	,,	९१६ ॐ श्यामायै	,,
८९२ ॐ कमलायै	,,	९१७ ॐ सामायै	,,
८९३ ॐ कामदुहे	,,	९१८ ॐ गोत्रायै	,,

६१९ ॐ रमायै	स्वाहा	६४४ ॐ शुच्यै	स्वाहा
६२० ॐ द्युत्यै	,,	६४५ ॐ धात्र्यै	,,
६२१ ॐ शान्तिदायै	,,	६४६ ॐ सुधारायै	,,
६२२ ॐ स्तुत्यै	,,	६४७ ॐ अक्षोण्यजायै	,,
६२३ ॐ सिद्ध्यै	,,	६४८ ॐ अमृतायै	,,
६२४ ॐ विराजायै	,,	६४९ ॐ रमण्यै	,,
६२५ ॐ अत्युज्ज्वलायै	,,	६५० ॐ एकायै	,,
६२६ ॐ अव्ययायै	,,	६५१ ॐ शारदाम्बायै	,,
६२७ ॐ वाण्यै	,,	६५२ ॐ समेधायै	,,
६२८ ॐ गौर्यै	,,	६५३ ॐ आद्यायै	,,
६२९ ॐ इन्दिरायै	,,	६५४ ॐ शुभाक्षरायै	,,
६३० ॐ लक्ष्म्यै	,,	६५५ ॐ रत्नावल्यै	,,
६३१ ॐ मेधायै	,,	६५६ ॐ भारत्यै	,,
६३२ ॐ श्रद्धायै	,,	६५७ ॐ ईडायै	,,
६३३ ॐ अप्रमायै	,,	६५८ ॐ धीरायै	,,
६३४ ॐ द्युतये	,,	६५९ ॐ धियै	,,
६३५ ॐ स्वधायै	,,	६६० ॐ केवलायै	,,
६३६ ॐ स्वाहायै	,,	६६१ ॐ आत्मदायै	,,
६३७ ॐ रतिरुषायै	,,	६६२ ॐ यस्यै	,,
६३८ ॐ वसवे	,,	६६३ ॐ तस्यै	,,
६३९ ॐ त्रिधायै	,,	६६४ ॐ शुद्ध्यै	,,
६४० ॐ धृत्यै	,,	६६५ ॐ सोस्मितायै	,,
६४१ ॐ सभायै	,,	६६६ ॐ कस्यै	,,
६४२ ॐ शिष्टायै	,,	६६७ ॐ नीलायै	,,
६४३ ॐ इष्टायै	,,	६६८ ॐ राधायै	,,

९६९ ॐ अमृतोद्भवायै स्वाहा
९७० ॐ विभूत्यै ,,
९७१ ॐ निष्कलायै ,,
९७२ ॐ रम्यायै ,,
९७३ ॐ रक्षायै ,,
९७४ ॐ सुविमलायै ,,
९७५ ॐ क्षमायै ,,
९७६ ॐ प्राप्त्यै ,,
९७७ ॐ वासन्तिकालेखायै ,,
९७८ ॐ भूरिबीजायै ,,
९७९ ॐ महाङ्गदायै ,,
९८० ॐ वरधुर्यायै ,,
९८१ ॐ स्वधायै ,,
९८२ ॐ ह्रियै ,,
९८३ ॐ भ्रुवे ,,
९८४ ॐ कामिन्यै ,,
९८५ ॐ शोकनाशिन्यै ,,
९८६ ॐ मायायै ,,
९८७ ॐ प्रीत्यै ,,
९८८ ॐ असहनायै ,,
९८९ ॐ नर्मदायै ,,
९९० ॐ गोकुलाश्रयायै ,,
९९१ ॐ अर्कप्रभायै स्वाहा
९९२ ॐ रसेभायै ,,
९९३ ॐ श्रीनिलयायै ,,
९९४ ॐ इन्दुप्रभायै ,,
९९५ ॐ अद्भुतायै ,,
९९६ ॐ श्रियै ,,
९९७ ॐ कृशानुप्रभायै ,,
९९८ ॐ वज्रलम्बनायै ,,
९९९ ॐ सर्वभूमिदायै ,,
१००० ॐ भोगप्रियायै ,,
१००१ ॐ भोगवत्यै ,,
१००२ ॐ भोगीन्द्रशयना-
सनायै ,,
१००३ ॐ अश्वपूर्वायै ,,
१००४ ॐ रथमध्यायै ,,
१००५ ॐ हस्तिनादप्रबोधिन्यै ,,
१००६ ॐ सर्वलक्षणलक्षि-
ण्यायै ,,
१००७ ॐ सर्वलोकप्रियङ्कर्यै ,,
१००८ ॐ सर्वमङ्गल-
माङ्गल्यायै ,,
ॐ दृष्टादृष्टफलप्रदायै ,,

इति लक्ष्मीसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारः समाप्तः ।

—:*:—

गायत्री सहस्र

अथ गायत्रीसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारविधिः

विनियोगः

अस्य श्रीगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, देवीगायत्रीदेवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, श्रीभगवतीगायत्रीप्रीत्यर्थे हवने (सहस्रबिल्वपत्रसमर्पणे तुलसीदलसमर्पणे पुष्पसमर्पणे वा) विनियोगः ।

ध्यानम्

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

१ ॐ अचिन्त्यलक्षणायै स्वाहा
२ ॐ अव्यक्तायै ,,
३ ॐ अर्थमातृमहेश्वर्यै ,,
४ ॐ अमृतार्णवमध्यस्थायै ,,
५ ॐ अजितायै ,,
६ ॐ अपराजितायै ,,
७ ॐ अणिमादिगुणाधारायै ,,
८ ॐ अर्कमण्डलसंस्थितायै ,,
९ ॐ अजरायै ,,
१० ॐ अजायै ,,
११ ॐ अपरायै ,,
१२ ॐ अधर्मायै ,,
१३ ॐ अक्षसूत्रधरायै ,,
१४ ॐ अधरायै ,,
१५ ॐ अकारादिक्षकारान्तायै ,,
१६ ॐ अरिषड्वर्गभेदिन्यै स्वा०
१७ ॐ अञ्जनाद्रिप्रतीकाशायै ,,
१८ ॐ अञ्जनाद्रिनिवासिन्यै ,,
१९ ॐ अदित्यै ,,
२० ॐ अजपायै ,,
२१ ॐ अविद्यायै ,,
२२ ॐ अरविन्दनिभेक्षणायै ,,
२३ ॐ अन्तर्बहिःस्थितायै ,,
२४ ॐ अविद्याध्वंसिन्यै ,,
२५ ॐ अन्तरात्मिकायै ,,
२६ ॐ अजायै ,,
२७ ॐ अजमुखावासायै ,,
२८ ॐ अरविन्दनिभाननायै ,,
२९ ॐ अर्धमात्रायै ,,
३० ॐ अर्थदानज्ञायै ,,
३१ ॐ अरिमण्डलमर्दिन्यै ,,

३२ ॐ असुरघ्न्यै स्वाहा
३३ ॐ अमावास्यायै ,,
३४ ॐ अलक्ष्मीघ्नन्त्यै ,,
३५ ॐ अजार्चितायै ,,
३६ ॐ आदिलक्ष्म्यै ,,
३७ ॐ आदिशक्त्यै ,,
३८ ॐ आकृत्यै ,,
३९ ॐ आयताननायै ,,
४० ॐ आदित्यपदवीचारायै ,,
४१ ॐ आदित्यपरिसेवि◌ायै ,,
४२ ॐ आचार्यायै ,,
४३ ॐ आवर्तनायै ,,
४४ ॐ आचारायै ,,
४५ ॐ आदिमूर्तिनिवासिन्यै ,,
४६ ॐ आग्नेय्यै ,,
४७ ॐ आमये ,,
४८ ॐ आद्यायै ,,
४९ ॐ आराध्यायै ,,
५० ॐ आसनस्थितायै ,,
५१ ॐ आधारनिलयायै ,,
५२ ॐ आधारायै ,,
५३ ॐ आकाशान्तनिवासिन्यै ,,
५४ ॐ आद्याक्षरसमायुक्तायै ,,
५५ ॐ अन्तराकाशरूपिण्यै ,,
५६ ॐ आदित्यमण्डलगतायै स्वाहा
५७ ॐ आन रध्वान्तनाशिन्यै ,,
५८ ॐ इन्दिरायै ,,
५९ ॐ इष्टदायै ,,
६० ॐ इष्टायै ,,
६१ ॐ इन्दीवरनिभेक्षणायै ,,
६२ ॐ इरावत्यै ,,
६३ ॐ इन्द्रपदायै ,,
६४ ॐ इन्द्राण्यै ,,
६५ ॐ इन्दुरूपिण्यै ,,
६६ ॐ इक्षुकोदण्डसंयुक्तायै ,,
६७ ॐ इषुसन्धानकारिण्यै ,,
६८ ॐ इन्द्रनीलसमाकारायै ,,
६९ ॐ इडापिङ्गलरूपिण्यै ,,
७० ॐ इन्द्राक्ष्यै ,,
७१ ॐ ईश्वरीदेव्यै ,,
७२ ॐ ईहात्रयविवर्जि◌ायै ,,
७३ ॐ उमायै ,,
७४ ॐ उषायै ,,
७५ ॐ उडुनिभायै ,,
७६ ॐ उर्वारुकफलाननायै ,,
७७ ॐ उडुप्रभायै ,,
७८ ॐ उडुमत्यै ,,

७९ ॐ उडुपायै स्वाहा
८० ॐ उडुमध्यगायै ,,
८१ ॐ ऊर्ध्वायै ,,
८२ ॐ ऊर्ध्वकेश्यै ,,
८३ ॐ ऊर्ध्वाधोगतिभेदिन्यै ,,
८४ ॐ ऊर्ध्वबाहुप्रियायै ,,
८५ ॐ ऊर्मिमालावाग्ग्रन्थ-
दायिन्यै ,,
८६ ॐ ऋतायै ,,
८७ ॐ ऋषये ,,
८८ ॐ ऋतुमत्यै ,,
८९ ॐ ऋषिदेवनमस्कृतायै ,,
९० ॐ ऋग्वेदायै ,,
९१ ॐ ऋणहर्त्र्यै ,,
९२ ॐ ऋषिमण्डलचारिण्यै ,,
९३ ॐ ऋद्धिदायै ,,
९४ ॐ ऋजुमार्गस्थायै ,,
९५ ॐ ऋजुधर्मायै ,,
९६ ॐ ऋतुप्रदायै ,,
९७ ॐ ऋग्वेदनिलयायै ,,
९८ ॐ ऋज्व्यै ,,
९९ ॐ लुप्तधर्मप्रवर्तिन्यै ,,
१०० ॐ लूतारिवरसंभूतायै ,,
१०१ ॐ लूतादिविषहारिण्यै ,,
१०२ ॐ एकाक्षरायै ,,
१०३ ॐ एकमात्रायै स्वाहा
१०४ ॐ एकायै ,,
१०५ ॐ एकैकनिष्ठितायै ,,
१०६ ॐ ऐन्द्र्यै ,,
१०७ ॐ ऐरावतारूढायै ,,
१०८ ॐ ऐहिकामुष्मिक-
प्रदायै ,,
१०९ ॐ ओङ्कारायै ,,
११० ॐ औषध्यै ,,
१११ ॐ ओतायै ,,
११२ ॐ ओतप्रोतनिवासिन्यै ,,
११३ ॐ और्वायै ,,
११४ ॐ औषधसम्पन्नायै ,,
११५ ॐ औपासनफलप्रदायै ,,
११६ ॐ अण्डमध्यस्थितदेव्यै ,,
११७ ॐ अःकारमनुरूपिण्यै ,,
११८ ॐ कात्यायन्यै ,,
११९ ॐ कालरात्र्यै ,,
१२० ॐ कामाक्ष्यै ,,
१२१ ॐ कामसुन्दर्यै ,,
१२२ ॐ कमलायै ,,
१२३ ॐ कामिन्यै ,,
१२४ ॐ कान्तायै ,,
१२५ ॐ कामदायै ,,
१२६ ॐ कालकण्ठ्यै ,,

१२७ ॐ करिकुम्भस्तन-
भरायै स्वाहा
१२८ ॐ करवीरसुवासिन्यै ,,
१२९ ॐ कल्याण्यै ,,
१३० ॐ कुण्डलवत्यै ,,
१३१ ॐ कुरुक्षेत्रनिवासिन्यै ,,
१३२ ॐ कुरविन्ददला-
कारायै ,,
१३३ ॐ कुण्डल्यै ,,
१३४ ॐ कुमुदालयायै ,,
१३५ ॐ कालजिह्वायै ,,
१३६ ॐ करालास्यायै ,,
१३७ ॐ कालिकायै ,,
१३८ ॐ कालरूपिण्यै ,,
१३९ ॐ कमनीयगुणायै ,,
१४० ॐ कान्त्यै ,,
१४१ ॐ कलाधारायै ,,
१४२ ॐ कुमुद्वत्यै ,,
१४३ ॐ कौशिक्यै ,,
१४४ ॐ कमलाकारायै ,,
१४५ ॐ कामचारप्रभञ्जिन्यै ,,
१४६ ॐ कौमार्यै ,,
१४७ ॐ करुणापाङ्ग्यै ,,
१४८ ॐ ककुवन्तायै ,,
१४९ ॐ करिप्रियायै ,,
१५० ॐ केसर्यै स्वाहा
१५१ ॐ केशवनुतायै ,,
१५२ ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै ,,
१५३ ॐ कालिन्द्यै ,,
१५४ ॐ कालिकायै ,,
१५५ ॐ काञ्च्यै ,,
१५६ ॐ कलशोद्भवसंस्तुतायै ,,
१५७ ॐ काममात्रे ,,
१५८ ॐ क्रतुमत्यै ,,
१५९ ॐ कामरूपायै ,,
१६० ॐ कृपावत्यै ,,
१६१ ॐ कुमार्यै ,,
१६२ ॐ कुण्डनिलयायै ,,
१६३ ॐ किरात्यै ,,
१६४ ॐ कीरवाहनायै ,,
१६५ ॐ कैकेय्यै ,,
१६६ ॐ कोकिलालापायै ,,
१६७ ॐ केतक्यै ,,
१६८ ॐ कुसुमप्रियायै ,,
१६९ ॐ कमण्डलुधरायै ,,
१७० ॐ काल्यै ,,
१७१ ॐ कर्मनिर्मूलकारिण्यै ,,
१७२ ॐ कलहंसगत्यै ,,
१७३ ॐ कक्षायै ,,
१७४ ॐ कृतकौतुकमङ्गलायै ,,

१७५ ॐ कस्तूरीतिलकायै स्वाहा
१७६ ॐ कम्रायै ,,
१७७ ॐ करीन्द्रगमनायै ,,
१७८ ॐ कुह्वै ,,
१७९ ॐ कर्पूरलेपनायै ,,
१८० ॐ कृष्णायै ,,
१८१ ॐ कपिलायै ,,
१८२ ॐ कुहराश्रयायै ,,
१८३ ॐ कूटस्थायै ,,
१८४ ॐ कुधरायै ,,
१८५ ॐ कम्रायै ,,
१८६ ॐ कुक्षिस्थाखिल-
विष्टपायै ,,
१८७ ॐ खड्गखेटकरायै ,,
१८८ ॐ खर्वायै ,,
१८९ ॐ खेचर्यै ,,
१९० ॐ खगवाहनायै ,,
१९१ ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै ,,
१९२ ॐ ख्यातायै ,,
१९३ ॐ खगराजोपरि-
स्थितायै ,,
१९४ ॐ खलघ्न्यै ,,
१९५ ॐ खण्डितजरायै ,,
१९६ ॐ खण्डाख्यान-
प्रदायिन्यै ,,
१९७ ॐ खण्डेन्दुतिल-
कायै स्वाहा
१९८ ॐ गङ्गायै ,,
१९९ ॐ गणेशगुहपूजितायै ,,
२०० ॐ गायत्र्यै ,,
२०१ ॐ गोमत्यै ,,
२०२ ॐ गीतायै ,,
२०३ ॐ गान्धार्यै ,,
२०४ ॐ गानलोलुपायै ,,
२०५ ॐ गौतम्यै ,,
२०६ ॐ गामिन्यै ,,
२०७ ॐ गाधायै ,,
२०८ ॐ गन्धर्वाप्सर-
सेवितायै ,,
२०९ ॐ गोविन्दचरणा-
क्रान्तायै ,,
२१० ॐ गुणत्रयविभावितायै ,,
२११ ॐ गन्धर्व्यै ,,
२१२ ॐ गह्वर्यै ,,
२१३ ॐ गोत्रायै ,,
२१४ ॐ गिरीशायै ,,
२१५ ॐ गहनायै ,,
२१६ ॐ गम्यै ,,
२१७ ॐ गुहावासायै ,,
२१८ ॐ गुणवत्यै ,,

२१९ ॐ गुरुपापप्रणाशिन्यै स्वाहा
२२० ॐ गुर्व्यै ,,
२२१ ॐ गुणवत्यै ,,
२२२ ॐ गुह्यायै ,,
२२३ ॐ गोप्तव्यायै ,,
२२४ ॐ गुणदायिन्यै ,,
२२५ ॐ गिरिजायै ,,
२२६ ॐ गुह्यमातङ्ग्यै ,,
२२७ ॐ गरुडध्वजवल्लभायै,,
२२८ ॐ गर्वापहारिण्यै ,,
२२९ ॐ गोदायै ,,
२३० ॐ गोकुलस्थायै ,,
२३१ ॐ गदाधरायै ,,
२३२ ॐ गोकर्णनिलयासक्तायै ,,
२३३ ॐ गुह्यमण्डलवर्तिन्यै ,,
२३४ ॐ धर्मदायै ,,
२३५ ॐ धनदायै ,,
२३६ ॐ घण्टायै ,,
२३७ ॐ घोरदानवमर्दिन्यै ,,
२३८ ॐ घृणिमन्त्रमय्यै ,,
२३९ ॐ घोषायै ,,
२४० ॐ धनसंपातदायिन्यै ,,
२४१ ॐ घण्टारवप्रियायै ,,
२४२ ॐ घ्राणायै स्वाहा
२४३ ॐ घृणिसन्तुष्टिकारिण्यै ,,
२४४ ॐ घनारिमण्डलायै ,,
२४५ ॐ घूर्णायै ,,
२४६ ॐ घृताच्यै ,,
२४७ ॐ घनवेगिन्यै ,,
२४८ ॐ ज्ञानधातुमय्यै ,,
२४९ ॐ चर्चायै ,,
२५० ॐ चर्चितायै ,,
२५१ ॐ चारुहासिन्यै ,,
२५२ ॐ चटुलायै ,,
२५३ ॐ चण्डिकायै ,,
२५४ ॐ चित्रायै ,,
२५५ ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै ,,
२५६ ॐ चतुर्भुजायै ,,
२५७ ॐ चारुदन्तायै ,
२५८ ॐ चातुर्यै ,,
२५९ ॐ चरितप्रदायै ,,
२६० ॐ चूलिकायै ,
२६१ ॐ चित्रवस्त्रान्तायै ,,
२६२ ॐ चन्द्रमः कर्णकुण्डलायै ,,
२६३ ॐ चन्द्रहासायै ,,

२६४ ॐ चारुदात्र्यै स्वाहा
२६५ ॐ चकोर्यै ,,
२६६ ॐ चन्द्रहासिन्यै ,,
२६७ ॐ चन्द्रिकायै ,,
२६८ ॐ चन्द्रधात्र्यै ,,
२६९ ॐ चौर्यै ,,
२७० ॐ चौरायै ,,
२७१ ॐ चण्डिकायै ,,
२७२ ॐ चञ्चद्वाग्वादिन्यै ,,
२७३ ॐ चन्द्रचूडायै ,,
२७४ ॐ चोरविनाशिन्यै ,,
२७५ ॐ चारुचन्दन-
लिप्ताङ्ग्यै ,,
२७६ ॐ चञ्चच्चामरवीजितायै ,,
२७७ ॐ चारुमध्यायै ,,
२७८ ॐ चारुगत्यै ,,
२७९ ॐ चन्दिलायै ,,
२८० ॐ चन्द्ररूपिण्यै ,,
२८१ ॐ चारुहोमप्रियायै ,,
२८२ ॐ चार्वाचरितायै ,,
२८३ ॐ चक्रबाहुकायै ,,
२८४ ॐ चन्द्रमण्डलमध्य-
स्थायै ,,
२८५ ॐ चन्द्रमण्डल-
दर्पणायै ,,
२८६ ॐ चक्रवाकस्तन्यै स्वाहा
२८७ ॐ चेष्टायै ,,
२८८ ॐ चित्रायै ,,
२८९ ॐ चारुविलासिन्यै ,,
२९० ॐ चित्स्वरूपायै ,,
२९१ ॐ चन्द्रवत्यै ,,
२९२ ॐ चन्द्रमसे ,,
२९३ ॐ चन्दनप्रियायै ,,
२९४ ॐ चोदयित्र्यै ,,
२९५ ॐ चिरप्रज्ञायै ,,
२९६ ॐ चातकायै ,,
२९७ ॐ चारुहेतुक्यै ,,
२९८ ॐ छत्रयातायै ,,
२९९ ॐ छत्रधरायै ,,
३०० ॐ छायायै ,,
३०१ ॐ छन्दःपरिच्छदायै ,,
३०२ ॐ छायादेव्यै ,,
३०३ ॐ छिद्रनखायै ,,
३०४ ॐ छन्नेन्द्रियविसर्पिण्यै ,,
३०५ ॐ छन्दोऽनुष्टुप्प्रति-
ष्ठान्तायै ,,
३०६ ॐ छिद्रोपद्रवभेदिन्यै ,,
३०७ ॐ छेदायै ,,
३०८ ॐ छत्रेश्वर्यै ,,
३०९ ॐ छिन्नायै ,,

३१० ॐ छुरिकायै स्वाहा
३११ ॐ छेदनप्रियायै ,,
३१२ ॐ जनन्यै ,,
३१३ ॐ जन्मरहितायै ,,
३१४ ॐ जातवेदायै ,,
३१५ ॐ जगन्मय्यै ,,
३१६ ॐ जाह्नव्यै ,,
३१७ ॐ जटिलायै ,,
३१८ ॐ जैत्र्यै ,,
३१९ ॐ जरामरणवर्जितायै ,,
३२० ॐ जम्बूद्वीपवत्यै ,,
३२१ ॐ ज्वालायै ,,
३२२ ॐ जयन्त्यै ,,
३२३ ॐ जलशालिन्यै ,,
३२४ ॐ जितेन्द्रियायै ,,
३२५ ॐ जितक्रोधायै ,,
३२६ ॐ जितामित्रायै ,,
३२७ ॐ जगत्प्रियायै ,,
३२८ ॐ जातरूपमय्यै ,,
३२९ ॐ जिह्वायै ,,
३३० ॐ जानक्यै ,,
३३१ ॐ जगत्यै ,,
३३२ ॐ जरायै ,,
३३३ ॐ जनित्र्यै ,,
३३४ ॐ जह्नुतनयायै ,,
३३५ ॐ जगत्त्रयहितै-
षिण्यै स्वाहा
३३६ ॐ ज्वालामुख्यै ,,
३३७ ॐ जपवत्यै ,,
३३८ ॐ ज्वरघ्न्यै ,,
३३९ ॐ जितविष्टपायै ,,
३४० ॐ जिताक्रान्तमय्यै ,,
३४१ ॐ ज्वालायै ,,
३४२ ॐ जाग्रत्यै ,,
३४३ ॐ ज्वरदेवतायै ,,
३४४ ॐ ज्वलन्त्यै ,,
३४५ ॐ जलदायै ,,
३४६ ॐ ज्येष्ठायै ,,
३४७ ॐ ज्याघोषास्फोटदि-
ङ्मुख्यै ,,
३४८ ॐ जम्भिन्यै ,,
३४९ ॐ जृम्भणायै ,,
३५० ॐ जृम्भायै ,,
३५१ ॐ ज्वलन्माणिक्य-
कुण्डलायै ,,
३५२ ॐ झिंझिकायै ,,
३५३ ॐ झणनिर्घोषायै ,,
३५४ ॐ झंझामारुतवेगिन्यै ,,
३५५ ॐ झल्लरीवाद्य-
कुशलायै ,,
३५६ ॐ ञरूपायै ,,

३५७ ॐ अम्बुजासमृतायै स्वाहा
३५८ ॐ टङ्कवाणसमायुक्तायै ,,
३५९ ॐ टङ्किन्यै ,,
३६० ॐ टङ्कभेदिन्यै ,,
३६१ ॐ टङ्कीगणकृताघोषायै ,,
३६२ ॐ टङ्कनीयमहोरसायै ,,
३६३ ॐ टङ्कारकारिणीदेव्यै ,,
३६४ ॐ ठठशब्दनिनादिन्यै ,,
३६५ ॐ डामर्यै ,,
३६६ ॐ डाकिन्यै ,,
३६७ ॐ डिम्भायै ,,
३६८ ॐ डुण्डुमारैकनिर्जितायै ,,
३६९ ॐ डामरीतन्त्रमार्गस्थायै ,
३७० ॐ डमड्डमरुनादिन्यै ,,
३७१ ॐ डिण्डीरवसहायै ,,
३७२ ॐ डिम्भलसत्क्रीडापरायणायै ,,
३७३ ॐ ढुण्ढिविघ्नेशजनन्यै ,,
३७४ ॐ ढक्काहस्तायै ,,
३७५ ॐ ढिलिव्रजायै ,,
३७६ ॐ नित्यज्ञानायै ,,
३७७ ॐ निरुपमायै ,,
३७८ ॐ निर्गुणायै स्वाहा
३७९ ॐ नर्मदायै ,,
३८० ॐ नद्यै ,,
३८१ ॐ त्रिगुणायै ,,
३८२ ॐ त्रिपदायै ,,
३८३ ॐ तन्त्र्यै ,,
३८४ ॐ तुलस्यै ,,
३८५ ॐ तरुणायै ,,
३८६ ॐ तरवे ,,
३८७ ॐ त्रिविक्रमपदाक्रान्तायै ,,
३८८ ॐ तुरीयपदगामिन्यै ,,
३८९ ॐ तरुणादित्यसङ्काशायै ,
३९० ॐ तामस्यै ,
३९१ ॐ तुहिनायै ,,
३९२ ॐ तुरायै ,,
३९३ ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै ,,
३९४ ॐ त्रिवल्यै ,,
३९५ ॐ त्रिलोचनायै ,,
३९६ ॐ त्रिशक्त्यै ,,
३९७ ॐ त्रिपुरायै ,,
३९८ ॐ तुङ्गायै ,,
३९९ ॐ तुरङ्गवदनायै ,,
४०० ॐ तिमिङ्गिलगिलायै ,,

४०१ ॐ तीव्रायै स्वाहा
४०२ ॐ त्रिस्रोतायै ,,
४०३ ॐ तामसादिन्यै ,,
४०४ ॐ तन्त्रमन्त्रविशेषज्ञयै ,,
४०५ ॐ तनुमध्यायै ,,
४०६ ॐ त्रिविष्टपायै ,,
४०७ ॐ त्रिसन्ध्यायै ,,
४०८ ॐ त्रिस्तन्यै ,,
४०९ ॐ तोषासंस्थायै ,,
४१० ॐ तालप्रतापिन्यै ,,
४११ ॐ ताटंकिन्यै ,,
४१२ ॐ तुषाराभायै ,,
४१३ ॐ तुहिनाचलवासिन्यै ,,
४१४ ॐ तन्तुजालसमायुक्तायै ,,
४१५ ॐ तारहारावलिप्रियायै ,,
४१६ ॐ तिलहोमप्रियायै ,,
४१७ ॐ तीर्थायै ,,
४१८ ॐ तमालकुसुमाकृत्यै ,,
४१९ ॐ तारकायै ,,
४२० ॐ त्रियुतायै ,,
४२१ ॐ तन्व्यै ,,
४२२ ॐ त्रिशंकुपरिवारितायै ,,
४२३ ॐ तलोदर्यै ,,
४२४ ॐ तिलाभूषायै स्वाहा
४२५ ॐ ताटङ्कप्रियवाहिन्यै ,,
४२६ ॐ त्रिजटायै ,,
४२७ ॐ तित्तिर्यै ,,
४२८ ॐ तृष्णायै ,,
४२९ ॐ त्रिविधायै ,,
४३० ॐ तरुणाकृत्यै ,,
४३१ ॐ तप्तकाञ्चनसंकाशायै ,,
४३२ ॐ तप्तकाञ्चनभूषणायै ,,
४३३ ॐ त्रैयम्बकायै ,,
४३४ ॐ त्रिवर्गायै ,,
४३५ ॐ त्रिकालज्ञानदायिन्यै ,,
४३६ ॐ तर्पणायै ,,
४३७ ॐ तृप्तिदायै ,,
३३८ ॐ तृप्तायै ,,
४३९ ॐ तामस्यै ,,
४४० ॐ तुम्बुरुस्तुतायै ,,
४४१ ॐ तार्क्ष्यस्थायै ,,
४४२ ॐ त्रिगुणाकारायै ,,
४४३ ॐ त्रिभंग्यै ,,
४४४ ॐ तनुवल्लयै ,,
४४५ ॐ थात्कार्यै ,,
४४६ ॐ थारवायै ,,
४४७ ॐ थान्तायै ,,

४४६ ॐ दीनवत्सलायै स्वाहा
४५० ॐ दानवान्तकर्यै ,,
४५१ ॐ दुर्गायै ,,
४५२ ॐ दुर्गासुरनिवर्हिण्यै ,,
४५३ ॐ देवरीत्यै ,,
४५४ ॐ दिवारात्र्यै ,,
४५५ ॐ द्रौपद्यै ,,
४५६ ॐ दुन्दुभिस्वनायै ,,
४५७ ॐ देवयान्यै ,,
४५८ ॐ दुरावासायै ,,
४५६ ॐ दारिद्र्योद्भेदिन्यै ,,
४६० ॐ दिवायै ,,
४६१ ॐ दामोदरप्रियायै ,,
४६२ ॐ दीप्तायै ,,
४६३ ॐ दिग्वासायै ,,
४६४ ॐ दिग्विमोहिन्यै ,,
४६५ ॐ दण्डकारण्य-
निलयायै ,,
४६६ ॐ दण्डिन्यै ,,
४६७ ॐ देवपूजितायै ,,
४६८ ॐ देववन्द्यायै ,,
४६६ ॐ दिविषदायै ,,
४७० ॐ द्वेषिण्यै ,,
४७१ ॐ दानवाकृतये ,,
४७२ ॐ दीनानाथस्तुतायै ,,
४७३ ॐ दीक्षायै स्वाहा
४७४ ॐ दैवतादिस्वरूपिण्यै ,,
४७५ ॐ धात्र्यै ,,
४७६ ॐ धनुर्धरायै ,,
४७७ ॐ धेनवे ,,
४७८ ॐ धारिण्यै ,,
४७६ ॐ धर्मचारिण्यै ,,
४८० ॐ धरंधरायै ,,
४८१ ॐ धराधरायै ,,
४८२ ॐ धनदायै ,,
४८३ ॐ धान्यदोहिन्यै ,,
४८४ ॐ धर्मशीलायै ,,
४८५ ॐ धनाध्यक्षायै ,,
४८६ ॐ धनुर्वेदविशारदायै ,,
४८७ ॐ धृत्यै ,,
४८८ ॐ धन्यायै ,,
४८६ ॐ धृतपदायै ,,
४६० ॐ धर्मराजप्रियायै ,,
४६१ ॐ ध्रुवायै ,,
४६२ ॐ धूमावत्यै ,,
४६३ ॐ धूमकेश्यै ,,
४६४ ॐ धर्मशास्त्रप्रकाशिन्यै ,,
४६५ ॐ नन्दायै ,,
४६६ ॐ नन्दप्रियायै ,,
४६७ ॐ निद्रायै ,,

४९८ ॐ नृनुतायै स्वाहा
४९९ ॐ नन्दनात्मिकायै ,,
५०० ॐ नर्मदायै ,,
५०१ ॐ नलिन्यै ,,
५०२ ॐ नीलायै ,,
५०३ ॐ नीलकण्ठसमाश्रयायै ,,
५०४ ॐ नारायणप्रियायै ,,
५०५ ॐ नित्यायै ,,
५०६ ॐ निर्मलायै ,,
५०७ ॐ निर्गुणायै ,,
५०८ ॐ निधये ,,
५०९ ॐ निराधारायै ,,
५१० ॐ निरुपमायै ,,
५११ ॐ नित्यशुद्धायै ,,
५१२ ॐ निरञ्जनायै ,,
५१३ ॐ नादविन्दुकलातीतायै ,,
५१४ ॐ नादविन्दुकलात्मिकायै ,,
५१५ ॐ नृसिंहिन्यै ,,
५१६ ॐ नगधरायै ,,
५१७ ॐ नृपनागविभूषितायै ,,
५१८ ॐ नरकक्लेशशमन्यै ,,
५१९ ॐ नारायणपदोद्भवायै ,,
५२० ॐ निरवद्यायै स्वाहा
५२१ ॐ निराकारायै ,,
५२२ ॐ नारदप्रियकारिण्यै ,,
५२३ ॐ नानाज्योतिस्समाख्यातायै ,,
५२४ ॐ निधिदायै ,,
५२५ ॐ निर्मलात्मिकायै ,,
५२६ ॐ नवसत्रधरायै ,,
५२७ ॐ नीतये ,,
५२८ ॐ निरुपद्रवकारिण्यै ,,
५२९ ॐ नन्दजायै ,,
५३० ॐ नवरत्नाढ्यायै ,,
५३१ ॐ नैमिषारण्यवासिन्यै ,,
५३२ ॐ नवनीतप्रियायै ,,
५३३ ॐ नार्यै ,,
५३४ ॐ नीलजीमूतनिस्वनायै ,,
५३५ ॐ निमेषिण्यै ,,
५३६ ॐ नदीरूपायै ,,
५३७ ॐ नीलग्रीवायै ,,
५३८ ॐ निशेश्वर्यै ,,
५३९ ॐ नामावल्यै ,,
५४० ॐ निशुम्भघ्न्यै ,,
५४१ ॐ नागलोकनिवासिन्यै ,,

५४२ ॐ नवजांबूनदप्रख्यायै स्वाहा
५४३ ॐ नागलोकाधिदेवतायै ,,
५४४ ॐ नूपुराक्रान्तचरणायै ,,
५४५ ॐ नरचित्तप्रमोदिन्यै ,,
५४६ ॐ निमग्नारक्तनयनायै ,,
५४७ ॐ निर्घातसमनिस्वनायै ,,
५४८ ॐ नन्दनोद्याननिरयायै ,,
५४९ ॐ निर्व्यूहोपरिचारिण्यै ,,
५५० ॐ पार्वत्यै ,,
५५१ ॐ परमोदारायै ,,
५५२ ॐ परब्रह्मात्मिकायै ,,
५५३ ॐ परायै ,,
५५४ॐ पञ्चकोशविनिर्मुक्तायै ,,
५५५ ॐ पञ्चपातकनाशिन्यै ,,
५५६ ॐ परचित्तविधानज्ञायै ,,
५५७ ॐ पञ्चिकायै ,,
५५८ ॐ पञ्चरूपिण्यै ,,
५५९ ॐ पूर्णिमायै ,,
५६० ॐ परमायै ,,
५६१ ॐ प्रीत्यै ,,
५६२ ॐ परतेजःप्रकाशिन्यै स्वाहा
५६३ ॐ पुराण्यै ,,
५६४ ॐ पौरुष्यै ,,
६५५ ॐ पुण्यायै ,,
५६६ ॐ पुण्डरीकनिभेक्षणायै ,,
५६७ ॐ पातालतलनिर्मग्नायै ,,
५६८ ॐ प्रीतायै ,,
५६९ ॐ प्रीतिविवर्धिन्यै ,,
५७० ॐ पावन्यै ,,
५७१ ॐ पादसहितायै ,,
५७२ ॐ पेशलायै ,,
५७३ ॐ पवनाशिन्यै ,,
५७४ ॐ प्रजापतये ,,
५७५ ॐ परिश्रान्तायै ,,
५७६ ॐ पर्वतस्तनमण्डलायै ,,
५७७ ॐ पद्मप्रियायै ,,
५७८ ॐ पद्मसंस्थायै ,,
५७९ ॐ पद्माक्ष्यै ,,
५८० ॐ पद्मसंभवायै ,,
५८१ ॐ पद्मपत्रायै ,,
५८२ ॐ पद्मपदायै ,,
५८३ ॐ पद्मिन्यै ,,

५८४ ॐ प्रियभाषिण्यै स्वाहा
५८५ ॐ पशुपाशविनिर्मुक्तायै ,,
५८६ ॐ पुरंध्र्यै ,,
५८७ ॐ पुरवासिन्यै ,,
५८८ ॐ पुष्कलायै ,,
५८९ ॐ पुरुषायै ,,
५९० ॐ पर्वायै ,,
५९१ ॐ पारिजातकुसुमप्रियायै ,,
५९२ ॐ पतिव्रतायै ,,
५९३ ॐ पवित्राङ्ग्यै ,,
५९४ ॐ पुष्पहासपरायणायै ,,
५९५ ॐ प्रज्ञावतीसुतायै ,,
५९६ ॐ पौत्र्यै ,,
५९७ ॐ पुत्रपूज्यायै ,,
५९८ ॐ पयस्विन्यै ,,
५९९ ॐ पट्टिपाशधरायै ,,
६०० ॐ पङ्क्त्यै ,,
६०१ ॐ पितृलोकप्रदायिन्यै ,,
६०२ ॐ पुराण्यै ,,
६०३ ॐ पुण्यशीलायै ,,
६०४ ॐ प्रणतार्तिविनाशिन्यै ,,
६०५ ॐ प्रद्युम्नजनन्यै ,,
६०६ ॐ पुष्टायै ,,
६०७ ॐ पितामहपरिग्रहायै ,,
६०८ ॐ पुण्डरीकपुरावासायै स्वाहा
६०९ ॐ पुण्डरीकसमाननायै ,,
६१० ॐ पृथुजङ्घायै ,,
६११ ॐ पृथुभुजायै ,,
६१२ ॐ पृथुपादायै ,,
६१३ ॐ पृथुदर्यै ,,
६१४ ॐ प्रवालशोभायै ,,
६१५ ॐ पिङ्गाक्ष्यै ,,
६१६ ॐ पीतवाससे ,,
६१७ ॐ प्रचापलायै ,,
६१८ ॐ प्रसवायै ,,
६१९ ॐ पुष्टिदायै ,,
६२० ॐ पुण्यायै ,,
६२१ ॐ प्रतिष्ठायै ,,
६२२ ॐ प्रणतागत्यै ,,
६२३ ॐ पञ्चवर्णायै ,,
६२४ ॐ पञ्चवाण्यै ,,
६२५ ॐ पञ्चिकायै ,,
६२६ ॐ पञ्जरस्थितायै ,,
६२७ ॐ परमायायै ,,
६२८ ॐ परज्योतिषे ,,
६२९ ॐ परप्रीतये ,,
६३० ॐ परागतये ,,

६३१ ॐ पराकाष्ठायै स्वाहा
६३२ ॐ परेशान्यै ,,
६३३ ॐ पावन्यै ,,
६३४ ॐ पात्रकद्युतये ,,
५३५ ॐ पुण्यभद्रायै ,,
६३६ ॐ परिच्छेद्यायै ,,
६३७ ॐ पुष्पहासायै ,,
६३८ ॐ पृथूदर्यै ,,
६३९ ॐ पीताङ्ग्यै ,,
६४० ॐ पीतवसनायै ,,
६४१ ॐ पीतशय्यायै ,,
६४२ ॐ पिशाचिन्यै ,,
६४३ ॐ पीतक्रियायै ,,
६४४ ॐ पिशाचघ्न्यै ,,
६४५ ॐ पाटलाक्ष्यै ,,
६४६ ॐ पटुक्रियायै ,,
६४७ ॐ पञ्चभक्षप्रियाचारायै ,,
६४८ ॐ पूतनाप्राणघातिन्यै ,,
६४९ ॐ पुन्नागवनमध्यस्थायै ,,
६५० ॐ पुण्यतीर्थनिषेवितायै ,,
६५१ ॐ पञ्चाङ्ग्यै ,,
६५२ ॐ पराशक्त्यै ,,
६५३ ॐ परमाह्लादकारिण्यै ,,
६५४ ॐ पुष्पकाण्डस्थितायै ,,
६५५ ॐ पूषायै ,,
६५६ ॐ पोषिताखिल-
विष्टपायै स्वाहा
६५७ ॐ पानप्रियायै ,,
६५८ ॐ पञ्चशिखायै ,,
६५९ ॐ पन्नगोपरिशा-
यिन्यै ,,
६६० ॐ पञ्चमात्रात्मिकायै ,,
६६१ ॐ पृथ्व्यै ,,
६६२ ॐ पथिकायै ,,
६६३ ॐ पृथुदोहिन्यै ,,
६६४ ॐ पुराणन्याय-
मीमांसायै ,,
६६५ ॐ पाटल्यै ,,
६६६ ॐ पुष्पगन्धिन्यै ,,
६६७ ॐ पुण्यप्रजायै ,,
६६८ ॐ पारदात्र्यै ,,
६६९ ॐ परमार्गैकगोचरायै ,,
६७० ॐ प्रवालशोभायै ,,
६७१ ॐ पूर्णाशायै ,,
६७२ ॐ प्रणवायै ,,
६७३ ॐ पल्लवोदर्यै ,,
६७४ ॐ फलिन्यै ,,
६७५ ॐ फलदायै ,,
६७६ ॐ फल्गवे ,,
६७७ ॐ फूत्कार्यै ,,

६७८ ॐ फलकाकृत्यै स्वाहा
६७९ ॐ फणीन्द्रभोगशयनायै ,,
६८० ॐ फणिमण्डल-
मण्डितायै ,,
६८१ ॐ बालबालायै ,,
६८२ ॐ बहुमतायै ,,
६८३ ॐ बालातपनिभा-
शुकायै ,,
६८४ ॐ बलभद्रप्रियायै ,,
६८५ ॐ बन्द्यायै ,,
६८६ ॐ बडवायै ,,
६८७ ॐ बुद्धिसंस्तुतायै ,,
६८८ ॐ बन्दीदेव्यै ,,
६८९ ॐ बिलवत्यै ,,
६९० ॐ बडिशघ्न्यै ,,
६९१ ॐ बलिप्रियायै ,,
६९२ ॐ बान्धव्यै ,,
६९३ ॐ बोधितायै ,,
६९४ ॐ बुद्ध्यै ,,
६९५ ॐ बन्धूककुसुमप्रियायै ,,
६९६ ॐ बालभानुप्रभाकारायै ,,
६९७ ॐ ब्राह्म्यै ,,
६९८ ॐ ब्राह्मणदेवतायै ,,
६९९ ॐ बृहस्पतिस्तुतायै ,,
७०० ॐ वृन्दायै ,,
७०१ ॐ वृन्दावनविहा-
रिण्यै स्वाहा
७०२ ॐ बालाकिन्यै ,,
७०३ ॐ बिलाहारायै ,,
७०४ ॐ बिलवासायै ,,
७०५ ॐ बहूदकायै ,,
७०६ ॐ बहुनेत्रायै ,,
७०७ ॐ बहुपदायै ,,
७०८ ॐ बहुकर्णावतंसिकायै ,,
७०९ ॐ बहुबाहुयुतायै ,,
७१० ॐ बीजरूपिण्यै ,,
७११ ॐ बहुरूपिण्यै ,,
७१२ ॐ बिन्दुनादकला-
तीतायै ,,
७१३ ॐ बिन्दुनादस्वरूपिण्यै ,,
७१४ ॐ बद्धगोधांगुलि-
त्राणायै ,,
७१५ ॐ बदर्याश्रमवासिन्यै ,,
७१६ ॐ वृन्दारकायै ,,
७१७ ॐ बृहत्स्कन्धायै ,,
७१८ ॐ बृहतीबाणपातिन्यै ,,
७१९ ॐ वृन्दाध्यक्षायै ,,
७२० ॐ बहुनुतायै ,,
७२१ ॐ वनितायै ,,
७२२ ॐ बहुविक्रमायै ,,
७२३ ॐ बद्धपद्मासनासीनायै ,,

७२४ ॐ बिल्वपत्रतल-
स्थितायै स्वाहा
७२५ ॐ बोधिद्रुमनिजा-
वासायै ,,
७२६ ॐ बडिस्थायै ,,
७२७ ॐ बिन्दुदर्पणायै ,,
७२८ ॐ बालायै ,,
७२९ ॐ बाणासनवत्यै ,,
७३० ॐ बडवानलवेगिन्यै ,,
७३१ ॐ ब्रह्माण्डबहिरन्तः-
स्थायै ,,
७३२ ॐ ब्रह्मकङ्कणसूत्रिण्यै ,,
७३३ ॐ भवान्यै ,,
७३४ ॐ भीषणवत्यै ,,
७३५ ॐ भाविन्यै ,,
७३६ ॐ भयहारिण्यै ,,
७३७ ॐ भद्रकाल्यै ,,
७३८ ॐ भुजङ्गाक्ष्यै ,,
७३९ ॐ भारत्यै ,,
७४० ॐ भारताशयायै ,,
७४१ ॐ भैरव्यै ,,
७४२ ॐ भीषणकारायै ,,
७४३ ॐ भूतिदायै ,,
७४४ ॐ भूतिमालिन्यै ,,
७४५ ॐ भामिन्यै ,,
७४६ ॐ भोगनिरतायै स्वाहा
७४७ ॐ भद्रदायै ,,
७४८ ॐ भूरिविक्रमायै ,,
७४९ ॐ भूतवासायै ,,
७५० ॐ भृगुलतायै ,,
७५१ ॐ भार्गव्यै ,,
७५२ ॐ भूसुरार्चितायै ,,
७५३ ॐ भागीरथ्यै ,,
७५४ ॐ भोगवत्यै ,,
७५५ ॐ भवनस्थायै ,,
७५६ ॐ भिषग्वरायै ,,
७५७ ॐ भामिन्यै ,,
७५८ ॐ भोगिन्यै ,,
७५९ ॐ भाषायै ,,
७६० ॐ भवान्यै ,,
७६१ ॐ भूरिदक्षिणायै ,,
७६२ ॐ भग त्मिकायै ,,
७६३ ॐ भीमवत्यै ,,
७६४ ॐ भवबन्धविमोचिन्यै ,,
७६५ ॐ भजनीयायै ,,
७६६ ॐ भूतधात्रीरञ्जितायै ,,
७६७ ॐ भुवनेश्वर्यै ,,
७६८ ॐ भुजङ्गवलयायै ,,
७६९ ॐ भीमायै ,,
७७० ॐ भेरुण्डायै ,,

७७१ ॐ भागधेयिन्यै स्वाहा
७७२ ॐ मात्रे ,,
७७३ ॐ मायायै ,,
७७४ ॐ मधुमत्यै ,,
७७५ ॐ मधुजिह्वायै ,,
७७६ ॐ मधुप्रियायै ,,
७७७ ॐ महादेव्यै ,,
७७८ ॐ महाभागायै ,,
७७९ ॐ मालिन्यै ,,
७८० ॐ मोनलोचनायै ,,
७८१ ॐ मायातीतायै ,,
७८२ ॐ मधुमत्यै ,,
७८३ ॐ मधुमांसायै ,,
७८४ ॐ मधुद्रवायै ,,
७८५ ॐ मानव्यै ,,
७८६ ॐ मधुसम्भूतायै ,,
७८७ ॐ मिथिलापुरवासिन्यै ,,
७८८ ॐ मधुकैटभसंहर्त्र्यै ,,
७८९ ॐ मेदिन्यै ,,
७९० ॐ मेघमालि यै ,,
७९१ ॐ मन्दोदर्यै ,,
७९२ ॐ महामायायै ,,
७९३ ॐ मैथिल्यै ,,
७९४ ॐ ममृणप्रियायै ,,
७९५ ॐ महालक्ष्म्यै ,,
७९६ ॐ महाकाल्यै स्वाहा
७९७ ॐ महाकन्यायै ,,
७९८ ॐ महेश्वर्यै ,,
७९९ ॐ माहेन्द्र् यै ,,
८०० ॐ मेरुतनयायै ,,
८०१ ॐ मन्दारकुसुमा-र्चितायै ,,
८०२ ॐ मञ्जुमञ्जीर-चरणायै
८०३ ॐ मोक्षदायै
८०४ ॐ मञ्जुभाषिण्यै ,,
८०५ ॐ मधुरद्राविण्यै ,,
८०६ ॐ मुद्रायै ,,
८०७ ॐ मलयायै ,,
८०८ ॐ मलयान्वितायै ,,
८०९ ॐ मेधायै ,,
८१० ॐ मरतश्यामायै ,,
८११ ॐ मागध्यै ,,
८१२ ॐ मेनकात्मजायै ,,
८१३ ॐ महामार्यै ,,
८१४ ॐ महावीरायै ,,
८१५ ॐ महाश्यामायै
८१६ ॐ मनुस्तुतायै ,,
८१७ ॐ मातृकायै ,,
८१८ ॐ मिहिराभासायै ,,

८१९ ॐ मुकुन्दपदविक्र-
माये स्वाहा
८२० ॐ मूलाधारस्थितायै ,,
८२१ ॐ मुग्धायै ,,
८२२ ॐ मणिपूरकवासिन्यै ,,
८२३ ॐ मृगाक्ष्यै ,,
८२४ ॐ महिषारूढ़ायै ,,
८२५ ॐ महिशासुरमर्दिन्यै ,,
८२६ ॐ योगासनायै ,,
८२७ ॐ योगगम्यायै ,,
८२८ ॐ योगायै ,,
८२९ ॐ यौवनकाश्रयायै ,,
८३० ॐ यौवन्यै ,,
८३१ ॐ युद्धमध्यस्थायै ,,
८३२ ॐ यमुनायै ,,
८३३ ॐ युगधारिण्यै ,,
८३४ ॐ यक्षिण्यै ,,
८३५ ॐ योगयुक्तायै ,,
८३६ ॐ यक्षराजप्रसूतिन्यै ,,
८३७ ॐ यात्रायै ,,
८३८ ॐ यानविधानज्ञायै ,,
८३९ ॐ यदुवंशसमुद्भवायै ,,
८४० ॐ यकारादिहका-
रान्तायै ,,
८४१ ॐ याजुष्यै ,,
८४२ ॐ यज्ञरूपिण्यै स्वाहा
८४३ ॐ यामिन्यै ,,
८४४ ॐ योगनिरतायै ,,
८४५ ॐ यातुधानभयङ्कर्यै ,,
८४६ ॐ रुक्मिण्यै ,,
८४७ ॐ रमण्यै ,,
८४८ ॐ रामायै ,,
८४९ ॐ रेवत्यै ,,
८५० ॐ रेणुकायै ,,
८५१ ॐ रत्यै ,,
८५२ ॐ रौद्रयै ,,
८५३ ॐ रौद्रप्रियाकारायै ,,
८५४ ॐ राममात्रे ,,
८५५ ॐ रतिप्रियायै ,,
८५६ ॐ रोहिण्यै ,,
८५७ ॐ राज्यदायै ,,
८५८ ॐ रेवायै ,,
८५९ ॐ रमायै ,,
८६० ॐ राजीवलोचनायै ,,
८६१ ॐ राकेश्यै ,,
८६२ ॐ रूपसम्पन्नायै ,,
८६३ ॐ रत्नसिंहासन-
स्थितायै ,,
८६४ ॐ रक्तमाल्याम्बर-
धरायै ,,

८६५ ॐ रक्तगन्धानुलेपनायै स्वाहा
८६६ ॐ राजहंससमारूढायै ,,
८६७ ॐ रम्भायै ,,
८६८ ॐ रक्तबलिप्रियायै ,,
८६९ ॐ रमणीययुगाधारायै ,,
८७० ॐ राजिताखिलभूतलायै ,,
८७१ ॐ रुरुचर्मपरीधानायै ,,
८७२ ॐ रथिन्यै ,,
८७३ ॐ रत्नमालिकायै ,,
८७४ ॐ रोगेश्यै ,,
८७५ ॐ रोगशमन्यै ,,
८७६ ॐ राविण्यै ,,
८७७ ॐ रोमहर्षिण्यै ,,
८७८ ॐ रामचन्द्रपदाक्रान्तायै ,,
८७९ ॐ रावणच्छेदकारिण्यै ,,
८८० ॐ रत्नवस्त्रपरिच्छिन्नायै ,,
८८१ ॐ रथस्थायै ,,
८८२ ॐ रुक्मभूषणायै ,,
८८३ ॐ लज्जाधिदेवतायै ,,
८८४ ॐ लोलायै ,,
८८५ ॐ ललितायै ,,
८८६ ॐ लिङ्गधारिण्यै ,,
८८७ ॐ लक्ष्म्यै ,,
८८८ ॐ लोलायै स्वाहा
८८९ ॐ लुप्तविषायै ,,
८९० ॐ लोकिन्यै ,,
८९१ ॐ लोकविश्रुतायै ,,
८९२ ॐ लज्जायै ,,
८९३ ॐ लम्बोदरीदेव्यै ,,
८९४ ॐ ललनायै ,,
८९५ ॐ लोकधारिण्यै ,,
८९६ ॐ वरदायै ,,
८९७ ॐ वन्दितायै ,,
८९८ ॐ विद्यायै ,,
८९९ ॐ वैष्णव्यै ,,
९०० ॐ विमलाकृत्यै ,,
९०१ ॐ वाराह्यै ,,
९०२ ॐ विरजायै ,,
९०३ ॐ वर्षायै ,,
९०४ ॐ वरलक्ष्म्यै ,,
९०५ ॐ विलासिन्यै ,,
९०६ ॐ विनतायै ,,
९०७ ॐ व्योममध्यस्थायै ,,
९०८ ॐ वारिजासनसंस्थितायै
९०९ ॐ वारुण्यै ,,
९१० ॐ वेणुसंभूतायै ,,
९११ ॐ वीतिहोत्रायै ,,

६१२ ॐ विरूपिण्यै स्वाहा
६१३ ॐ वायुमण्डलमध्य-
स्थायै ,,
६१४ ॐ विष्णुरूपायै ,,
६१५ ॐ विधिप्रियायै ,,
६१६ ॐ विष्णुपत्न्यै ,,
६१७ ॐ विष्णुमत्यै ,,
६१८ ॐ विशालाक्ष्यै ,,
६१९ ॐ वसुन्धरायै ,,
६२० ॐ वामदेवप्रियायै ,,
६२१ ॐ वेलायै ,,
६२२ ॐ वज्रिण्यै ,,
६२३ ॐ वसुदोहिन्यै ,,
६२४ ॐ वेदाक्षरपरीताङ्ग्यै ,,
६२५ ॐ वाजपेयफलप्रदायै ,,
६२६ ॐ वासव्यै ,,
६२७ ॐ वामजनन्यै ,,
६२८ ॐ वैकुण्ठनिलयायै ,,
६२९ ॐ वरायै ,,
६३० ॐ व्यासप्रियायै ,,
६३१ ॐ वर्मधरायै ,,
६३२ ॐ वाल्मीकिपरि-
सेवितायै ,,
६३३ ॐ शाकम्भर्यै ,,
६३४ ॐ शिवायै ,,
६३५ ॐ शान्तायै ,,
६३६ ॐ शारदायै स्वाहा
६३७ ॐ शरणागतये ,,
६३८ ॐ शातोदर्यै ,,
६३९ ॐ शुभाचारायै ,,
६४० ॐ शुम्भासुरविमर्दिन्यै ,,
६४१ ॐ शोभावत्यै ,,
६४२ ॐ शिवाकारायै ,,
६४३ ॐ शङ्करार्धशरीरिण्यै ,,
६४४ ॐ शोणायै ,,
६४५ ॐ शुभाशयायै ,,
६४६ ॐ शुभ्रायै ,,
६४७ ॐ शिरःसन्धान-
कारिण्यै ,,
६४८ ॐ शरावत्यै ,,
६४९ ॐ शरानन्दायै ,,
६५० ॐ शरज्ज्योत्स्नायै ,,
६५१ ॐ शुभाननायै ,,
६५२ ॐ शरभायै ,,
६५३ ॐ शूलिन्यै ,,
६५४ ॐ शुद्धायै ,,
६५५ ॐ शवर्यै ,,
६५६ ॐ शुकवाहनायै ,,
६५७ ॐ श्रीमत्यै ,,
६५८ ॐ श्रीधरानन्दायै ,,
६५९ ॐ श्रवणानन्ददायिन्यै ,,
६६० ॐ शर्वाण्यै ,,

९६१ ॐ शर्वरीवन्धायै स्वाहा		९८५ ॐ समानाधिकवर्जितायै	स्वाहा
९६२ ॐ षड्भाषायै	,,	९८६ ॐ सर्वोत्तुङ्गायै	,,
९६३ ॐ षड्ऋतुप्रियायै	,,	९८७ ॐ संगहीनायै	,,
९६४ ॐ षडाधारस्थितादेव्यै	,,	९८८ ॐ सद्गुणायै	,,
९६५ ॐ षण्मुखप्रियकारिण्यै	,,	९८९ ॐ सकलेष्टदायै	,,
९६६ ॐ षडङ्गरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृतायै	,,	९९० ॐ सरघायै	,,
९६७ ॐ सरस्वत्यै	,,	९९१ ॐ सूर्यतनयायै	,,
९६८ ॐ सदाधारायै	,,	९९२ ॐ सुकेश्यै	,,
९६९ ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै	,,	९९३ ॐ सोमसंहत्यै	,,
९७० ॐ सामगानप्रियायै	,,	९९४ ॐ हिरण्यवर्णायै	,,
९७१ ॐ सूक्ष्मायै	,,	९९५ ॐ हरिण्यै	,,
९७२ ॐ सावित्र्यै	,,	९९६ ॐ ह्रींकार्यै	,,
९७३ ॐ सामसम्भवायै	,,	९९७ ॐ हंसवाहिन्यै	,,
९७४ ॐ सर्वावासायै	,,	९९८ ॐ क्षौमवस्त्रपरीताङ्ग्यै	,,
९७५ ॐ सदानन्दायै	,,	९९९ ॐ क्षीराब्धितनयायै	,,
९७६ ॐ सुस्तन्यै	,,	१००० ॐ क्षमायै	,,
९७७ ॐ सागराम्बरायै	,,	१००१ ॐ गायत्र्यै	,,
९७८ ॐ सर्वैश्वर्यप्रियायै	,,	१००२ ॐ सावित्र्यै	,,
९७९ ॐ सिद्ध्यै	,,	१००३ ॐ पार्वत्यै	,,
९८० ॐ साधुबन्धुपराक्रमायै	,,	१००४ ॐ सरस्वत्यै	,,
९८१ ॐ सप्तर्षिमण्डलगतायै	,,	१००५ ॐ वेदगर्भायै	,,
९८२ ॐ सोममण्डलवासिन्यै	,,	१००६ ॐ वरारोहायै	,,
९८३ ॐ सर्वज्ञायै	,,	१००७ ॐ श्रीगायत्र्यै	,,
९८४ ॐ सान्द्रकरुणायै	,,	१००८ ॐ पराम्बिकायै	,,

इति गायत्रीसहस्रनामावल्याः स्वाहाकारः समाप्तः ।

यज्ञमन्त्रसंग्रहस्य द्वितीयो भागः समाप्तः ।

यज्ञमन्त्रसंग्रहः

(तृतीयो भागः)

अथ महारुद्रन्यासः ।

धृतपवित्रः । आचम्य प्राणानायम्य । ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने । तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे ह्यपराजिते ।। इति शिखाग्रन्थिकरणम् ।

ॐ सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता महाप्रार्थने वि० ।

ॐ सहस्राणि सहस्रशः० ।

य ऽएतावन्तश्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः ककुभां प्रार्थना वि० ।

ॐ य ऽएतावन्तश्च० ।

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने वि० ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका० । (प्राङ्मुखेनोदङ्मुखेनोपवेशनम्) ।

सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता,

वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता,

अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता,

ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिरनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता, सर्वेषां भस्मपरिग्रहणे वि० ।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि० । ॐ वामदेवाय नमो० । ॐ अघोरेभ्यो० ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे० । ॐ ईशानः सर्व० ।

एभिर्मन्त्रै (गार्हपत्या सभ्यान्यतरसम्भवस्य भस्मनः) भस्मनो दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा सव्यहस्ते करणम् ।

अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रणमन्त्राणां पिप्पलाद ऋषिर्गायत्री छन्दः कालाग्निरुद्रो देवता भस्माभिमन्त्रणे वि० ।

"ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म, व्योमेति भस्म, सर्वठं० हवा इदं भस्म, मन इत्येतानि चक्षूंषि भस्मानि तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं यद् भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षाय" ।

इति त्रिः पठित्वा (कृत्वा) भस्मनोऽभिमन्त्रणम् । दक्षिणहस्तेनाच्छादनम् ।

आपो ज्योतिरित्यस्य प्रजापतिऋर्षिर्यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता भस्मन्यपाम् आसेचने वि० ।

ॐ आपो ज्योतीरसो० स्वरोऽम् । इति मन्त्रं पठित्वा जलेन सिञ्चेत् । "ॐ नमः शिवाय" इति सम्मर्दनम् । ततः सर्वाङ्गे भस्मोद्धूलनम् ।

ईशानेत्यस्य ईशान ऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता शिरसि भस्मोद्धूलने वि० ।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्व० इति शिरसि ।

तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिर्गायत्री छन्दः रुद्रो देवता मुखे भस्मोद्धूलने वि० ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे० इति मुखे ।

अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता हृदये भस्मोद्धूलने वि० ।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो० इति हृदये ।

वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिर्जगती छन्दः विष्णुर्देवता गुह्ये भस्मोद्धूलने वि० ।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय० इति गुह्ये ।

सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता पादयोर्भस्मोद्धूलने वि० ।

ॐ सद्योजात प्रपद्यामि० इति पादयोः । प्रणवेन (ॐ इत्यनेन) मस्तकादिपादान्तं सर्वाङ्गेषु । ततः त्रिपुण्ड्रधारणम् ।

मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिर्जगती छन्दः एको रुद्रो देवता भस्मोद्धारणे वि० ।

ॐ मानस्तोके तनये० इति भस्मोद्धारणम् ।

त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिरनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दः आशीर्देवता, भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे वि० ।

यास्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यश्चाकारो रजोभूर्लोकश्चात्मा क्रियाशक्तिऋर्ग्वेदः प्रातःसवनं महादेवो देवता,

यास्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्वमन्तरिक्षमन्तरात्मा चेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं महेश्वरो देवता,

यास्य तृतीया रेखा सा आहवनीयो मकारस्तमोद्यौर्लोकः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं शिवो देवता ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः० ।

इति तर्जनीमध्यमाऽनामिकाभिः शिरसि, ललाटे, वक्षसि, स्कन्धयोः, अथवा–ललाटे, बाह्वोः, हृदये, नाभौ च–, इत्येवं पञ्चसु स्थानेषु त्रिपुण्ड्रधारणम् ।

"ॐ नमः शिवाय" इत्यनेन अथवा "ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०" इत्यनेन रुद्राक्षधारणम् ।

अथ छन्दःपुरुषस्य शरीरे न्यासाः —

अंगुष्ठानामिकाभ्यां न्यासान् कुर्यात् । तद्यथा-

ॐ तिर्यग्बिलाय चमसायोर्ध्वबुध्नाय छन्दःपुरुषाय नमः इति शिरसि ।

ॐ गौतम-भरद्वाजाभ्यां नमः इति नेत्रयोः ।

ॐ विश्वामित्र-जमदग्निभ्यां नमः इति श्रोत्रयोः ।

ॐ वसिष्ठ–कश्यपाभ्यां नमः इति नासापुटयोः ।

ॐ अत्रये नमः इति वाचि ।

ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः इति शिरसि ।

ॐ उष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः इति ग्रीवायाम् ।

ॐ बृहत्यै छन्दसे नमः बृहस्पतये नमः इत्यनूके (पृष्ठे) ।

ॐ बृहद्रथान्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः इति बाह्वोः ।

ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः इति मध्ये (उदरे) ।

ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः इति शीर्ष्णोः ।

ॐ अतिच्छन्दसे नमः प्रजापतये नमः इति लिङ्गे । (उदकोपस्पर्शः) ।

ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः इति पायौ (गुदे) ।

ॐ अनुष्टुभे छन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इति ऊर्वोः ।

ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः इति जान्वोः ।

ॐ द्विपदायै छन्दसे नमः विष्णवे नमः इति पादयोः ।

ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः इति प्राणेषु ।

ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः इति मस्तकादि-पादान्तं हस्तद्वयविपर्यासेन

मनो जूतिरित्यस्य आङ्गिरसो बृहस्पतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता हृदयन्यासे वि० ।

ॐ मनो जूतिर्जुषताम्० हृदयाय नमः ।

अबोध्यग्निरित्यस्य बुधगविष्ठिरा ऋषी त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे वि० ।

ॐ अबोध्यग्निः० शिरसे स्वाहा ।

ॐ मूर्धानमित्यस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोऽ-ग्निर्देवता शिखान्यासे वि० ।

ॐ मूर्धानं दिवः०। शिखायै वषट् ।

मर्म्माणि त इत्यस्य विवस्वानृषिस्त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता कवचन्यासे वि०।

ॐ मर्म्माणि ते० कवचाय हुम् ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरित्यस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्व-कर्मा देवता नेत्रन्यासे विनियोगः ।

विश्वतश्चक्षुः० नेत्रत्रयाय वौषट् ।

मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिर्जगती छन्दः एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे वि० ।

ॐ मानस्तोके० अस्त्राय फट् ।

इति षडङ्गन्यासः प्रथमः ।

या ते रुद्रेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता शिखान्यासे वि० ।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा० शिखायाम् ।

अस्मिन्महतीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः शिरोन्यासे वि० ।

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे० शिरसि ।

असंख्यातेस्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः ललाटन्यासे वि० ।

ॐ असंख्याता सहस्राणि० ललाटे।

त्र्यम्वकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठ-प्रजापती ऋषी अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता नेत्रन्यासे वि० ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० नेत्रयोः ।

मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिर्जगती छन्दः एको रुद्रो देवता नासिकान्यासे वि० ।

ॐ मानस्तोके० नासिकायाम् ।

अवतत्येत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता मुखन्यासे वि० ।

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वम्० मुखे ।

नीलग्रीवा इति द्वयोः परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवता कण्ठन्यासे वि० ।

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवम्० । ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाः ० कण्ठे ।

नमस्त ऽआयुधायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता प्रकोष्ठन्यासे वि० ।

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय० प्रकोष्ठयोः ।

ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवता हस्तन्यासे वि० ।

ॐ ये तीर्थानि० हस्तयोः ।

नमो वः किरिकेभ्य इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः सामोष्णिग्यजुरुष्णिक् दैवीजगती छन्दांसि बहवो रुद्रा देवता हृदयन्यासे वि० ।

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो० हृदये ।

नमो हिरण्यबाहव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, अत्रैकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् छन्दः, अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् छन्दः, दशाक्षराणां यजुःपंक्तिश्छन्दः, हिरण्यबाह्वादयो मन्त्रवर्णोक्ता उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवता नाभिन्यासे वि० ।

ॐ नमो हिरण्यबाहवे० नाभौ ।

इमा रुद्रायेत्यस्य कुत्स ऋषिर्जगती छन्दः एको रुद्रो देवता गुह्यन्यासे वि० ।

ॐ इमा रुद्राय तवसे ० गुह्ये ।

मानो महान्तमित्यस्य कुत्स ऋषिर्जगती छन्दः एको रुद्रो देवता ऊरुन्यासे विनियोगः ।

ॐ मानो महान्तमुत० ऊर्वोः ।

एष त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सामपंक्तिर्यजुर्जगती छन्दसो रुद्रो देवता जानुन्यासे वि० ।

ॐ एष ते रुद्र भागः० जान्वोः ।

अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः रुद्रौ देवता जङ्घान्यासे वि० ।

ॐ अवरुद्रमदीमह्यव० जङ्घयोः ।

अध्यवोचदित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः पंक्तिश्छन्दः एको रुद्रो देवता कवचन्यासे वि०

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० कवचम् ।

नमो बिल्मिन इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः षडक्षराणां यजुर्गायत्री छन्दः पञ्चाक्षरयोर्दैवी पंक्तिश्छन्दः सप्ताक्षरस्य यजुरुष्णिक् छन्दः बिल्मिनादयो मन्त्रवर्णावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवता उपकवचन्यासे वि० ।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने० उपकवचम् ।

नमोऽस्तु नीलग्रीवायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता तृतीयनेत्रन्यासे वि० ।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० तृतीयनेत्रे । (मुष्टितो विमुक्तया मध्यमया) ।

प्रमुञ्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे वि० ।

ॐ प्रमुञ्च० अस्त्रम् ।

य ऽएतावन्तश्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवता दिग्बन्धने वि० ।

ॐ य ऽएतावन्तश्च० दिग्बन्धः । (तर्जन्यङ्गुष्ठाग्रस्फोटनेन दिग्बन्धः) ।

इति द्वितीयो न्यासः ।

ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः विराट् छन्दः रुद्रो देवता न्यासे वि० ।

ॐ नमो मूर्ध्नि । ॐ नं नमो नासिकायाम् । ॐ मों नमः ललाटे । ॐ भं नमः मुखे । ॐ गं नमः कण्ठे । ॐ वं नमः हृदये ।

ॐ तें नमः दक्षिणहस्ते। ॐ रुं नमः वामहस्ते। ॐ द्रां नमः नाभौ। ॐ यं नमः पादयोः।

इति रुद्रगायत्रीन्यासस्तृतीयः।

त्रातारमित्यस्य गर्ग ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता प्राच्या सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ त्रातारमिन्द्रम्० इन्द्राय नमः।

त्वन्नो ऽअग्न इत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिर्जगती छन्दः अग्निर्देवता आग्नेय्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने० अग्नये नमः।

सुगन्नु पन्थामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः यमो देवता दक्षिणस्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ सुगन्नु पन्थाम्० यमाय नमः।

असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः निर्ऋतिर्देवता नैर्ऋत्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ असुन्वन्तम० निर्ऋतये नमः।

तत्त्वा यामीत्यस्य शुनःशेप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता प्रतीच्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ तत्त्वा यामि० वरुणाय नमः।

आनो नियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वायुर्देवता वायव्यां सम्पुटीकरण नमस्कारे च वि०।

ॐ आनो नियुद्भिः० वायवे नमः।

व्वयर्ठ० सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमो देवता उदीच्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ व्वयर्ठ० सोम० सोमाय नमः।

तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगतीछन्दः ईशानो देवता ईशान्यां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ तमीशानम्० ईशानाय नमः।

अस्मे रुद्रा इत्यस्य प्रगर्थ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता ऊर्ध्वायां सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०।

ॐ अस्मे रुद्रा० ब्रह्मणे नमः।

स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः अनन्तो देवता अधः सम्पुटीकरणे नमस्कारे च वि०

ॐ स्योना पृथिवि० अनन्ताय नमः ।

इति सम्पुटाख्यो न्यासश्चतुर्थः ।

यज्जाग्रत इति षडर्चस्य सूक्तस्य शिवसङ्कल्प ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः मनोः देवता हृदयन्यासे होमे च वि० ।

ॐ यज्जाग्रतो दूरम्० (१—६ मन्त्राः) हृदयाय नमः ।

(मुष्टि वनिर्गताङ्गुष्ठौ सम्पुटौ कृत्वा हृदये न्यसेत्) ।

सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषो देवता शिरोन्यासे होमे च वि०

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः० (१-१६ मन्त्राः) शिरसे स्वाहा ।

(मुष्टिविनिर्गताङ्गुष्ठौ संयुक्तौ न्यस्ततर्जनीकौ कृत्वा शिरसि न्यसेत्) ।

अद्भ्यः सम्भृत इति षडर्चस्योत्तरनारायणस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां त्रयाणां त्रिष्टुप्छन्दः चतुर्थ-पञ्चमयोरनुष्टुप्छन्दः षष्ठस्य त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता, शिखान्यासे होमे च वि० ।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (१७-२२ मन्त्राः) शिखायै वषट् ।

आशुः शिशान इति द्वादशानामप्रतिरथ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता कवचन्यासे होमे च वि० ।

ॐ आशुः शिशानः० (१-१२ मन्त्राः) कवचाय हुम् ।

(इत्यङ्गुष्ठौ प्रसक्ततर्जन्यौ च त्रिकोणवत्कृत्वा मूर्ध्नि पश्चान्मुखं कृत्वोभयपार्श्वतः करौ हृदन्तं नयन् कवचं न्यसेत्) ।

विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तं प्रत्नथेत्यस्य काश्यपवत्सावृपी त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री-

छन्दः सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, वण्महानिति द्वयोर्जमदग्निऋ षिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्यो देवता, श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिर्बृहतीछन्दः सूर्यो देवता, अद्या देवा इत्यस्य कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आ कृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता नेत्रन्यासे होमे च वि० ।

ॐ विभ्राड् बृहत्० (शु० ३३।१-१४ मन्त्राः) नेत्रत्रयाय वौषट् ।

नमस्ते इत्यादिषोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्ते इत्यस्य गायत्रीछन्दः, या ते रुद्रेत्यादीनां त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मानो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः सर्वेषामेको रुद्रो देवता, अस्त्रन्यासे होमे च वि० ।

ॐ नमस्ते० (१-१६ मन्त्राः) अस्त्राय फट् ।

(किञ्चित्तर्जनीं प्रसार्य मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन)

इति बृहत्षडङ्गन्यासः पञ्चमः ।

नमो हिरण्यबाहव इत्यादीनां नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नम इत्यन्तानां यजुषां हिरण्यबाहुः सेनान्ये दिशां च पतिरित्यादिमन्त्रवर्णावगता उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः,

नमो भवाय च रुद्राय चेत्यादीनां प्रखिदते चेत्यन्तानां यजुषां भवादयो मन्त्रलिङ्गावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः,

नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नम इत्यस्य उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा० देवताः,

नमो वः किरिकेभ्यः इत्यादीनामग्नि-वायु-सूर्य-हृदयभूतव्याहृतीनामन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः,

द्राप इत्यस्य उपरिष्टाद् बृहतीछन्दः, इमा रुद्राय इत्यस्य कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः,

या ते रुद्रेत्यस्य अनुष्टुप्छन्दः, परि नो मीढुष्टमेति द्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः, विकिरिद्र-सहस्राणीति द्वयोरनुष्टुप्छन्दः सप्तानामेको रुद्रो देवता, असंख्यातेत्यादीनां दशानां यजुषामनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः,

नमोऽस्तु रुद्रेभ्य इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां धृतिश्छन्दः बहवो रुद्रा देवता महारुद्रप्रीत्यर्थं होमे वि० ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० अस्त्राय फट् ।

एष ते इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सामपंक्तिर्यजुर्जगत्यश्छन्दांसि रुद्रो देवता मुद्राप्रदर्शने वि० ।

ॐ एष ते रुद्र भागः० इति योनिमुद्राप्रदर्शनम् ।

व्वयर्ठ० सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः सामपंक्तिर्यजुर्जगत्यौ छन्दसी रुद्रो देवता, भेषजमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ककुप्छन्दः रुद्रो देवता, त्र्यम्बकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठ–प्रजापती ऋषी अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता, एतत्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः आस्तारपंक्तिश्छन्दः रुद्रा देवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिरुष्णिक्छन्दः आशीर्देवता, शिवो नामेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्या बृहतीछन्दः क्षुरो देवता, निवर्त्तयामीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्या त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता महारुद्रप्रीत्यर्थं पाठे वि० ।

ॐ व्वयर्ठं सोम व्रते० ।

उग्रश्चेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः मरुतो देवता, अग्निर्ठ० हृदयेनेत्यादीनां यजुषां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः लिङ्गोक्ता देवता, आयासायेत्यादीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः लिङ्गोक्ता देवता पाठे वि० ।

ॐउग्रश्च भीमश्च० ।

वाजश्च मे प्रसवश्च म इत्यादीनां वेट् स्वाहेत्यन्तानां चमकमन्त्राणां देवा ऋषयश्छन्दांसि यजूंषि अग्निर्देवता, पाठे होमे च वि० ।

ॐ वाजश्च मे० (१–२९ मन्त्राः) ।

ऋचं वाचमित्यध्यायस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्र्यादीनि छन्दांसि लिङ्गोक्ता देवताः, ऋचं वाचमिति चतुर्णां यजुषां दैवी जगतीछन्दः ऋगादयो लिङ्गोक्ताः देवताः, वागोज इत्यस्य यजुर्जगतीछन्दः वागादिलिङ्गोक्ता देवताः, यन्म इत्यस्य पङ्क्तिश्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, महाव्याहृतीनां दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्दैवी गायत्री दैव्युष्णिक् दैवी गायत्रीछन्दांसि अग्निवायुसूर्याः क्रमेण देवताः, तत्सवितुरित्यस्य गायत्रीछन्दः सविता देवता,

कया न इति त्र्यर्चस्य द्वयोर्गायत्रीछन्दः तृतीयस्य पादनिचृद्गायत्री-छन्दः इन्द्रो देवता, कया त्वमित्यस्य गायत्रीछन्दः इन्द्रो देवता, इन्द्रो विश्वस्येत्यस्य द्विपदाविराट्छन्दः इन्द्रो देवता, शन्नो मित्रः, शन्नो व्वातः--इति द्वयोरनुष्टुप्छन्दः मित्रावरुणादयो देवताः, अहानि शमित्यस्य द्विपदागायत्रीछन्दः अहानि रात्रयश्च देवताः, शन्न ऽइन्द्राग्नी इत्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्राग्नी-इन्द्रावरुणौ-इन्द्रापूषणौ-इन्द्रासोमौ च देवताः, शन्नो देवीरित्यस्य गायत्रीछन्दः आपो देवता, स्योना पृथिवीत्यस्य गायत्रीछन्द पृथिवी देवता, आपो हिष्ठेति त्र्यर्चस्य गायत्रीछन्दः आपो देवताः, द्यौः शान्तिरित्यस्य शक्वरीछन्दः द्यौरादयो देवता, दृते दृꣳहेत्यस्य ब्राह्मी अनुष्टुप् छन्दः आशीर्देवता, दृते दृꣳहेत्यस्य उष्णिक्-छन्दः आशीर्देवता, नमस्ते हरसे इत्यस्य बृहतीछन्दः अग्निर्देवता, नमस्ते ऽअस्तु, यतो–यतः इत्यनयोरनुष्टुप्छन्दः विद्युत्स्तनयित्नुर्भगवान् महावीरश्च क्रमेण देवताः, सुमित्रिया न इत्यस्य प्राजापत्या जगती छन्दः आपो देवताः, तच्चक्षुरित्यस्य पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता शान्तिकरणे होमे च वि० ।

ॐ ऋचं वाचम्० (१--२४ मन्त्राः) ।

ध्यानम्–ॐ शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥ १ ॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥ २ ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाजूटमुद्योतकारिणम् ॥ ३ ॥
अमृतेनायुतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम् ।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥ ४ ॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥ ५ ॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम् ।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥ ६ ॥

इति महारुद्रन्यासविधिः ।

—❀—

अथ रुद्रसूक्तन्यासः ।

नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्द, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको रुद्रो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः ।

१ ॐ नमस्ते०	वामकरे ।
२ याते रुद्र शिवा०	दक्षिणकरे ।
३ यामिषुं गिरिशन्त०	वामपादे ।
४ शिवेन वचसा०	दक्षिणपादे ।
५ अध्यवोचदधिवक्ता०	वामजानौ ।
६ असौ यस्ताम्रः०	दक्षिगजानौ ।
७ असौ योऽवसर्पति०	वामकट्याम् ।
८ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय०	दक्षिणकट्याम् ।
९ प्रमुञ्च०	नाभौ ।
१० विज्यन्धनु ०	हृदये ।
११ या ते हेतिः०	वामबाहौ ।
१२ परि ते धन्वनः०	दक्षिगबाहौ ।
१३ अवतत्त्यधनुष्ट्वम्०	कण्ठे ।
१४ नमस्त ऽआयुधाय०	मुखे ।
१५ मा नो महान्तम्०	नेत्रयोः ।
१६ मा नस्तोके०	मूर्ध्नि ।

पुनः—

१ या ते हेतिः०	हृदयाय नमः ।
२ परि ते धन्वनः०	शिरसे स्वाहा ।
३ अवतत्त्य धनुष्ट्वम्०	शिखायै वषट् ।
४ नमस्त ऽआयुधाय०	कवचाय हुम् ।
५ मा नो महान्तम्०	नेत्राभ्यां वौषट् ।
६ मा नस्तोके०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

इति रुद्रसूक्तन्यासः ।

——०——

अथ बृहत् पुरुषसूक्तन्यासः ।

(प्रथमं छन्दःपुरुषन्यासः)

आचमनम् । प्राणायामः । पवित्रधारणम् । पश्चात् शान्तिपाठः ।

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य० "अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (अमुकगोत्रेण अमुकशर्मणा यजमानेन वृतोऽहं वा) यजमानसङ्क-ल्पित-सनवग्रहविष्णुयागस्य पूर्वाङ्गत्वेन विहितं तिलकधारणं, तुलसीमालाधारणं आसनविधिं छन्दःपुरुषन्यासं पुरुषसूक्तन्यासं च करिष्ये (करिष्यामि वा) ।"

ध्यानम्—कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलिः
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥

इत्यनेन तिलकं कुर्यात् । पश्चात् 'ॐ इदं विष्णुः०' इति मन्त्रेण तुलसीमालां धारयेत् । ततः 'ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि०' इत्यनेन शिखाग्रन्थिकरणम् ।

सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः एको रुद्रो देवता, महीप्रार्थने विनियोगः ।

ॐ सहस्राणि सहस्रशः० । ॐ यऽ एतावन्तश्च० ।

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका० ।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन हवनं च समारभे ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयः० ।

इति दिग्बन्धं कृत्वा, छन्दःपुरुषन्यासं कुर्यात् । तद्यथा—

ॐ तिर्यग्बिलाय छन्दःपुरुषायोर्ध्वबुध्नाय छन्दःपुरुषाय नमः इति शिरसि ।

ॐ गौतमर-भद्वाजाभ्यां नमः इति नेत्रयोः ।

ॐ विश्वामित्र-जमदग्निभ्यां नमः इति श्रोत्रयोः ।

ॐ वशिष्ठ-कश्यपाभ्यां नमः इति नासापुटयोः ।

ॐ अत्रये नमः इति वाचि ।

ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः इति शिरसि ।

ॐ उष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः इति ग्रीवायाम् ।

ॐ बृहत्यै छन्दसे नमः बृहस्पतये नमः इति अनूके (पृष्ठे) ।

ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः इति बाह्वोः ।

ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः इति मध्ये ।

ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः इति श्रोण्योः ।

ॐ अतिच्छन्दसे नमः प्रजापतये नमः इति लिङ्गे ।

ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः इति गुदे । [उदकोपस्पर्शः] ।

ॐ अनुष्टुभे छन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इति ऊर्वोः ।

ॐ पङ्क्तयै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः इति जान्वोः ।

ॐ द्विपदायै छन्दसे नमः विष्णवे नमः इति पादयोः ।

ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः इति नासापुटस्थप्राणेषु ।

ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः इति हस्तद्वयविपर्यासेन मस्तकादिपादान्तम् ।

इति छन्दःपुरुषन्यासः ।

ततः पुरुषसूक्तन्यासः ।

सहस्रशीर्षेत्यादिषोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः, यज्ञेन यज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः, जगद्बीजं नारायणपुरुषो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः ।

१ ॐ सहस्रशीर्षा० वामकरे ।
२ ॐ पुरुष एव० दक्षिणकरे ।

३ ॐ एतावानस्य०	वामपादे ।
४ ॐ त्रिपादूर्ध्व:०	दक्षिणपादे ।
५ ॐ ततो विराडजायत०	वामजानौ ।
६ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत:०	दक्षिणजानौ ।
७ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋच:०	वामकट्याम् ।
८ ॐ तस्मादश्वा०	दक्षिणकट्याम् ।
९ ॐ तं यज्ञं बर्हिषि०	नाभौ ।
१० ॐ यत्पुरुषं व्यदधु:०	हृदये ।
११ ॐ ब्राह्मणोऽस्य०	वामबाहौ ।
१२ ॐ चन्द्रमा मनस:०	दक्षिणबाहौ ।
१३ ॐ नाभ्या ऽआसीदन्त०	कण्ठे ।
१४ ॐ यत्पुरुषेण हविषा०	मुखे ।
१५ ॐ सप्तास्यासन्०	अक्ष्णो: ।
१६ ॐ यज्ञेन यज्ञम्०	मूर्ध्नि ।

पुन:—

१ ब्राह्मणोऽस्य०	हृदयाय नम: ।
२ चन्द्रमा मनस:०	शिरसे स्वाहा ।
३ नाभ्या ऽआसीदन्त०	कवचाय हुम् ।
४ यत्पुरुषेण हविषा०	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
५ सप्तास्यासन्०	शिखायै वषट् ।
६ यज्ञेन यज्ञम्०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—ध्येय: सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायण: सरसिजासनसन्निविष्ट: ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्र: ॥१॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥२॥

इति पुरुषसूक्तन्यास: ।

——०——

अथ *श्रीसूक्तन्यासः

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्लीतन्दिरासुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः, चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पञ्चमी-षष्ठयोस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, श्रीरग्निश्च देवते न्यासेहवने च विनियोगः।

१	ॐ हिरण्यवर्णाम्०।	वामकरे।
२	ॐ तां मऽआवह०।	दक्षिणकरे।
३	ॐ अश्वपूर्वाम्०।	वामपादे।
४	ॐ कां सोऽस्मिताम्०।	दक्षिणपादे।
५	ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०	वामजानौ।
६	ॐ आदित्यवर्णे०	दक्षिणजानौ।
७	ॐ उपैतु माम्०	वामकट्याम्।
८	ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०	दक्षिणकट्याम्।
९	ॐ गन्धद्वाराम्०।	नाभौ।
१०	ॐ मनसः काममाकूतिम्०	हृदये।
११	ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०	वामबाहौ।
१२	ॐ आपः सृजन्तु०	दक्षिणबाहौ।
१३	ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०	कण्ठे।
१४	ॐ आर्द्रां यष्करिणीम्०	मुखे।
१५	ॐ तां मऽआवह०	नेत्रयोः।
१६	ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	मूर्ध्नि।

पुनः—

१	कर्दमेन प्रजा भूता०	हृदयाय नमः।
२	आपः सृजन्तु०	शिरसे स्वाहा।

---

*हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः आद्यत्रयस्यानुष्टुप्छन्दः, कां सोऽस्मीत्यस्य बृहतीछन्दः, चन्द्रां प्रभासामिति द्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः, उपैतु मां देवसख इत्यष्टकस्यानुष्टुप्छन्दः, अन्त्यस्य प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, श्रीरग्निश्च देवते, व्यञ्जनानि बीजानि, स्वराः शक्तयः, बिन्दुः कीलकं, महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं न्यासे हवने च विनियोगः।

३ आर्द्रां पुष्करिणीम्० शिखायै वषट् ।
४ आर्द्रां यष्करिणीम्० कवचाय हुम् ।
५ तां म ऽआवह० नेत्राभ्यां वौषट् ।
६ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा० अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्–या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्त्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥
अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥२॥

इति श्रीसूक्तन्यासः ।

अथ सूर्यसूक्तन्यासः ।

विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तं प्रत्नथेत्यस्य काश्यपवत्सावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निऋषिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्यो देवता श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहतीछन्दः सूर्यो देवता, अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आ कृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, न्यासे होमे च विनियोगः ।

१ ॐ विभ्राड्बृहत्० वामकरे ।
२ ॐ उदुत्यम्० दक्षिणकरे ।
३ ॐ येना पावक चक्षसा० वामपादे ।

४ ॐ दैव्यावद्ध्वर्यू०	दक्षिणपादे ।
५ ॐ तं प्रत्नथा०	वामजानौ ।
६ ॐ अयं वेनः०	दक्षिणजानौ ।
७ ॐ चित्रं देवानाम्०	वामकट्याम् ।
८ ॐ आन ऽइडाभिः०	दक्षिणकट्याम् ।
९ ॐ यदद्य कच्च०	नाभौ ।
१० ॐ तरणिर्विश्व०	हृदये ।
११ ॐ तत्सूर्यस्य०	वामबाहौ ।
१२ ॐ तन्मित्रस्य०	दक्षिणबाहौ ।
१३ ॐ बण्महान्०	कण्ठे ।
१४ ॐ बट्सूर्य श्रवसा०	मुखे ।
१५ ॐ श्रायन्त ऽइव०	अक्ष्णोः ।
१६ ॐ अद्या देवाः०	शिरसि ।
१७ ॐ आ कृष्णेन०	सर्वाङ्गे ।

पुनः—

१ तन्मित्रस्य०	हृदयाय नमः ।
२ बण्महान्०	शिरसे स्वाहा ।
३ बट्सूर्य श्रवसा०	शिखायै वषट् ।
४ श्रायन्त ऽइव	कवचाय हुम् ।
५ अद्यादेवा०	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
६ आ कृष्णेन०	अस्त्राय फट् ।

अथ षडङ्गकरन्यासः—

ॐ विभ्राडिति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ दैव्यावद्ध्वर्य्विति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ चित्रन्देवानामिति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तरणिर्विश्वेति अनामिकाभ्यां नमः। ॐ बट्सूर्य्येति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ आ कृष्णेनेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्—ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

इति सूर्यसूक्तन्यासः।

—:०:—

अथ गणपतिसूक्तन्यासः ।

आ तू न इत्यष्टमृचात्मकस्य गणपतिसूक्तस्य वामदेव-नृमेध-कुत्स-भरद्वाज-वसिष्ठ-पुरुमीढाजमोढ-दक्षा ऋषयः, प्रथमा गायत्री, द्वितीय-तृतीये पथ्याबृहतीसतोबृहत्यौ, चतुर्थी त्रिष्टुप्, पञ्चमी जगती, षष्ठी त्रिष्टुप्, सप्तम्यष्टम्यौ गायत्र्यौ, आद्यास्तिस्र ऐन्द्र्यचः, चतुर्थ्यादित्या, पञ्चमी सावित्री, षष्ठी वायवी, सप्तमी ऐन्द्री, अष्टमी मैत्रावरुणी सर्वासां न्यासे होमे च विनियोगः ।

ॐ आ तू न ऽइन्द्र वृत्रहन्	शिरसि ।
अस्माकमर्द्धमा गहि	शिखायाम् ।
महान् महीभिरूतिभिः	वामभुजे ।
त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिषु	दक्षिणभुजे ।
अभि विश्वा ऽअसि स्पृधः	वामनेत्रे ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि	दक्षिणनेत्रे ।
त्वं तूर्य तरुष्यतः	भ्रूमध्ये ।
अनु ते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः	मुखे ।
क्षोणी शिशुन्न मातरा	जिह्वायाम् ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे	ग्रीवायाम् ।
वृत्रं यदिन्द्र तूर्व्वसि	हृदि ।
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्	वक्षसि ।
आदित्यासो भवता मृडयन्तः	वामबाहौ ।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्व्ववृत्यादम्	दक्षिणबाहौ ।
अंहोश्चिद्या वरिवो वित्तरासत्	उदरे ।
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वम्	लिङ्गे ।
शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्	वामकट्याम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे	दक्षिणकट्याम् ।
रक्षा माकिर्नो ऽअघशꣳस ऽईशत	नितम्बे ।
प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वाम्	गुह्ये ।
अध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः	वामपादे ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा	दक्षिणपादे ।
पिबा सुतस्यान्धसो मदाय	जान्वोः ।
गाव ऽउपावतावतम्	वामजङ्घायाम् ।

महो यज्ञस्य रप्सुदा दक्षिणजङ्घायाम् ।
उभा कर्णा हिरण्यया नाभौ ।
काव्ययोराजानेषु ललाटे ।
क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे स्तनयोः ।
रिशादसा सधस्थ ऽआ सर्वाङ्गेषु ।

ध्यानम्-गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥१॥
उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मै
पाशाङ्कुशाभयवरान् दधतं गजास्यम् ।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं
ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥२॥

इति गणपतिसूक्तन्यासः ।

—: ० :—

अथ *नवग्रहमन्त्रन्यासः ।

आ कृष्णेनेति हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता, इमन्देवा इति वरुण ऋषिः अत्यष्टिश्छन्दः सोमो देवता, अग्निर्मूर्धेति विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दः भौमो देवता, उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, अन्नात्परिस्रुत इति प्रजापत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः अतिजगतीछन्दः शुक्रो देवता, शन्नो देवीरिति दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता, कया नश्चित्र इति वामदेवऋषिर्गायत्रीछन्दः राहुर्देवता, केतुं कृण्वन्निति मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः केतुर्देवता, सूर्यादिनवग्रहाणां जपे होमे च विनियोगः ।

---

* सर्वविधप्रतिष्ठापद्धतिषु नवग्रहाणां न्यासस्त्वित्थं प्रदर्शितः—

रविचन्द्राभ्यां नेत्रयोः । भौमाय हृदये । बुधाय स्कन्धे । बृहस्पतये जिह्वायाम् । शुक्राय लिङ्गे । शनैश्चराय ललाटे । राहवे पादयोः । केतवे केशेषु ।

१	ॐ आ कृष्णेन०	हृदये ।
२	ॐ इमन्देवा:०	उदरे ।
३	ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव:०	नाभौ ।
४	ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०	कट्याम् ।
५	ॐ बृहस्पते०	ऊर्वो: ।
६	ॐ अन्नात्परिस्रुत:०	जान्वो: ।
७	ॐ शन्नो देवी:०	जङ्घयो: ।
८	ॐ कया नश्चित्र:०	पादयो: ।
९	ॐ केतुं कृण्वन्०	सर्वाङ्गेषु ।

पुन:—

१	ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०	हृदयाय नम: ।
२	ॐ बृहस्पते ऽअति०	शिरसे स्वाहा ।
३	ॐ अन्नात्परिस्रुत:०	शिखायै वषट् ।
४	ॐ शन्नो देवी:०	कवचाय हुम् ।
५	ॐ कया नश्चित्र:०	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
६	ॐ केतुं कृण्वन्०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र: शनिराहुकेतव: सर्वे ग्रहा: शान्तिकरा भवन्तु ॥

इति नवग्रहमन्त्रन्यास: ।

अथ नवग्रहाधिदेवानां विनियोग: ।

त्र्यम्बकमिति वसिष्ठ ऋषि: अनुष्टुप्छन्द: रुद्रो देवता, श्रीश्च ते इत्युत्तरनारायण ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द: उमा देवता, यदक्रन्द इति भार्गव-जमदग्नि-दीर्घतमस ऋषयस्त्रिष्टुप्छन्द: स्कन्दो देवता, विष्णोरराटमसीति प्रजापतिर्ऋषि: यजुश्छन्द: विष्णुर्देवता, ब्रह्म जज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द: ब्रह्मा देवता, सजोषा ऽइन्द्र इति विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द: इन्द्रो देवता, यमाय त्वेति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द: यमो देवता, कार्षिरसीति प्रजापतिर्ऋषि: अनुष्टुप्छन्द: कालो देवता, चित्रावसो इति ऋषय: [1]जगती छन्द: चित्रगुप्तो देवता, नवग्रहाधिदेवताप्रीतये जपे होमे च विनियोग: ।

---

१. 'चित्रावसो रात्रिदैवत्यमृषयोऽपश्यन्' इस कात्यायन-सर्वानुक्रमसूत्रके अनुसार इस मन्त्रके द्रष्टा ऋषि (ऋषय:) ही हैं ।

अथ नवग्रहप्रत्यधिदेवानां विनियोगः ।

अग्निन्दूतमिति विरूपाक्ष ऋषिर्गायत्रीछन्दः अग्निर्देवता, अप्स्वन्तरिति बृहस्पतिर्ऋषिः उष्णिकछन्दः आपो देवता, स्योना पृथिवीति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः पृथिवी देवता, इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः विष्णुर्देवता, त्रातारमिन्द्रमिति गर्ग ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता, अदित्यै रास्नासीति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दः इन्द्राणी देवता,प्रजापते इति हिरण्यगर्भ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता, नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पा देवताः, ब्रह्म जज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता, नवग्रहप्रत्यधिदेवताप्रीतये जपे होमे च विनियोगः ।

———

अथ विश्वशान्तियज्ञस्य मन्त्रन्यासः ।

ऋचं वाचमिति चतुर्विंशतिमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता, शान्त्यर्थं होमे विनियोगः ।

१	ॐ दृते दृꣳ० ह मा ज्योक्ते०	हृदयाय नमः ।
२	ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे०	शिरसे स्वाहा ।
३	ॐ नमस्तेऽ अस्तु विद्युते	शिखायै वषट् ।
४	ॐ यतोयतः०	कवचाय हुम् ।
५	ॐ सुमित्रिया नः०	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
६	ॐ तच्चक्षुः०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

इति विश्वशान्तियज्ञस्य मन्त्रन्यासः ।

———

अथ पर्जन्ययज्ञस्य-मन्त्रविनियोगः ।

अच्छा वदेति दशर्चस्य सूक्तस्य भौमोऽत्रिर्ऋषिः पर्जन्यो देवता द्वितीयाद्यास्तिस्रो जगत्यः नवम्यनुष्टुप् शिष्टाः षट् त्रिष्टुभः, बर्हिरित्येति

तृचस्य भौमोऽत्रिऋर्षिः अनुष्टुप् छन्दः पृथिवी देवता, तिस्रो वाव इति षडर्चस्य सूक्तस्याग्नेयः कुमारो मैत्रावरुणिऋर्षिस्त्रिष्टुप् छन्दः पर्जन्यो देवता, पर्जन्यायेति तृचस्य सूक्तस्याग्नेयः कुमारो मैत्रावरुणिऋर्षिर्गायत्री छन्दः पर्जन्यो देवता संवत्सरमिति दशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ ऋषिः आद्यानुष्टुप् शिष्टास्त्रिष्टुभः मण्डूका देवताः, प्र देवत्रेति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य ऐलूषः कवष ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः आपो देवता, बृहस्पते प्रति म इति द्वादशस्य सूक्तस्य आर्ष्टिषेणो देवापिऋर्षिस्त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्मित्रादयो देवताः सुवृष्ट्यर्थं जपे होमे च विनियोगः।

अथ गोयज्ञस्य मन्त्र-विनियोगः।

आ गावो अग्मन्निति अष्टर्चस्य सूक्तस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः गावो देवता (इन्द्रो वा) गोप्रीत्यर्थे हवने विनियोगः।

अथ गायत्रीमन्त्रस्य बृहन्न्यासः।

अथ प्रणवन्यासः—

ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ ॐ परमात्मदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ इति प्रणवन्यासः।

अथ व्याहृतिऋष्यादिन्यासः—

सप्तव्याहृतीनां जमदग्नि-भारद्वाजात्रि-गौतम-कश्यप-विश्वामित्र-वसिष्ठा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्नि-वायु-सूर्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवताः, न्यासे जपे च विनियोगः।

ॐ जमदग्नि-भारद्वाजात्रि-गौतम-कश्यप-विश्वामित्र-वसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगतीछन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ अग्नि-वायु-सूर्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेव-देवताभ्यो नमः हृदये ॥ ३ ॥ इति व्याहृतिऋष्यादिन्यासः।

अथ गायत्र्या ऋष्यादिन्यासः—

ॐ तत्सवितुरित्यस्य गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, न्यासे जपे च विनियोगः।

ॐ विश्वामित्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्री-छन्दसे नमः

मुखे ॥ २ ॥ ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ इति गायत्र्या ऋष्यादिन्यासः ।

अथ शिरस ऋष्यादिन्यासः—

ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः, प्राणायामे विनियोगः ।

ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ यजुश्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्माग्नि-वायु-सूर्य-देवताभ्यो नमः हृदये ॥ ३ ॥ इति शिरस ऋष्यादिन्यासः ।

अथ करन्यासः—

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

अथ हृदयादिन्यासः—

ॐ भूः हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ भुवः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ स्वः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिन्यासः ।

अथ व्याहृतिन्यासः—

ॐ भूः नमः हृदये ॥ १ ॥ ॐ भुवः नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ स्वः नमः दक्षांसे ॥३॥ ॐ महः नमः वामांसे ॥४॥ ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ ॥५॥ ॐ तपः नमः वामोरौ ॥ ६ ॥ ॐ सत्यं नमः जठरे ॥ ७ ॥ इति व्याहृतिन्यासः ।

अथ गायत्र्यक्षरन्यासः—

ॐ तत् नमः पादद्वयाङ्गुलिमूलयोः ॥१॥ ॐ सं नमः गुल्फयोः ॥२॥ ॐ वि नमः जानुनोः ॥ ३ ॥ ॐ तुं नमः पादमूलयोः ॥४॥ ॐ वं नमः लिङ्गे ॥५॥ ॐ रें नमः नाभौ ॥६॥ ॐ णि नमः हृदये ॥७॥ ॐ यं नमः कण्ठे ॥८॥ ॐ भं नमः हस्तद्वयाङ्गुलिमूलयोः ॥९॥ ॐ गों नमः मणिबन्धयोः ॥१०॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः ॥११॥ ॐ वं नमः बाहुमू-

लयोः ॥१२॥ ॐ स्यं नमः आस्ये॥१३॥ ॐ धीं नमः नासापुटयोः ॥१४॥ ॐ मं नमः कपोलयोः ॥१५॥ ॐ हिं नमः नेत्रयोः ॥१६॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः ॥१७॥ ॐ यों नमः भ्रूमध्ये ॥१८॥ ॐ यों नमः मस्तके ॥१९॥ ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे ॥ २० ॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे ॥ २१ ॥ ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे ॥२२॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे ॥२३॥ ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे ॥२४॥ इति गायत्र्यक्षरन्यासः ।

अथ गायत्रीपदन्यासः—

ॐ तत् नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ २ ॥ ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ भर्गो नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ देवस्य नमः कण्ठे ॥ ५ ॥ ॐ धीमहि नमः हृदये ॥ ६ ॥ ॐ धियो नमः नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ यो नमः गुह्ये ॥ ८ ॥ ॐ नं नमः जानुनोः ॥ ९ ॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः ॥१०॥ ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि ॥११॥ इति गायत्रीपदन्यासः ।

अथ गायत्र्याः न्यासः--

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यन्तम् ॥ १ ॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यन्तम् ॥ २ ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्द्धादिहृदयान्तम् ॥ ३ ॥ इति गायत्र्याः न्यासः ।

अथ गायत्र्याः षडङ्गन्यासः---

ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति गायत्र्याः षडङ्गन्यासः ।

ध्यानम्—मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः पाशं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

इति गायत्रीमन्त्रस्य बृहन्न्यासः ।

अथ गायत्रीमन्त्रस्य द्वितीयः संक्षिप्तन्यासः ।

ॐ तत्सवितुरित्यस्य गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, जपे विनियोगः ।

अथ करन्यासः—

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यासः—

ॐ भूः हृदयाय नमः । ॐ भुवः शिरसे स्वाहा । ॐ स्वः शिखायै वषट् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचाय हुम् । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुकलानिबद्धमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः पाशं कपाल गुणं
शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

इति गायत्रीमन्त्रस्य द्वितीयः संक्षिप्तन्यासः ।

अथ गायत्रीमन्त्रस्य तृतीयः संक्षिप्तन्यासः ।

ॐ तत्सवितुरित्यस्य गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता, जपे विनियोगः ।

ॐ विश्वामित्राय ऋषये नमः शिरसि । ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे । ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदि । ॐ तत्सवितुरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः । ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः । ॐ धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ तत्सवितुरिति हृदयाय नमः । ॐ वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा । ॐ भर्गो देवस्य इति शिखायै वषट् । ॐ धीमहि इति कवचाय हुम् । ॐ धियो यो न इति नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ प्रचोदयात् इति अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः पाशं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

इति गायत्रीमन्त्रस्य तृतीयः संक्षिप्तन्यासः ।

—:०:—

अथ गायत्रीमन्त्रस्य चतुर्थः संक्षिप्तन्यासः ।

ॐ भूः हृदये । ॐ भुवः शिरसि । ॐ स्वः शिखायै । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्, इति कलेवरे । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, इति नेत्रयोः । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, इति करयोः ।

(पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड ४९।१८१)

——**——

अनेक[१]देवी-देवताओंकी गायत्री

ब्रह्म-गायत्री—वेदमात्रे विद्महे वेदजननी च धीमहि ।
तन्नो ब्रह्म-गायत्री प्रचोदयात् ॥

दुर्गा-गायत्री—(क) कात्यायन्यै च विद्महे [२]कन्यकुमारि च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥

(ख) कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ७)

(ग) कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गाः प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२६)

(घ) महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

आदिशक्तिदुर्गा-गायत्री-(क) कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥
(तैत्तिरीयारण्यक, परि० १०।१)

(ख) कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गाः प्रचोदयात् ॥

---

१. प्रत्येक देवी-देवताकी गायत्री के प्रारम्भ में ॐ लगाना चाहिये ।

२. कन्या चासौ कुमारी कन्यकुमारी ।

शक्ति-गायत्री—सर्वमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि।
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥
जयदुर्गा-गायत्री—नारायण्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥
देवी-गायत्री—(क) महालक्ष्मीश्च विद्महे सर्वसिद्धिश्च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ (देव्युपनिषत् ७)
(ख) महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ (अथर्वशीर्षोपनिषत्)
(ग) देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥
लक्ष्मी-गायत्री—(क) महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ (ऋग्वेद-परिशिष्टभाग)
(ख) महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ६)
(ग) महालक्ष्म्यै च विद्महे महाश्रियै धीमहि।
तन्नः श्रीः प्रचोदयात्।
(घ) महालक्ष्म्यै च विद्महे महाश्रियै धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥
(ङ) महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥
(च) महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥
(छ) महाऽम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।१३
राधा-गायत्री—(क) ॐ ह्लीं राधिकायै विद्महे गान्धर्विकायै धीमहि ।
तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥
(ख) ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि।
तन्नो राधिका प्रचोदयात् ॥
(ग) समुद्धृतायै विद्महे विष्णुनैकेन धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥

(ग) समुद्धृतायै विद्महे त्रिष्णुनैकेन धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥

सीता-गायत्री—(क) जनकात्मजायै विद्महे रामपत्नी च धीमहि।
तन्नो सीता प्रचोदयात् ॥

(ख) सीताख्यै च विद्महे रामपत्नी च धीमहि।
तन्नो सीता प्रचोदयात् ॥

(ग) ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि।
तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥

अन्नपूर्णा-गायत्री—भगवत्यै विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि।
तन्न अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

गौरी (पार्वती) गायत्री—(क) गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।६)

(ख) सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

(ग) ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि।
तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

(घ) तद् गां गौच्याय विद्महे गिरिसुताय धीमहि।
तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

गङ्गा-गायत्री—(क) भागीरथ्यै च विद्महे विष्णुपद्यै च धीमहि।
तन्नो गङ्गा प्रचोदयात् ॥

(ख) ॐ गङ्गायै विद्महे विष्णुपद्यै च धीमहि।
तन्नो भागीरथी प्रचोदयात् ॥

सरस्वती-गायत्री—(क) वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि।
तन्नो देवीः प्रचोदयात् ॥

(ख) सरस्वत्याय विद्महे शिशुन्धराय धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भुवनेश्वरी-गायत्री—(क) भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

(ख) ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भैरवी-गायत्री—त्रिपुरायै विद्महे भैरव्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

त्रिपुरा-गायत्री—त्रिपुरायै विद्महे भैरव्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

त्रिपुरसुन्दरी-गायत्री—ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि ।
सौस्तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात् ।।

तारा-गायत्री—(क) एकजटायै विद्महे विकटदंष्ट्रायै धीमहि ।
तन्नस्तारा प्रचोदयात् ।।
(ख) ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

दक्षिणामूर्ति-गायत्री—दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि ।
तन्नोऽधीशः प्रचोदयात् ।।

धूमावती-गायत्री—(क) धूमावत्यै विद्महे विवर्णायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।
(ख) ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि ।
तन्नो धूमा प्रचोदयात् ।।

मातङ्गी-गायत्री—(क) शुकप्रियायै विद्महे श्रीकामेश्वर्यै धीमहि ।
तन्नः श्यामा प्रचोदयात् ।।
(ख) ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

छिन्नमस्ता-गायत्री—वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

श्यामा-गायत्री—कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि ।
तन्नो घोरा प्रचोदयात् ।।

कामकला-गायत्री—अनङ्गकुलायै विद्महे मदनातुरायै धीमहि ।
तन्नः कामकला-काली प्रचोदयात् ।।

काली (कालिका) गायत्री-(क)कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि ।
तन्नोऽघोरा प्रचोदयात् ।।
(ख) कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

त्वरिता-गायत्री—त्वरितादेव्यै विद्महे नित्यायै (महानित्यायै) धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

महिषमर्दिनी-गायत्री—महिषमर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

बाला-गायत्री—ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि।
सौस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्॥

बगलामुखी-गायत्री—बगलामुख्यै विद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

तुलसी-गायत्री—(क) तुलसीपत्राय विद्महे विष्णुप्रियाय धीमहि।
तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्॥
(ख) तुलसायाय विद्महे त्रिपुरारीयायै धीमहि।
तन्नस्तुलसी प्रचादयात्॥
(ग) ॐ सुलसीपत्राय विद्महे परमात्मने धीमहि।
तन्नस्तुलसी प्रचोदयात्॥
(घ) ॐ श्रीत्रिपुराय विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

पृथ्वी-गायत्री—(क) पृथ्वीदेव्यै च विद्महे धरामूर्तये धीमहि।
तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्॥
(ख) पृथ्वीदेव्यै विद्महे सहस्रमूर्तये धीमहि।
तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्॥
(ग) ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्रमूर्त्यै च धीमहि।
तन्नो मही प्रचोदयात्॥
(घ) वसुन्धराय विद्महे भूतधात्राय धीमहि।
तन्नो भूमिः प्रचोदयात्॥
(ङ) धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नो धरा प्रचोदयात्।
(च) समुद्धृतायै विद्महे विष्णुनैकेन धीमहि।
तन्नो धरा प्रचोदयात्।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्धं ४८।१४)

वाक्-गायत्री—शिवास्यजायै विद्महे देवरूपायै धीमहि।
तन्नो वाचा प्रचोदयात्॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्धं ४८।१७)

ब्रह्मा-गायत्री—(क) चतुर्मुखाय विद्महे कमण्डलुधराय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।।
(ख) तच्चतुर्मुखाय विद्महे पद्मासनाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।।
(ग) वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।। (नारायणोपनिषत् ६)
(घ) ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।।
(ङ) वेदान्तनाथाय विद्महे हिररण्यगर्भाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।।
(च) पद्मोद्भवाय विद्महे वेदवक्त्राय धीमहि ।
तन्नः स्रष्टा प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण,उत्तरार्ध ४८।१६)
(छ) पद्मासनाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ।।
(ज) महातत्त्वाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।।

विष्णु-गायत्री (नारायण-गायत्री)—
(क) नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।
(महानारायणोपनिषत् ६,
लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।१२)
(ख) नारायणाय विद्महे शेषशायिने धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।
(ग) त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।
(घ) त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे स्मराय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

कृष्ण-गायत्री—(क) देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।।
(ख) दामोदराय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।

तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

(महानारायणोपनिषत्, अ० ७)।

गोपाल-गायत्री—(क) कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि ।
तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

(ख) गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि ।
तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

(ग) गोपीजनवल्लभाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

(घ) गोपीप्रियाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो गोपः प्रचोदयात् ॥

(ङ) कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

लक्ष्मीनारायण-गायत्री—लक्ष्मीनारायणाय विद्महे परब्रह्मणे धीमहि ।
तन्नः परमात्मा प्रचोदयात् ॥

शिव-गायत्री—(क) तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

(नारायणोपनिषत् १४।२०,
लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।७)

(ख) तत्पुरुषाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि ।
तन्नः शिवः प्रचोदयात् ॥

(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।५)

(ग) सर्वेश्वराय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२५)

(घ) पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ५)

(ङ) तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्ष-महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

(तैत्ति० आ०, परि०१०१)

(च) ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि ।
तन्नः शिवः प्रचोदयात् ॥

सूर्य-गायत्री —(क) आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(ख) आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(ग) आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।। (सूर्योपनिषत्)
(घ) आदित्याय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(ङ) आदित्याय विद्महे सहस्रकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।। (सूर्याथर्वशीर्षोपनिषत्)
(च) भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(छ) भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि ।
तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ।। (नारायणोपनिषत् ७)
(ज) ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(झ) भास्कराय विद्महे महातेजसे धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।।
(ञ) सप्ततुरगाय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि ।
तन्नो रविः प्रचोदयात् ।।

राम-गायत्री—(क) दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ।
तन्नो रामः प्रचोदयात् ।।
(महानारायणोपनिषत् अ० ७)
(ख) दाशरथाय विद्महे सीतावराय धीमहि ।
तन्नो रामः प्रचोदयात् ।।

लक्ष्मण-गायत्री—(क) दाशरथाय विद्महे उर्मिलेशाय धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।।
(ख) दाशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।।
(ग) ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।।

हनुमद्-गायत्री—(क) रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमत्प्रचोदयात् ॥
(ख) अञ्जनीनन्दनाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥
(ग) अञ्जनीसुताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥
(घ) अञ्जनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो वीरः प्रचोदयात् ॥
(ङ) अञ्जनीगर्भाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।
तन्नो हनुमत्प्रचोदयात् ॥
(च) हनुमते विद्महे आञ्जनेयाय धीमहि ।
तन्नो वीरः प्रचोदयात् ॥

गणेश-गायत्री—(क) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ (अथर्वशीर्षोपनिषत्)
(ख) एकदन्ताय विद्महे वज्रदन्ताय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥
(ग. तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥
(नारायणोपनिषत् ५, लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।८)
(घ) तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥
(तैत्तिरीयार०, परि० १०।१)
(ङ) तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो गणेशः प्रचोदयात् ॥
(च) लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ (अग्निपुराण ७१।६)

षण्मुख (कार्तिकेय) गायत्री-
(क) तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥
(नारायणोपनिषत् ६)
(ख) तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् (तैत्ति० आ०, परि० १०।१)

(ग) तत्कुमाराय विद्महे पद्मासनाय धीमहि ।
तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात् ॥
(घ) तत्कुमाराय विद्महे कार्तिकेयाय धीमहि ।
तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात् ॥
(ङ) महासेनाय विद्महे वाग्विशुद्धाय धीमहि ।
तन्नः स्कन्दः प्रचोदयात् ॥

वृष-गायत्री—तीक्ष्णशृङ्गाय विद्महे वेदपादाय धीमहि ।
तन्नो वृषः प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध, ४८।१०)

नन्दी-गायत्री—(क) हरिवक्त्राय विद्महे रुद्रवक्त्राय धीमहि ।
तन्नो नन्दी प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।११)
(ख तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ५)

गरुड-गायत्री—(क) वैनतेयाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥
(महानारायणोपनिषत्, लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।१५)
(ख) तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ६)
(ग) सुपर्णाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥
(घ) तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णपर्णाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥
(ङ) तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि ।
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥
(च) पक्षिराजाय विद्महे पक्षिदेवाय धीमहि ।
तन्नो गरुड़ प्रचोदयात् ॥ (अग्निपुराण, अ० २९५)

यज्ञ-गायत्री—ॐ परमेश्वराय विद्महे यज्ञेश्वराय धीमहि ।
तन्नो यज्ञः प्रचोदयात् ॥

परशुराम-गायत्री—जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि ।
तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ॥

नारद-गायत्री—ब्रह्मपुत्राय विद्महे देवर्षये च धीमहि ।
तन्नो नारदः प्रचोदयात् ॥

उद्धव-गायत्री--भक्तिप्रियाय विद्महे ज्ञानविग्रहाय धीमहि ।
तन्न उद्धवः प्रचोदयात् ॥

वद्रीश-गायत्री—हंसस्वरूपाय विद्महे हिमाश्रयाय धीमहि ।
तन्नो वद्रीशः प्रचोदयात् ॥

नृसिंह-गायत्री--(क) नृसिंहाय विद्महे वज्रदन्ताय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

(ख) नृसिंहाय विद्महे तीक्ष्णद्रंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

(ग) नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि ।
तन्नः सिंहः प्रचोदयात् ॥

(नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषत् ३।४)

(घ) उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

(ङ) वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥

(नारायणोपनिषत् ६)

(च) वज्रनखाय विद्महे तेजस्वराय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

(छ) वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

(महानारायणोपनिषत्)

हयग्रीव-गायत्री—वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

(महानारायणोपनिषत्)

काम-गायत्री—(क) कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥

(ख) तत्पुरुषाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥

(ग) मन्थेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ।
तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ।।

सुदर्शनचक्र-गायत्री—(क) सुदर्शनाय विद्महे महज्वालाय धीमहि ।
तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।।

(ख) सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि ।
तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् ।।

(महानारायणोपनिषत्७)

अग्नि-गायत्री—(क) वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।।

(ख) वैश्वानराय विद्महे कपिलाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।।

(ग) महाज्वालाय विद्महे अग्निमग्नाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।।

(घ) रुद्रनेत्राय विद्महे दण्डहस्ताय धीमहि ।
तन्नो बह्निः प्रचोदयात् ।।

(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।१९)

वायु-गायत्री—(क) सर्वप्राणाय विद्महे यष्टिहस्ताय धीमहि ।
तन्नो वायुः प्रचोदयात् ।।

(ख) पवनपुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्तये च धीमहि ।
तन्नो वायुः प्रचोदयात् ।।

(ग) वनपुरुषाय विद्महे कृष्णमूर्तये धीमहि ।
तन्नो वायुः प्रचोदयात् ।।

जल-गायत्री—(क) जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि ।
तन्न अम्बु प्रचोदयात् ।।

(ख) जलेश्वराय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो जलः प्रचोदयात् ।।

(ग) ॐ जलबिम्बाय विद्महे मीनपुरुषाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

आकाश-गायत्री—(क) आकाशाय विद्महे नभसे धीमहि ।
तन्नो गगनः प्रचोदयात् ।।

(ख) आकाशाय विद्महे नभोदेवाय धीमहि ।
तन्नो गगनः प्रचोदयात् ।।

परमहंस-गायत्री—(क) परमहंसाय विद्महे महत्तत्त्वाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।।
(ख) हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।।
(ग) सोऽहं हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि ।
तन्नः सोऽहं तत्त्वमसि प्रचोदयात् ।।

दत्तात्रेय-गायत्री—(क) दत्तात्रेयाय विद्महे दिगम्बराय धीमहि ।
तन्नो दत्तः प्रचोदयात् ।।
(ख) दिगम्बराय विद्महे अवधूताय धीमहि ।
तन्नो दत्तः प्रचोदयात् ।।

नाग (सर्प) गायत्री—भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि ।
तन्नो नागः प्रचोदयात् ।।

परशुराम गायत्री—जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि ।
तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ।।

गुरु-गायत्री—(क) परब्रह्मणे विद्महे गुरुदेवाय धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।।
(ख) ॐ परब्रह्मणे विद्महे परमात्मने धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।।
(ग) ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्मणे धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।।
(घ) पर्वरसाय विद्महे गुरुव्यक्ताय धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।।

शङ्ख-गायत्री—पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ।
तन्नः शंखः प्रचोदयात् ।।

यन्त्र-गायत्री—(क) यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि ।
तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् ।।

(पुरश्चर्यार्णव, ६ तरङ्ग)

(ख) यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि ।
तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् ।।

इन्द्र-गायत्री—(क) देवराजाय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि ।
तन्नः शक्रः प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।१८)

(ख) ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ।
तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ।।

कुबेर-गायत्री—वैस्रवणाय विद्महे यक्षराजाय धीमहि ।
तन्नः कुबेरः प्रचोदयात् ।।
(महानारायणोपनिषत्)

यम-गायत्री—वैवस्वताय विद्महे दण्डहस्ताय धीमहि ।
तन्नो यमः प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२०)

निर्ऋति-गायत्री—निशाचराय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि ।
तन्नो निर्ऋतिः प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२१)

वरुण-गायत्री—शुद्धहस्ताय विद्महे पाशहस्ताय धीमहि ।
तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२२)

यक्ष-गायत्री—यक्षेश्वराय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि ।
तन्नो यक्षः प्रचोदयात् ।।
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२४)

कार्तवीर्य अर्जुन-गायत्री-(क)धनुर्धराय विद्महे पार्थराजाय धीमहि ।
तन्नो नरः प्रचोदयात् ।।
(इतिहासोपनिषत्)

(ख) कीर्तवीर्याय विद्महे महावीर्याय धीमहि ।
तन्नोऽर्जुनः प्रचोदयात् ।

ज्वर-गायत्री—(क) ॐ भस्मायुधाय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ।।
(अग्निपुराण, अध्याय ३००)

(ख) भस्मास्त्राय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ॥

पशु-गायत्री—(क) पशुपालनाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॥
(ख) ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि ।
तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॥

वृक्ष (वनस्पति) गायत्री—स्थावराय विद्महे महावनस्पतये धीमहि ।
तन्नो वृक्षः प्रचोदयात् ॥

चण्ड-गायत्री—चण्डेश्वराय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नश्चण्डः प्रचोदयात् ॥

क्षत्रिय-गायत्री—तत्पुरुषाय विद्महे भूतधात्रेय धीमहि ।
तन्नः क्षत्रियः प्रचोदयात् ॥

वैश्य-गायत्री—तत्पुरुषाय विद्महे त्रयोदेवाय धीमहि ।
तन्नो वैश्यः प्रचोदयात् ॥

शूद्र-गायत्री—तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
तन्नः शूद्रः प्रचोदयात् ।

[1]पञ्चदेव-गायत्री-

विष्णु-गायत्री—नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ६)

रुद्र-गायत्री—तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् १४।२०)

गणेश-गायत्री—एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ (नारायणोपनिषत् ५)

सूर्य-गायत्री—आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ (सूर्योपनिषत्)

---

१. आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम् ।
पञ्चदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥

शक्ति-गायत्री—सर्वमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि ।
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥

नवग्रह-गायत्री—

सूर्य-गायत्री—(क) आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥
(ख) आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥
(ग) भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि ।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

चन्द्र-गायत्री—(क) अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि ।
तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।
(ख) क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतत्त्वाय धीमहि ।
तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।
(ग) क्षीरपुत्राय विद्महे अमृतपानाय धीमहि ।
तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥
(घ) अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि ।
तन्नः सोमः प्रचोदयात् ॥

भौम-गायत्री—(क) क्षितिपुत्राय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि ।
तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥
(ख) क्षितिपुत्राय विद्महे लोहिताङ्गाय धीमहि ।
तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

बुध-गायत्री—(क) चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि ।
तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥
(ख) सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नो बुधः प्रचोदयात् ॥

गुरु-गायत्री—(क) आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नो जीवः प्रचोदयात् ॥
(ख) अङ्गिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि ।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

शुक्र-गायत्री—(क) भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

(ख) भृगुवंशजाय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि ।
तन्नः कविः प्रचोदयात् ॥

शनि-गायत्री—(क) भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि ।
तन्नः सौरिः प्रचोदयात् ॥

(ख) कृष्णाङ्गाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि ।
तन्नः सौरिः प्रचोदयात् ॥

राहु-गायत्री—(क) शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नो राहुः प्रचोदयात्

(ख) नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि ।
तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

केतु-गायत्री—(क) पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

(ख) अश्ववाय (धूम्राय) विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

इति यज्ञमन्त्रसंग्रहस्य तृतीयो भागः ।

० यज्ञमन्त्रसंग्रहः समाप्तः ०

परिशिष्ट—भागः

लेखक

याज्ञिकसम्राट् पण्डित वेणीरामशर्मा गौड
अवकाशप्राप्त वेदविभागाध्यक्ष--गोयनका संस्कृत कालेज
वाराणसी ।

अथ जलयात्राविधिः ।

यज्ञप्रारम्भदिने आचार्यादिवरणानन्तरं सपत्नीको यजमानः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य "प्रारब्धमहारुद्रयागाख्ये कर्मणि (प्रारब्धमहाविष्णुयागाख्ये कर्मणि) वर्द्धिनीपूजार्थं जलयात्रां करिष्ये" इति सङ्कल्प्य रजतमयान् ताम्रमयान्वा नवकलशान् सौभाग्यवतीमस्तकोपरि स्थापयित्वा ता अग्रतः कृत्वा वाद्यघोषपुरस्सरं भगवन्नामकीर्तन-वेदमन्त्रोच्चारणं कुर्वद्भिः आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिः सुवासिनीभिश्च सह जलयात्रोपयुक्तपूजनसामग्रीं गृहीत्वा नदीं जलाशयं वा गच्छेत् । नद्यां जलाशये वा गत्वा तत्र पूजनसामग्रीं संस्थापयेत् । ततः पञ्चगव्येन भूमिं सम्प्रोक्ष्य गोमयेन चतुरस्रमण्डलं कृत्वा स्वस्तिकं विरच्य तदुपरि सपत्नीकं यजमानं प्राङ्मुखमुदङ्मुखं वा उपविशयेत् । ततो यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा—

आचम्य प्राणानायम्य, देशकालौ सङ्कीर्त्य 'जलयात्राङ्गभूतं करिष्यमाणस्य महारुद्रयागकर्मणः (महाविष्णुयागकर्मणः) वरुणदेवताप्रीत्यर्थं गौरी-गणेश-जलमातृ-जीवमातृ-स्थलमातृ-सप्तसागर-योगिनी-क्षेत्रपाल-जलवरुण-भूमिपूजनपूर्वकं नववर्द्धिनीकलशेषु वरुणपूजनमहं करिष्ये" इति सङ्कल्प्य, षोडशोपचारैः गौरीगणेशपूजनं कुर्यात्। ततस्तत्रैव पट्टवस्त्रे पङ्क्तित्रये सप्त-सप्त अक्षतपुञ्जान् विधाय तेषु क्रमेण जलमातॄणां जीवमातॄणां स्थलमातॄणाञ्च आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च कुर्यात् ।

अथ [1]जलमातॄणां पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥३॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि ॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥
ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि॥६॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

---

१. मत्सी कूर्मी च वाराही दर्दुरी मकरी तथा ।
जलूकी तन्तुकी चैव सप्तैता जलमातरः ॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

"ॐ मनो जूतिः०" इत्यनेन प्रतिष्ठापनम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।

'ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितजलमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ [1]जीवमातृणां पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि ।।१।।
ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि ।।२।।
ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि ।।३।।
ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि।।४।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि ।।५।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलामावाहयामि स्थापयामि ।।६।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ।।७।।

"ॐ मनो जूतिः०" इत्यनेन प्रतिष्ठापनम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।

'ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ [2]स्थलमातृणां पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि ।।१।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि ।।३।।

---

१. कुमारी धनदा नन्दा विमला मङ्गलाऽचला ।
पद्मा चेति सुविख्याताः सप्तैता जीवमातरः ।। (रुद्रकल्पद्रुम)

२. ऊर्मी लक्ष्मी महामाया पानदेवी तथैव च ।
वारुणी नर्मदा गोधा सप्तैता स्थलमातरः ।। (रुद्रकल्पद्रुम)

ॐ भूर्भुवः स्वः पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणीमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥
ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि॥६॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

"**ॐ मनो जूतिः०**" इत्यनेन प्रतिष्ठापनम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।

'ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ सप्तसागरपूजनम्

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ ऽउदारदुपाᳬशुनासममृतत्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि ।

"**ॐ मनो जूतिः०**" इत्यनेन प्रतिष्ठापनम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागराः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ।

"ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः" इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ चतुःषष्ठियोगिनीनां पूजनम्

जले—"चतुःषष्ठियोगिनीभ्यो नमः" इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ क्षेत्रपालबलिः

वायव्यां क्षेत्रपालं सिन्दूरादिना निर्माय आवाह्य पूजयेत् ।

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि ।
मा त्वा हिᳬ सीन्मा मा हिᳬ सीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि । भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ । "ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः" इति क्षेत्रपालं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत-प्रेतगणैः सह ।
पूजां बलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ १ ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ २ ॥

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-कूष्माण्ड-भूत-प्रेत-डाकिनी–शाकिनी-पिशाचिनीगणसहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो क्षेत्रपाल ! सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन क्षत्रपालः प्रीयताम् ।

अथ दशदिक्पालबलिः

जलाशयसमीपे दशसु दिक्षु दशदिक्पालानां बलिं संस्थाप्य "ॐ भूर्भुवः स्वः दशदिक्पालेभ्यो नमः" इति दशदिक्पालान् पञ्चोपचारैः पूजयेत् । अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ।

अथ नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनम्

नद्यां जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत् । तद्यथा—

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी ।
शालिग्रामः सगोकर्णो नर्मदा च सरस्वती ॥ १ ॥
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गा पापप्रणाशिनी ।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥ २ ॥
आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥ ३ ॥
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा ।
वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥ ४ ॥

कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी ।
मन्दाकिनी वसिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा ॥ ५ ॥
अमरेशः प्रभासश्च नैमिषं पुष्करं तथा ।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च गङ्गासागरसङ्गमम् ॥ ६ ॥
एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले ।
तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थं द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥

इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा "ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः", "ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्करादितीर्थेभ्यो नम" इति पञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात् ।

अथ वरुणपूजनम्

ततः जलाशयमध्ये वरुणदेवस्य पूजनं कुर्यात् । हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा "ॐ **इमं मे वरुणश्रुधी०**" इत्येन मन्त्रेण वरुणमावाह्य पूजयेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।

"**ॐ मनो जूतिः०**" इत्यनेन प्रतिष्ठापनम ।

"ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः" इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ वरुणबलिदानम्

वरुणदेवस्याग्रे सदीपदधिमाषभक्तबलिं संस्थाप्य "ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः" इति सदीपदधिमाषभक्तबलिं दद्यात् ।

अथ जले पञ्चामृतप्रक्षेपः

"**ॐ पञ्च नद्यः०**" इति मन्त्रेण जले पञ्चामृतस्य प्रक्षेपः ।

अथ आज्याहुतयः

जले स्रुवेण द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । तद्यथा—
ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम ॥१॥
ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम ॥२॥

ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम ॥३॥
ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम ॥४॥
ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम ॥५॥
ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम ॥६॥
ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम ॥७॥
ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम ॥८॥
ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम ॥९॥
ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम ॥१०॥
ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम ॥११॥
ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम ॥१२॥

(शुक्लयजुर्वेद २२।२५)

अथवा **"ॐ अद्भ्यः सम्भृतः०"** इत्यादिमन्त्रैर्घृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात् ।

अथ वरुणायार्घ्यत्रयदानम्

ततोऽर्घपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा **"ॐ वरुणस्योत्तम्भनम्०"** इति मन्त्रेण **'ॐ वरुणाय नमः'** इति वारत्रयमर्घ्यं दद्यात् ।

अथ जले फलप्रक्षेपः

पश्चात् नद्यां जलाशये वा **"ॐ याः फलिनीः०'** इति मन्त्रेण श्रीफलं प्रक्षिपेत् । ततो जलाशये पूजितदेवानां विसर्जनम् ।

अथ भूमिपूजनम्

ततो जलाशयसमीपे नववर्द्धिनीकलशस्थापनार्थं भूमिपूजनं कुर्यात् । प्रथमं भूमिं स्पृष्ट्वा **"ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः ॥"** इति मन्त्रमुच्चरेत् । ततः भूमिदेव्याः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात् ।

अथ नववर्द्धिनीकलशस्थापनविधिः

जलाशयसमीपे भूमौ रक्ताक्षतैः पीताक्षतैर्वा नव कोष्ठान् निर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य, मध्ये कलशमेकं संस्थापयेत्। इति नवकलशानां स्थापनम् ।

अथ नवकुम्भेषु जलपूरणम्

तत्र मध्यकलशे, पूर्वकलशे, आग्नेयकलशे, दक्षिणकलशे, नैर्ऋत्यकलशे, पश्चिमकलशे, वायव्यकलशे, उत्तरकलशे, ऐशानकलशे च तत्तन्मन्त्रैर्जलं पूरयेत् । तद्यथा—

१—"ॐ **इमं मे वरुण०**" इति मन्त्रेण मध्यकलशे जलं पूरयेत् ।

२—"ॐ **वरुणस्योत्तम्भनम्०**" इति मन्त्रेण पूर्वकलशे जलं पूरयेत्।

३—"ॐ **तत्त्वा यामि०**" इति मन्त्रेण आग्नेयकलशे जलं पूरयेत् ।

४—"ॐ **त्वं नो ऽअग्ने वरुणस्य०**" इति मन्त्रेण दक्षिणकलशे जलं पूरयेत् ।

५—"ॐ **सत्वन्नो ऽअग्ने०**" इति मन्त्रेण नैर्ऋत्यकलशे जलं पूरयेत्।

६—"ॐ **आपो हिष्ठाः०**" इति मन्त्रेण पश्चिमकलशे जलं पूरयेत् ।

७—"ॐ **समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा०**" इति मन्त्रेण वायव्यकलशे जलं पूरयेत् ।

८—"ॐ **समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः०**" इति मन्त्रेण उत्तरकलशे जलं पूरयेत् ।

९—"ॐ **वरुणः प्राविता०**" इति मन्त्रेण ऐशानकलशे जलं पूरयेत् ।

अनन्तरं "ॐ **मही द्यौः०**" इति मन्त्रेण भूमिं कलशाधारस्थलम् स्पृशेत् । पश्चात् नवकलशेषु "ॐ **धान्यमसि०**" इति मन्त्रेण धान्यप्रक्षेपः । "ॐ **आजिघ्र कलशम्०**" इति मन्त्रेण कलशसंस्थापनम् । "ॐ **वरुणस्योत्तम्भनम्**" इति मन्त्रेण जलप्रक्षेपः । "ॐ **त्वां**

गन्धर्वाः०" इति मन्त्रेण गन्धप्रक्षेपः। **"ॐ या ऽओषधीः०"** इति मन्त्रेण सर्वौषधिप्रक्षेपः। **"ॐ काण्डात् काण्डात्०"** इति मन्त्रेण दूर्वाप्रक्षेपः। **"ॐ अश्वत्थेवः०"** इति मन्त्रेण पञ्चपल्लव-प्रक्षेपः। **"ॐ स्योना पृथिवि०"** इति मन्त्रेण सप्तमृत्प्रक्षेपः। **"ॐ याः फलिनीः०"** इति मन्त्रेण फलप्रक्षेपः। **"ॐ परिवाजपति०"** इति मन्त्रेण पञ्चरत्नप्रक्षेपः। **"ॐ हिरण्यगर्भः०"** इति मन्त्रेण हिरण्यप्रक्षेपः। **"ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा०"** इति मन्त्रेण वस्त्रयुग्मेन रक्तसूत्रेण वा कलशवेष्टनम्। **"ॐ पूर्णा दर्व्वि०"** इति मन्त्रेण नव-कलशोपरि पूर्णपात्रनिधानम्। **"ॐ इमं मे०"**, **"ॐ पावका नः०"**, **"ॐ पञ्च नद्यः०"** इति मन्त्रैः गङ्गादिनदीनामावाहनम्। **"ॐ मनो जूतिः०"** इति मन्त्रेण नवकलशानां प्रतिष्ठापनम्। ततः "ॐ भूर्भुवः स्वः वर्द्धिनीकलशाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत"। **"ॐ तत्त्वा यामि०"** इति मन्त्रेण नवकलशस्थितेषु पूर्णपात्रेषु पूगीफलेषु वरुण-मावाहयेत्।

"ॐ मनो• जूतिः०" इति मन्त्रेण वरुणदेवस्य प्रतिष्ठापनम्। ततः वरुणदेवं षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत्।

अथ सुवासिनीनामाचार्यादिब्राह्मणानां च पूजनम्

वर्द्धिनीकलशानां पूजनं विधाय सुवासिनीनामाचार्यादिब्राह्मणानां च पूजनं कृत्वा दक्षिणां दद्यात्।

अथ वर्द्धिनीकलशानामुत्थापनम्

"ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते०" इति मन्त्रेण पूजितान् नवकल-शानुत्थाप्य, नवानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि निधापयेत्। ततो यज-मानः **"ॐ आ नो भद्राः०"** इति भद्रसूक्तम्, अथवा **"ॐ स्वर्च**

ठ्ठाधम्०" इति शान्त्यध्यायं पठन् भगवन्नामकीर्तनादिकं च कुर्वन् यज्ञमण्डपं गच्छेत् ।

अथ अर्धमार्गे क्षेत्रपालबलिः

जलयात्रातो निवृत्य यज्ञमण्डपं गच्छन् अर्धमार्गे स्थित्वा क्षेत्रपाल-बलिं दद्यात् । यज्ञमण्डपमागत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य यज्ञमण्डपस्य प्रदक्षिणां कृत्वा यज्ञमण्डपस्य पश्चिमद्वारं सम्पूज्य तेनैव द्वारेण मण्डपं प्रविश्य आनीतान् पूजितनवकलशान् यज्ञमण्डपस्य मध्यवेद्याः पश्चिम-दिग्भागे कृतवारुणमण्डलोपरि संस्थापयेत् ।

इति जलयात्राविधिः ।

—:०:—

अथ [1]वर्द्धिनीकलशस्थापनविधिः ।

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य हस्ते जलाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा "विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्य-प्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक-वासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा-राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभ-पुण्यतिथौ गोत्रः, शर्माऽहम्, (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं महारुद्रयागाङ्गतया (महाविष्णुयागाङ्गतया) यज्ञमण्डप-

---

१. वर्द्धिनीकलशस्थापनं तु यज्ञमण्डपप्रवेशात् पूर्वं भवति ।

प्रवेशकर्तुं वर्द्धिनीकलशदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये" इति सङ्कल्प्य पट्टोपरि अक्षतादिना अष्टदलं पद्मं विधाय तत्र कलशस्थापनविधिना वर्द्धिनीकलशं संस्थापयेत् । पश्चात् हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा तत्रैव—

ॐ भूर्भुवः स्वः वर्द्धिन्यै नमः वर्द्धिनीमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐभूर्भुव स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥३॥

ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥४॥

ॐ भू० मातृभ्यो नमः मातॄः आवाहयामि स्थापयामि ॥५॥

ॐ भू० सागरेभ्यो नमः सागरानावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

ॐ भू० मह्यै नमः महीमावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि ॥८॥

ॐ भू० पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः पुष्करादितीर्थान्यावाहयामि स्थापयामि ॥९॥

ॐ भू० गायत्र्यै नमः गायत्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥१०॥

ॐ भू० ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि ॥११॥

ॐ भू० यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि ॥१२॥

ॐ भू० सामवेदाय नमः सामवेदमावाहयामि स्थापयामि ॥१३॥

ॐ भू० अथर्ववेदाय नमः अथर्ववेदमावाहयामि स्थापयामि ॥१४॥

ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥१५॥

ॐ भू० आदित्येभ्यो नमः आदित्यानावाहयामि स्थापयामि ॥१६॥

ॐ भू० एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि ॥१७॥

ॐ भू० मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवाहयामि स्थापयामि ॥१८॥

ॐ भू० गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि ॥१९॥

ॐ भू० ऋषये नमः ऋषिमावाहयामि स्थापयामि ॥२०॥

ॐ भू० वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥२१॥

ॐ भू० वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥२२॥

ॐ भू० धनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि ॥२३॥

ॐ भू० यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥२४॥

ॐ भू० धर्माय नमः धर्ममावाहयामि स्थापयामि ॥२५॥
ॐ भू० शिवाय नमः शिवमावाहयामि स्थापयामि ॥२६॥
ॐ भू० यज्ञाय नमः यज्ञमावाहयामि स्थापयामि ॥२७॥
ॐ भू० विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि ॥२८॥
ॐ भू० स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥२९॥
ॐ भू० गणेशाय नमः गणेशमावाहयामि स्थापयामि ॥३०॥
ॐ भू० यक्षाय नमः यक्षमावाहयामि स्थापयामि ॥३१॥
ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि ॥३२॥

इत्यावाह्य '**ॐ मनो जूतिः०**' इति मन्त्रेण प्रतिष्ठापनम् । पश्चाद् 'ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणवर्द्धिन्याद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत' इत्युक्त्वा 'ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणवर्द्धिन्याद्यावाहितकलशदेवताभ्यो नमः' इति षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् । तद्यथा—

वर्द्धिनि त्वं महाभागा सर्वतीर्थोदकान्विता ।
अतस्त्वां प्रार्थये देवि भव त्वं कुलवर्धिनी ॥

पश्चाद् हस्ते जलाक्षतमादाय 'अनया पूजया वरुणवर्द्धिन्याद्यावाहितकलशदेवताः प्रीयन्ताम्' इति वदेत् ।

इति वर्द्धिनीकलशस्थापनविधिः ।

यज्ञमण्डपे 'वर्द्धिनीसंज्ञकनवकलशानां स्थापनविधिः ।

यजमानः जलयात्रात आनीतानां वर्द्धिनीसंज्ञकनवकलशानां [1]स्थापनार्थं यज्ञमण्डपस्य मध्यवेद्याः पश्चिमदिग्भागे कृतवारुणमण्डलस्य

---

१. (क) वैष्णवसिद्धान्ते विष्णुधर्मकल्पलतायां च मध्यवेद्याः पश्चिमदिग्भागे अष्टदले वारुणमण्डले वा वर्द्धिनीकलशस्थापनमुक्तम् । रुद्रकल्पद्रुमे तु मध्यवेद्या ऐशान्यामष्टदलोपरि वर्द्धिनीकलशस्थापनमुक्तम् ।

(ख) रुद्रकल्पद्रुमे तु यज्ञमण्डपप्रवेशानन्तरमैशान्यां विरचिताष्टदलोपरि एकादशवर्द्धिनीकलशस्थापनं विधाय तदुपरि एकादशरुद्रमूर्तीनां स्थापनं पूजनञ्चोक्तम् ।

समीपे उपविश्य सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा—देशकालौ सङ्कीर्त्य "प्रारब्धमहारुद्राङ्गत्वेन वर्द्धिनीसंज्ञकनवकलशानां स्थापनं करिष्ये, तदङ्गत्वेन वारुणमण्डलदेवतानां स्थापनं प्रतिष्ठापनं पूजनं च करिष्ये" इति सङ्कल्प्य वारुणमण्डलोपरि दिक्षु विदिक्षु पूर्वादिक्रमेणाष्टस्वारासु षोडशोपचारविधिना नवग्रहदिदेवानामावाहनं पूजनञ्च विधेयम्।

दिक्षु विदिक्षु पूर्वादिक्रमेणाष्टस्वारासु नवग्रहानावाहयेत्।

१—ॐ आकृष्णेन रजसा०। पूर्वे आरायाम्—ॐभूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि। भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

२—ॐ इमन्देवाः०। आग्नेये आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि। भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ।

३—ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः०। दक्षिणे आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि। भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ।

४—ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने०। नैर्ऋत्ये आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि। भो बुध इहागच्छ इह तिष्ठ।

५—ॐ बृहस्पते०। पश्चिमे आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि। भो बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ।

६—ॐ अन्नात्परिस्रुतः०। वायव्ये आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि। भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

७—ॐ शन्नो देवीः०। उत्तरे आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि। भो शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ।

८—ॐ कयानश्चित्रः०। ऐशाने आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि। भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ।

९—ॐ केतुङ्कृण्वन्० । ऐशाने आरायामेव राह्वग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि । भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ ।

पुनस्तास्वेव आरासु सूर्यादिक्रमेणाष्टौ लोकपालानावाहयेत् ।

१०—ॐ त्रातारमिन्द्रम्० । पूर्वे आरायाम् सूर्याग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि । भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।

११—ॐ त्वन्नो ऽअग्ने० । आग्नेये आरायां सोमाग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि । भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ।

१२ ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते० । दक्षिणे आरायां भौमाग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि । भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ ।

१३—ॐ असुन्वन्तमयज० । नैर्ऋत्ये आरायां बुधाग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमामावाहयामि स्थापयामि । भो निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ।

१४—ॐ तत्वा यामि० । पश्चिमे आरायां बृहस्पत्यग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।

१५—ॐ आनो नियुद्भिः० । वायव्ये आरायां शुक्राग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि । भो वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

१६—ॐ व्वयठं० सोम० । उत्तरे आरायां शन्यग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि । भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ ।

१७—ॐतमीशानम्० । ऐशाने आरायां राहुकेत्वग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि । भो ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ।

वायुसोमान्तरालमारभ्य अन्तरालासु यथाक्रमं नवदेवानामावाहनम् ।

१८—ॐ सुगावो देवाः० । वायुसोममध्ये आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वसुभ्यो नमः वसूनावाहयामि स्थापयामि । भो वसव इहागच्छत इह तिष्ठत ।

१९—ॐ रुद्राःसठं० सृज्ज्यपृथिवीम्० । सोमेशानान्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्रेभ्यो नमः रुद्रानावाहयामि स्थापयामि । भो रुद्राः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२०— ॐ यज्ञो देवानाम्० । ईशानेन्द्रान्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुव स्वः आदित्येभ्यो नमः आदित्यानावाहयामि स्थापयामि । भो आदित्याः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२१—ॐ यावाङ्कशा० । इन्द्राग्न्यन्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनावाहयामि स्थापयामि । भो अश्विनौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् ।

२२—ॐ ओमासश्चर्षणीधृतः० । अग्नियमान्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि । भो विश्वेदेवाः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२३—ॐ उदीरतामवरऽउत्परासः० । अग्नियमान्तराले विश्वेदेवाग्रे आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः पितृनावाहयामि स्थापयामि । भो पितरः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२४—ॐ अभित्यन्देवठं० । यमनैर्ऋत्यान्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षेभ्यो नमः यक्षानावाहयामि स्थापयामि । भो यक्षाः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२५—ॐ आयङ्गौः० । निर्ऋतिवरुणान्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो नमः भूतनागानावाहयामि स्थापयामि । भो भूतनागाः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

२६—ॐ ऋताषाड्तधामाग्निर्गन्धर्व्वः० । वरुणवाय्वन्तराले आरायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि । भो गन्धर्वाप्सरसः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

सोमाद्यष्टाब्जपत्रेषु स्कन्दादिनवदेवानामावाहनम् ।

२७—ॐ यदक्रन्दः० । उत्तरदले—ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः । स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि । भो स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ।

२८—ॐ अदितिर्द्यौः० । ईशानदले—ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः दक्षमावाहयामि स्थापयामि । भो दक्ष इहागच्छ इह तिष्ठ ।

२९—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके० । पूर्वदले—ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि । भो दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३०—ॐ इदं विष्णुः० । पूर्वदले दुर्गाग्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि । भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३१—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः० । आग्नेयदले—ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि । भो स्वधे इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३२—ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि० । दक्षिणदले—ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्यवे नमः मृत्युमावाहयामि स्थापयामि । भो मृत्यो इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३३—ॐ गणानां त्वा० । नैर्ऋत्यदले—ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि । भो गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३४—ॐ शन्नो देवीः० । पश्चिमदले—ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि । भो अपः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

३५—ॐ मरुतो यस्य हि क्षये० । वायव्यदले—ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवाहयामि स्थापयामि । भो मरुतः इहागच्छत इह तिष्ठत ।

३६—ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा० । कर्णिकामध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि । भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ।

उत्तरादितः क्रमेण केसरमूलेषु ब्रह्माद्यष्टदेवानामावाहनम् ।

३७—ॐ ब्रह्मजज्ञानम्०। उत्तरे केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ।

३८—ॐ विष्णोरराटम्०। ऐशाने केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि। भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

३९—ॐ मानस्तोके तनये०। पूर्वे केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

४०—ॐ श्रीश्च ते०। आग्नेये केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि। भो लक्ष्मि इहागच्छ इह तिष्ठ।

४१—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके०। दक्षिणे केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः अम्बिकायै नमः अम्बिकामावाहयामि स्थापयामि। भो अम्बिके इहागच्छ इह तिष्ठ।

४२—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्०। नैर्ऋत्ये केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि। भो सावित्रि इहागच्छ इह तिष्ठ।

४३—ॐ पञ्च नद्यः०। पश्चिमे केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत इह तिष्ठत।

४४—ॐ इमं मे०। वायव्ये केसरमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत इह तिष्ठत।

४५—ॐ भूताय त्वा नारातये०। ब्रह्मपादमूले कर्णिकाधः–ॐ भूर्भुवः स्वः भूतग्रामाय नमः भूतग्राममावाहयामि स्थापयामि। भो भूतग्राम इहागच्छ इह तिष्ठत।

४६—ॐ प्रपर्व्वतस्य०। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकोपरि–ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि। भो मेरो इहागच्छ इह तिष्ठ।

तद्बाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादितः सोमादिसमीपे क्रमेण गदाद्यष्टायुधदेवानामावाहनम् ।

४७—ॐ गणानां त्वा०। सोमसमीपे-ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि। भो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ।

४८—ॐ त्रिꣳ० शद्धाम०। ईशानसमीपे-ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि। भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ।

४९—ॐ महाँ२।। इन्द्रो व्वज्रहस्तः०। इन्द्रसमीपे-ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि। भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

५०—ॐ व्वसु च मे०। अग्निसमीपे-ॐभूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि। भो शक्ते इहागच्छ इह तिष्ठ।

५१—ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि०। यमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि। भो दण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ।

५२—ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः०। निर्ऋतिसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि। भो खड्ग इहागच्छ इह तिष्ठ।

५३—ॐ उदुत्तमं वरुण पाश०। वरुणसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि। भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ।

५४—ॐ अꣳ० शुश्व०। वायुसमीपे-ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि। भो अङ्कुश इहागच्छ इह तिष्ठ।

तद्बाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरादिक्रमेण गौतमाद्यष्टदेवानामावाहनम् ।

५५—ॐ आयं गौः०। उत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि। भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ।

५६—ॐ अयं दक्षिणा०। ऐशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि। भो भरद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ।

५७—ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य०। पूर्वे- ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि। भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

५८—ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः०। आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि। भो कश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ।

५९—ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य०। दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि। भो जमदग्ने इहागच्छ इह तिष्ठं।

६०—ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य०। नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि। भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ।

६१—ॐ अत्र पितरः०। पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि। भो अत्रे इहागच्छ इह तिष्ठ।

६२—ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम०। वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहमामि स्थापयामि। भो अरुन्धति इहागच्छ इह तिष्ठ।

तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ऐन्द्र्याद्यष्टदेवानामावाहनम्।

६३—ॐ अदित्यै रास्नासि०। पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि। भो ऐन्द्रि इहागच्छ इह तिष्ठ।

६४—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके०। अग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि। भो कौमारि इहागच्छ इह तिष्ठ।

६५—ॐ इन्द्रायाहि धियेः०। दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि। भो ब्राह्मि इहागच्छ इह तिष्ठ।

६६—ॐ आयं गौः०। नैर्ऋत्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। भो वाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ।

६७—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके०। पश्चिमे–ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि। भो चामुण्डे इहागच्छ इह तिष्ठ।

६८—ॐ आप्यायस्व समेतु०। वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि। भो वैष्णवि इहागच्छ इह तिष्ठ।

६९—ॐ याते रुद्र शिवा०। उत्तरे–ॐ भूर्भुवः स्वः कौबेर्यै नमः कौबेरीमावाहयामि स्थापयामि। भो कौबेरि इहागच्छ इह तिष्ठ।

७०—ॐ समख्ये देव्या०। ऐशान्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि। भो वैनायकि इहागच्छ इह तिष्ठ।

सूर्याद्यावाहितदेवतानां प्राणप्रतिष्ठापनं पूजनञ्च।

ॐ मनो जूतिः०। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यावाहितवारुणमण्डल-देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत। 'ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यावाहित-वारुणमण्डलदेवताभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोप-चारैर्वा पूजयेत्।

अनया पूजया सूर्याद्यावाहितवारुणमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम्।

वर्द्धिनीसंज्ञकनवकलशान् वारुणमण्डलोपरि पूर्वाद्यष्टदिक्ष्वष्टौ मध्ये चैकमेवं क्रमेण स्थापयेत्।

वर्द्धिनीकलशानां स्थापनम्।

ॐ आजिघ्र कलशम्०। ॐ भूर्भुवः स्वः वर्द्धिनीकलशेभ्यो नमः वर्द्धिनीकलशमावाहयामि स्थापयामि।

वर्द्धिनीकलशानां प्राणप्रतिष्ठापनं पूजनञ्च ।

ॐ मनो जूतिः० । ॐ भूर्भुवः स्वः वर्द्धिनीकलशाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत । 'ॐ भूर्भुवः स्वः वर्द्धिनीकलशेभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा नवकलशान् पूजयेत् ।

कलशस्थवर्द्धिनी-प्रार्थना ।

ॐ वर्द्धिनि त्वं महाभागे सर्वतीर्थोदकान्विते ।
त्वत्तोयेन प्रपूर्योऽहं भव त्वं कुलवर्द्धिनी ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलशवर्द्धिन्यै नमः, प्रार्थनां समर्पयामि ।
अनया पूजया वर्द्धिनीकलशाः साङ्गाः सपरिवाराः प्रीयन्ताम् ।

वर्द्धिनीकलशेषु मत्स्यादिजलमातृणामणिमाद्यष्टसिद्धीनाञ्चावाहनम् ।

१—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि । भो मत्सि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

२—ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि । भो कूर्मि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

३—ॐ भूर्भुवः स्वः कच्छप्यै नमः कच्छपीमावाहयामि स्थापयामि । भो कच्छपि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

४—ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि । भो वाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

५—ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि । भो दर्दुरि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

६—ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुमार्यै नमः शिशुमारीमावाहयामि स्थापयामि । भो शिशुमारि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

७—ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर्यै नमः ईश्वरीमावाहयामि स्थापयामि । भो ईश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ।

८—ॐ भूर्भुवः स्वः अणिमायै नमः अणिमामावाहयामि स्थापयामि। भो अणिमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

९—ॐ भूर्भुवः स्वः महिमायै नमः महिमामावाहयामि स्थापयामि। भो महिमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

१०—ॐ भूर्भुवः स्वः गरिमायै नमः गरिमामावाहयामि स्थापयामि। भो गरिमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

११—ॐ भूर्भुवः स्वः लघिमायै नमः लघिमामावाहयामि स्थापयामि। भो लघिमे इहगच्छ इह तिष्ठ।

१२—ॐ भूर्भुवः स्वः प्राप्त्यै नमः प्राप्तिमावाहयामि स्थापयामि। भो प्राप्ते इहागच्छ इह तिष्ठ।

१३—ॐ भूर्भुवः स्वः प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः प्राकाम्यसिद्धिमावाहयामि स्थापयामि। भो प्राकाम्यसिद्धे इहागच्छ इह तिष्ठ।

१४—ॐ भूर्भुवः स्वः ईशित्वसिद्ध्यै नमः ईशित्वसिद्धिमावाहयामि स्थापयामि। भो ईशित्वसिद्धे इहागच्छ इह तिष्ठ।

१५—ॐ भूर्भुवः स्वः वशित्वसिद्ध्यै नमः वशित्वसिद्धिमावाहयामि स्थापयामि। भो वशित्वसिद्धे इहागच्छ इह तिष्ठ।

मत्स्याद्यावाहितदेवानां प्राणप्रतिष्ठापनं पूजनञ्च।

ॐ मनो जूतिः०। ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत। 'ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत्।

कलशप्रार्थना।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः ॥
वर्द्धिनि त्वं जगन्मातर्महातीर्थोदकान्विते ।
पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्भव त्वं कुलवर्द्धिनी ॥
तत्र तोयेन कलशाः यज्ञेऽस्मिन् पूरिताः शुभाः ।
पूर्णे यज्ञेऽभिषेकार्थमृद्धिदा सिद्धिदा भव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलशाधिष्ठातृवर्द्धिन्यै नमः । इति प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि ।

समर्पणम् ।

हस्ते जलाक्षतमादाय अनेन वर्द्धिनीकलशस्थापन-पूजनाख्येन कर्मणा श्रीमहालक्ष्मीः प्रीयताम् ।

इति [1]वर्द्धिनीकलस्थापनविधिः ।

वारुणमण्डलोद्धारविधिः ।

त्रिहस्तायामकं कार्यं चतुरस्रं समन्ततः ।
चतुःषष्टिः सुकोष्ठानि तस्मिन् सम्पादयेद् बुधः ॥
बाह्यपङ्क्तौ चतुर्दिक्षु मध्ये कोष्ठचतुष्टयम् ।
तदधः पङ्क्तिमध्यस्थं कोष्ठद्वितयमेव च ॥
एकीकृत्य च चत्वारि द्वाराणि सम्प्रकल्पयेत् ।
कोणेष्वेकैककोष्ठं तु हित्वा पञ्चभिरेव च ॥

---

१. केचन विद्वांसो यज्ञमण्डपे वर्द्धिनीकलशस्थापनं कुर्वन्ति, परन्तु वर्द्धिनीकलशस्थापनं रुद्रकल्पद्रुमप्रभृतिग्रन्थेषु नोपलभ्यते । अतः सर्वे वर्द्धिनीकलशस्थापनं न कुर्वन्ति । वर्द्धिनीकलशस्थापनं तु केवलं गुर्जरदेशीया एव कुर्वन्ति ।

कोष्ठैः पादाः प्रकर्तव्याः संलग्नैर्मण्डलस्य तु ।
मध्ये षोडशकोष्ठानि मार्जयित्वा लिखेत् क्रमात् ॥

चतुरङ्गुलकं वृत्तं प्रथमं द्विगुणं परम् ।
चतुर्विंशाङ्गुलं तत्र तृतीयं परिकल्पयेत् ॥

षडविंशत्यङ्गुलं तद्वच्चतुर्थमुपकल्पयेत् ।
कर्णिकाकेसरस्थानं पद्मस्थानमभूदितं ॥

नामानि कथितान्येवं कुर्याद्वारुणमण्डलम् ।
कर्णिकां पीतरजसा पूरयेच्छुभ्रवर्णकैः ॥

केसरस्थानकं तत्र लिखेत् षोडश तानि तु ।
पीतरक्तसितैर्वर्णैर्मूलमध्याग्रकेषु च ॥

पद्मस्थानं सितेनैवापूर्य पद्माष्टकं लिखेत् ।
रक्ताग्रकं पत्रसन्धि पूरयेत्कृष्णवर्णकैः ॥

पद्माद् बहिः सितेनैव रजसाङ्गुलमानतः ।
परिध्यावेष्टितं कार्यं पद्माष्टकमथोदितम् ॥

तद् बहिः शिष्टभागे तु षोडशाराः प्रकल्पयेत् ।
श्यामपीतारुणश्वेतरजोभिर्बुद्धिमत्तमः ॥

अन्तरालं यथाशोभं तद् बहिः पञ्चरेखकम् ।
श्वेतपीतारुणश्यामहरिद्भिर्वर्णकैः क्रमात् ॥

पीठक्षेत्रं यथाशोभं रजोभिः पूरयेद् बुधः ।
द्वाराणि पूर्वतः पीतश्यामश्वेतहरिद्भवैः ॥

आग्नेयादिदिशाङ्कोणान् रक्तनीलसितोज्ज्वलैः ।
पीठपादचतुष्कं च श्वेतरक्तसुपीतकैः ॥

कृष्णेन रजसा चैव पूरयेत्फलभाग्भवेत् ।
आग्नेयादिहरिद्भिश्च पीठपादक्रमः स्मृतः ॥

ततः सितेनैव समस्तपीठाद्
बहिर्विरेखां रचयेत्समासौ ।
दिवाकरेणाशु विलेखनाय
प्रकार उक्तो विदुषां मुदे च ॥

वज्रं प्रागुत्तरे भागे आग्नेय्यां शक्तिमुज्ज्वलाम् ।
आलिखेद्दक्षिणे दण्डं नैर्ऋत्यां खड्गमालिखेत् ॥
पाशं तु वारुणे चैवं ध्वजं वायव्यगोचरे ।
कौबेर्यां तु गदा लेख्या ऐशान्यां शूलमालिखेत् ॥
शूलस्य वामदेशे तु चक्रं पद्मं तु दक्षिणे ॥

इति वारुणमण्डलोद्धारविधिः ।

—:०:—

अथ अवभृथस्नानविधिः ।

यजमानः पूर्णाहुत्यनन्तरं पूर्णपात्रादिदानानन्तरं प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं, हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, स्रुक्-स्रुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नाम-कीर्त्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत् । अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादय ऋत्विजः स्वस्तिवाचनं कुर्युः । पश्चाद् यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा—

देशकालौ सङ्कीर्त्य "मम सर्वेषां परिवाराणां तथाऽन्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुक-यागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानं समस्तसमुपस्थित-जनैः सहाहं करिष्ये ।"

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा [1]जलमातॄणामावाहनं पूजनञ्च कुर्यात् । तद्यथा—

ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः, मकरीमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः, जलूकीमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा० । ततो वरुणमावाहयेत्—

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते ।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

---

१. मत्सी कूर्मी च वाराही दर्दुरी मकरी तथा ।
जलूकी तन्तुकी चैव सप्तैता जलमातृकाः ॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

इत्यावाह्य सम्पूज्यं च,

श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः ।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते ॥

इति विशेषार्घ्यं दद्यात् । ततः—

ॐ इमं मे व्वरुण श्श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥१॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० समान ऽआयुः प्रमोषीः ॥२॥

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्न देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमर्ठ०शशुचानो व्विश्वा द्वेषार्ठ्ठसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥३॥

ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्वनो व्वरुणर्ठ०रराणो व्वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि ॥४॥

ॐ मापो मौषधीहिंर्ठ०सीद्धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो व्वरुण नो मुञ्च ।
यदाहुरघ्न्या ऽइति व्वरुणेति शपामहे ततो व्वरुण नो मुञ्च ॥५॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमर्ठ्ठश्रथाय ।
अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥६॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो व्वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशात् सर्व्वस्माद्देवकिल्विषात् ॥७॥

ॐ अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्द्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव-
रिषस्पाहि ॥

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात् ।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति रज्वादिना परितश्चतुरस्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत् । ततः—

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

इति मन्त्रेण नदीं जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना [1]जीवमातॄणां बलिं दद्यात् । तद्यथा—

ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः ।

पश्चाद् विष्णुयागे पुरुषसूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन, लक्ष्मीयागे श्रीसूक्तेन च जले अभिषेकः कार्यः । ततो [2]होमावसरे हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं नद्यां जलाशये वा तूष्णीं प्रक्षिपेत् ।

ततो जले **'वडवाग्निरूपायाग्नये नमः'** इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । तद्यथा—

ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम ॥ १ ॥
ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम ॥ २ ॥
ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम ॥ ३ ॥
ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम ॥ ४ ॥
ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम ॥ ५ ॥

---

१. कुमारी धनदा नन्दा विमला मङ्गलाऽचला ।
पद्मा चेति सुविख्याताः सप्तैता जीवमातरः ॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

२. ऋत्विजा जुह्वतामग्नौ बहिः पतति यद्धविः ।
स ज्ञेयो वारुणो भागः प्रक्षेप्यो विमले जले ॥ (शौनकः)

ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम ॥ ६ ॥
ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम ॥ ७ ॥
ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम ॥ ८ ॥
ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम ॥ ९ ॥
ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम ॥१०॥
ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम ॥११॥
ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम ॥१२॥

(शुक्लयजुर्वेद २२।२५)

ततो यजमानः सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन—ॐ इमं मे० । ॐ तत्त्वा यामि० । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य० । ॐ सत्वन्नो ऽग्ने वमः० । ॐ उदुत्तमम्० । इति वारुणमन्त्रैः स्नानं कुर्यात् ।

प्रधानकलशोदकेन कुशैः दूर्वाङ्कुरैश्च अन्येषां जनानां सम्मार्जनं कारयेत् । पश्चाद् यजमानः यज्ञकुण्डादानीतेन भस्मना स्रुचिस्थितेन आज्येन च स्वशरीरे अनुलेपनं कृत्वा नद्यां जलाशये वा स्नानं कुर्यात् । स्नानानन्तरं नूतनवस्त्राणि परिधाय तिलकाद्यलङ्करणं कुर्यात् । ततो यजमानः—

ॐ हꣳ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऽऋतं बृहत् ॥

(शुक्लयजुर्वेद १०।२४)

इति मन्त्रेण सूर्योपस्थानं कृत्वा तीर्थदेवतां सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो ऽअस्य पादा मनोजवा ऽअवर ऽइन्द्र ऽआसीत् ।
देवा ऽइदस्य हविरद्यमायन्यो ऽअर्वन्तं प्रथमो ऽअध्यतिष्ठत् ।१॥

ईर्म्मान्तासः सिलिकमद्ध्यमासः सꣳ शूरणासो दिव्यासो ऽअत्याः ।
हꣳस ऽइव ऽश्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥२॥
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्व्वन् तव चित्तं व्वात ऽइव ध्रजीमान् ।
तव शृङ्गाणि व्विष्ठिता पुरुत्त्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥३॥
(शुक्लयजुर्वेद २९।२०–२२)

ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । पश्चात् प्रधानकलशं पूजादिसामग्रीं च गृहीत्वा भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादिऋत्विग्भिः सह सपत्नीको यजमानः यज्ञस्थलमागत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य यज्ञमंण्डपस्य प्रदक्षिणां कृत्वा यज्ञमण्डपस्य पूर्वद्वारेण प्रविशेत् । ततः प्रधानकलशं प्रधानवेद्युपरि स्थापयेत् । पश्चाद् यज्ञावशिष्टं कर्म समापयेदिति ।

इति अवभृथस्नानविधिः ।

—:०:—

अथ सूर्यार्घ्यविधिः ।

यजमानः प्रातः नित्यक्रियां विधाय **'ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रः०'** इति मन्त्रेण तिलकं कुर्यात् । तत आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठं पठेत् । पश्चाद् हस्ते जलाक्षतमादाय सङ्कल्पं कुर्यात् । 'ॐ विष्णुः० ३ अस्मिन् महारुद्रयज्ञकर्मणि मण्डपप्रवेशाङ्गभूतं द्वारदेशे सूर्यार्घ्यप्रदान-पूर्वकमर्घ्यस्थापनं करिष्ये ।' यज्ञमण्डपाद् बहिर्देशे स्थित्वा भूमौ गोमयेन लिप्तायां चन्दनादिना वृत्तमण्डलं विधाय तत्र कुशासनमास्तीर्य **'ॐ आधारशक्तिकमलासनाय नमः'** इत्यासनं सम्पूज्य तत्र प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य **'ॐ ह्रीं ह्रीं सः'** इति मन्त्रेण प्राणा-यामं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात् । देशकालौ सङ्कीर्त्य 'श्रीसूर्यनारायणप्रीतये अर्घ्यदानं करिष्ये ।'

विनियोगः—अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता न्यासे विनियोगः ।

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि । ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे । ॐ सूर्यदेवतायै नमो हृदये । ॐ सूर्याय नमः सर्वाङ्गेषु ।

करन्यासः—ॐ रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः हृदये । ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रूं शिरसे स्वाहा । ॐ रुं शिखायै वषट् । ॐ रैं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ रः अस्त्राय फट् । ततः सूर्यं ध्यायेत्—**'ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती०'** इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सूर्यं सम्पूजयेत् ।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।
ॐ यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।
ॐ रं ज्ञानात्मकं दीपं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।
ॐ अं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।
ॐ सौं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि । सूर्यनारायणाय नमः ।

इति मनसा सम्पूजयेत्। पश्चात् स्वपुरतस्त्रिकोण—चतुरस्रात्मकं मण्डलं कृत्वा **'ॐ सूर्यार्घ्याधाराय नमः'** इति मण्डलं सम्पूज्य **'ॐ आधारशक्तये** नमः' इति मण्डलोपरि जलं प्रक्षिप्य, त्रिकोणोपरि दत्त्वा तत्र साधारं ताम्रमयमर्घ्यपात्रं निधाय **'ॐ फट्'** इत्यनेन ताम्रपात्रं प्रक्षाल्य, आधारोपरि दत्त्वा **'ॐ शं रीं सः'** इत्यनेन मन्त्रेण जलमापूर्य, तत्र तिल-तण्डुलादिरक्तचन्दनादीन् प्रक्षिपेत्। ततः सूर्यमावाह्य रक्त-चन्दनेन सूर्यं पूजयेत्। तद्यथा—ॐ आदित्याय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ भास्कराय नमः। पश्चादाग्नेयादिकोणेषु—ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ उमायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ सन्ध्यायै नमः। एवं पूर्वाद्यष्टदिक्षु--ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ ऐन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ अरुणायै नमः।

तद् बहिः—ॐ रवये नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः।

ततो इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुवेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ अब्जाय नमः। ॐ चक्राय नमः।

पश्चात् धूपादिकं प्रदर्शयेत्। अनन्तरं जलयुतं ताम्रपात्रं कराभ्यामाच्छाद्य—

'ॐ सं सूर्याय नमः' इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतम्, अष्टाविंशतिम्, अष्टौ वा जपित्वा, जानुभ्याम् अवनिं स्पृष्ट्वा तत्पात्रं कराभ्यामादाय, आमस्तकमुद्धृत्य सूर्यदेवतां ध्यायन् मण्डले दृष्टिं निधाय **'ॐ आकृष्णेन रजसा०'**। **'श्रीसूर्य एष ते अर्घः स्वाहा'** इति

सूर्यार्घ्यं रक्तचन्दनं मण्डले दत्त्वा प्रणमेत् । पुनः ताम्रपात्रं जलेन प्रपूर्य, **'ॐ बण्महाँ२ऽअसि सूर्य बडा०'** । **'श्रीसूर्य एष ते अर्घः स्वाहा'** इति मण्डले सूर्यार्घ्यं दत्त्वा प्रणमेत् । ततो यजमानः यज्ञमण्डपस्य पश्चिमद्वारे स्थित्वा द्वारदेशे सामान्यार्घ्यं दद्यात् । तद्यथा—गोमयेनोपलिप्तायां भूमौ चन्दनादिना त्रिकोणवृत्तम् अष्टदलं वा निर्माय **'ॐ रः द्वारार्घ्यं साधयामि नमः'** इति त्रिकोणमध्ये अष्टदलमध्ये वा गन्धाक्षतान् प्रक्षिपेत् । ततः **'ॐ आधारशक्तये नमः'** इत्याधारं प्रक्षाल्य, त्रिकोणोपरि स्थापयित्वा तत्र साधारं ताम्रमयमर्घ्यपात्रं निधाय **'ॐ फट्'** इत्यनेन पात्रं प्रक्षाल्य, आधारोपरि संस्थाप्य **'ॐ रीं'** इत्यनेन पात्रे जलं पूरयेत् । ततः अङ्कुशमुद्रया निर्मितसूर्यमण्डलोपरि तीर्थान्यावाहयेत् ।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

ततः प्रणवेन गन्धादीन्निक्षिपेत् । पश्चात् धेनुमुद्रां प्रदर्श्य **'ॐ सं सूर्याय नमः'** इति मन्त्रेण अष्टवारम् अभिमन्त्र्य, तेन जलेन द्वारं सम्प्रोक्ष्य द्वारपूजां कुर्यात् । **'ॐ अस्त्राय फट्'** इत्यनेन जलेन द्वारं सम्प्रोक्ष्य चन्दनादिना पूजयेत् ।

ऊर्ध्वशाखायाम्—ॐ गं गणेशाय नमः । दक्षिणशाखायाम्—ॐ मं महालक्ष्म्यै नमः । वामशाखायाम्—ॐ सं सरस्वत्यै नमः । दक्षिणे—ॐ वं विघ्नराजाय नमः । ॐ गं गङ्गायै नमः । ॐ यं यमुनायै नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । पुनः दक्षिणे—धात्रे नमः । विधात्रे नमः । दक्षे—नवनिधये नमः । वामे—अष्टमहासिद्धये नमः । अधः—उदम्बरदेहल्यै नमः । इति द्वारदेवताः सम्पूजयेत् ।

विष्णुयज्ञे तु पूर्वे द्वारे—ॐ नन्दाय नमः । ॐ सुनन्दाय नमः । ततः दक्षिणद्वारे गत्वा **'ॐ अस्त्राय फट्'** इत्यनेन जलेन द्वारं सम्प्रोक्ष्य पुनः

चन्दनादिना द्वारपूजां कुर्यात् । ॐ चण्डाय नमः । ॐ प्रचण्डाय नमः । ततः पश्चिमद्वारे गत्वा '**ॐ अस्त्राय फट्**' इत्यनेन जलेन द्वारं सम्प्रोक्ष्य, पुनः चन्दनादिना द्वारपूजां कुर्यात् । ॐ बलाय नमः । ॐ प्रबलाय नमः । तत उत्तरद्वारे गत्वा '**ॐ अस्त्राय फट्**' इत्यनेन जलेन द्वारं सम्प्रोक्ष्य, गन्धादिना द्वारपूजां कुर्यात् । ॐ भद्राय नमः । ॐ सुभद्राय नमः । इति द्वारपूजां कुर्यात् । ततो यज्ञमण्डपस्य पश्चिम-द्वारेण प्रविशेत् । आचार्यः वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् । तत्र मन्त्राः—

ॐ रक्षोहणं बलगहनम्० । **रक्षोहणो वो बलगहनः०** । **रक्षसां भागः०** । **रक्षोहा विश्वचर्षणिः०** । यदत्र संस्थितं भूतम्० । अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता० । अपक्रामन्तु भूतानि० । भूतप्रेतपिशाचाद्याः० । भूतानि राक्षसा वाऽपि० । इति मन्त्रानुक्त्वा यज्ञमण्डपप्रवेशार्थं ब्रह्माणं प्रार्थयेत् । यजमानो ब्रह्माणं ब्रूयात्—'**भो ब्रह्मन् ! यज्ञमण्डपं प्रविशामि** ।' ब्रह्मा वदेत्–'**यज्ञमण्डपं प्रविश**' । ततो यजमानो घण्टा-नादपूर्वकं यज्ञमण्डपे प्रविशेत् । ततः '**ॐ आपो हिष्ठा०**' इत्यादिमन्त्रैः कुशैः पञ्चगव्येन यज्ञमण्डपं प्रोक्षयेत् । ततः गणपत्यादिदेवानां पूजनं कर्तव्यमिति ।

इति सूर्यार्घ्यविधिः ।

विष्णुयागस्य बृहत् सङ्कल्पः ।

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारते वर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुके तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशि—स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं अनाद्यविद्यावासनावासितान्तः प्रवृत्त्या प्रवर्त्तमानेऽस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु योनिषु अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्मविशेषेण भगवत्कृपाकटाक्ष-वीक्षणात्मसहायेन साम्प्रतिकं दुर्लभातिदुर्लभं मानवं देहमासादितवतः आजन्मनः सर्वास्ववस्थासु वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ-घ्राण-रसन-श्रुति-चक्षुस्त्वङ्-मनःसम्पादितैः ऐन्द्रियकव्यापारविशेषैः प्रतिफलितानां ज्ञाताज्ञातावस्थासम्भवानां समेषामेनसामपनोदपूर्वकं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अस्मिन् महायज्ञे कायिक-वाचिक-मानसिक-आर्थिक-सहयोगेन साहाय्यकारिणाम्, सर्वेषां भारतवर्षवास्तव्यानां चतुराश्रम-स्थानां चातुर्वर्ण्यानां जनानाम्, विशेषतः एतत्प्रान्तीयानां सर्वेषां आबाल-वृद्धवनितानां गो-महिष्यादिसमस्ततिरश्चां च कायिक-वाचिक-मान-सिकसांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकम् आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधि-भौतिक-त्रिविध-तापोपशान्तिसकलदुःखाशेषनिवृत्तिपूर्वकम्, व्याध्यादि-जरा-मृत्यु-रोग-भय-शोकाद्युपसर्गनिवृत्तिपुरस्सरम्, जन्मकुण्डल्याम्, वर्षकुण्डल्याम्, गोचरे च अरिष्टस्थितानाम् आदित्यादिनवग्रहा-णामशुभफलनिरासपूर्वकम्, लग्नस्थमन्दार्क-पातालस्थभौम-मिथुन-स्याब्जनवमस्याशिखिगोचराष्टकस्य जीवग्रहजन्यजायमानजनिष्य-माणसकलारिष्टनिवृत्तिपूर्वकम्, अङ्गारकादिक्रूरसम्मेलनसम्भाव्य-दिव्यभौमान्तरिक्षसर्वोपप्लवादिसर्वापच्छान्त्यर्थम्, अतिवृष्टि-अना-

वृष्टि-भूकम्प-राष्ट्रविप्लव-दुर्भिक्षादिविविध-आधि-व्याधि-विविधकष्ट-निवृत्तिपूर्वकनित्यकल्याणप्राप्त्यर्थम्, विपुलधन-धान्य-दीर्घायुष्ट्व-नैरुज्य-कीर्तिलाभ-सद्विद्योपार्जन-क्षेम-स्थैर्यैश्वर्य-गो-गजाश्वादिसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थम्, सद्धर्म-सद्बुद्धि-सद्विद्या-सद्विवेक-सदाचारादिप्राप्त्यर्थम्, तथैकविंशतिकुलोद्धरणपूर्वकं समस्तपितॄणां निरतिशयानन्दशाश्वतवैकुण्ठलोकप्राप्त्यर्थं च सनातनधर्मेऽस्मिन् निरतिशयश्रद्धाभक्ति-सम्पत्त्यर्थं सनातनधर्मप्रतिपादकानां साङ्गानां सरहस्यानां श्रुति-स्मृति-पुराणोपपुराणादीनां धार्मिकग्रन्थानां सर्वासां विद्यानां च अभिवृद्धयर्थम्, साधूनां महात्मनां ब्रह्मज्ञानाभिवृद्ध्यर्थम्, ब्राह्मणानां तपोऽभिवृद्ध्यर्थम्, क्षत्रियाणां तेजोऽभिवृद्ध्यर्थम्, वैश्यानां वाणिज्याभिवृद्ध्यर्थम्, शूद्राणां महत्त्वाभिवृद्ध्यर्थम्, भरतभूमेः ललामभूतायाः भारतवर्षभूमेः सर्वविधसस्यतावृद्धिपूर्वकवृक्षादीनां फल-पुष्प-समृद्ध्यर्थम्, जाति-देश-धर्म-समाज-राष्ट्राभ्युत्थानपूर्वकतत्तत्सम्प्रदायादिविशिष्टस्य समस्तविश्वस्य सर्वविधकल्याणसम्पादनार्थम्, विशेषतः सनातने स्वधर्मे प्रीतिविवर्धनार्थम्—

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

इति सदुद्देश्यसिद्धिद्वारा विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्त्यर्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं धर्मसंस्थापनार्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अनन्तकल्याणगुणगुणाकरस्य, ब्रह्म-रुद्रादि-वृन्दारकवृन्दवन्दित-पादारविन्दस्य, प्रपन्नजनपरिपालनपारिजातस्य, वन्दारुजनमन्दारस्य, निखिलवेद-वेदान्तैकप्रतिपाद्यस्य, सकललोकपावनस्य, आर्तत्राणपरायणस्य, ध्रुव-प्रह्लाद-पुण्डरीक-गजेन्द्र-प्रभृतिभक्ततारणनिपुणस्य, धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थप्रदस्य, सायुज्य-सालोक्य सामीप्य-सारूप्य-रूप-निर्वाणानन्तसुखप्रदायकस्य, भुक्ति-मुक्ति वितरणविश्रुतानन्तमहिम-मणिमण्डितस्य, करणाकरणान्यथाकरणचणस्य, अखण्डब्रह्माण्डमण्डल-मण्डनस्य, गो-ब्राह्मणप्रतिपालनबद्धदीक्षस्य, हरकोदण्डखण्डनाखण्डन-पण्डितस्य, अखर्वगर्वपर्वताधित्यकासञ्चरद्रात्रिञ्चरनिकरपरिकरलोकरावणविरावणस्य, देश-काल-शक्तिगुणापरिच्छेद्यमहामहिमनित्ययुक्तस्य, आनख-शिख-सौन्दर्यह्रीणानङ्गमङ्गलस्वरूपस्य, रिङ्गत्तुङ्गतरङ्गगङ्गा-

प्रादुर्भावपटुपाटलपादाङ्गुलिभूषितस्य, सर्वमङ्गलाङ्गसङ्गिगङ्गाधरा-र्च्यमानारुणचरणसरोजस्य, श्रीराम-कृष्णाद्यनेककलिकल्मषापहारि-पुण्यागण्यावतारधारकस्य, कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थस्य, सर्वसमर्थस्य, सर्वसूत्रधारस्य ,सर्वव्यापकस्य,विश्वज्योतिरवभासकस्य, करुणा-वरुणा-गारस्य, वामदक्षिणतो भार्याभ्यां श्रीभूम्यां भूषितस्य, शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मैरलङ्कृतबाहुचतुष्टयस्य, अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकस्य, भगवतः श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिजगद्बीजपुरुषोत्तमवैकुण्ठाधिपतेः श्रीविष्णोः प्रीत्यर्थं सग्रहमखं विष्णुयागं चतुर्णां वेदानां पारायणं श्रीमद्भागवत-वाल्मीकीयरामायण-विष्णुपुराण-गीता-दुर्गादीनां पारायणं नवग्रहादीनां जपं च एभिर्द्विजकुलावतंसैः शम-दमादिनिखिलगुणगणभरितैर्विद्वद्भिः सह अद्यारभ्य पूर्णाहुतिपर्यन्तं करिष्ये ।

० इति ०

———

हमारे यहाँ से प्रकाशित पुस्तकें
एक बार मँगाकर अवश्य पढ़िंये

शिवपुराण भाषा बड़ा	१२०.००
शिवपुराण भाषा बड़ा	१२०.००
रामायण मध्यम भा० टी०	१२५.००
रामाण भा० टी० गुटका ग्लेज	६०.००
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	५०.००
बाल्मीकीय रामायण भाषा	१२०.००
अध्यात्म रामायण भा० टी०	८०.००
आनन्द रामायण भाषा	१२०.००
प्रेमसागर	४०.००
सुखसागर भाषा मध्यम	१२५.००
सुखसागर भाषा गुटका	७५.००
दुर्गासप्तशती भा० टी०	२०.००
गणेश सहस्त्रनाम भा० टी०	१५.००
मन्त्र सागर भा० टी०	५०.००
वाञ्छाकल्पता भा० टी०	२०.००
बगलोपासनपद्धति– बगलासुखी –रहस्य भा० टी०	३०.००
रसराजमहोदधि पाँचो भाफ	८४.००
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा० टी०	१२५.००
मानसागरी भा० टी०	७५.००
जातकाभरण भा० टी०	५०.००
बृहज्ज्योतिषसार भा० टी०	४०.००
ताजिक नीलकण्ठी भा० टी०	५०.००
कर्मविपाक संहिता भा० टी०	५०.००
चमत्कार चिन्तामणि भा० टी०	४.००
भाव कुतूहल भा० टी०	५०.००
मुहूर्तचिन्तामणि भा० टी०	४०.००
लग्नचन्द्रिका भा० टी०	२०.००
घाघ–भड्डरी की कहावतें बड़ा	१५.००
विश्वकर्मा प्रकाश भा० टी०	५०.००
स्त्री जातक भा० टी०	१५.००
ग्रहशान्ति–पद्धति भा० टी०	५०.००
यज्ञ–मंत्र–संग्रह	१५०.००
विधान प्रकाश भा० टी०	६०.००
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति भा० टी०	४०.००
विष्णु योग पद्धति भा० टी०	१२५.००
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा० टी०	४०.००
हितोपदेश मित्रलाभ भा० टी०	१२.००
किरातार्जुनीयम् १–२ सर्ग भा० टी०	१०.००

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता––

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१

मुद्रक–भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी–१